जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास

ले. डो. शीवप्रसाद

खंड-२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर ग्रंथावली क्रमांक-५३

जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास

भाग-२

: लेखक :

डॉ० शिवप्रसाद

: प्रकाशक :

आ० ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर

सुभाषचौक, गोपीपुरा, सूरत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास (खंड - २)

ले. डॉ० शिवप्रसाद

JAIN SWETAMBAR GACHCHHO KA SAMKSHIPTA ITIHAS
By : Dr. Sivaprasad

मूल्य : २०० रूपये

प्रत : ५००

प्राप्ति स्थान :

- **आ० ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर**
  सुभाष चौक, गोपीपुरा,
  सूरत-३९५००१
  E-mail : omkarsuri@rediffmail.com
  mehta_sevantilal@yahoo.co.in
  (मो.) ९८२४१५२७२७ (सेवंतीभाई महेता)

- **ॐकार साहित्य निधि**
  विजयभद्र चेरिटेबल ट्रस्ट
  हाईवे, भीलडीयाजी (बनासकांठा)
  फोन : ०२७४४-२३३१२९, २३४१२९

- **सरस्वती पुस्तक भंडार**
  हाथीखाना, रतनपोल,
  अहमदाबाद-३८० ००१

- **मोतीलाल बनारसीदास**
  40-UA, नेहरूनगर,
  नई दिल्ली.

मुद्रक : किरीट ग्राफिक्स - अहमदाबाद (मो०) ९८९८४९००९९
E-mail : kiritgraphics@yahoo.com

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागपुरीयतपागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में पूर्वमध्यकाल और मध्यकाल में उद्भूत विभिन्न गच्छों में नागपुरीयतपागच्छ (नागौरी तपागच्छ) भी एक है। जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है कि यह गच्छ तपागच्छ की एक शाखा के रूप में असित्त्व में आया होगा, किन्तु इस गच्छ की स्वयं की मान्यतानुसार बृहद्गच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि ने अपने चौबीस शिष्यों को एक साथ आचार्य पद प्रदान किया, जिनमें पद्मप्रभसूरि भी एक थे।[१] पद्मप्रभसूरि द्वारा नागौर में उग्र तप करने के कारण वहां के शासक ने प्रसन्न होकर उन्हें 'नागौरीतपा' विरुद् प्रदान किया। इस प्रकार उनके नाम के साथ 'नागौरीतपा' शब्द जुड़ गया और उनकी शिष्य सन्तति 'नागपुरीयतपागच्छीय' कहलायी[२]। इसी गच्छ से आगे चल कर १६वीं शताब्दी में पार्श्वचन्द्रगच्छ अस्तित्त्व में आया और आज भी उस गच्छ के अनुयायी श्रमण-श्रमणी विद्यमान हैं।

नागपुरीयतपागच्छ से सम्बद्ध ग्रन्थ प्रशस्तियों एवं पट्टावलियों में यद्यपि इसे वि० सं० ११७४/ई० सन् १११८ में बृहद्गच्छ से उद्भूत बतलाया गया है, किन्तु इस गच्छ से सम्बद्ध उपलब्ध साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य विक्रम सम्वत् की १६ वीं- १७ वीं शताब्दी से पूर्व के नहीं हैं। नागपुरीयतपागच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य है वि० सं० १५५१/ई० स० १४९५ में प्रतिष्ठापित शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख। महोपाध्याय विनयसागर ने इस लेख की वाचना दी है[३], जो इस प्रकार है –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० १५५१ व० मा० २ सोमे उ० ज्ञा० सोनीगोत्रे सं० चांपा भा० चांपलदे पु० हया रामा हृंदा पितृनि० आ० श्रे० श्री शीतलनाथ बिं० कारि० प्रति० नागुरी (नागपुरीय) तपाग० भ० सोमरत्नसूरिभिः ॥

प्रतिष्ठा स्थान - ऋषभदेव जिनालय, मालपुरा

आदिनाथ जिनालय, नागौर में एक शिलापट्ट पर उत्कीर्ण वि० सं० १५९६ का एक खंडित अभिलेख प्राप्त हुआ है[४]। इस अभिलेख में राजरत्नसूरि और उनके शिष्य रत्नकीर्तिसूरि का नाम मिलता है। लेख का मूलपाठ इस प्रकार है:

॥ॐ॥ स्वास्तिश्रीसंवत् १५९६ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे नवमी तिथौ सोमवारे नागपुरकोटे श्रीमालवंशे संकियाप्य (?) गोत्रे सं० नोल्हा पु० सं० चूहड़ सं० लक्ष्मीदास सं० भवानी सं० लक्ष्मीदास भार्या सं० सरूपदे नाम्नी हे...श्री राजरत्नसूरिपट्टे सं० श्रीरत्नकीर्तिसूरि प्रतिष्ठिता ॥ ....।

शिलापट्ट प्रशस्ति, आदिनाथ जिनालय, हीरावाड़ी, नागौर

उक्त अभिलेख से राजरत्नसूरि और उनके शिष्य रत्नकीर्तिसूरि किस गच्छ के थे, इस बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती किन्तु उक्त जिनालय में ही मूलनायक के रूप में स्थापित आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। महोपाध्याय विनयसागर जी ने इस लेख का मूलपाठ दिया है[५], जो निम्नानुसार है :

॥ॐ॥ सं० १५९६ वर्षे फाल्गुन सुदि नवम्यां तिथौ .... गोत्रे सं० नोल्हा पु० सं० तेजा पु० सं० चूहड भा० सं० रमाइ पु सं० लक्ष्मीदास सं० सं० भवानी सं० लक्ष्मीदास भा० .... कल्याणमल्ल तत्र लक्ष्मीदास भार्या सरूपदेव्यौ कर्मनिर्जरार्थं श्री आदिनाथ बिबं कारितं प्रतिष्ठितं .... भट्टारक श्रीसोमरत्नसूरिपट्टे भट्टारिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री श्रीराजरत्नसूरयस्तत्पट्टे श्रीरत्नकीर्तिसूरि .... श्रीसंघस्य ।

मूलनायक की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, आदिनाथ जिनालय, हीरावाड़ी, नागौर ।

इस अभिलेख में रत्नकीर्तिसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख मिलने के साथ-साथ उनके गुरु राजरत्नसूरि और प्रगुरु सोमरत्नसूरि का भी नाम मिलता है :

?
|
सोमरत्नसूरि
|
|
राजरत्नसूरि
|
|
रत्नकीर्तिसूरि (वि० सं० १५९६ में आदिनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक)

जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं नागपुरीयतपागच्छीय सोमरत्नसूरि का वि० सं० १५५१ के एक लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख मिलता है । अतः इन्हें समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर रत्नकीर्ति के प्रगुरु और राजरत्नसूरि के गुरु सोमरत्नसूरि से अभिन्न माना जा सकता है ।

इस गच्छ का उल्लेख करने वाला अंतिम अभिलेखीय साक्ष्य वि० सं० १६६७ का है । इस लेख का मूलपाठ भी हमें विनयसागर जी द्वारा ही प्राप्त होता है[६] जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्वत् १६६७ फाल्गुन कृष्णा ६ गुरौ........उसवालज्ञातीय दूगड़गोत्रे सा० सालिग पुत्र साह राजपाल पुत्र सा० खीमाकेन भार्या कुशलदे पुत्र गिरिधर सा० मानसिंघयुतेन श्री श्रेयासनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नागौरीतपागच्छे श्रीचन्द्रकीर्तिसूरिपट्टे श्रीसोमकीर्तिसूरिपट्टे श्रीदेवकीर्तिसूरि श्रीअमर.......................... । प्रतिष्ठितं नागौरी तपागच्छे श्री आगरानगरे मानसिंघेन लिपीकृतं ॥

मूलनायक की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, श्रेयांसनाथ जिनालय, हिंडोन

इस प्रकार इस अभिलेख में नागपुरीयतपागच्छ के चार मुनिजनों के नाम मिल जाते हैं, जो इस प्रकार हैं :

चन्द्रकीर्तिसूरि
|
सोमकीर्ति
|
देवकीर्तिसूरि — अमर (कीर्ति)

वि० सं० १५९६ के प्रतिमा के लेख में उल्लिखित रत्नकीर्तिसूरि और वि० सं० १६६७ के उक्त प्रतिमालेख में उल्लिखित चन्द्रकीर्तिसूरि के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध था, यह बात उक्त प्रतिमालेख से ज्ञात नहीं होता है।

नागपुरीयतपागच्छ से सम्बद्ध यद्यपि यही चार अभिलेखीय साक्ष्य आज मिलते हैं, किन्तु इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से ये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

नागपुरीयतपागच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्य

नागपुरीयतपागच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्य है इस गच्छ के आचार्य चन्द्रकीर्तिसूरि द्वारा वि० सं० १६२३/ई० सन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५६७ में रचित **सारस्वतव्याकरणदीपिका** की प्रशस्ति[7], जिसमें रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा की लम्बी गुर्वावली दी है, जो इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अति मूल्यवान है। गुर्वावली इस प्रकार है :

वादिदेवसूरि
|
पद्मप्रभसूरि
|
प्रसन्नचन्द्रसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
जयशेखरसूरि
|
वज्रसेनसूरि
|
हेमतिलकसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
पूर्णचन्द्रसूरि
|
प्रेम (हेम) हंससूरि
|
रत्नसागरसूरि　　हेमसमुद्रसूरि　　हेमरत्नसूरि
　　　　　　　　　　　　　　|
　　　　　　　　　　　　सोमरत्नसूरि
　　　　　　　　　　　　　　|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजरत्नसूरि
|
चन्द्रकीर्तिसूरि
|
(**सारस्वतव्याकरणदीपिका** की हर्षकीर्ति
प्रथमादर्शप्रति के लेखक)

चन्द्रकीर्तिसूरि द्वारा रचित **धातुपाठविवरण**, **छन्दकोशटीका** आदि कई कृतियां प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार इनके शिष्य हर्षकीर्ति भी अपने समय के प्रसिद्ध रचनाकार थे। इनके द्वारा रचित **सारस्वतव्याकरण धातुपाठ** (रचनाकाल वि० सं० १६६३/ई० स० १६०७), **योगचिन्तामणि** अपरनाम **वैद्यकसारोद्धार**, **शारदीयनाममाला**, **अजियसंतिथव** (**अजितशांतिस्तव**), **उवसग्गहरथोत्त** (**उपसर्गहरस्तोत्र**), **धातुपाठ**, **नवकारमंत्र**, (**नमस्कारमंत्र**), **बृहच्छांतिथव** (**बृहद्शान्तिस्तव**), **लघुशान्तिस्तोत्र**, **सिन्दूरप्रकर** आदि विभिन्न कृतियां प्राप्त होती हैं।[८]

गोपालभट्ट द्वारा रचित **सारस्वतव्याकरण** पर वृत्ति के रचनाकार भावचन्द्र भी नागपुरीयतपागच्छ के थे। अपनी उक्त कृति की प्रशस्ति[९] में इन्होंने अपने गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है:

चन्द्रकीर्तिसूरि
|
पद्मचन्द्र
|
भावचन्द्र (**सारस्वतव्याकरणवृत्ति**
अपरनाम **गोपालटीका** के
रचनाकार)

ऊपर **सारस्वतव्याकरणदीपिका** की प्रशस्ति में हम देख चुके हैं कि किन्ही पद्मचन्द्र की प्रार्थना पर उक्त कृति की रचना की गयी थी[१०]। इससे यह प्रतीत होता है कि मुनि पद्मचन्द्र का रचनाकार से अवश्य ही निकट सम्बन्ध रहा होगा। ऊपर हम **गोपालटीका** की प्रशस्ति में देख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुके हैं कि टीकाकार भावचन्द्र ने पद्मचन्द्र को चन्द्रकीर्तिसूरि का शिष्य और अपना गुरु बतलाया है। इस प्रकार **सारस्वतव्याकरणदीपिका** की प्रथमादर्शप्रति के लेखक हर्षकीर्ति और उक्त कृति की रचना हेतु आचार्य चन्द्रकीर्ति को प्रेरित करने वाले पद्मचन्द्र परस्पर गुरुभ्राता सिद्ध होते हैं।

चन्द्रकीर्तिसूरि (वि० सं० १६२३ में **सारस्वतव्याकरणदीपिका** के रचनाकार)

|

पद्मचन्द्र (**सारस्वतव्याकरण दीपिका** की रचना के लिए प्रार्थना करने वाले)

हर्षकीर्ति (**सारस्वतव्याकरण दीपिका** की प्रथमादर्श प्रति लेखक)

|

भावचन्द्र (**सारस्वतव्याकरणवृत्ति** अपरनाम **गोपालटीका** के रचनाकार)

हर्षकीर्ति द्वारा रचित **कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका** नामक एक अन्य कृति भी प्राप्त होती है, जिसका संशोधन उनके शिष्य महोपाध्याय देवसुन्दर ने किया[११]। इसी प्रकार इनके एक शिष्य शिवराज ने अपने गुरु द्वारा रचित **बृहद्शांतिस्तव** की वि० सं० १६७६ में प्रतिलिपि की[१२]।

वि० सं० १६५६ में लिखी गयी **सिरिवालचरिय (श्रीपालचरित्र)** की प्रतिलेखन प्रशस्ति[१३] में भी इस गच्छ के कुछ मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, जो इस प्रकार हैं –

चन्द्रकीर्तिसूरि

|

मानकीर्ति

|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमरकीर्ति
|
मुनिधर्म (वि० सं० १६५७/ई० स० १६०१ में **सिरिवालचरिय** के प्रतिलिपिकार)

उक्त छोटी-छोटी प्रशस्तियों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की एक तालिका निर्मित की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

चन्द्रकीर्तिसूरि
(**सारस्वतव्याकरणदीपिका** के रचनाकार)
|
मानकीर्ति (**कल्याणमंदिर-स्तोत्रटीका** एवं अन्य कृतियों के कर्ता) | हर्षकीर्ति | पद्मचन्द्र (**सारस्वतव्याकरण-दीपिका** की रचना के प्रेरक)

मानकीर्ति
|
अमरकीर्ति
|
मुनिधर्म (वि० सं० १६५७ /ई० स० १६०१ में **श्रीपालचरित** के प्रतिलिपिकार)

हर्षकीर्ति
|
महो० देवसुन्दर (**कल्याणमंदिर-स्तोत्रटीका** के संशोधक) | शिवराज

पद्मचन्द्र
|
भावचन्द्र (**गोपालटीका** के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारस्वतव्याकरणदीपिका की प्रशस्ति में उल्लिखित रचनाकार चन्द्रकीर्ति के गुरु राजरत्नसूरि और प्रगुरु सोमरत्नसूरि समसामयिकता, नामसाम्य, गच्छसाम्य आदि को देखते हुए अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित राजरत्नसूरि और उनके गुरु सोमरत्नसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं। इस आधार पर चन्द्रकीर्तिसूरि और रत्नकीर्तिसूरि-सोमरत्नसूरि के प्रशिष्य, राजरत्नसूरि के शिष्य और परस्पर गुरुभ्राता सिद्ध होते है। इस प्रकार इस गच्छ के मुनिजनों का जो वंशवृक्ष बनता है, वह इस प्रकार है :

सोमरत्नसूरि (वि० सं० १५५१) प्रतिमालेख (नागपुरीयतपागच्छ का उल्लेख करनेवाला सर्वप्रथम साक्ष्य)

|

राजरत्नसूरि

|

चन्द्रकीर्तिसूरि (वि० सं० १६२३ में **सारस्वतव्याकरण-दीपिका** के कर्ता-प्रसिद्ध रचनाकार)

रत्नकीर्तिसूरि (वि० सं० १५९६) प्रतिमालेख

|

मानकीर्तिसूरि

हर्षकीर्ति **सारस्वतव्याकरण**-की प्रथमादर्श प्रति के लेखक

पद्मचन्द्र (इसकी प्रार्थना पर **सारस्वत-व्याकरणदीपिका**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की रचना हुई)

अमरकीर्तिसूरि | भावचन्द्र (**गोपालटीका** के कर्ता)

महो० देवसुन्दर | शिवराज

मुनिधर्म (वि० सं० १६५७ में **श्रीपालचरित्र** के प्रतिलिपिकार)

चूंकि नागपुरीयतपागच्छ का वि० सं० १५५१ से पूर्व कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता, अतः चन्द्रकीर्तिसूरि द्वारा रचित **सारस्वत-व्याकरणदीपिका** की प्रशस्तिगत गुर्वावली में आचार्य सोमरत्नसूरि से पूर्ववर्ती हेमरत्नसूरि, हेमसमुद्रसूरि, हेमहंससूरि, पूर्णचन्द्रसूरि आदि जिन मुनिजनों का उल्लेख मिलता है, उन्हें किस गच्छ से सम्बद्ध माना जाये, यह समस्या सामने आती है। इस सम्बन्ध में हमें अन्यत्र प्रयास करना पड़ेगा। दूह : तपागच्छीय अभिलेखीय साक्ष्यों में हमें हेमरत्नसूरि (वि० सं० १५३३), हेमरत्नसूरि के गुरु हेमसमुद्रसूरि (वि० सं० १५१७-२८) और हेमसमुद्रसूरि के गुरु तथा पूर्णचन्द्रसूरि के शिष्य हेमहंससूरि (वि० सं० १४५३-१५१३) का उल्लेख प्राप्त होता है। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छीय आचार्य पूर्णचन्द्रसूरि के पट्टधर हेमहंससूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमांक	संवत् माह तिथि दिन	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४५३ .... सुदि	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४८९
२.	१४६५ माघ वदि १३	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ६१९
३.	१४६६ चैत्र सुदि १३	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १११७
४.	१४६९ कार्तिक सुदि १५	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ६४१
५.	१४७५ मार्गसिर वदि ४	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२४०
६.	१४८५ माघ वदि १४ बुधवार	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १३१४
७.	१४८५............ वदि ५	**वही**, लेखांक ७२९
6 अ.	१४८६ ज्येष्ठ सुदि १३	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६५८
८.	१४८७ माघ सुदि ३	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५१
९.	१४९० फाल्गुन सुदि ९	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३२९
१०.	१४९६ वैशाख सुदि १२	**वही**, भाग २, लेखांक १४८१
११.	१४९८ फाल्गुन वदि १०	**वही**, भाग २, लेखांक १३६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत् माह तिथि दिन	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१५०१..... वदि ६ बुधवार	**वही**, भाग २, लेखांक १४८२
१३.	१५०३ ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ८६५
१४.	१५०३ ,, ,,	**वही**, लेखांक १४३३
१५.	१५०३ मार्गशीर्ष वदि १०	**वही**, लेखांक १५१२
१६.	१५०४ फाल्गुन वदि ११	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११४७
१७.	१५१० चैत्र वदि ४ शनिवार	**वही**, भाग २, लेखांक ११५२
१८.	१५११ माघ वदि ९	**वही**, भाग २, लेखांक १४०१
१९.	१५१२ फाल्गुन वदि ५	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ९४
२०.	१५१३ पौष सुदि ८	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०८९
२१.	१५१३ ,, ,,	**वही**, भाग २, लेखांक १२६६
२२.	१५१३ ,, ,,	**वही**, भाग २, लेखांक १३७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमहंससूरि के पट्टधर हेमसमुद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमांक	संवत् माह तिथि दिन	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५१७ मार्गशीर्ष सुदि २	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, शनिवारलेखांक ५६९
२.	१५१७ माघ सुदि १० सोमवार	**वही**, भाग १, लेखांक ५७३
३.	१५१८ माघ सुदि २ शनिवार	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १२२६
४.	१५२१ वैशाख सुदि १३ सोमवार	**वही**, लेखांक १२९३
५.	१५२१ माघ सुदि १२ बुधवार	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४४३
६.	१५२२ माघ सुदि २ गुरुवार	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२०
७.	१५२८ वैशाख वदि ६ सोमवार	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १२४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमसमुद्रसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमांक	संवत् माह तिथि दिन	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५३३, माघ सुदि ६	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७६४
२.	१५३३	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ११९१
३.	१५३७ मार्गशीर्ष सुदि १२	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३५३
४.	१५४२ वैशाख सुदि १३, रविवार	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १६८

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर जो पट्टक्रम निश्चित होता है, वह इस प्रकार है --

पूर्णचन्द्रसूरि
|
हेमहंससूरि (वि० सं० १४५६-१५१३)
|
हेमसमुद्रसूरि (वि० सं० १५१७-१५२८)
|
हेमरत्नसूरि (वि० सं० १५३३-१५४२)

इस प्रकार तपागच्छीय अभिलेखीय साक्ष्यों में न केवल उक्त मुनिजनों के नाम मिलते हैं, बल्कि उनका पट्टक्रम भी ठीक उसी प्रकार का है जैसा कि चन्द्रकीर्तिसूरि द्वारा रचित **सारस्वतव्याकरणदीपिका** की प्रशस्ति में हम देख चुके हैं।

सारस्वतव्याकरणदीपिका की प्रशस्ति में पूर्णचन्द्रसूरि के गुरु का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम रत्नशेखरसूरि और प्रगुरु का नाम हेमतिलकसूरि दिया गया है। रत्नशेखरसूरि द्वारा रचित **सिरिवालचरिय (श्रीपालचरित्र)** रचनाकाल वि० सं० १४२८/ई० स० १३७२; **लघुक्षेत्रसमास स्वोपज्ञवृत्ति, गुरुगुण-षट्त्रिंशिका, छंदकोश, सम्बोधसत्तरीसटीक, लघुक्षेत्रसमाससटीक** आदि विभिन्न कृतियां प्राप्त होती हैं[१४]। **सिरिवालचरिय** की प्रशस्ति[१५] में उन्होंने अपने गुरु, प्रगुरु, शिष्य तथा रचनाकाल आदि का निर्देश किया है, जो इस प्रकार है :

सिरिवज्जसेणगणहरपट्टप्पहूहेमतिलयसूरीणं।
सीसेहिं रयणसेहरसूरीहिं इमा ऊण संकलिया ॥ ३८॥
तस्सीसहेमचंदेण साहुणा विक्कमस्स वरसंमि।
चउदस अट्ठावीसे लिहिया गुरुभत्तिकलिएणं ॥३९॥

वज्रसेनसूरि
|
हेमतिलकसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
हेमचन्द्र

यह उल्लेखनीय है कि रत्नशेखरसूरि ने उक्त प्रशस्ति में अपने गच्छ का निर्देश नहीं किया है। यही बात उनके द्वारा रचित अन्य कृतियों में भी देखी जा सकती है। वि० सं० १४२२ के एक प्रतिमालेख में तपागच्छीय ? किन्हीं रत्नशेखरसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठा हेतु उपदेशक के रूप में नाम मिलता है। यहि हम इस वाचना को सही मानें तो उक्त प्रतिमालेख में उल्लिखित रत्नशेखरसूरि को समसामयिकता और नाम साम्य के आधार पर उक्त प्रसिद्ध रचनाकार रत्नशेखरसूरि से समीकृत किया जा सकता है। एक रचनाकार द्वारा अपनी कृतियों की प्रशस्तियों में अपने गुरु, प्रगुरु, शिष्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा रचनाकाल का उल्लेख करना जितना महत्त्वपूर्ण है, वहीं उनके द्वारा अपने गच्छ का निर्देश न करता उतना ही आश्चर्यजनक भी है।

कर्पूरप्रकर नामक कृति की प्रशस्ति[१६] में रचनाकार हरिषेण ने स्वयं को वज्रसेन का शिष्य और **नेमिनाथचरित्र** का कर्ता बतलाया है, किन्तु इन्होंने न तो कृति के रचनाकाल का कोई निर्देश किया है और न ही अपने गच्छ आदि का। ऊपर **सिरिवालचरिय** (रचनाकाल वि० सं० १४२८/ई० स० १३७२) प्रशस्ति में हेमतिलकसूरि के गुरु का नाम वज्रसेनसूरि आ चुका है, अतः नामसाम्य के आधार पर उक्त दोनों प्रशस्तियों में उल्लिखित वज्रसेनसूरि के एक ही व्यक्ति होने की संभावना व्यक्त की जा सकती है। इस संभावना के आधार पर **कर्पूरप्रकर, नेमिनाथचरित्र** आदि के रचनाकार हरिषेण और **सिरिवालचरिय** तथा अन्य कई कृतियों के कर्ता रत्नशेखरसूरि के गुरु परस्पर गुरुभ्राता माने जा सकते हैं।

सारस्वतव्याकरणदीपिका की प्रशस्ति में ऊपर हम देख चुके हैं वज्रसेनसूरि के गुरु का नाम जयशेखरसूरि और प्रगुरु का नाम गुणसमुद्रसूरि तथा उनके गुरु का नाम प्रसन्नचन्द्रसूरि बतलाया गया है जो इस परम्परा के आदिपुरुष पद्मप्रभसूरि के शिष्य थे। **छन्दकोश** पर रची गयी वृत्ति की प्रशस्ति[१७] में रचनाकार चन्द्रकीर्ति ने पद्मप्रभसूरि को **दीपकशास्त्र** का रचनाकार बतलाया है :

वर्षैः चतुःसप्ततियुक्तरुद्रशतै- ११७४-रतीतैरथ विक्रमार्कात्।
वादीन्द्रमुख्यो गुरु देवसूरिः सूरींश्चतुर्विंशतिमभ्यषिंचत्॥
तेषां च यो दीपकशास्त्रकर्ता पद्मप्रभः सूरिवरो वभूव।
यदिय शाखा प्रथिता क्रमेण ख्याता क्षितौ नागपुरी तपेति॥

ठीक यही बात विक्रम सम्वत् की १८ वीं शती के अंतिम चरण के आस-पास रची गयी नागपुरीयतपागच्छ की **पट्टावली**[१८] में भी कही गयी है, किन्तु वहां ग्रन्थ का नाम **भुवनदीपक** बतलाया गया है। इसी गच्छ की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरी **पट्टावली**[१९] (रचनाकाल-विक्रम सम्वत् बीसवीं शताब्दी का अंतिम चरण) में तो एक कदम और आगे बढ़ कर **भुवनदीपक** का रचनाकाल (वि० सं० १२२१) का भी उल्लेख कर दिया गया है।

किन्ही पद्मप्रभसूरि नामक मुनि द्वारा रचित **भुवनदीपक** अपरनाम **ग्रहभावप्रकाश** नामक ज्योतिष शास्त्र की एक कृति मिलती है[२०], परन्तु उसकी प्रशस्ति में न तो रचनाकाल ने अपने गुरु, गच्छ आदि का नाम दिया है और न ही इसका रचनाकार ही बतलाया है, फिर भी नागपुरीयतपागच्छीय साक्ष्यों-**छन्दकोशवृत्ति** की प्रशस्ति तथा इस गच्छ की **पट्टावली** के विवरण को प्रामणिक मानते हुए विद्वानों ने इन्हें वादिदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि से अभिन्न माना है। **नागपुरीयतपागच्छीयपट्टावली** (रचनाकाल २० वीं शताब्दी का अंतिम भाग)में उल्लिखित **भुवनदीपक** के जहां तक रचनाकाल का प्रश्न है, चूंकि इस सम्बन्ध में किन्ही भी अन्य साक्ष्यों से कोई सूचना नहीं मिलती, दूसरे अर्वाचीन होने से इसमें अनेक भ्रामक और परस्पर विरोधी सूचनायें संकलित हो गयी हैं अतः इसकी प्रामणिकता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। पद्मप्रभसूरि की परम्परा में हुए हरिषेण एवं रत्नशेखरसूरि द्वारा अपने गच्छ का उल्लेख न करना तथा इसी परम्परा में बाद में हुए चन्द्रकीर्तिसूरि, मानकीर्ति, अमरकीर्ति आदि द्वारा स्वयं को नागपुरीय तपागच्छीय और अपनी परम्परा को बृहद्गच्छीय वादिदेवसूरि से सम्बद्ध बतलाना वस्तुतः इतिहास की एक अनबूझ पहेली है जिसे पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में सुलझा पाना कठिन है और यह प्रश्न अभी तो अनुत्तरित ही रह जाता है।

सन्दर्भ सूची :-

१-२-(अ) तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकौटिकाख्ये गणे।

श्रीमच्चान्द्रकुले वटोद्भवबृहद्गच्छे गरिम्नान्विते॥

श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपाप्राप्तावदातेऽधुना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्फूर्ज्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥२॥

वर्षे वेद-मुनीन्द्र-शंङ्कर (११७४) मिते श्रीदेवसूरिः प्रभुः ।

जज्ञेऽभूत् तदनु प्रसिद्धमहिमा पद्मप्रभः सूरिराट् ॥

सारस्वतव्याकरणदीपिका की प्रशस्ति

A. P. Shah, Ed, *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss, Muni Punya VijayaJis Collection,* Part II, L. D. Series No- 5, Ahmedabad 1965 A. D., No. 5974. Pp 376-377.

(ब) "नागपुरीयतपागच्छ पट्टावली", मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावली-संग्रह,** सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, मुम्बई १९६१, पृष्ठ ४८-५२.

(स) "नागपुरीयतपागच्छपट्टावली" मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ,** नवीनसंस्करण, संपा०- डॉ० जयन्त कोठारी, भाग ९, मुम्बई १९९७ ई०, पृष्ठ-९८-१०५.

३. महोपाध्याय विनयसागर, संपा०- **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** भाग १, कोटा १९५३ ईस्वी, लेखांक ८६५.

४. वही, लेखांक ९९४.

५. वही, लेखांक ९९५.

६. वही, लेखांक १०९२.

७. **सारस्वतव्याकरण दीपिका की प्रशस्ति :**

सुबोधिकायां क्लृप्तायां सूरिश्रीचन्द्रकीर्त्तिभिः ।

कृत्प्रत्ययानां व्याख्यानं बभूव सुमनोहरम् ॥१॥

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकौटिकाख्ये गणे,

श्रीमच्चान्द्रकुले बटोद्भवबृहद्गच्छे गरिम्नान्विते ।

श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपाप्राप्तावदातेऽधुना,

स्फूर्ज्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥२॥

वर्षे वेद-मुनीन्द्र-शङ्कर (११७४) मिते **श्रीदेवसूरिः** प्रभुः ।

जज्ञेऽभूत् तदनु प्रसिद्धमहिमा **पद्मप्रभः** सूरिराट् ॥

तत्पट्टे प्रथितः **प्रसन्नशशिभृत** सूरिः सतामादिमः ।

सूरीन्द्रास्तदनन्तरं गुणसमुद्राह्वा बभूवुर्बुधाः ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्पट्टे **जयशेखराख्यसुगुरुः** श्रीवज्रसेनस्तत-
स्तत्पट्टे **गुरुहेमपूर्वतिलकः** शुद्धक्रियोद्द्योतकः ।
तत्पट्टे **प्रभुरत्नशेखरगुरुः** सूरीश्वराणां वर-
स्तत्पट्टाम्बुधिपूर्णचन्द्रसदृशः **श्रीपूर्णचन्द्रप्रभुः** ॥४॥
तत्पट्टेऽजनि **प्रेमहंससुगुरुः** सर्वत्र जाग्रद्यशाः,
आचार्या अपि रत्नसागरवरास्तत्पट्टपद्मार्यमा ।
श्रीमान्**हेमसमुद्रसूरि**रभवच्छ्रीहेमरत्नस्ततस्तपट्टे
प्रभुसोमरत्नगुरुवः सूरीश्वराः सद्गुणाः ॥५॥
तत्पट्टोदयशैलहेलिरमलश्रीजेसवालान्वया-
ऽलङ्कारः कलिकालदर्पदमनः **श्रीराजरत्न**प्रभुः ।
तत्पट्टे जितविश्ववादिनिवहा गच्छाधिपाः संप्रति,
सूरिश्रीप्रभु**चन्द्रकीर्ति**गुरवो गाम्भीर्यधैर्याश्रयाः ॥६॥
तैरियं **पद्मचन्द्राह्वोपाध्यायाभ्यर्थना** कृता ।
शुभा सुबोधिकानाम्नी श्रीसारस्वतदीपिका ॥७॥
श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीन्द्रपादाम्भोजमधुकरः ।
श्री**हर्षकीर्ति**रिमां टीकां प्रथमादर्शकेऽलिखत् ॥८॥
अज्ञातध्वान्तविध्वंसविधाने दीपिकानिभा ।
दीपिकेयं विजयतां वाच्यमाना बुधैश्चिरम् ॥९॥
स्वल्पस्य सिद्धस्य सुबोधकस्य **सारस्वतव्याकरणस्य टीकाम्** ।
सुबोधिकाख्यां रचयाञ्चकार सूरीश्वरः **श्रीप्रभुचन्द्रकीर्त्तिः** ॥१०॥
गुण-पक्ष-कला (१६२३) संख्ये वर्षे विक्रमभूपतेः ।
टीका **सारस्वतस्येषा** सुगमार्था विनिर्मिता ॥११॥)

इति **श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छाधिराजभट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिसूरिविरचिता श्रीसारस्वतव्याकरणस्य दीपिका** समाप्ता ॥ अस्मिन् समाप्ते । समाप्तोऽयमिति ग्रन्थः ।

A. P. Shah, Ibid, Part II, No. 5974, Pp 376-377.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,** द्वितीय संशोधित संस्करण, संपा० आचार्य मुनिचन्द्रसूरि, सुरत २००६ ईस्वी० पृष्ठ ३८८, कंडिका ८६२.

९. **सारस्वतव्याकरणवृत्ति** की प्रशस्ति

स्वस्ति श्रीमति सत्प्रभावकलिते विद्वद्गणालंकृते
श्रीमन्नागपुरीयसंज्ञकतपागच्छे प्रसिद्धे भुवि।
जाग्रद्भारतिसुप्रसादसुरभिस्फारस्फुरत्तेजसि
सूरीन्द्रप्रवरे चिरं विजयिनि **श्रीचन्द्रकीर्तिप्रभौ** ॥१॥
नित्यं तेऽत्र जयन्ति गणैर्मान्याः समासादित (?),
क्षेत्राधीशवराश्च पाठकवराः **श्रीपद्मचन्द्रा**भिधाः ॥
तच्छिष्योत्तम**भावचन्द्र**वचसा सारस्वतस्य स्फुटां,
टीका चारुविचारसाररुचिरां गोपालभट्टो व्यधात् ॥२॥

A. P. Shah, Ibid, Part IV,

L. D. Series No- 20, Ahmedabad 1968 A. D. No. 954, Pp. 94-95.

१०. तैरियं **पद्मचन्द्राह्वोपाध्यायाभ्यर्थना** कृता।
शुभा सुबोधिकानाम्नी श्रीसारस्वतदीपिका ॥६॥

सारस्वतव्याकरणदीपिका की प्रशस्ति, द्रष्टव्य- संदर्भ क्रमांक ७.

११. श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपागच्छाधिपाः सत्क्रियाः,
सूरिश्रीप्रभ**चन्द्रकीर्ति**गुरवस्तेषां विनेयो वरः।
वाच्यः पाठक **हर्षकीर्ति**रकरोत् कल्याणसद्मस्तवे,
मेधामंदिर **देवसुन्दर**महोपाध्यायराजो महान् ॥१॥
यत्किंचिन्मतिमन्दत्वात् यच्चात्रानवधानतः।
व्याख्यातं वैपरीत्येन तद् विशोध्यं विचक्षणैः ॥२॥

A. P. Shah, Ibid, Part I, No- 1671, Pp 97-98.

१२. इतिश्रीबृहच्छांतिटीका समाप्ताः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तुः ॥

संवत् १६७६ वर्षे वैशाख मासे। शुक्लपक्षे। द्वितीयां तिथौ। च(चं)द्रवासरे लिपिकृताः ॥ श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छे। भ० श्रीश्री**मानकीर्तिसू**रिस्तेषांपट्टे उ० श्री**हर्षकीर्ति**। तच्छिष्य (ष्य) **शिवराजेन** लिखितमस्तिः। स्वपठनाय लेखक पाठकः (:) श्रीरस्तु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

H. R. Kapadia, Ed. *Descriptive Catalogue of the Govt. Collections of Mss. Deposited at B.O.R.I.* Vol. XVIII, Part IV, Poone 1948, A. D.P- 121.

१३. संवत् १६५७ वर्षे आषाढ़ मासे शुक्लपक्षे। प्रतिपदायां तिथौ। सोमवारे श्रीनागपुरमध्ये। पातसाहि श्रीअकबर राज्ये। श्रीवर्धमानतीर्थे सुधर्म्मास्वामिनोऽन्वये। कौटिकगणे। वइरीशाखायां चंद्रकुले। पूर्व्वं श्रीमद्बृहद्गच्छे सांप्रतं प्राप्तनागपुरीय तपा इति प्रसिद्धावदाते। वादि श्री देवसूरिसंताने। भ० श्री चन्द्रकीर्तिसूरिवरास्तेषां पट्टे सर्वंत्र जेगीयमानकीर्ति भ० श्रीमानकीर्तिसूरिपुरंदरास्तेषां शिष्या आचार्य श्री श्री ५ अमरकीर्तिसूरयस्तेषां शिष्येण मुनिधर्माह्वयेन लिपीचक्रे।

अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा०, **श्रीप्रशस्तिसंग्रह,** श्री जैनसाहित्य प्रदर्शन, श्री देशविरति धर्माराजक समाज, अहमदाबाद वि० सं० १९९३, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक ६२८, पृष्ठ १५९-६०.

१४. देसाई, जैन साहित्यनो......, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ २९, कंडिका ६८.

१५. P. Peterson : *A Fourth Report of Operation in search of* Sanskrit MSS. P. 118, No. 1348.

१६. श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्ठिसारप्रबंधस्फुट सद्गुणस्य ॥

शिष्येण चक्रे हरिणेयमिष्टा, सूक्तावली नेमिचरित्रकर्ता ॥

कर्पूरप्रकर की प्रशस्ति, प्रकाशक-बालाभाई कलक भाई, मांडवी पोल, अहमदाबाद वि० सं० १९८२/ई० सन् १९२६.

१७. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगुर्जरकविओ,** भाग ८ द्वितीय संस्करण, पृष्ठ ४८, पाद टिप्पणी १.

१८-१९. द्रष्टव्य संदर्भ क्रमांक १ और २

२०. ग्रहभावप्रकाशाख्यं शास्त्रमेतत्प्रकाशितम्।

लोकानामुपकाराय श्रीपद्मप्रभुसूरिभिः ॥१७०॥

भुवनदीपक का अंतिम श्लोक.

प्रकाशक-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई वि० सं० १९९६/ ई० स० १९३९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागेन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

उत्तर भारतीय निर्ग्रन्थ संघ के अल्पचेल (बाद में श्वेताम्बर) सम्प्रदाय के अन्तर्गत नागेन्द्रकुल (बाद में नागेन्द्रगच्छ) का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान था। अब से लगभग ४०० वर्ष पूर्व तक विद्यमान इस गच्छ की उत्पत्ति कोटिक गण के नाइल (नागिल्य – नागेन्द्र) शाखा से हुई, ऐसा माना जाता है। **पर्यूषणाकल्प**[१] की 'स्थविरावली'[२] (जिसका प्रारम्भिक भाग ई० सन् १०० के बाद का माना जाता है) के अनुसार आर्यवज्र के प्रशिष्य और आर्य वज्रसेन के शिष्य आर्य नाइल से नाइली शाखा का उद्भव हुआ[३]। देववाचककृत **नन्दीसूत्र** की 'स्थविरावली' (रचनाकाल प्रायः ई० सन् ४५०)[४] में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है तथापि वहाँ इसे नाइलकुल कहा गया है।[५] ऐसा मालूम होता है कि पाँचवी-छठीं शताब्दी से कुछ शाखाएँ कुल कहलाने लगी थीं और गुप्तयुग के पश्चात् तथा मध्ययुग के प्रारम्भपूर्व तथा मध्युग की शुरुआत में नागेन्द्रकुलरूपेण ही उल्लेख प्राप्त होता है और इससे सम्बद्ध साक्ष्य मिलने लगते हैं।

नन्दीसूत्र की 'स्थविरावली' में आर्य नागार्जुन (जिनकी अध्यक्षता में ई० सन् की चतुर्थ शताब्दी के तृतीय चरण में आगम ग्रन्थों के संकलन के लिये वलभी में वाचना हुई थी) और उनके शिष्य आर्य भूतदिन्न को नाइलकुल का बतलाया गया है[६]। आर्य नाइल के पश्चात् और आर्य नागार्जुन के पूर्व इस कुल में कौन-कौन से आचार्य हुए इस बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। ठीक यही बात आर्य भूतदिन्न के पट्टधर परम्परा के विषय में भी कही जा सकती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त साक्ष्यों के आधार पर नागेन्द्रकुल के प्रारम्भिक आचार्यों को निम्नलिखित क्रम में रखा जा सकता है –

आर्य वज्र

कल्पसूत्र 'स्थविरावली' |

आर्य वज्रसेन (ई० सन् की प्रथम शताब्दी)

|

आर्य नाइल (नागेन्द्र)

|

|

|

नन्दीसूत्र 'स्थविराली' |

|

आर्य नागार्जुन (ई० सन् की चौथी शताब्दी का तृतीय चरण)

|

|

आर्य भूतदिन्न (भूतदत्त)

नाइलकुल से सम्बद्ध अगला साक्ष्य गुप्तकाल का है। **पउमचरिय** (रचनाकाल प्रायः ई० सन् ४७३) के रचयिता विमलसूरि भी इसी कुल के थे[७]। ग्रन्थ की प्रशस्ति में उन्होंने न केवल अपने कुल बल्कि अपने गुरु और प्रगुरु का भी नामोल्लेख किया है[८] –

आर्य राहु

|

आर्य विजय

|

विमलसूरि (प्रायः ई० सन् ४७३ में '**पउमचरिय**' के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्य नागार्जुन और आर्य भूतदिन्न से सम्बद्ध नाइलकुल की परम्परा तथा विमलसूरि द्वारा उल्लिखित इस कुल की गुरु-परम्परा के बीच क्या सम्बन्ध था, यह अस्पष्ट ही है। इसी प्रकार विमलसूरि के अनुगामियों के बारे में भी कोई जानकारी नहीं मिलती।

उक्त सभी साक्ष्यों के पश्चात् इस कुल से सम्बद्ध जो साक्ष्य मिलते हैं वे इनसे २०० साल बाद के हैं। ये गुजरात में अकोटा से प्राप्त दो मितिविहीन धातुप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।[९] इनमें से प्रथम प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख में नागेन्द्रकुल के सिद्धमहत्तर की शिष्या आर्यिका खम्बलिया का नाम मिलता है। डॉ० उमाकान्त शाह ने प्रतिमा के लक्षण और उस पर उत्कीर्ण लेख की लिपि के आधार पर उसे ई० सन् की सातवीं शताब्दी का बतलाया है।[१०] द्वितीय प्रतिमा पर नागेन्द्रकुल के ही एक श्रावक सिंहण का नाम मिलता है।[११] शाह ने इस लेख को भी सातवीं शताब्दी के आस-पास का ही दर्शाया है।[१२]

सातवीं शताब्दी तक इस कुल के आचार्यों को श्वेताम्बर श्रमणसंघ में अग्रगण्य स्थान प्राप्त हो चुका था। इसी कारण उस युग की एक महत्त्वपूर्ण रचना **व्यवहारचूर्णी** में उनके मन्तव्यों को स्थान प्राप्त हुआ।[१३]

आठवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में इस कुल से सम्बद्ध दो साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं। **जम्बूचरियं** और **रिसिदत्ताचरिय** के रचनाकार गुणपाल नागेन्द्रकुल से ही सम्बद्ध थे। **रिसिदत्ताचरिय** की प्रशस्ति के अनुसार गुणपाल के प्रगुरु का नाम वीरभद्र था, जो नाइलकुल के थे। उक्त प्रशस्ति में यह भी कहा गया है कि उक्त ग्रन्थ हाइकपुर में वर्षावास के समय पूर्ण किया गया।[१४] **जम्बूचरियं** की प्रशस्ति में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा के बारे में कुछ विस्तृत जानकारी दी है जिसके अनुसार नाइलकुल में प्रद्युम्नसूरि (प्रथम) नामक आचार्य हुए। उनके शिष्य का नाम वीरभद्र था। वीरभद्र के शिष्य प्रद्युम्नसूरि (द्वितीय) हुए। **जम्बूचरियं** के रचनाकार गुणपाल इन्हीं के शिष्य थे।[१५]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवलयमालाकहा (रचनाकाल शक सं० ७०० / ई० सन् ७७८) के कर्ता उद्योतनसूरि ने अपनी उक्त कृति की प्रशस्ति में अपने सिद्धान्तगुरु के रूप में किन्हीं वीरभद्रसूरि का उल्लेख किया है[१६] जिन्हें समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर गुणपालकथित वीरभद्रसूरि से समीकृत किया जा सकता है[१७] –

प्रद्युम्नसूरि (प्रथम)
|
वीरभद्रसूरि
|
प्रद्युम्नसूरि (द्वितीय) | उद्योतनसूरि (ई० सन् ७७८ में **कुवलयमलाकहा** के रचनाकार)
|
गुणपाल (**रिसिदत्ताचरिय** एवं **जम्बूचरियं** के रचनाकार)

नागेन्द्रकुल से सम्बद्ध अगला साक्ष्य ईस्वी सन् की १०वीं शताब्दी के तृतीय चरण का है। जम्बूमुनि द्वारा रचित **जिनशतक** की पंजिका (रचनाकाल वि० सं० १०२५/ ई० सन् ९६९) के रचनाकार साम्बमुनि इसी कुल के थे।[१८] भृगुकच्छ से प्राप्त शक संवत् ४१०/ ई० सन् ४८८ की पीतल की एक त्रितीर्थी जिनप्रतिमा पर नागेन्द्रकुल के पार्श्विलगणि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में उल्लेख मिलता है। वहीं उक्त मुनि के गुरु और प्रगुरु का भी नाम दिया गया है[१९] –

१. आसीन्नागांद्रकुल लक्ष्मणसूरिर्नितांतसांत

२. मतिः ॥ तद्गाच्छे गुरुतरुयन्नाम्नासीत् सीलरुद्रगणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. : । सिष्येण मूलवसातो जिनत्रयमकार्य्यत ॥ भृगु

४. कच्छे तदीयन पार्श्विवल्लगणिना वरं ॥ सकसं

५. वत् ॥ ४१० ॥

उक्त उत्कीर्ण लेख में तालव्य **श** के स्थान पर दन्त्य **स** का प्रयोग हुआ है। इसे कुछ सुधार के साथ आधुनिक पद्धति से निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है[20] —

आसीन्नागेन्द्रकुले लक्ष्मणसूरिर्नितान्तशान्तमतिः ।

तद्गच्छे गुरुतरुयन् नाम्नाऽऽसीत् शीलरु(भ) द्रगणिः ॥

शिष्येण मूलवसतौ जिनत्रयमकार्यत ।

भृगुकच्छे तदीयेन पार्श्विवल्लगणिना वरम् ॥

शक संवत् ९१०

लक्ष्मणसूरि
|
शीलभद्रगणि
|
पार्श्विवल्लगणि (शक सं० ४१०/ई० सन् ४८८ में त्रितीर्थी जिनप्रतिमा के प्रतिष्ठापक)

पार्श्विलगणि के प्रगुरु लक्ष्मणसूरि ई० सन् की १०वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में विद्यमान माने जा सकते हैं।

ईस्वी सन् की ११वीं शताब्दी से इस कुल के बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त होने लगते हैं। इस शताब्दी के पाँच प्रतिमालेखों में इस कुल का नाम मिलता है। वि० सं० १०८६/ ई० सन् १०३०[21] और वि० सं० १०९३/ई० सन् १०३७[22] के दो धातु प्रतिमा लेखों में नागेन्द्रकुल और इससे उद्भूत सिद्धसेनदिवाकरगच्छ का उल्लेख है। राधनपुर से प्राप्त वि० सं० १०४१/ई० सन् १०३५ की धातुप्रतिमा पर भी नागेन्द्रकुल (भ्रमवश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढ़ा गया पाठ कानेन्द्रकुल) का उल्लेख मिलता है।[२३] ओसियां से प्राप्त वि० सं० १०८८/ ई० सन् १०३२ के एक प्रतिमालेख में सर्वप्रथम नागेन्द्रकुल के स्थान पर नागेन्द्रगच्छ का नाम मिलता है।[२४] इस लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य वासुदेवसूरि को नागेन्द्रगच्छीय बतलाया गया है। महावीर जिनालय, जूनागढ़ से प्राप्त अम्बिका की एक प्रतिमा (वि० सं० १०४२/ ई० स० १०३६) पर भी इस कुल का उल्लेख हुआ है।[२५] समुद्रसूरि के शिष्य और **भुवनसुन्दरीकथा** (प्राकृतभाषामय, रचनाकाल शक सं० ९७५/ई० सन् १०५३) के रचनाकार विजयसिंहसूरि भी इसी कुल के थे।[२६]

महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल के पितृपक्ष के कुलगुरु और प्रसिद्ध आचार्य विजयसेनसूरि भी नागेन्द्रगच्छ के थे।[२७] उनके शिष्य उदयप्रभसूरि ने स्वरचित **धर्माभ्युदयमहाकाव्य**[२८] (रचनाकाल वि० सं० १२४० से पूर्व) की प्रशस्ति में अपने गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है जिसके अनुसार नागेन्द्रगच्छ में महेन्द्रसूरि नामक एक आचार्य हुए जो आगमों के महान् ज्ञाता और तर्कशास्त्र में पारंगत थे। उनके शिष्य शान्तिसूरि हुए जिन्होंने दिगम्बरों को शास्त्रार्थ में हराया। उनके आनन्दसूरि और अमरचन्द्रसूरि नामक दो शिष्य हुए। चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज (वि० सं० ११५०-११९८/ई० सन् १०९४-११४२) ने उन्हें 'व्याघ्र शिशुक' और 'सिंह शिशुक' की उपाधि प्रदान की थी क्योंकि उन्होंने बाल्यावस्था में ही प्रतिवादियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। अमरचन्द्रसूरि के बारे में कहा जाता है कि इन्होंने **सिद्धान्तार्णव** की रचना की थी। इनके शिष्य हरिभद्रसूरि हुए जो अपने अमोघ देशना के कारण 'कलिकालगौतम' के नाम से विख्यात थे। हरिभद्रसूरि के शिष्य विजयसेनसूरि हुए जो महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल के पितृपक्ष के कुलगुरु थे। **धर्माभ्युदय-महाकाव्य** के रचनाकार उदयप्रभसूरि इन्हीं के शिष्य थे।[२९] वि० सं० १३०२/ ई० सन् १२४६ के एक प्रतिमालेख में विजयसेनसूरि के एक अन्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिष्य यशो (देव) सूरि का भी उल्लेख मिलता है।[३०] **पुरातनप्रबन्धसंग्रह** (रचनाकाल ई० सन् की १५वीं शताब्दी) के अन्तर्गत एक प्रशस्ति के अनुसार उदयप्रभसूरि के शिष्य जिनभद्रसूरि ने वि० सं० १२९०/ई० सन् १२३४ में **नानाकथानकप्रबन्धावली** की रचना की।[३१]

?

महेन्द्रसूरि

|

शान्तिसूरि

|

आनन्दसूरि (व्याघ्र शिशुक) — अमरचन्द्रसूरि (सिंह शिशुक)

अमरचन्द्रसूरि (सिंह शिशुक)

|

हरिभद्रसूरि (कलिकालगौतम)

|

विजयसेनसूरि (महामात्य वस्तुपाल के गुरु)

|

यशो(देव)सूरि (वि० सं० १३०२) प्रतिमालेख — उदयप्रभसूरि (**धर्माभ्युदयमहाकाव्य** तथा अनेक कृतियों के रचनाकार)

उदयप्रभसूरि

|

जिनभद्रसूरि (वि० सं० १२८०/ ई० सन् १२३४ में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नानाकथानकप्रबन्धावली

के रचनाकार)

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा नागेन्द्रगच्छ की एक दूसरी शाखा का भी पता चलता है। **चन्द्रप्रभचरित**[३२] (रचनाकाल वि० सं० १२६४/ई० सन् १२०८) के रचनाकार देवेन्द्रसूरि और **वासुपूज्य-चरित**[३३] (रचनाकाल वि० सं० १२४४/ई० सन् १२४३) के रचनाकार वर्द्धमानसूरि ने उक्त कृतियों की प्रशस्तियों में नागेन्द्रगच्छ, जिससे वे सम्बद्ध थे, अपनी विस्तृत गुरु-परम्परा दी है जो इस प्रकार है –

वीरसूरि
|
वर्धमानसूरि
|
रामचन्द्रसूरि
|
चन्द्रसूरि
|
देवसूरि
|
अभयदेवसूरि
|
धनेश्वरसूरि
|
├── विजयसिंहसूरि
│ |
│ |
│ |
└── देवेन्द्रसूरि
    (वि० सं० १२६४ /
    ई० सन् १२०८ में
    चन्द्रप्रभचरित के रचनाकार)

वर्धमानसूरि (द्वितीय)
(वि० सं० १२९९/
ई० सन् १२४३ में
वासुपूज्यचरित के रचनाकार)

अजाहरा पार्श्वनाथ जिनालय के निकट से कुछ साल पूर्व धातु की कुछ भूमिगत जिन-प्रतिमायें प्राप्त हुई थीं। इस संग्रह में शीतलनाथ की भी एक सलेख प्रतिमा है, जिस पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार नागेन्द्रगच्छीय विजयसिंहसूरि के शिष्य वर्धमानसूरि ने वि० सं० १३०५/ई० सन् १२४४ में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा की थी। श्री शिवनारायण पाण्डेय ने इस प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख की वाचना दी है[३४] जिसे प्राध्यापक मधुसूदन ढांकी ने संशोधन के साथ प्रस्तुत किया है[३५] जो इस प्रकार है –

संवत् १३०५ ज्येष्ठ वदि ८ शने श्री प्राग्वाटान्वये विवरदेव मंत्रिणी महाणु श्रेयोऽर्थं सुत मण्डलिकेन श्री शीतलनाथ बिबं कारितं श्री**नागेन्द्र-गच्छे श्रीवीरसूरि**संताने श्री**विजयसिंहसूरिशिष्यैः** श्रीवर्धमानसूरिभिः प्र(ति)ष्ठितम्॥

ये वर्धमानसूरि **वासुपूज्यचरित** के कर्ता से अनन्य मालूम होते हैं।

वासुपूज्यचरित की प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी गुर्वावली के साथ-साथ अपने एक शिष्य उदयप्रभसूरि का भी नाम दिया है।[३६] वि० सं० १३३०/ई० सन् १२७४ के गिरनार के लेख में भी किन्हीं उदयप्रभसूरि का नाम मिलता है।[३७] यद्यपि इस लेख में उक्त सूरि के गच्छ, गुरु आदि के नाम का उल्लेख नहीं है किन्तु इस काल में नागेन्द्रगच्छ को छोड़कर किसी अन्य गच्छ में उक्त नाम के कोई अन्य मुनि नहीं हुए हैं। अतः इन्हें समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर नागेन्द्रगच्छीय वर्धमानसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि से अभिन्न माना जा सकता है।[३८]

इसी प्रकार वि० सं० १३३८/ई० सन् १२८२ में प्रतिष्ठापित और वर्तमान में मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा में संरक्षित धातु की एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौबीसी जिन-प्रतिमा[३९] पर उत्कीर्ण लेख में उल्लिखित प्रतिमा प्रतिष्ठापक नागेन्द्रगच्छीय महेन्द्रसूरि के गुरु उदयप्रभसूरि समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर पूर्वोक्त वर्धमानसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं। **स्याद्वादमंजरी** (रचनाकाल वि० सं० १३४८/ई० सन् १२४२) के कर्ता मल्लिषेणसूरि ने भी अपने गुरु का नाम नागेन्द्रगच्छीय उदयप्रभसूरि बतलाया है[४०] जिन्हें प्रायः सभी विद्वान् वस्तुपाल-तेजपाल के गुरु विजयसेनसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि से अभिन्न मानते हैं[४१] किन्तु प्राध्यापक ढांकी ने सटीक प्रमाणों के आधार पर मल्लिषेणसूरि को उपरोक्त वर्धमानसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि से भिन्न सिद्ध किया है।[४२] इस प्रकार उक्त उदयप्रभसूरि के दो शिष्यों का भी पता चलता है। साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर नागेन्द्रगच्छ के इस शाखा की गुरु-शिष्य परम्परा की एक तालिका संगठित की जा सकती है, जो इस प्रकार है –

वीरसूरि
|
वर्धमानसूरि (प्रथम)
|
रामसूरि
|
चन्द्रसूरि
|
देवसूरी
|
अभयदेवसूरि
|
धनेश्वरसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसिंहसूरि

देवेन्द्रसूरि
(वि० सं० १२६४/ई० सन् १२०८ में **चन्द्रप्रभचरित** के रचनाकार)

वर्धमानसूरि (द्वितीय)
(वि० सं० १२४४/
ई० सन् १२४३ में
वासुपूज्यचरित
के रचनाकार,
वि० सं० १३०५/
ई० सन् १२४३ में
शीतलनाथ की
प्रतिमा के प्रतिष्ठापक)

उदयप्रभसूरि (**वासूपूज्यचरित** की प्रशस्ति तथा वि० सं० १३३०/ई० सन् १२७४ के गिरनार के अभिलेख में उल्लिखित)

महेन्द्रसूरि
(वि० सं० १३३८/
ई० सन् १२८२
में चौबीसी

मल्लिषेणसूरि
(वि० सं० १३४८/
ई० सन् १२४२ में
स्याद्वादमंजरी के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनप्रतिमा के
प्रतिष्ठापक)

नागेन्द्रगच्छ की उपरोक्त उपशाखा और महामात्य वस्तुपाल के गुरु विजयसेनसूरि और उनके शिष्य उदयप्रभसूरि से सम्बद्ध नागेन्द्रगच्छ की उपशाखा के बीच परस्पर क्या सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं होता।

साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा इस गच्छ की एक तीसरी उपशाखा का भी पता चलता है। मुनि धर्मकुमार द्वारा रचित **शालिभद्रचरित्र** (रचनाकाल वि० सं० १३३४/ई० सन् १२७८) की प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है[४३], जो इस प्रकार है –

?
|
हेमप्रभसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
सोमप्रभसूरि
|
विबुधप्रभसूरि
|
मुनिधर्मकुमार (वि० सं० १३३४/ ई० सन् १२७८ में **शालिभद्रचरित्र** के रचनाकार)

यह उपशाखा भी १२वीं-१३वीं शताब्दी में विद्यमान थी, परन्तु उसका सम्बन्ध पूर्वकथित दो अन्य उपशाखाओं से क्या रहा, इसका पता नहीं चलता।

प्रबन्धचिन्तामणि[४४] (रचनाकाल वि० सं० १३६१/ई० सन् १३०५) के रचनाकार मेरुत्तुंगसूरि भी इसी गच्छ के थे। ग्रन्थ की प्रशस्ति में उन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपने गच्छ, ग्रन्थ के रचनाकाल के साथ-साथ अपने गुरु चन्द्रप्रभसूरि का भी उल्लेख किया है।[४५] लेकिन इसके अतिरिक्त अपने गच्छ की परम्परा के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है।

उत्तरमध्यकाल में भी इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है –

गुणदेवसूरि के शिष्य गुणरत्नसूरि द्वारा मरु-गुर्जर भाषा में रचित **ऋषभरास** और **भरतबाहुबलिरास** ये दो कृतियाँ मिलती हैं।[४६] गुणरत्नसूरि के शिष्य सोमरत्नसूरि ने वि० सं० १५२० के आस-पास **कामदेवरास** की रचना की।[४७] इसी प्रकार गुणदेवसूरि के एक अन्य शिष्य ज्ञानसागर द्वारा वि० सं० १५२३/ई० सन् १४६७ में **जीवभवस्थितिरास** और वि० सं० १५३१/ई० सन् १४७५ में **सिद्धचक्रश्रीपालचौपाई** की रचना की गयी।[४८]

गुणदेवसूरि

|

गुणरत्नसूरि (**ऋषभरास** एवं **भरतबाहुबलिरास** के रचनाकार)

|

सोमरत्नसूरि (वि० सं० १५२० के आसपास **कामदेवरास** के कर्ता)

ज्ञानसागर (वि० सं० १५२३ में **जीवभवस्थितिरास** एवं वि० सं० १५३१ में **सिद्धचक्रश्रीपाल-चौपाई** के कर्ता)

अकोटा से प्राप्त धातु की दो जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख को नागेन्द्रकुल का पुरातन अभिलेखीय साक्ष्य माना जा सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डॉ० उमाकान्त शाह ने इनकी वाचना दी है[४१] जो निम्नानुसार है –

१. ॐ नागेन्द्र कुले सिद्धमहत्तर

२. सिष्यायाः खंभिल्यार्जिकायाः

यह लेख पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।

द्वितीय लेख तीर्थंकर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इसका मूलपाठ निम्नानुसार है –

१. ॐ देवधर्मोयं नागेन्द्र

२. कुलिकस्य।। सिहणो श्रा

३. वकस्य ०॥

इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में सलेख जिनप्रतिमायें प्राप्त होती हैं जो वि० सं० १०८८ से वि० सं० १५८३ तक की हैं। इनके अतिरिक्त वि० सं० १६१७ और वि० सं० १७१५ की एक-एक जिन प्रतिमाओं पर भी इस गच्छ का उल्लेख मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१०८८	फाल्गुन वदि ४	वासुदेवसूरि	–	जैनमन्दिर, ओसिया	पूरनचन्द नाहर, संपा०, **जैनलेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक ७९२ एवं अम्बालाल पी० शाह, **जैनतीर्थ-सर्वसंग्रह**, भाग १, खण्ड १, पृ० १७४
२.	१०९१	–	–	पार्श्वनाथ की त्रितीर्थी धातु-प्रतिमा का खंडित लेख	शामला पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा०, **रा० प्र० ले० सं०**, लेखांक २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३.	१०९२	—	—	अम्बिका की धातुप्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, जूनागढ़	लक्ष्मण भोजक, 'जूनागढनी अम्बिकानी धातुप्रतिमानो लेख' *Aspects of Jainology*, Vol. II, Gujarati Section, P. १७९
४.	११६१	माघ ११	विजयतुंगसूरि	पंचतीर्थी जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुविधिनाथ जिनालय, घोघा, काठियावाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१२०१	—	मानतुंगाचार्य- संतानीय	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, झुंडाल	बुद्धिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमा-लेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७७४
६.	१२४०	—	विजयदेवसूरि- संतानीय	अरिष्टनेमि की धातुप्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय तंबोलीशेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २२
७.	१२४७	वैशाख	विजयसिंहसूरि	चौबीसी जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २१७६
८.	१२६२	ज्येष्ठ सुदि १० शनिवार	वर्धमानसूरि	चतुर्विंशतिपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, करेड़ा	वही, भाग २, लेखांक १४२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१२८७	फाल्गुन वदि ३ रविवार	विजयसेनसूरि	प्रशस्ति लेख	लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा०, **अर्बुद-प्राचीनजैन-लेखसंदोह**, लेखांक २५०
१०.	१२८७	"	महेन्द्रसूरि संतानीय शान्तिसूरि के शिष्य आनन्दसूरि के शिष्य हरिभद्रसूरि के शिष्य विजयसेनसूरि	प्रशस्ति लेख	वही	वही, लेखांक २५१ एवं जिनविजय, संपा०, **प्राचीन-जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११.	१२८८	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	"	"	नेमिनाथ प्रासाद गिरनार	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३८-४२
१२.	१२८८	"	उदयप्रभसूरि	"	"	वही, लेखांक ४३
१३.	१२९३	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	विजयसेनसूरि	देवकुलिका का लेख, लूणवसही	लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३२५
१४.	१२९३	"	"	"	"	वही, लेखांक २८४
१५.	१२९३	वैशाख सुदि १५ शनिवार	"	नेमिनाथ की देवकुलिका का लेख	"	वही, लेखांक ३१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१२९३	"	"	पार्श्वनाथ की देवकुलिका का लेख	"	वही, लेखांक २७
१७.	१२९३	मार्ग (मार्गशीर्ष ?) सुदि १०	"	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ३५३
१८.	१२९५	वैशाख सुदि १२	"	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठा-लेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५८
१९.	१२९६	वैशाख सुदि ३	"	आदिनाथ देवकुलिका, नन्दीश्वर चैत्य	नन्दीश्वर चैत्य, लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१२९८	भाद्रपद सुदि १ गुरुवार	विजयसिंहसूरि के श्रावक	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पोसीना पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४८३
२१.	१२९८	फाल्गुन वदि १४ रविवार	विजयसेनसूरि	शिलालेख	जैन मन्दिर, शत्रुंजय (वर्तमान में लेख का पता नहीं चलता)	U. P. Shah "A Documentary Epigraph From the Mount Shatrunjaya" *Journal of Asiatic Society of Bombay*, Vol. 30, Part1, Bombay

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						1955, A. D. pp. 100-113.
२२.	१३०२	वैशाख सुदि १०	विजयसेनसूरि के शिष्य यशो(?) सूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पोसीना पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४७६
२३.	१३०५	ज्येष्ठ वदि ८ शनिवार	वीरसूरि के संतानीय विजयसिंहसूरि के शिष्य वर्धमानसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	अजाहरा पार्श्वनाथ जिनालय के निकट भूमि से प्राप्त प्रतिमा	शिवनारायण पाण्डेय, "श्री अजाहरा पार्श्वनाथ जैन तीर्थथी मणी आवेला अमुक शिल्पो", स्वाध्याय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						जिल्द ७, अंक १, पृ० ४५-४७
२४.	१३०५	ज्येष्ठ सुदि ७	विजयसेनसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७८८
२५.	१३१४	वैशाख वदि १३	पजूनसूरि के संतानीय श्रावक	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८२३
२६.	१३३०	वैशाख सुदि १५	उदयप्रभसूरि	प्रशस्तिलेख	नेमिनाथ जिनालय, गिरनार	आचार्य गिरजाशंकर वल्लभजी, संपा०, **गुजरातना ऐतिहासिक लेखो**, भाग ३, पृ० २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२७.	१३३८	ज्येष्ठ सुदि १२ बुधवार	उदयप्रभसूरि के शिष्य महेन्द्रसूरि	धातु की चौबीसी जिनप्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ देरासर, पटोलिया पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९४
२८.	१३४९	ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार	गुणसेनसूरि संतानीय आचार्य श्री जिन......?	शारदा की पाषाण मूर्ति का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७६०
२९.	१३६१	—	—	—	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२४३
२९A	१३६६	वैशाख वदि ८	भुवनानन्दसूरि के पट्टधर पद्मचन्द्रसूरि	धातु की चौबीसी जिनप्रतिमा का लेख	वासुपूज्य चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, संपा०, **श्रीप्रतिमा-लेखसंग्रह**, लेखांक ५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३०.	१३८२	वैशाख वदि ८ गुरुवार	पद्मचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५५२
३१.	१३८५	ज्येष्ठ वदि ४ बुधवार	श्रीवेगाणंदसूरि	सुमतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ धातु प्रतिमा, चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपा०, **बीकानेर-जैनलेखसंग्रह**, लेखांक ३०८
३२.	१३८७	माघ सुदि ५ सोमवार	हेमचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलिया पोल, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६७
३३.	१३९४	तिथि विहीन	देवेन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	कुँआ वाला देरासर ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३४.	१४०२	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	विनयप्रभसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमन्दिर अहमदाबाद	विजयधर्मसूरि, संपा०, **प्राचीन-लेखसंग्रह**, लेखांक ६८
३५.	१४०५	वैशाख सुदि ५	रतनागरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०४८
३६.	१४०५	ज्येष्ठ सुदि ३	श्रीर.....लसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	बड़ा मन्दिर, कनासा पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४६
३७.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	नागेन्द्रसूरि के शिष्य गुणाकरसूरि	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ धातुप्रतिमा, चिन्तामणिजी का मन्दिर,बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४१६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३८.	१४१०	वैशाख सुदि. ... शुक्रवार	गुणाकरसूरि	—	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२६६
३९.	१४१४	वैशाख सुदि ११ शुक्रवार	कमलप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५७३
४०.	१४१५	तिथि विहीन	पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि	पंचतीर्थी जिन प्रतिमा का लेख	चौसठियाजी का मन्दिर, नागौर	विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठा-लेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १५१
४१.	१४१४	फाल्गुन वदि ३ बुधवार	नागेन्द्रसूरि के शिष्य गुणाकरसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, रीच रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४२.	१४२१	वैशाख वदि ५ शनिवार	गुणाकरसूरि	"	"	वही, भाग १, लेखांक ९७५
४३.	१४२१	वैशाख सुदि ५ शनिवार	"	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ६
४४.	१४२१	तिथि विहीन	"	वासुपूज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कान्तिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, लेखांक ४१
४५.	१४२२	वैशाख सुदि ११ बुधवार	रत्नप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४६.	१४३३	वैशाख सुदि ९	गुणाकरसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, देरापोल, बाबाजीपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१२
४७.	१४३६	वैशाख सुदि ३ रविवार	"	पद्मप्रभ की धातु प्रतिमा का लेख	सींमधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११८६
४८.	१४३७	वैशाख वदि ११ सोमवार	रत्नप्रभसूरि के उपदेश में प्रतिमा की प्रतिष्ठा	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी जिन प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मन्दिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११३६
४९.	१४३७	माघ सुदि २	पजूनसूरि	"	बड़ा जैन मन्दिर, कनासा पाड़ो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५०.	१४४१	फाल्गुन सुदि १० सोमवार	गुणाकरसूरि	"	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १६७
५१.	१४४६	वैशाख वदि ३ सोमवार	रत्नप्रभसूरि	अजितनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	प्रेमचन्द मोदी की टोंक, शत्रुंजय	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६८९
५२.	१४४७	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	रत्नाकरसूरि के पट्टधर रत्नप्रभसूरि	पद्मप्रभ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बडा जैन मंदिर, कनासानो पाडा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५९
५३.	१४४९	वैशाख सुदि ३ सोमवार	उदयदेवसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ धातुप्रतिमा, चिन्तामणिजी का	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११२४ एवं विजयधर्मसूरि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
					मन्दिर, बीकानेर	पूर्वोक्त, लेखांक ९२
५४.	१४५०	मार्गसिर वदि ६ रविवार	रत्नसिंहसूरि के पट्टधर देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०५८
५५.	१४५०	फाल्गुन वदि २	रत्नशेष(सिंह)सूरि के पट्टधर देवप्रभसूरि	"	"	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ९३
५६.	१४५२	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	उदयदेवसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	घरदेरासर, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५७.	१४५३	वैशाख सुदि ५ सोमवार	"	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, डोसी पोल, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ८५
५८.	१४५६	ज्येष्ठ सुदि ७ सोमवार	रत्नसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुम्भारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६५२
५९.	१४५७	वैशाख सुदि १३ शनिवार	रत्नप्रभसूरि	"	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ५२
६०.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	शान्तिसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	प्राचीन जैन मंदिर, लिंबडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६१.	१४६५	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	रत्नसिंहसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १८३
६२.	१४६६	तिथि विहीन	सिंहसूरि	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ५७
६३.	१४७२	ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार	रत्नसिंहसूरि	शान्तिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	मोटीपावड चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ३६९
६४.	१४७४	माघ सुदि ७ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६५.	१४८३	वैशाख सुदि ३ शनिवार	गुणसागरसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का मन्दिर, खारवाडो, खंभात	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०५६
६६.	१४८३	तिथि विहीन	रत्नप्रभसूरि के पट्टधर सह(सिंह)दत्तसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	घरदेरासर, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५२१
६७.	१४८४	ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवार	पद्माणंदसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १०७३
६८.	१४८५	वैशाख सुदि ६ रविवार	गुणसागरसूरि	वासुपुज्य की धातुप्रतिमा का लेख	जैनमन्दिर, सादरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६९.	१४८६	वैशाख सुदि १० बुधवार	पद्माणंदसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १३७
७०.	१४८६	ज्येष्ठ सुदि १२ शनिवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मन्दिर, कातरग्राम	वही, लेखाक १४५
७१.	१४९२	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	गुणसागरसूरि के पट्टधर गुणसमुद्रसूरि	सुविधिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५
७२.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	पद्माणंदसूरि	"	चौमुख शान्तिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७३.	१४९७	"	"	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५५८
७४.	१४९९	माघ वदि ५ रविवार	"	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ४३४
७५.	१४९९	माघ सुदि १० शुक्रवार	"	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३२७
७६.	१४९९	तिथि विहीन	गुणसमुद्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७७.	१५०१	पौष वदि ६ शुक्रवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर विनयप्रभसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ४६
७८.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ७ सोमवार	गुणसागरसूरि के शिष्य गुणसमुद्रसूरि	मुनिसुव्रत की पंचर्तीथी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३६६
७९.	१५०५	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ जिनप्रतिमा, चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८८९
८०.	१५०५	आषाढ़ सुदि ६ रविवार	"	शान्तिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १२५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८१.	१५०५	पौष सुदि ७ गुरुवार	"	शीतलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गौड़ीजी की खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १४६
८२.	१५०५	पौष वदि ७ गुरुवार	"	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ जिनप्रतिमा, चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८४१
८३.	१५०५	माघ सुदि १० रविवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर विनयप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११४४
८४.	१५०७	माघ सुदि १० सोमवार	"	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८५.	१५०७	माघ सुदि ११	गुणसमुद्रसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २२७
८६.	१५१०	फाल्गुन वदि १० शुक्रवार	"	"	जैन मन्दिर, सूरत	वही, लेखांक २६२
८७.	१५१०	फाल्गुन सुदि ३ गुरुवार	"	कुंथुनाथ की चौबीसीप्रतिमा का लेख	लुआणा चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ३६५
८८.	१५११	कार्तिक वदि ५ रविवार	विज(न)यप्रभसूरि	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८९.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	विनयप्रभसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	धर्मनाथ, जिनालय, डभोई	वही, भाग १, लेखांक ५५
९०.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर विनयप्रभसूरि	सुविधिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २८३
९१.	१५१३	"	"	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११०३
९२.	१५१३	"	"	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	"	वही, भाग १, लेखांक ४११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९३.	१५१३	माघ सुदि ५ रविवार	गुणसमुद्रसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८३३
९४.	१५१४	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	गुणसागरसूरि के पट्टधर गुणसमुद्रसूरि	पद्मप्रभ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २४६
९५.	१५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	विनयप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, चेलपुरी, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८१
९६.	१५१६	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	"	सुविधिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९७.	१५१७	फाल्गुन सुदि ६ गुरुवार	गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर गुणदेवसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चीराखाना, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५१०
९८.	१५१८	ज्येष्ठ सुदि २ शनिवार	गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर श्री... ...(?)	अभिनन्दनस्वामी की धातु की चौबीसी	जैन देरासर, पामोल	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४७
९९.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	गुणसमुद्रसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३३४
१००.	१५१९	ज्येष्ठ वदि २ सोमवार	गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर गुणदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०१.	१५१९	कार्तिक वदि १ सोमवार	गुणसमुद्रसूरि	अरनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मन्दिर, कातरग्राम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३२८
१०२.	१५२०	वैशाख वदि ५ शुक्रवार	गुणसमुद्रसूरि एवं सर्वसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१०३
१०३.	१५२०	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर गुणदेवसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२७२
१०४.	१५२०	माघ वदि ११ बुधवार	भवानन्दसूरि के शिष्य पद्मचन्द्रसूरि	महावीर स्वामी की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	वियधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०५.	१५२२	माघ सुदि ५ सोमवार	विनयप्रभसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १८
१०६.	१५२५	चैत्र वदि ३ गुरुवार	गुणदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४५
१०७.	१५२५	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	कमलचन्द्रसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	वही, लेखांक ३९९
१०८.	१५२५	आषाढ़ सुदि ३ सोमवार	गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर गुणदेवसूरि	जीवितस्वामी की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	वही, लेखांक ४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०९.	१५२५	माघ सुदि ५ गुरुवार	"	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८१६
११०.	१५२५	माघ सुदि ५ गुरुवार	"	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मन्दिर, माणसा	वही, भाग १, लेखांक ३९४
१११.	१५२७	वैशाख वदि ५ गुरुवार	"	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८७०
११२.	१५२७	पौष वदि ५ शुक्रवार	"	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ७०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११३.	१५२७	"	कमलचन्द्रसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, लिंबडीपाडा, पाटण	वही. भाग १, लेखांक २६०
११४.	१५२७	माघ वदि ५ गुरुवार	कमलचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	प्राचीन जैन मन्दिर, लिंबडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४०७
११५.	१५२७	माघ वदि ५ शुक्रवार	विनयप्रभसूरि एवं सोमरत्नसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ धातुप्रतिमा, चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०५३
११६.	१५२७	"	पद्माणंदसूरि के संतानीय	कुंथुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा	माणिकसागर जी का मन्दिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
			विजयप्रभसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	का लेख		लेखांक ६९६
११७.	१५२९	ज्येष्ठ सुदि ५ मंगलवार	कमलप्रभसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, साणंद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६२६
११८.	१५२९	माघ सुदि ५ रविवार	सोमरत्नसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	नौलखा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८१४
११९.	१५३१	वैशाख सुदि ३ शनिवार	कमलचन्द्रसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मन्दिर, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२०.	१५३१	"	"	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय माणेकचौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १००२
१२१.	१५३१	"	"	शीतलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीचौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८३१
१२२.	१५३१	मिति विहीन	पद्मचन्द्रसूरि	धातु की जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ५११
१२३.	१५३३	चैत्र वदि २ गुरुवार	विनयप्रभसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	कुंआ वाला देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२४.	१५३३	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	गुणदेवसूरि	सुविधिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मन्दिर, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक २१५
१२५.	१५३३	"	"	"	वासुदेव चैत्य, थराद	वही, लेखांक ३९
१२६.	१५३३	"	"	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय कसैरीगली, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १८९४
१२७.	१५३६	आषाढ़ सुदि २ रविवार	हेमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	मोतीशाह की टूंक, शत्रुंजय	मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२८.	१५४४	वैशाख वदि ५ गुरुवार	"	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४९१
१२९.	१५४६	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	सुणादेवसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८७३
१३०.	१५५५	माघ सुदि ९ सोमवार	हेमहंससूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८८३
१३१.	१५५८	कार्तिक वदि ५ रविवार	कमलचन्द्रसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय फूलवाली गली, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३२.	१५६०	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सोमरत्नसूरि के पट्टधर हेमसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीरचैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२
१३३.	१५६०	"	"	मुनिसुव्रत की धातुप्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, रीची रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९८८
१३४.	१५६३	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	श्रीरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग २, लेखांक ३७८
१३५.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	हेमहंससूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३६.	१५६८	वैशाख वदि ३ गुरुवार	हेमसिंहसूरि	सुमितनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९१८
१३७.	१५७०	वैशाख सुदि १३ मंगलवार	"	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५१५
१३८.	१५७०	माघ सुदि १३ बुधवार	"	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	गुलाबचंद ढढ्ढा का देरासर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२१३ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३९.	१५७१	वैशाख वदि १३ शुक्रवार	गुणरत्नसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लोद्रवा, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २५५१
१४०.	१५७१	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	महीरत्नसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	अरनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७७०
१४१.	१५७२	वैशाख वदि.. सोमवार	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणवर्धनसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २६९
१४२.	१५७२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	—	वासुपूज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मन्दिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४३.	१५७२	वैशाख सुदि १३ सोमवार	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणवर्धनसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	गांव का बड़ा जैन मन्दिर, पालिताना	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६७७
१४४.	१५७२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	—	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय नागौर	वही, भाग २, लेखांक १३०१
१४५.	१५७३	माघ वदि २ रविवार	हेमसिंहसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५६०
१४६.	१५८३	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	"	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, रीज रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९९५

नोट :- लेखांक १४१ और १४३ एक ही लेख प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार लेखांक १४२ और १४४ भी समान मालूम होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४७.	१६१७	ज्येष्ठ सुदि ५	ज्ञानसूरि	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीर चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक २७
१४८.	१७१५	तिथि विहीन	पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि	पंचतीर्थी जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहटा, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इस गच्छ के सम्बद्ध पूर्वमध्यकाल एवं मध्यकाल के पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य मिलते हैं। इनमें इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, परन्तु उनमें से कुछ के पूर्वापर सम्बन्ध ही स्थापित हो सके हैं, जो निम्नानुसार हैं :

भुवनान्दसूरि के पट्टधर पद्मचन्द्रसूरि

वि० सं० १३६९ वैशाख वदि ८	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक ५८

पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि

वि० सं० १४१५	प्र० ले० सं०, लेखांक १५१

रत्नाकरसूरि के पट्टधर रत्नप्रभसूरि

वि० सं० १४२२ वैशाख सुदि ११ बुधवार	जै० ले० सं०, भाग २, लेखांक १०५३
वि० सं० १४४६ वैशाख वदि ३ सोमवार	वही, भाग १, लेखांक ६८९
वि० सं० १४४७ फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ३५९

रत्नप्रभसूरि के पट्टधर सिंहदत्तसूरि

वि० सं० १४६६	श० वै०, लेखांक ५७
वि० सं० १४७४ माघ सुदि ७ शुक्रवार	जै० ले० सं०, भाग २, लेखांक १०६५
वि० सं० १४८३	वही, भाग , लेखांक ५२१

उदयदेवसूरि

वि० सं० १४४९ वैशाख सुदि ३ सोमवार	वही, भाग २, लेखांक ११२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १४५३	वैशाख सुदि ५ सोमवार	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक ८५

उदयदेवसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि

वि० सं० १४८३	वैशाख सुदि ३ शनिवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २, लेखांक १०५६
वि० सं० १४८५	वैशाख सुदि ६ रविवार	वही, भाग १, लेखांक ६१०
वि० सं० १४८९	ज्येष्ठ सुदि १२ शनिवार	प्रा० लं० सं०, लेखांक १४५

गुणसागरसूरि के पट्टधर गुणसमुद्रसूरि

वि० सं० १४९२	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं. भाग १, लेखांक ५
वि० सं० १४९९	माघ सुदि ५ गुरुवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक १७५
वि० सं० १४९९	माघ सुदि १०	बी० जै० ले० सं०, लेखांक १३२७
वि० सं० १४९९	मितिविहीन	जै० लै० सं०. भाग २, लेखांक १३९८
वि० सं० १५०३	ज्येष्ठ सुदि ७ सोमवार	प्र० ले० सं०, लेखांक ३६६
वि० सं० १५०५	वैशाख सुदि ३ सोमवार	बी० जै० ले० सं०, लेखांक ८८९
वि० सं० १५०५	आषाढ सुदि ९ रविवार	वही, लेखांक १२५५
वि० सं० १५०५	पौष वदि ७ गुरुवार	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक १४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५०५ माघ सुदि ११ बुधवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक २२१
वि० सं० १५१० फाल्गुन वदि १० शुक्रवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक २६२
वि० सं० १५१० फाल्गुन वदि ३ गुरुवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक ३६५
वि० सं० १५१३ माघ सुदि ५ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ८३३
वि० सं० १५१४ वैशाख सुदि ५ गुरुवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक २९६
वि० सं० १५१९ वैशाख वदि ११ शुक्रवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ३३४
वि० सं० १५१९ कार्तिक वदि १ सोमवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ३२८

गुणसमुद्रसूरि के प्रथम पट्टधर गुणदत्तसूरि

वि० सं० १५२३ वैशाख सुदि ३ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक १०१८

गुणसमुद्रसूरि के द्वितीय पट्टधर गुणदेवसूरि

वि० सं० १५१७ फाल्गुन सुदि ९ गुरुवार	जै० ले० सं०, भाग १, लेखांक ५१०
वि० सं० १५१९ ज्येष्ठ वदि २ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० स०, भाग २, लेखांक ९५०
वि० सं० १५२० वैशाख सुदि ५ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक १२७२
वि० सं० १५२५ चैत्र वदि ३ गुरुवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ३९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५२५	आषाढ़ सुदि ३ सोमवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ४००
वि० सं०१५२५	माघ सुदि ५ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ८१६
वि० सं० १५२७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	वही, भाग २, लेखांक ८७०
वि० सं० १५२७	पौष वदि ५ शुक्रवार	वही, भाग १, लेखांक ७०३
वि० सं० १५३३	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक २१५
वि० सं० १५३५	वैशाख वदि ७ सोमवार	जै० ले० सं०, भाग ३, लेखांक २३५५

परमाणंदसूरि

वि० सं० १४८४	ज्येष्ठ सुदि ४ बुधवार	जै० ले० सं०, भाग २, लेखांक १०७३
वि० सं० १४८६	वैशाख सुदि १० बुधवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक १३७
वि० सं० १४९७	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ८९८
वि० सं० १४९९	माघ वदि ५ रविवार	वही, भाग २, लेखांक ९३८

परमाणंदसूरि के शिष्य विनयप्रभसूरि

वि० सं० १५०१	पौष वदि ६ शुक्रवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक ९६
वि० सं० १५०५	माघ सुदि १० रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ११९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५०७ माघ सुदि १० सोमवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक १९७
वि० सं० १५११ कार्तिक वदि ५ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ८२२
वि० सं० १५१२ ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	वही, भाग १, लेखांक ५५
वि० सं० १५१३ वैशाख वदि २ शुक्रवार	वही, भाग १, लेखांक १२२
वि० सं० १५१५ माघ सुदि १ शुक्रवार	जै० ले० सं०, भाग १, लेखांक ४८१
वि० सं० १५१७ फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २, लेखांक ९७०

विनयप्रभसूरि के शिष्य सोमरत्नसूरि

वि० सं० १५२७ माघ वदि ५ शुक्रवार	बी० जै० ले० सं०, लेखांक १०५३
वि० सं० १५२९ माघ सुदि ५ रविवार	जै० ले० सं०, भाग १, लेखांक ८१९

विनयप्रभसूरि के पट्टधर क्षेमरत्नसूरि

वि० सं० १५२७ माघ वदि ५ शुक्रवार	प्र० ले० सं०, लेखांक ६९६

सोमरत्नसूरि के शिष्य हेमसिंहसूरि

वि० सं० १५६० वैशाख सुदि ३ बुधवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक १२२
वि० सं० १५७० माघ सुदि १३ मंगलवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १, लेखांक ५१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५७३	माघ वदि ३ रविवार	बी० जै० ले० सं०, लेखांक १५६० भाग १, लेखांक ९९५
वि० सं० १५८३	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	जै० धा० द० ले० सं०, भाग १, लेखांक ४४५

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर नागेन्द्रगच्छीय मुनिजनों के गुरु-परम्परा की तीन अगल-अलग तालिकायें संगठित की जा सकती हैं, जो निम्नानुसार हैं :

तालिका : १

?
|
|
|
भुवनानन्दसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि (वि० सं० १३६९)
|
रत्नाकरसूरि (वि० सं० १४१५)
|
रत्नप्रभसूरि (वि० सं० १४२२-१४४७)
|
सिंहदत्तसूरि (वि० सं० १४६६-१४८३)

तालिका : २

?
|
|
उदयदेवसूरि (वि० सं० १४४९-१४५३)
|
गुणसागरसूरि (वि० सं० १४८३-१४८५-१४८९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
गुणसमुद्रसूरि (वि० सं० १४९२-१५१९)
|
गुणदत्तसूरि (वि० सं० १५२३) — गुणदेवसूरि (वि० सं० १५१७-१५३५)

तालिका : ३

?
|
|
पद्माणंदसूरि (वि० सं० १४८४-१४९९)
|
विनयप्रभसूरि (वि० सं० १५०१-१५१७)
|
क्षेमरत्नसूरि (वि० सं० १५२७) — सोमरत्नसूरि (वि० सं० १५२७-१५२९)
|
हेमसिंहसूरि (वि० सं० १५६०-१५८३)

जैसा कि इसी निबन्ध में साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत हम देख चुके हैं इस गच्छ के १६ वीं शताब्दी के तीन ग्रन्थकारों — गुणरत्नसूरि और ज्ञानसागरसूरि ने अपने गुरु तथा सोमरत्नसूरि ने प्रगुरु के रूप में गुणदेवसूरि का उल्लेख किया है। अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा निर्मित उपरोक्त तालिका — २ में भी गुणदेवसूरि का नाम मिलता है जिन्हें समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर एक ही व्यक्ति मान लेने में कोई बाधा नहीं दिखायी देती। इस प्रकार उक्त दोनों गुर्वावलियों के परस्पर समायोजन से १६वीं शती में इस गच्छ के मुनिजनों के एक शाखा की गुरु-शिष्य परम्परा का जो स्वरुप उभरता है, वह इस प्रकार है —

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका : ४

?
|
उदयदेवसूरि (वि० सं० १४४९-१४५३) प्रतिमालेख
|
गुणदेवसूरि (वि० सं० १४८३-१४८९) प्रतिमालेख
|
गुणसमुद्रसूरि (वि० सं० १४९२-१५१९) प्रतिमालेख
|
- गुणदत्तसूरि (वि० सं० १५२३) प्रतिमालेख
- गुणदेवसूरि (वि० सं० १५१७-१५३५) प्रतिमालेख
  - गुणरत्नसूरि (**ऋषभरास** (एवं **बाहुबलिरास** के रचनाकार)
    |
    |
    सोमरत्नसूरि (वि० सं० १५२० के आसपास **कामदेवरास** के रचनाकार)
  - ज्ञानसागरसूरि (वि० सं० १५२३ में **जीवभवस्थितिरास** एवं वि० सं० १५३१ में **सिद्धचक्रश्रीपालचौपाई** के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस गच्छ के प्रमुख ग्रन्थकारों का विवरण निम्नानुसार है :

गुणपाल

जैसा कि इसी निबन्ध के प्रारम्भिक पृष्ठों में हम देख चुके हैं ये वीरभद्रसूरि के प्रशिष्य और प्रद्युम्नसूरि 'द्वितीय' के शिष्य थे। इनके द्वारा रची गयी दो कृतियाँ मिलती हैं – **जंबूचरियं** और **रिसिदत्ताचरिय**, जो प्राकृत भाषा में हैं[५०]। **जंबूचरियं** में १६ उद्देश्य हैं[५१]। इसकी शैली पर हरिभद्रसूरि के **समराइच्चकहा** और उद्योतनसूरि के **कुवलयमालाकहा** (शक सं० ७००/ई० सन् ७७८) का प्रभाव बतलाया जाता है।[५२] इस ग्रन्थ में भगवान् महावीर के शिष्य जम्बूस्वामी का जीवनचरित्र वर्णित है। जम्बूस्वामी पर रची गयी कृतियों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। **रिसिदत्ताचरिय** की वर्तमान में दो प्रतियाँ मिलती हैं, एक पूना स्थित भण्डारकर प्राच्य विद्या संस्थान[५३] में और दूसरी जैसलमेर के ग्रन्थ भंडार[५४] में संरक्षित है, ऐसा मुनि जिनविजय जी ने उल्लेख किया है।

शाम्बमुनि

इन्होंने चन्द्रकुल के जम्बूनाग द्वारा रचित **जिनशतक** पर वि० सं० १०२५/ई० सन् ९६९ में **पंजिका** की रचना की[५५]। इनके गुरु-शिष्य परम्परा तथा उक्त कृति के अतिरिक्त किसी अन्य रचना के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती।

विजयसेनसूरि

मध्ययुग में नागेन्द्रगच्छ की प्रथम शाखा के आदिम आचार्य महेन्द्रसूरि की परम्परा में हुए हरिभद्रसूरि के शिष्य विजयसेनसूरि महामात्य वस्तुपाल के पितृपक्ष के कुलगुरु और प्रभावक जैनाचार्य थे। इन्हीं के उपदेश से वस्तुपाल और उसके भ्राता तेजपाल ने संघ यात्रायें कीं और नूतन जिनालयों के निर्माण के साथ साथ कुछ प्राचीन जिनालयों का जीर्णोद्धार भी कराया। वस्तुपाल द्वारा निर्मित उपलब्ध सभी जिनालयों में इन्हीं के करकमलों से जिन प्रतिमायें प्रतिष्ठापित की गयीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसेनसूरि अपने समय के उद्‌भट विद्वान् थे। इनके द्वारा रचित **रैवंतगिरिरास**[५६] नामक एकमात्र कृति मिलती है जो अपभ्रंश भाषा में है। यह वस्तुपाल की गिरनार यात्रा के समय रची गयी। इन्होंने चन्द्रगच्छीय आचार्य बालचन्द्रसूरि द्वारा रचित **विवेकमंजरीवृत्ति** (रचनाकाल वि० सं० की तेरहवीं शती का अंतिम चरण) का संशोधन किया।[५७] इसी गच्छ के प्रद्युम्नसूरि (**समरादित्यसंक्षेप** के रचनाकार) ने इनके पास न्यायशास्त्र का अध्ययन किया था।

यद्यपि विजयसेनसूरि द्वारा रचित केवल एक ही कृति मिलती है फिर भी सम्भव है कि इन्होंने कुछ अन्य रचनायें भी की होंगी, जो आज नहीं मिलतीं।

उदयप्रभसूरि

ये विजयसेनसूरि के शिष्य और पट्टधर थे। महामात्य वस्तुपाल ने इनके शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था की थी और इनके दीक्षा-प्रसंग पर बहुत द्रव्य व्यय किया था। इनके द्वारा रची गयी कई कृतियाँ मिलती हैं, जो निम्नानुसार हैं :[५८]

१. **सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी** (रचनाकाल वि० सं० १२७७/ई० स० १२२१)
२. **स्तम्भतीर्थस्थित आदिनाथ जिनालय की १९ श्लोकों की प्रशस्ति** (रचनाकाल वि० सं० १२८१/ई० स० १२२५)
३. **धर्माभ्युदयमहाकाव्य** अपरनाम **संघपतिचरित्र** (वि० सं० १२९०/ई० स० १२३४ से पूर्व)
४. **वस्तुपाल की गिरनार प्रशस्ति** (वि० सं० १२८८/ई० स० १२३२)
५. **उपदेशमालाटीका** (वि० सं० १२४४ ई०स०१२३२)
६. **आरम्भसिद्धि** (ज्योतिष ग्रन्थ)
७. **वस्तुपालस्तुति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके अतिरिक्त इन्होंने प्रद्युम्नसूरि द्वारा रचित **समरादित्यसंक्षेप** (रचनाकाल वि० सं० १३२४/ई० स० १२६८) का संशोधन भी किया। **सुकृतकीर्तिकल्लोकिनी**[५९] १७९ श्लोकों की लम्बी प्रशस्ति है जो शत्रुंजय के आदिनाथ जिनालय में किसी शिलापट्ट पर उत्कीर्ण कराने लिये रची गयी थी। इसमें चापोत्कट (चावड़ा) और चौलुक्य नरेशों के विवरण के अतिरिक्त वस्तुपाल के शौर्य, उसकी तीर्थयात्राओं के विवरण के साथ-साथ उसके वंशवृक्ष, उसके मंत्रित्त्वकाल एवं उसके परिवार की प्रशंसा की गयी है। रचना के अन्तिम भाग में ग्रन्थकार ने अपने गच्छ की लम्बी गुर्वावली देते हुए अपने गुरु विजयसेनसूरि के प्रति अत्यन्त आदरभाव प्रदर्शित किया है।

धर्माभ्युदयमहाकाव्य[६०] १५ सर्गों में विभाजित है। इसमें कुल ५०४१ श्लोक हैं। इस ग्रन्थ में वस्तुपाल द्वारा की गयी संघयात्राओं को प्रसंग बनाकर धर्म के अभ्युदय का सूचन करने वाली धार्मिक कथाओं का संग्रह है। इस कृति के भी अन्त में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका देते हुए अपने गुरु की प्रशंसा की है।[६१] यह वि० सं० १२९० से पूर्व रची गयी कृति मानी जाती है। इसकी वि० सं० १२९० की स्वयं महामात्य वस्तुपाल द्वारा लिपिबद्ध की गयी एक प्रति शान्तिनाथ ज्ञान भण्डार, खम्भात में संरक्षित है[६२]।

उदयप्रभसूरि ने वस्तुपाल द्वारा स्तम्भतीर्थ (खंभात) में निर्मित आदिनाथ जिनालय में उत्कीर्ण कराने हेतु **१९ श्लोकों** की एक **प्रशस्ति** की भी रचना की[६३]। इसका अन्तिम भाग गद्य में है। इसमें जिनालय के निर्माता और उसके कुलगुरु विजयसेनसूरि के विद्यावंशवृक्ष के अतिरिक्त अन्य कोई सूचना नहीं मिलती। इन्हीं के द्वारा रचित ३३ श्लोकों की **वस्तुपालस्तुति** नामक कृति भी मिलती है जो किसी घटना विशेष के अवसर पर या किसी सुकृति की स्मृति में रची गयी प्रतीत नहीं होती बल्कि भिन्न-भिन्न अवसरों पर वस्तुपाल की प्रशंसा में रचे गये पद्यों का संकलन है। उदयप्रभसूरि द्वारा रचित **५ श्लोकों** की एक अन्य **प्रशस्ति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भी मिलती है[६४] जिसमें आदिनाथ एवं नेमिनाथ के प्रति भक्तिभाव व्यक्त करते हुए वस्तुपाल की दानशीलता, धार्मिकता आदि की चर्चा के साथ उसके दीर्घायु होने की कामना की गयी है।

वस्तुपाल द्वारा धवलक्क में निर्मित उपाश्रय में प्रवास करते हुए उदयप्रभसूरि ने धर्मदासगणितकृत **उपदेशमाला** (रचनाकाल प्राय: ईस्वी सन् छठीं शताब्दी का मध्य भाग) पर वि० सं० १२९९/ई० सन् १२४३ में **कर्णिका** नामक टीका की रचना की[६५]। इसकी प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि टीकाकार ने अपने गुरु के आदेश पर इसकी रचना की। कनकप्रभसूरि के शिष्य और प्रसिद्ध ग्रन्थसंशोधक प्रद्युम्नसूरि ने इसका संशोधन किया था। उदयप्रभसूरि ने **आरम्भसिद्धि** नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ की भी रचना की। इन्हीं के द्वारा ४९ गाथाओं में रचित **शब्दब्रह्मोल्लास** नामक एक अपूर्ण ग्रन्थ भी मिलता है जो पाटण के खेतरवसही भण्डार में संरक्षित है[६६]। वस्तुपाल का गिरनार शिलालेख इन्हीं की कृति है।

देवेन्द्रसूरि

ये मध्ययुग में नागेन्द्रगच्छ की द्वितीय शाखा के आदिम आचार्य वीरसूरि की परम्परा में हुए धनेश्वरसूरि के शिष्य और विजयसिंहसूरि के कनिष्ठ गुरुभ्राता थे। इनके द्वारा रचित एकमात्र कृति है **चन्द्रप्रभचरित**[६७] जो वि० सं० १२६४ की रचना है। संस्कृत भाषा में रचित इस ग्रन्थ में ५३२५ श्लोक हैं। इनके बारे में विशेष विवरण नहीं मिलता।

वर्धमानसूरि

जैसा कि लेख के प्रारम्भ में हम देख चुके हैं ये वीरसूरि की परम्परा में हुए धनेश्वरसूरि के प्रशिष्य और विजयसिंहसूरि के शिष्य थे। इनके द्वारा रचित **वासुपूज्यचरित**[६८] (रचनाकाल वि० सं० १२९९) १२वें तीर्थंकर पर संस्कृत भाषा में उपलब्ध एकमात्र काव्य है। इसमें ५४९४ श्लोक हैं और यह सरल भाषा में है। ग्रन्थ के अन्त में २८ श्लोकों की लम्बी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रशस्ति[६९] के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी विस्तृत गुर्वावली के साथ-साथ रचना-काल और रचना-स्थान का भी उल्लेख किया है जिसका इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

मल्लिषेणसूरि

ये वर्धमानसूरि के प्रशिष्य और उदयप्रभसूरि के शिष्य थे। इन्होंने आचार्य हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित **अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका** नामक कृति पर संस्कृत भाषा में वि० सं० १३४८/ई० सन् १२९३ में **स्याद्वादमंजरी** नामक टीका की रचना की[७०] जिसका संशोधन (खरतरगच्छीय) आचार्य जिनप्रभसूरि ने किया। पं० अंम्बालाल प्रेमचन्द शाह के अनुसार इन्होंने दिगम्बाराचार्य जिनसेन के शिष्य मल्लिषेण द्वारा रचित **भैरवपद्मावतीकल्प** का भी संशोधन किया[७१]। लेकिन दिगम्बराचार्य मल्लिषेण द्वारा रचित **त्रिशष्टिमहापुराण** या **महापुराण** नामक एक अन्य कृति भी मिलती है जो वि० सं० ११०४/शक सं० ९६८ में रची गयी है। अत: इनका काल विक्रम संवत् की ११वीं शती का अन्त और १२वीं शती का प्रारम्भ सुनिश्चित है। साथ ही उक्त आचार्य कर्णाटक के थे, गुजरात के नहीं। इस आधार पर शाह जी का उपरोक्त मत भ्रामक सिद्ध होता है।[७२]

स्याद्वादमंजरी की प्रशस्ति में इन्होंने अपने गच्छ की लम्बी गुर्वावली न देते हुए मात्र अपने गुरु उदयप्रभसूरि और ग्रन्थ के रचनाकाल का ही उल्लेख किया है[७३]। अत: वर्तमान युग के विभिन्न इतिहासकारों ने केवल गच्छ और नामसाम्य के आधार पर इनके गुरु उदयप्रभसूरि को वस्तुपाल-तेजपाल के गुरु विजयसेनसूरि के शिष्य उदयप्रभसूरि से अभिन्न मान लिया था।[७४] परन्तु अब उक्त धारणा निर्मूल सिद्ध हो चुकी है[७५]।

मेरुतुंगसूरि

ये नागेन्द्रगच्छीय चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य थे। इन्होंने बढवाण में रहते हुए वि० सं० १३६१/ई० सन् १३०५ में संस्कृत भाषा में **प्रबन्ध-चिन्तामणि**[७६] की रचना की। इस कार्य में उन्हें अपने शिष्य गुणचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणि से सहायता प्राप्त हुई[७७]। सम्पूर्ण ग्रन्थ ५ प्रकाशों (खण्डों) में विभाजित है। गुजरात के इतिहास का यह एक अपूर्व ग्रन्थ है। जिस प्रकार कल्हण ने **राजतरंगिणी** में काश्मीर का इतिहास लिखा है उसी प्रकार मेरुतुंग ने अपनी इस कृति में गुजरात के इतिहास का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में वि० सं० ८०२ से लेकर वि० सं० १२५० (कुछ विद्वानों के अनुसार वि० सं० १२७७) तक की घटनाओं का तिथियुक्त वर्णन है किन्तु **राजतरंगिणी** की तुलना में इस ग्रन्थ में सबसे बड़ा दोष यह है कि लेखक ने अपने समय की घटनाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान होते हुए भी उसे पूर्णरूपेण उपेक्षित कर दिया है। साथ ही इसमें विभिन्न राजाओं की दी गयी अधिकांश तिथियाँ प्राय: ठीक नहीं है फिर भी वे कुछ माह या वर्ष से अधिक अशुद्ध नहीं हैं। इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा विस्तृत चर्चा की जा चुकी है[७८]।

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई[७९], ए० के० मजुमदार[८०] तथा कुछ अन्य विद्वानों[८१] ने **स्थविरावली** अपरनाम **विचारश्रेणी** नामक रचना को भी इसी मेरुतुंग की कृति बतलायाहै। इस कृति में पट्टधर आचार्यों के साथ-साथ चावड़ा, चौलुक्य और वघेल नरेशों की तिथि सहित सूची दी गयी है जो **प्रबन्धचिन्तामणि** से भिन्न है। चूँकि एक ही ग्रन्थकार अपने दो अलग-अलग ग्रन्थों में समान घटनाओं की अलग-अलग तिथियाँ नहीं दे सकता है, अत: यह सम्भावना बलवती लगती है कि दोनों कृतियों के रचनाकार समान नाम वाले होते हुए भी अलग-अलग व्यक्ति हैं एक नहीं, जैसा कि अनेक विद्वानों ने मान लिया है। **विचारश्रेणी** में अंचलगच्छ की वीर० सं० १६३९/वि० सं० १२०९ में आर्यरक्षितसूरि से उत्पत्ति बतलायी गयी है[८२]। इस गच्छ में भी मेरुतुंग नामक एक प्रसिद्ध आचार्य हो चुके हैं जिनके द्वारा रचित विभिन्न कृतियाँ मिलती हैं और इनका काल वि० सम्वत् की १५वीं शती के प्रथम चरण से लेकर तृतीय चरण तक सुनिश्चित है[८३]। इस प्रकार वे **प्रबन्धचिन्तामणि** के कर्ता से लगभग एक शताब्दी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाद के विद्वान् हैं। इस आधार पर भी यह सुनिश्चित हो जाता है कि **प्रबन्धचिन्तामणि** और **विचारश्रेणी** के रचनाकार अलग-अलग व्यक्ति हैं।

नागेन्द्रगच्छीय मेरुतुंगसूरि द्वारा रचित दूसरी कृती है **महापुरुषचरित**[८४]। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस कृति में ५ सर्ग हैं जिनमें ऋषभ, शान्ति, नेमि, पार्श्व और महावीर इन पाँच तीर्थंकरों का वर्णन है। ग्रन्थ के मंगलाचरण में ग्रन्थकार ने अपने गुरु चन्द्रप्रभसूरि का और अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत प्रथम श्लोक में अपने गच्छ का उल्लेख किया है[८५]।

सन्दर्भ सूची :-

१. **पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, संपा० मुनि दर्शनविजय, वीरमगाम १९३३ ई० सन्, पृष्ठ ३, ८.

२. प्रो० मधुसूदन ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा पर आधारित.

३. **पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, पृष्ठ ३.

४. देववाचक की तिथि के लिये द्रष्टव्य –

एम० ए० ढांकी 'दत्तिलाचार्य अने भद्राचार्य' (गुजराती) **स्वाध्याय**, जिल्द XVIII, अंक २, बड़ोदरा १९८६ ई० सन्० पृ० १६१.

५. **पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, पृ० १३-१४.

६. वही

७. M. A. Dhaky– "The Nagedra gaccha" *Dr. H. G. Shastri Felicitation Volume*, Ed., P. C. Parikh & others, Ahmedabad1994, pp. 37-42.

८. **पउमचरिउ**, संपा० मुनि पुण्यविजय, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, ग्रन्थांक १२, अहमदाबाद १९६८ ई० सन्, पृ० ५९७-५९८.

९. U. P. Shah, ***Akota Bronzes***, Bombay 1956. A. D. p. 35.

१०. Ibid

११. Ibid, p.34.

१२. Ibid

१३. मुनि पुण्यविजय, "जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय", **ज्ञानाञ्जलि**, बड़ोदरा १९६९ ई० सन्, हिन्दी खण्ड, पृ० ३०-३२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. **जम्बूचरियं**, संपा० मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४४, बम्बई १९५९ ई० स०, हिन्दी भूमिका, पृ० ५.

१५. वही, पृ० १९८-१९९, भूमिका, पृ० ३.

१६. **कुवलयमालाकहा**, संपा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४५, बम्बई १९५६ ई० स०, पृ० २८२-२८३.

१७. M. A. Dhaky- "The Nagendra Gachha", p. 38.

१८. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, (गुजराती), बम्बई, १९३२ ई० सन्, पृ० १९२.

१९. पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी "शक सं० ९१०नो गुजरातनी मनोहर जिनप्रतिमा" **ऐतिहासिकलेखसंग्रह**, श्री सयाजी साहित्यमाला, ग्रन्थांक ३३५, बड़ोदरा १९६३, ई० सन्. पृ० ३२०-३३०.

२०. वही, पृष्ठ ३२४.

२१. अगरचन्द भँवरलाल नाहटा, संपा० **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, कलकत्ता, वीर निर्वाण संवत् २४८२ (ई० स० १९५६), पृ० ३९२, लेखांक २७६६.

२२. S. R. Rao, "Jaina Bronzes from Lilavdeva" *Journal of Indian Museums*. Vol. XI, 1955, A. D., p. 33 and U. P. Shah "Some Bronzes from Lilvadeva (Panch Mahals)", *Bulletin of the Baroda Museum and Picture Gallery*, Baroda, Vol. IX 1952-53 A. D., pp. 43-51 and plates I-II.

२३. मुनि विशालविजय, संपा०, **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह**, भावनगर १९६० ई०, पृ० ३, लेखांक २। मालपुरा से प्राप्त पार्श्वनाथ की धातु की एक तिथिविहीन प्रतिमा पर भी नागेन्द्रकुल का उल्लेख मिलता है। प्रो० एम० ए० ढांकी ने इसे ई० सन् की १०-११ वीं शती का बतलाया है.

२४. पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, **जैनतीर्थसर्वसंग्रह**, जिल्द १, भाग २, अहमदाबाद १९५३ ई०, पृ० १७४.

२५. लक्ष्मणभोजक, "जूनागढ़नी अम्बिका देवीनी धातुप्रतिमानो लेख" **जैनसाहित्य के आयाम**, भाग २, **पं० बेचरदास दोशी स्मृतिग्रन्थ**, संपा०, प्रो० एम० ए० ढांकी और प्रो० सागरमल जैन, वाराणसी १९८७ ई० स०, गुजराती विभाग, पृ० १७९.

२६. पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी, "सिद्धराज अने जैनो" **ऐतिहासिकलेखसंग्रह**, पृ० ७९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. भोगीलाल साण्डेसरा, **महामात्य वस्तुपाल का साहित्य मण्डल और संस्कृत साहित्य को उसके देन,** सन्मति ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १५, वाराणसी १९५७ ई० सन्, पृ० ३६-३८.

२८. **धर्माभ्युदयमहाकाव्य,** संपा० मुनि पुण्यविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४, वि० सं० २००५.

२९. वही, प्रशस्ति, पृ० १८८-१९०.

३०. बुद्धिसागरसूरि, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४२६.

३१. **पुरातनप्रबन्धसंग्रह,** संपा०, मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २, शान्तिनिकेतन १९३६ ई० सन्, पृ० १३६.

३२. **चन्द्रप्रभचरित,** संपा०- संशोधक, विजयजिनेन्द्रसूरि, श्री हर्ष पुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखाबावल, शान्तिपुरी, सौराष्ट्र वि० सं० २०४२, प्रशस्ति, पृ० ३९५.

३३. **वासुपूज्यचरित,** जैन धर्म प्रचारक सभा, भावनगर वि० सं० १९८२/ई० सन् १९२६, प्रशस्ति, पृ० १६०-१६१.

३४. शिवनारायण पाण्डेय – "श्री अजाहरा पार्श्वनाथ जैन तीर्थथी मणि आवेला अमुक शिल्पो", **स्वाध्याय,** पु० १७, अंक १, पृ० ४५-४७.

३५. मधुसूदन ढांकी – "स्याद्वादमंजरीकर्तृ मल्लिषेणसूरिना गुरु उदयप्रभसूरि कोण" ? **सामीप्य,** अप्रैल १९८८, सितम्बर १९८८, पृष्ठ २०-२६.

३६. द्रष्टव्य, सन्दर्भ संख्या ३३.

३७. आचार्य गिरजाशंकर वल्लभजी शास्त्री, संपा०, **गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,** भाग ३, श्री फार्बस गुजराती सभा ग्रन्थावली १५, श्री फार्बस गुजराती सभा, मुम्बई १९४२ ई० सन्, पृ० २१०.

३८. ढांकी, पूर्वोक्त.

३९. बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, बड़ोदरा १९१७ ई० सन्, पृ० १६, लेखांक ३४.

४०. **स्याद्वादमंजरी,** संपा०, आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, बम्बई १९३२ ई० सन्, प्रशस्ति, पृ० १७९-१८०.

४१. मोहनलाल दलीचन्द देसाई – **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,** पृ० ४१६, कंडिका ६०१.

आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, पूर्वोक्त, पृष्ठ XIII, "अंग्रेजी प्रस्तावना", लालचन्द भगवानदास गाँधी, **ऐतिहासिकलेखसंग्रह,** पृ० २.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिपुटी महाराज, **जैन परम्परानो इतिहास**, भाग २, श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५४, अहमदाबाद १९६० ई० सन्, पृ० ७.

हीरालाल रसिकलाल कापडिया, **जैन संस्कृत साहित्यनो इतिहास**, खण्ड २.उपखण्ड १. श्री मुक्ति कमल जैन मोहनमाला, बड़ोदरा १९६८ ईस्वी, पृ० ३४४.

४२. ढांकी, पूर्वोक्त, पृष्ठ २०-२४.

४३. देसाई, पूर्वोक्त, कण्डिका ५९८.

४४. **प्रबन्धचिन्तामणि**, संपा०, मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १. शान्तिनिकेतन १९३३ ई० सन्.

४५. वही, प्रशस्ति, पृ० १२५.

४६. मोहनलाल दलीचन्द देसाई, **जैन गुर्जर कविओ**, भाग १, नवीन संस्करण, संपा० डॉ० जयन्त कोठारी, महावीर जैन विद्यालय, बम्बई ई० सन् १९८६, पृ० ६६-६८.

४७. वही, पृ० १२७-१२९.

४८. वही, पृ० १३९-१४२.

४९. द्रष्टव्य, सन्दर्भ संख्या ९.

५०. द्रष्टव्य, सन्दर्भ संख्या, १४ एवं १५.

५१. गुलाबचन्द चौधरी, **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ६, पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २०, वाराणसी १९७३ ई०, पृष्ठ १५६-१५७.

५२. मुनि जिनविजय, संपा० **जम्बूचरियं**, प्रस्तावना, पृ० ३.

५३. वही, पृ० ३.

५४. वही, पृ० ६.

५५. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० १९२.

५६. सी० डी० दलाल, संपा०, **प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह**, गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला, क्रमांक १३, बड़ोदरा १९२० ई०, पृष्ठ १-७.

५७. Muni Punyavijaya –*Catalogue of Palm Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar,* Cambay G. O. S. No. 149, Baroda 1966 A. D. "विवेकमंजरीप्रकरणवृत्ति" की प्रशस्ति, श्लोक १४, पृ० २७८.

५८. द्रष्टव्य – सन्दर्भ क्रमांक २७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९. मुनि पुण्यविजय, संपा० **सुकृतिकीर्तिकल्लोलिन्यादिवस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५, बम्बई १९६१ ई०, पृ० १-१६.

६०. मुनि पुण्यविजय, संपा०, **धर्माभ्युदयमहाकाव्य**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४, बम्बई १९४८ ई०.

६१. वही, प्रशस्ति, पृ० १८८-१९०.

६२. Muni Punyavijaya- *op. cit.*, p. 382

६३-६४ साण्डेसरा, पूर्वोक्त, पृ० ९९.

६५. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० ३८६.

६६. साण्डेसरा, पूर्वोक्त, पृ० ९९.

६७.a C. D. Dalal, *A Descriptive Catalogue of Mss in the Jain Bhandars at Pattan*, G. O. S. No. 76, Baroda 1937 A. D., p.279.

६७. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ३२.

६८-६९ द्रष्टव्य, सन्दर्भ क्रमांक ३३.

७०. द्रष्टव्य, सन्दर्भ क्रमांक ४०.

७१. अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, "भाषा अने साहित्य"

रसिकलाल छोटालाल परीख और हरिप्रसाद शास्त्री, संपा०, **गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास**, ग्रन्थ ४, "सोलंकीकाल" संशोधन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ६९. भो० जे० अध्ययन संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद १९७६ ई०, पृ० ३२८.

७२. Mohanlal Bhagwan Das Jhavery – *Comparative and Critical Study of Mantarashastra*, Shree Jain Kala Sahitya Ṡamsodhak Series No. 1, Ahmedabad 1944 A. D., pp. 300- 301.

७३. द्रष्टव्य, सन्दर्भ क्रमांक ४०.

७४. द्रष्टव्य, सन्दर्भ क्रमांक ४१.

७५. द्रष्टव्य, सन्दर्भ क्रमांक ३५.

७६. मुनि जिनविजय, संपा०, **प्रबन्धचिन्तामणि**, प्रशस्ति, पृ० १२५.

७७. वही, मंगलाचरण, पृ० १.

७८. A. K. Majumdar, *Chaulukyas of Gujarat*, Bombay 1956 A. D. pp. 417-418.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० ४३०-४३१.

८०. Majumdar, Ibid, pp. 417-418.

८१. G. C. Chaudhary *Political History of Northern India From Jain Sources,* Amritsar 1963 A. D.

८२. तथा श्रीवीरमोक्षात् १६३९ विक्रमात् १२६ (०) ९ वर्षै: श्री विधिपक्षमुख्याभिधानं श्रीमदंचलगच्छे श्री आर्यरक्षितसूरय: स्थापयामासु: ।

मेरुतुंगाचार्य विरचित **विचारश्रेणी,**

मुनि जिनविजय, संपा०, **जैन साहित्य संशोधक,** वर्ष २, अंक ३-४ पूना १९२५.

विचारश्रेणी की एक मुद्रित प्रति प्रो० एम० ए० ढांकी के पास भी है, परन्तु उसमें प्रकाशन सम्बन्धी सूचनाओं का अभाव है।

८३. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० ४४२.

८४. P. Peterson, *Sixth Report of Operation in Search of Sanskrit Mss in the Bombay Circle,* April 1885- March 1889 A. D. pp 43-46 एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी, **प्रबन्धचिन्तामणि** (हिन्दी अनुवाद), सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ३, शान्तिनिकेतन १९४० ई० सन्, प्रस्तावना, (लेखक — मुनि जिनविजय) पृ० 'ठ'

८५. P.Peterson, Ibid, pp. 43-46.

संकेत सूची :-

जै० ले० सं० - **जैन लेख संग्रह,** भाग १-३, संपा०, पूरनचन्द नाहर, कलकत्ता १९१८, १९२७, १९२९ ई० सन्.

प्रा० जै० ले० सं० - **प्राचीन जैन लेख संग्रह,** भाग २, संपा०, मुनि जिनविजय, जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर.

जै० धा० प्र० सं०- **जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह,** भाग १-२, संपा०, बुद्धिसागरसूरि, अध्यात्म ज्ञान प्रसार मण्डल, पादरा १९१८ और १९२४ ई० सन्.

प्रा० ले० सं० - **प्राचीन लेख संग्रह,** संपा०, विजयधर्मसूरि, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९२६ ई० सन्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्र० ले० सं० –	**प्रतिष्ठा लेख संग्रह,** भाग १, संपा०, विनयसागर, सुमति सदन,कोटा १९५३ ई० सन्.
बी० जै० ले० सं० –	**बीकानेर जैन लेख संग्रह,** संपा०, अगरचन्द नाहटा एवं भँवर लाल नाहटा, नाहटा ब्रदर्स, ४ जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता १९५६ ई० सन्.
श्री० प्र० ले० सं० –	**श्री प्रतिमा लेख संग्रह,** संपा०, दौलत सिंह लोढा,यतीन्द्र साहित्य सदन, धामणिया, मेवाड़ १९५१ ई० सन्.
श० वै० –	**शत्रुंजय वैभव,** मुनि कान्तिसागर, कुशल संस्थान, पुष्प ४, जयपुर १९९० ई० सन्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवृत्तिकुल का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के चैत्यवासी गच्छों में निवृत्तिकुल (बाद में निवृत्तिगच्छ) भी एक है। **पर्युषणाकल्प** की 'स्थविरावली' में इस कुल का उल्लेख नहीं मिलता, इससे स्पष्ट होता है कि यह कुल बाद में अस्तित्व में आया। इस कुल का सर्वप्रथम उल्लेख अकोटा से प्राप्त दो प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में प्राप्त होता है, जिनका समय उमाकान्त शाह ने ई० स० ५२५ से ५५० के बीच माना है। इस कुल में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, शीलाचार्य अपरनाम शीलाङ्कसूरि, सिद्धर्षि, द्रोणाचार्य, सूराचार्य आदि कई प्रभावक एवं विद्वान् आचार्य हुए हैं।

निवृत्तिकुल से सम्बद्ध अभिलेखीय और साहित्यिक दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध होते हैं और ये मिलकर विक्रम संवत् की ६ठीं शती उत्तरार्ध से लेकर वि० सं० की १६वीं शती तक के हैं, किन्तु इनकी संख्या अल्प होने के कारण इनके आधार पर इस कुल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर पाना प्रायः असंभव है। फिर भी प्रस्तुत लेख में उनके आधार पर इस कुल के बारे में यथासंभव प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

ऊपर कहा जा चुका है कि इस कुल का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य है अकोटा से प्राप्त धातु की दो प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख। उमाकान्त शाह[१] ने इनके वाचना इस प्रकार दी है :

१. ॐ देवधर्मोयं निवृत्ति कुले जिनभद्रवाचनाचार्यस्य।

२. ॐ निवृत्तिकुले जिनभद्रवाचनाचार्यस्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाचनाचार्य और क्षमाश्रमण समानार्थक माने गये हैं[२], अतः इस लेख में उल्लिखित **जिनभद्रवाचनाचार्य** और **विशेषावश्यकभाष्य** आदि ग्रन्थों के रचयिता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण एक ही व्यक्ति हैं[३]। उक्त प्रतिमाओं में मूर्तिकला की कालगत विशेषताओं के आधार पर शाह जी ने दूसरी जगह इनका काल ई० स० ५५० से ६०० के बीच माना है, जो विशेष सही है। परम्परानुसार जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण की आयु १०४ वर्ष थी, अतः पं० मालवणिया ने इनका जीवनकाल वि० सं० ५४५ से वि० सं० ६५० / ई० स० ४८९ से ई० स० ५९४ माना है[४]।

आचाराङ्ग और **सूत्रकृताङ्ग** की टीका[५] के रचयिता शीलाचार्य अपरनाम तत्त्वादित्य तथा **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं** (वि०सं० ९२५ / ई० सन् ८३९) के रचनाकार शीलाचार्य अपरनाम विमलमति अपरनाम शीलाङ्क भी स्वयं को निवृत्तिकुलीन बतलाते हैं। मुनि जिनविजय[७], आचार्य सागरानन्दसूरि[८], श्रीमोहनलाल दलीचन्द देसाई[९] आदि विद्वानों ने **आचाराङ्ग-सूत्रकृताङ्ग** की टीका के रचनाकार शीलाचार्य अपरनाम तत्त्वादित्य तथा **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं** के कर्त्ता शीलाचार्य अपरनाम विमलमति अपरनाम शीलाङ्क को समसामयिकता के आधार पर एक ही व्यक्ति माना है। पं० मालवणिया और प्रा० मधुसूदन ढांकी[१०] ने भी इन आचार्यों की समसामयिकता एवं उनके समान कुल के होने के कारण उक्त मत का समर्थन किया है। इसके विपरीत **चउप्पनमहापुरिसचरियं** के सम्पादक श्री अमृतलाल भोजक[११] का मत है कि यद्यपि दोनों शीलाचार्यों की समसामयिकता असंदिग्ध है, किन्तु उन दोनों आचार्यों ने अपना पृथक्-पृथक् अस्तित्व स्पष्ट करने के लिए ही अपना अलग-अलग अपरनाम भी सूचित किया है, अतः दोनों भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं और उन्हें एक मानना उचित नहीं। चूंकि एक ही समय में, एक ही कुल में, एक ही नाम वाले दो आचार्यों का होना उसी प्रकार असंभव है जैसे एक ही परिवार में एक ही पिता के दो सन्तानों का एक ही नाम होना, अतः इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आधार पर भोजक का मत सत्यता से परे मालूम होता है। अलावा इसके उस जमाने में श्वेताम्बर परम्परा के मुनिजनों की संख्या भी अल्प ही थी।

उपमितिभवप्रपंचकथा (वि० सं० ९६२ / ई० स० ९०६), **सटीक न्यायावतार, उपदेशमालाटीका** आदि के रचयिता सिद्धर्षि भी निवृत्तिकुल के थे। **उपमितिभवप्रपंचकथा** की प्रशस्ति[१२] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

सूर्याचार्य
|
देल्लमहत्तर
|
दुर्गस्वामी
|
सिद्धर्षि

उक्त प्रशस्ति में सिद्धर्षि ने अपने गुरु और स्वयं को दीक्षित करने वाले आचार्यरूपेण गर्गर्षि का नाम भी दिया है। संभवतः यह गर्गर्षि और कर्मसिद्धान्त के ग्रन्थ **कर्मविपाक** के रचयिता गर्गर्षि[१३] एक ही व्यक्ति रहे हों। इसके अलावा **पंचसंग्रह** के रचयिता पार्श्वर्षि के शिष्य चन्द्रर्षि[१४] भी नामाभिधान के प्रकार को देखते हुए संभवतः इसी कुल के रहे होंगे।

अकोटा की वि० सं० की १०वीं शती की तीन धातु प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में प्रतिमा-प्रतिष्ठापक के रूप में निवृत्तिकुल के द्रोणाचार्य का उल्लेख मिलता है। इनमें से एक प्रतिमा पर प्रतिष्ठा वर्ष वि० सं० १००६ / ई० स० ९५० दिया गया है[१५]। इस प्रकार इनका कार्यकाल १०वीं शताब्दी का उत्तरार्ध रहा होगा।

निवृत्तिकुल में द्रोणाचार्य नाम के एक अन्य आचार्य भी हो चुके हैं। **प्रभावकचरित**[१६] के अनुसार ये चौलुक्यनरेश भीमदेव प्रथम के संसारपक्षीय मामा थे। आचार्य हेमचन्द्र के **द्वयाश्रयमहाकाव्य** के अनुसार चौलुक्यराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीमदेव के पिता नागराज नड्डूल के चाहमानराज महेन्द्र की भगिनी लक्ष्मी से विवाहित हुए थे[१७]। इस देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उक्त द्रोणाचार्य नड्डूल के राजवंश से सम्बद्ध रहे होंगे। इनकी एकमात्र कृति है **ओघनिर्युक्ति** की वृत्ति[१८]। नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि द्वारा नौ अंगों पर लिखी गयी टीकाओं का इन्होंने संशोधन भी किया। इनके इस उपकार का अभयदेवसूरि ने सादर उल्लेख किया है[१९]। परन्तु इनके गुरु कौन थे, इस सम्बन्ध में न तो स्वयं इन्होंने कुछ बतलाया है और न किन्हीं साक्ष्यों से इस सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त होती है।

द्रोणाचार्य के शिष्य और संसारपक्षीय भतीजा सूराचार्य भी अपने समय के उद्भट्न विद्वान् थे[२०]। परमारनरेश भोज (वि० सं० १०६६-११११) ने अपनी राजसभा में इनका सम्मान किया था[२१]। इनके द्वारा रचित **दानादिप्रकरण**[२२] नामक एक ग्रन्थ उपलब्ध है। ये संस्कृत भाषा के उच्च कोटि के विद्वान् थे।

निवृत्तिकुल से सम्बद्ध तीन अभिलेख विक्रम संवत् की ११वीं शती के हैं। इनमें से प्रथम लेख वि० सं० १०२२ / ई० स० ९६६ का है जो भाषा की दृष्टि से कुछ हद तक भ्रष्ट है और धातु की एक चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री अगरचन्द नाहटा[२३] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

गच्छे श्रीनृर्वितके तते संताने पारस्वदत्तसूरीणांवृसभ पुत्र्या सरस्वत्याचतुर्विंशति पटकं मुक्त्यथ चकारे ॥

प्राप्तिस्थान-चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर।

द्वितीय लेख आबू के परमार राजा कृष्णराज के समय का वि० सं० १०२४ / ई० स० ९६८ का है, जो आबू के समीप केर नामक स्थान से, प्राप्त हुआ है। यह लेख यहां स्थित जिनालय के गूढ़मंडप के बांयी ओर स्तम्भ पर उत्कीर्ण था। मुनि जयन्तविजय जी[२४] ने इस लेख की वाचना दी है, जो कुछ सुधार के साथ यहां दी जा रही है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विष्टितक (निवृत्तक) कुले गोष्ठ्या वि (व)द्र्धमानस्य कारितं। (सुरूपं) मुक्तये बिंबं कृष्णराजे महीपतौ ॥ अ (आ)षाढ़सु (शु) द्धषष्ठ्यां समासहस्त्रे जिनैः समभ्यधिके (१०२४) हस्तोत्तरादि संस्थे निशाकरे (रित) सपरिवारे ॥

(ना वा) हरे रं - : नरादित्यः सुशोभतां घटितवान् वीरनाथस्य शिल्पिनामग्रणीः पर (म्) ॥

यद्यपि इस लेख में निवृत्ति कुल के किसी आचार्य या मुनि का कोई उल्लेख नहीं है, परन्तु आबू के परमारनरेशों के काल-निर्धारण में यह लेख अत्यन्त मूल्यवान है।

वि० सं० की ११वीं शताब्दी का तृतीय लेख वि० सं० १०९२ / ई० स० १०३६ का है[२५]। इस लेख में निवृत्तिकुल के आम्रदेवाचार्यगच्छ का उल्लेख है। लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

संवत् १०९२ फाल्ग (ल्गु) न सुदि ९ रवौ श्री निवृत्तककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे नंदिग्रामचैत्ये सोमकेन जाया........ सहितेन तत्सुतसहजुकेन च निजपुत्रसंवीरणसहिलान्वितेन नि (:) श्रेयसे वृषभजिनप्रतिमा - वार्थ (?) कारिता।

प्रतिष्ठास्थान - नांदिया, प्राप्ति स्थान - जैन मंदिर, अजारी,

वि० सं० की १२वीं शताब्दी के चार लेखों[२६] (वि० सं० ११३० - ई० स० १०७४, तीन प्रतिमा लेख और वि० सं० ११४४ - ई० स० १०८८ एक प्रतिमालेख) में भी निवृत्तिकुल के पूर्वकथित आम्रदेवाचार्यगच्छ का उल्लेख है। इन लेखों का मूलपाठ इस प्रकार है :

संवत् ११३० ज्येष्ठ शुक्लपंचम्यां श्री निर्वृत्तककुले श्रीमदाम्रदेवा-चार्यगच्छे कोरेस्व (श्व) रसुत दुल्ल (र्ल) भश्रावकेणेदं मुक्तये कारितं जिनयुग्ममुत्तमं ॥

प्राप्तिस्थान - आदिनाथ जिनालय, लोटाणा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(संवत् ११३०) ज्येष्ठशुक्लपंचम्यां श्री निर्वृत्तककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे कोरेस्व (श्व) रसुत दुर्लभ (श्रावकेणे) दं मुक्तये कारितं जिनयुग्ममुत्तमम् ॥

कायोत्सर्ग प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्राप्तिस्थान - पूर्वोक्त।

संवत् ११३० ज्येष्ठ शुक्लपंचम्यां तिहे (निर्वृ)तककुले श्रीमदा(म्रदेवाचार्यगच्छे).......

कायोत्सर्गप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्राप्तिस्थान - पूर्वोक्त।

ॐ ॥ संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ श्री त (नि)र्वृत्तककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे लोटाणकचैत्ये प्राग्वाटवंशोद्भवः यांयश्रेष्ठिस (हितेन) आहिल श्रेष्ठिकि (कृ) तं आसदेवेन मोल्यः (?) श्री वीरवर्धमानसा (स्वा) मिप्रतिमा कारिता। कायोत्सर्गप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठास्थान एवं प्राप्तिस्थान - पूर्वोक्त।

उक्त लेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में इस गच्छ के किसी आचार्य का उल्लेख नहीं मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि निवृत्तिकुल की यह शाखा (आम्रदेवाचार्यगच्छ) ईस्वी ११वीं शती के प्रारम्भ में अस्तित्व में आयी होगी। वि० सं० ११४४ - ई० स० १०८८ के पश्चात् आम्रदेवाचार्यगच्छ से सम्बद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिलता, अतः यह अनुमान व्यक्त किया जा सकता है कि वि० सं० की १२वीं शती के अन्त तक निवृत्तिकुल की इस शाखा का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा।

वि० सं० १२८८ - ई० स० १२३२ का एक लेख, जो नेमिनाथ की धातु की सपरिकर प्रतिमा पर उत्कीर्ण है, में निवृत्तिगच्छ के आचार्य शीलचन्द्रसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। नाहटा[२७] द्वारा इस लेख की वाचना इस प्रकार दी गयी है :

सं० १२८८ माघ सुदि ९ सोमे निवृत्तिगच्छे श्रे० वौहड़ि सुत यसहडेन देल्हादि पिवर श्रेयसे नेमिनाथ कारितं प्र० श्री शीलचन्द्रसूरिभिः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्तिस्थान - महावीर स्वामी का मंदिर, बीकानेर।

वि० सं० १३०१ / ई० स० १२४५ का एक लेख, जो शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है, में इस गच्छ के आम्रदेवसूरि का उल्लेख प्राप्त होता है। मुनि कान्तिसागर[२८] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

सं. १३०१ वर्षे हुंबडज्ञातीय निवृत्तिगच्छे श्रे० जरा (श) वीर पुत्र रेना सहितेन स्वश्रेयसे शांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठिता श्रीयाम्रदेवसूरिभिः ॥

प्राप्तिस्थान - बालावसही, शत्रुञ्जय।

वि० सं० १३७१ / ई० स० १३१५ में इसी कुल के पार्श्वदेवसूरि के शिष्य अम्बदेवसूरि ने **समरारासु**[२९] की रचना की। पार्श्वदेवसूरि के गुरु कौन थे, क्या अम्बदेवसूरि के अलावा पार्श्वदेवसूरि के अन्य शिष्य भी थे, इन सब बातों को जानने के लिये हमारे पास इस वक्त कोई प्रमाण नहीं है।

वि० सं० १३८९ / ई० स० १३२३ का एक लेख, जो पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है, में इस कुल के पार्श्वदत्तसूरि का उल्लेख प्राप्त होता है। बुद्धिसागरसूरिजी[३०] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

सं० १३८९ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री निवृत्तिगच्छे हूवट (हुंबड) ज्ञा० पितृपीमडमातृपीमलदेश्रेयसे श्रीपद्मप्रभस्वामि बिंबं का० प्र० श्रीपार्श्वदत्तसूरिभिः।

प्राप्तिस्थान - मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा।

इस गच्छ का विक्रम की १५वीं शताब्दी का केवल एक लेख मिला है, जो वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। आचार्य विजयधर्मसूरि[३१] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

सं० १४६९ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे हूंबडज्ञातीय ठ० देपाल भा० सोहग पु० ठ० राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निवृत्तिगच्छे श्रीसूरिभिः ॥श्रीः॥

श्री पूरनचन्द नाहर[३२] ने भी इस लेख की वाचना दी है, किन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्होंने वि० सं० १४६९ को १४९६ पढ़ा है। इन दोनों वाचनाओं में कौन सा पाठ सही है, इसका निर्णय तो इस लेख को फिर से देखने से ही संभव है।

निवृत्तिगच्छ से सम्बद्ध एक और लेख एक चतुर्विंशतिपट्ट पर उत्कीर्ण है। श्री नाहर[३३] ने इसे वि० सं० १५०६ (?) का बतलाया है और इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगच्छे संताने चाम्रदेव सूरीणां। महणं गणि नामाद्या चेल्ली सर्व्वदेवा गणिनी। वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुभवारया। चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं।

प्राप्तिस्थान - आदिनाथ जिनालय, कलकत्ता।

इस गच्छ का एक लेख वि० सं० १५२९ / ई० स० १४७३ का भी है। पं० विनयसागर[३४] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

सं० १५२९ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे हुंबडज्ञातीय मंत्रीश्वरगोत्रे। दोसी वीरपाल भा० वारु सु० सोमा. करमाभ्यां स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० निवृत्तिगच्छे। पु० श्रीसिंघदेवसूरिभिः जिनदत्त चांपा।

प्राप्तिस्थान - आदिनाथ जिनालय, करमदी।

वर्तमान में उपलब्धता की दृष्टि से इस गच्छ का उल्लेख करने वाला अंतिम लेख वि० सं० १५६८ / ई० स० १५१२ का है[३५]। यह लेख मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इसका मूलपाठ इस प्रकार है :

सं० १५६८ वर्षे सुदि ५ शुक्रे हूँब० मंत्रीश्वर गोत्रे। दोसी चांपा भा० चांपलदे सु० दिनकर वना निव्रत्तगच्छे। श्री मुनिसुव्रतबिंबं प्रतिष्ठितं श्रीसंघदत्तसूरिभिः ॥

प्राप्तिस्थान -शांतिनाथ जिनालय, रतलाम।

इस गच्छ के आदिम आचार्य कौन थे, यह कुल या गच्छ कब अस्तित्वमें आया, इस बारे में उक्त साक्ष्यों से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और न ही उनके आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की कोई व्यवस्थित तालिका ही बन पाती है। यद्यपि मध्यकालीन पट्टावलियों[३६] में नागेन्द्र, चन्द्र और विद्याधर कुलों के साथ निवृत्तिकुल के उत्पत्ति का भी विवरण है, किन्तु ये पट्टावलियां उत्तरकालीन एवं अनेक भ्रामक विवरणों से युक्त होने के कारण किसी भी गच्छ के प्राचीन इतिहास के अध्ययन के लिये सर्वथा प्रामाणिक नहीं मानी जा सकतीं। इतना जरूर है कि इस कुल - गच्छ के मुनिगण प्राय: चैत्यवासी परम्परा के रहे होंगे। महावीर की पुरातन परम्परा में तो निवृत्तिकुल का उल्लेख नहीं मिलता, अत: क्या यह कुल पार्श्वापत्यों की परम्परा से लाट देश में निष्पन्न हुआ था ? यह अन्वेषणीय है।

सन्दर्भ सूची :-

१. U. P. Shah, ***Akota Bronzes***, Bombay 1959, pp 29-30

२. पं० दलसुख मालवणिया, **गणधरवाद**, अहमदाबाद १९५२, पृ० ३०-३१.

३. वही.

४. वही, पृ० ३२-३४

५. मोहनलाल मेहता, **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ३, प्रथम संस्करण, वाराणसी १९६७, पृ० ३८२ और आगे.

६. **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं**, सं० पं० अमृतलाल मोहनलाल भोजक, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, गन्थाङ्क ३, वाराणसी १९६१, प्रशस्ति, पृ० ३३४.

७. मुनि जिनविजय, **जीतकल्पसूत्र**, प्रस्तावना.
(मूल ग्रन्थ उपलब्ध न होने से यह उद्धरण श्री भोजक द्वारा लिखित **चउप्पनमहापुरिसचरियं** की प्रस्तावना, पृ० ५५ के आधार पर दिया गया है। यहां उन्होंने ग्रन्थ का प्रकाशनस्थान एवं वर्ष सूचित नहीं किया है।)

८. प्रस्तावना, **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं**, पृ० ५५.

९. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृ० १८०-८१.

१०. पं० दलसुख मालवणिया और प्रो० मधुसूदन ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. प्रस्तावना, **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं**, पृ० ५४ और आगे.

१२. **उपमितिभवप्रपंचकथा**, हिन्दी अनुवादक पं० विनयसागर एवं लालचन्द जैन, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, प्राकृत भारती, पुष्प ३१, जयपुर १९८५, प्रशस्ति, पृ० ४३७-४४०.

१३. मोहनलाल मेहता, पूर्वोक्त, भाग ३, पृ० १११, १२५.

१४. वही, पृ० १२४-१२५.

१५. शाह, पूर्वोक्त, पृ० ५७-५९.

१६. "श्रीसूराचार्यचरितम्," **प्रभावकचरित**, सं० मुनिजिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क १३, अहमदाबाद १९४०, पृ० १५२.

१७. दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री, **गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास**, भाग १-२, अहमदाबाद १९५३, पृ० १९४ और आगे.

१८. मोहनलाल मेहता, पूर्वोक्त, पृ० ३९४-९५.

१९. वही.

२०. **प्रभावकचरित**, पृ० १५२-१६०.

२१. वही.

२२. **दानादिप्रकरण**, सं० अमृतलाल मोहनलाल भोजक एवं नगीन जे० शाह, लालभाई दलपतभाई ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ९०, अहमदाबाद १९८३.

२३. **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, सं० अगरचंद भंवरलाल नाहटा, कलकत्ता, वीर संवत् २४८२ (ई० सं० १९५५), लेखांक ५७.

२४. **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह**, सं० मुनि जयन्तविजय, भावनगर वि० सं० २००३ (ई० स० १९४६), लेखाङ्क ४८६.

२५. वही, लेखांक ३९६.

२६. वही, लेखांक ४७०, ४७१, ४७२, ४७३.

२७. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक. १३३५.

२८. मुनि कान्तिसागर, **शत्रुञ्जयवैभव**, जयपुर १९९०, लेखांक १६.

२९. 'समरारासु,' **प्राचीनगूर्जरकाव्यसंग्रह**, सं० चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क १३, प्रथम संस्करण, बड़ोदरा १९२०, पृ० २७-३८.

३०. **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, सं० बुद्धिसागरसूरि, भाग २, पादरा ई० सन् १९२४, लेखांक ८१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. **प्राचीनलेखसंग्रह**, सं० आचार्य विजयधर्मसूरि, भावनगर १९२९, लेखांक १०६.

३२. **जैनलेखसंग्रह**, सं० पूरनचन्द नाहर, भाग-२, कलकत्ता १९२७, लेखांक १०७८.

३३. वही, लेखांक १००३.

३४. **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, सं० विनयसागर, कोटा १९५३, लेखांक ७१२.

३५. वही, भाग १, लेखांक ९३७.

३६. त्रिपुटी महाराज, **जैन परम्परानो इतिहास**, भाग १, अहमदाबाद १९५२, पृ० ३०१ और आगे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लीवालगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर आम्नाय में चन्द्रकुल से समय-समय पर अस्तित्व में आए विभिन्न गच्छों में पल्लीवालगच्छ भी एक है।[१] जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है वर्तमान राजस्थान प्रान्त में अवस्थित पाली (प्राचीन पल्ली) नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया। इस गच्छ में महेश्वरसूरि 'प्रथम', अभयदेवसूरि, महेश्वरसूरि 'द्वितीय', नन्नसूरि, अजितदेवसूरि, हीरानंदसूरि आदि कई रचनाकार हो चुके हैं। इस गच्छ से संबद्ध अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं, जो वि०सं० १२५७ से लेकर वि०सं० १६८१ तक के हैं। इस गच्छ की दो पट्टावलियां भी मिलती हैं, जो सद्भाग्य से प्रकाशित हैं[२]। यहां उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए सर्वप्रथम पट्टावलियों, तत्पश्चात् ग्रन्थ प्रशस्तियों और अन्त में अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण एवं इन सभी का विवेचन किया गया है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है पल्लीवालगच्छ की आज दो पट्टावलियाँ मिलती हैं। प्रथम पट्टावली वि०सं० १६७५ के पश्चात् रची गई है। इसमें उल्लिखित गुरु-परंपरा इस प्रकार है--

महावीर
|
सुधर्मा
|
|
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
दिनेश्वरसूरि (पाली में ब्राह्मणों को जैन धर्म में दीक्षित करने वाले)
|
महेश्वरसूरि (वि०सं० ११५० में स्वर्गस्थ)
|
देवसूरि
|
मानवदेवसूरि
|
कर्णसूरि
|
विष्णुसूरि
|
आम्रदेवसूरि
|
सोमतिलकसूरि
|
भीमदेवसूरि
|
विमलसूरि
|
नरोत्तमसूरि
|
स्वातिसूरि
|
हेमसूरि
|
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हर्षसूरि
|
भट्टारक कमलचन्द्र
|
गुणमाणिक्यसूरि
|
सुन्दरचन्द्रसूरि (वि०सं० १६७५ में स्वर्गस्थ)
|
प्रभुचन्द्रसूरि (वर्तमान)

पल्लीवालगच्छ की द्वितीय पट्टावली वि०सं० १७२८ में रची गई है। इसमें भगवान् महावीर के ८ वें पट्टधर स्थूलिभद्र से लेकर ६१ वें पट्टधर उद्योतनसूरि तक का विवरण दिया गया है, जो इस प्रकार है--

|
महावीर
|
सुधर्मा
|
|
|
|
|
|
|
|
८. स्थूलिभद्र
|
९. सुहस्तिसूरि
|
१०. इन्द्रदिन्नसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. आर्यदिन्नसूरि
|
१२. सिंहगिरि
|
१३. वज्रस्वामी
|
१४. वज्रसेन
|
१५. चन्द्रसूरि
|
१६. शांतिसूरि
|
१७. यशोदेवसूरि
|
१८. नन्नसूरि
|
१९. उद्योतनसूरि
|
२०. महेश्वरसूरि
|
२१. अभयदेवसूरि
|
२२. आमदेवसूरि
|
|
|
|
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
|
|

३९. नन्दसूरि (वि०सं० १०९८ में स्वर्गस्थ)
|
४०. उद्योतनसूरि (वि०सं० ११२३ में स्वर्गस्थ)
|
४१. महेश्वरसूरि (वि०सं० ११४५ में स्वर्गस्थ)
|
४२. अभयदेवसूरि (वि०सं० ११६९ में स्वर्गस्थ)
|
४३. आमदेवसूरि (वि०सं० ११९९ में स्वर्गस्थ)
|
४४. शांतिसूरि (वि०सं० १२२४ में स्वर्गस्थ)
|
४५. यशोदेवसूरि (वि०सं० १२३४ में स्वर्गस्थ)
|
४६. नन्नसूरि (वि०सं० १२३९ में स्वर्गस्थ)
|
४७. उद्योतनसूरि (वि०सं० १२४३ में स्वर्गस्थ)
|
४८. महेश्वरसूरि (वि०सं० १२७४ में स्वर्गस्थ)
|
४९. अभयदेवसूरि (वि०सं० १३२१ में स्वर्गस्थ)
|
५०. आमदेवसूरि (वि०सं० १३७४ में स्वर्गस्थ)
|
५१. शांतिसूरि (वि०सं० १४४८ में स्वर्गस्थ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
५२. यशोदेवसूरि (वि०सं० १४८८ में स्वर्गस्थ)
|
५३. नन्नसूरि (वि०सं० १५३२ में स्वर्गस्थ)
|
५४. उद्योतनसूरि (वि०सं० १५७२ में स्वर्गस्थ)
|
५५. महेश्वरसूरि (वि०सं० १५९९ में स्वर्गस्थ)
|
५६. अभयदेवसूरि (वि०सं० १५९५ में स्वर्गस्थ)
|
५७. आमदेवसूरि (वि०सं० १६३४ में स्वर्गस्थ)
|
५८. शांतिसूरि (वि०सं० १६६१ में स्वर्गस्थ)
|
५९. यशोदेवसूरि (वि०सं० १६९२ में स्वर्गस्थ)
|
६०. नन्नसूरि (वि०सं० १७१८ में स्वर्गस्थ)
|
६१. उद्योतनसूरि (वि०सं० १७३७ में स्वर्गस्थ)

इस पट्टावली में ४१ वें पट्टधर महेश्वरसूरि के वि०सं० ११४५ में निधन होने की बात कही गई है। प्रथम पट्टावली में भी महेश्वरसूरि का नाम मिलता है और वि०सं० ११५० में उनके निधन होने की बात कही गई है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि महेश्वरसूरि इस गच्छ के प्रभावक आचार्य थे। इसी कारण दोनों पट्टावलियों में न केवल इनका नाम मिलता है, बल्कि इन्हें समसामयिक भी बतलाया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लीवालगच्छ का उल्लेख करने वाला महत्वपूर्ण साक्ष्य है महेश्वरसूरि द्वारा रचित **कालकाचार्यकथा** की वि०सं० १३६५ में लिखी गई प्रति की दाताप्रशस्ति[३], जो इस प्रकार है –

इति श्रीपल्लीवालगच्छे श्री महेश्वरसूरिभिर्विरचिता कालिकाचार्य-कथासमाप्त ॥

श्रीपालवंशोऽस्ति विशालकीर्तिः,
श्रीशांतिसूरिप्रतिबोधित डीडाकाख्यः ।
श्रीविक्रमाद्वेदनभर्महर्षिवत्सरैः (?),
श्री आदिचैत्यकारापित नवहरे च ॥१॥

....
....
....

स्वश्रेयसे कारितकल्पपुस्तिका ...पुण्योदयरत्नभूमिः ।
श्रीपल्लिगच्छे स्वगुणौकधाम्ना वाचिता श्रीमहेश्वरसूरिभिः ॥१०॥

नृपविक्रमकालातीत सं० १३६५ वर्षेभाद्रपदवदौ नवम्यां तिथौ श्रीमेदपाटमंडले वऊणाग्रामे कल्पपुस्तिका लिखिता ।।छा।

उदकानल चौरेभ्यः मूषकेभ्यस्तथैव च ।
रक्षणीया प्रयत्नेन यत कष्टेन लिख्यते ॥१॥

संवत् १३७८ वर्ष भाद्रपद सुदि ४ श्रावक मोल्हासुतेन भार्याउदयसिरि-समन्वितेन पुत्रसोमा-लाखा-खेतासहितेन श्रावकऊदाकेन श्रीकल्पपुस्तिकां गृहीत्वा श्री अभयदेवसूरीणां समर्पिता वाचिता च ।

इस प्रशस्ति में रचनाकार ने यद्यपि अपनी गुरु-परम्परा, रचनाकाल आदि का कोई निर्देश नहीं किया है, फिर भी पल्लीवालगच्छ से संबद्ध सबसे प्राचीन साक्ष्य होने इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

इस प्रशस्ति के अंत में वि०सं० १३७८ में किन्हीं अभयदेवसूरि को पुस्तक समर्पण की बात कही गई है। ये अभयदेवसूरि कौन थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महेश्वरसूरि से उनका क्या सम्बन्ध था, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। पल्लीवालगच्छ की द्वितीय पट्टावली[४] में हम देख चुके हैं कि महेश्वरसूरि के पट्टधर के रूप में अभयदेवसूरि का नाम आता है। इस आधार पर इस प्रशस्ति में उल्लिखित अभयदेवसूरि महेश्वरसूरि के शिष्य सिद्ध होते हैं।

पल्लीवालगच्छ से संबद्ध अगला साहित्यिक साक्ष्य है वि०सं० १५४४/ ई० स० १४८८ में नन्नसूरि द्वारा रचित **सीमंधरजिनस्तवन**[५]। यह ३५ गाथाओं में रचित एक लघुकृति है। नन्नसूरि के गुरु कौन थे, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

वि०स० १५७४/ई०स० १५१९ में प्राकृत भाषा में ८८ गाथाओं में रची गई **विचारसारप्रकरण** की प्रशस्ति[६] से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार महेश्वरसूरि द्वितीय भी पल्लीवालगच्छ के थे। **उपासकदशाङ्ग** और **आचारांग** की वि०सं० १५९१-ईस्वीसन् १५३५ में लिखी गई प्रति की पुष्पिकाओं में भी पल्लीवालगच्छ के नायक के रूप में महेश्वरसूरि का नाम मिलता है।[७]

वि.सं. की १७वीं शताब्दी के प्रथम चरण में पल्लीवालगच्छ में अजितदेवसूरि नामक एक प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं। इनके द्वारा रचित कई कृतियाँ मिलती हैं[८], जो इस प्रकार हैं--

१. **कल्पसिद्धान्तदीपिका**

२. **पिण्डविशुद्धिदीपिका** (वि०सं० १६२७)

३. **उत्तराध्ययनसूत्रबालावबोध** (वि०सं० १६२९)

४. **आचारांगदीपिका**

५. **आराधना**

६. **जीवशिखामणाविधि**

७. **चन्दनबालाबेलि**

८. **चौबीस जिनावली**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्पसिद्धान्तदीपिका की प्रशस्ति में इन्होंने स्वयं को महेश्वरसूरि का शिष्य कहा है[९] --

इतिश्री चंद्रगच्छांभोजदिनमणीनां श्रीमहेश्वरसूरिसर्व्वसूरिशिरोमणीनां पट्टे श्री अजितदेवसूरिणा विरचिता श्रीकल्पसिद्धान्तदीपिका समाप्ता।

अजितदेवसूरि के शिष्य हीरानन्दसूरि हुए जिनके द्वारा रचित **चौबोलीचौपाई** नामक कृति प्राप्त होती है[१०]। इसकी प्रशस्ति में इन्होंने अपने गुरु-प्रगुरु आदि का उल्लेख किया है।

पालीवाल विरुदे प्रसिद्ध, चंद्रगच्छ सुपहाण।

सूरि महेसर पाटधर, तेजै दीपइ भाण ॥७॥

तासु पसायै हर्षधर, पभणै हीराणंद ॥८॥

चौबोलीचौपाई की वि०सं० १७७० में लिखी गई एक प्रति जिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डार, बीकानेर में संरक्षित है।[११]

पल्लीवालगच्छ से संबद्ध पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जो वि०सं० १२५७ से लेकर वि०सं० १६८१ तक के हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२५७	–	–	प्रतिमालेख	–	मुनि कांतिसागर, संपा० **शत्रुञ्जयवैभव,** लेखांक ११
२.	१३४३	माघ सुदि १२	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुम्भारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेखसंग्रह,** भाग-२, लेखांक ६५५
३.	१३४५	माघ सुदि १२ रविवार	महेश्वरसूरि	,,	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचंद नाहटा, संपा० **बीकानेरजैन लेखसंग्रह,** लेखांक २००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१३४५	..	..	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	केशरियाजी का मंदिर, देशनोक, बीकानेर	वही, लेखांक २२४४
५.	१३६१	आषाढ सुदि ३	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजीका मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक २२७
६.	१३७३	वैशाख सुदि १२	गुणाकरसूरि	,,	जैन मंदिर, आर्वी	मुनि कांतिसागर, संपा० **जैनधातु प्रतिमालेख**, लेखांक २७
७.	१३८३	माघ सुदि १० सोमवार	महेश्वरसूरि के पट्टधर अभयदेवसूरि	,,	शांतिनाथ जिना. भोंयरापाडो खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ८९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८.	१४०९	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	अभयदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४२४
९.	१४३५	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	अभयदेवसूरि के पट्टधर आमदेवसूरि	चंद्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १६२
१०.	१४५३	वैशाख सुदि २	शांतिसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	वही, भाग १, लेखांक १७७
११.	१४५६	माघ सुदि १३ शनिवार	,,	,,	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१४५८	फाल्गुन वदि ११ शुक्रवार	शांतिसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, हीरावाडी, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १८३, एवं पूरनचंद नाहर, संपा०, **जैनलेख-संग्रह**, भाग-२, लेखांक १२३७
१३.	१४८२	--	यशोदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, करेड़ा	वही, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १९३१
१४.	१४८५	मार्गशीर्ष वदि २	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३१७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५.	१४८६	माघ सुदि ५ गुरुवार	यशोदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६२
१६.	१४८६	माघ सुदि ११ शनिवार	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, भाग १, लेखांक २६१
१७.	१४९३	माघ सुदि...	हरिभद्रसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विजयगच्छीय जिनालय, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक २९७
१८.	१४९३	वैशाख सुदि ३	यशोदेवसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि ३ सोमवार	यशोदेवसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ७९५
२०.	१५०१	ज्येष्ठ वदि १२	शांतिसूरि के पट्टधर यशोदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४८५
२१.	१५०१	कार्तिक सुदि १५	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडी बाजार, मुंबई	मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ९५
२२.	१५०३	आषाढ़ सुदि गुरुवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२३.	१५०३	तिथि- विहीन	यशोदेवसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयंतविजय, संपा० **अर्बुद-प्राचीनजैनलेख-संदोह,** लेखांक ६३६
२४.	१५०४	वैशाख सुदि ७ बुधवार	नन्नाचार्य संतानीय शांतिसूरि के पट्टधर यशोदेवसूरि के पट्टधर नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि... के पट्टधर	पार्श्वनाथ की पाषाण प्रतिमा का लेख	नाकोड़ा तीर्थ	विनयसागर, लेखक- **श्रीनाकोड़ातीर्थ,** लेखांक १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
			शांतिसूरि के पट्टधर यशोदेवसूरि			
२५.	१५०७	फाल्गुन वदि ३	यशोदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, तालाबवाला पोल, सूरत	विजयधर्मसूरि, संपा० **प्राचीन-लेखसंग्रह,** लेखांक२२९
२६.	१५०८	वैशाख वदि २	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, खजवाना	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४३०
२७.	१५१०	तिथि-विहीन	नन्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	वही, भाग १, लेखांक ४७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१५१३	माघ....	यशोदेवसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १८८७
२९.	१५२८	वैशाख सुदि ५	श्री रत्नसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० **राधनपुर-प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक २५८
३०.	१५२८	माघ वदि ५	यशोदेवसूरि के पट्टधर नन्नसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	घरदेरासर, बडोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २२८
३१.	१५२८	--	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, खंडप, मारवाड	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३२.	१५३०	वैशाख सुदि ९	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सांभर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७२०
३३.	१५३३	ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रवार	उद्योतनसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बूंदी	वही, भाग १, लेखांक ७५९
३४.	१५३६	वैशाख ...९ गुरुवार	,,	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नापासर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३३३
३५.	१५३६	वैशाख ...९ सोमवार	नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि	चंद्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बोहारनटोला, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग–२ लेखांक १५५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३६.	१५३६	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	अजूण (उद्योतन) सूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २१८
३७.	१५३६	आषाढ़ सुदि ९	,,	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	स्वामीजी का मंदिर, रोशन मुहल्ला, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १४६२
३८.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ४ सोमवार	,,	पार्श्वनाथ की सपरिकर प्रतिमा का लेख	आदिनाथ की छत्री के बाहर आले में सपरिकर मूर्ति, नाकोड़ा तीर्थ	**श्रीनाकोड़ातीर्थ**, लेखांक ५७
३९.	१५४०	आषाढ वदि १	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, सरधना	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४०.	१५५०	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	,,	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा तीर्थ	**श्रीनाकोड़ातीर्थ**, लेखांक ५९
४१.	१५५१	पौष सुदि १०	,,	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिना., सवाई माधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८६३
४२.	१५५६	पौष सुदि १५ सोमवार	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डांगों में, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३७
४३.	१५५८	चैत्र वदि १३ सोमवार	नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि	,,	जिनदत्तसूरि की दादावाड़ी, शत्रुंजय	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक २५८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४४.	१५५९	आषाढ़ सुदि १० बुधवार	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९०१
४५.	१५६६	माघ वदि २ रविवार	,,	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४४
४६.	१५७५	आषाढ़ वदि ७ रविवार	महेश्वरसूरि	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, मेड़तासिटी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५६
४७.	१५८३	फाल्गुन वदि १ शुक्रवार	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिना०, सवाई माधोपुर	वही, लेखांक ९७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४८.	१५९३	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	,,	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३१५
४९.	१६२४	आषाढ वदि ८	आमदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों में, बीकानेर	वही, लेखांक १६२७
५०.	१६६७	भाद्रपद सुदि ९ शुक्रवार	यशोदेवसूरि के समय, सुमतिशेखर (शिलालेख के रचनाकार)	शिलापट्टप्रशस्ति	पार्श्वनाथ जिनालय, नाकोड़ा	**श्रीनाकोड़ातीर्थ**, लेखांक ९०
५१.	१६७८	द्वितीय आषाढ़	यशोदेवसूरि के समय उपा०	शिलापट्टप्रशस्ति (चौकी मंडप में)	पार्श्वनाथ जिनालय, नाकोड़ा	वही, लेखांक ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि २ रविवार	कनकशेखर के शिष्य सुमतिशेखर एवं देवशेखर (शिलालेख के रचनाकार)			
५२.	१६८१	माघ सुदि ४ शनिवार	श्री ...शेखरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	भंडारस्थ प्रतिमा, शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा	वही, लेखांक ९२
५३.	१६८१	चैत्र वदि ५	यशोदेवसूरि के समय हरशेखर के	शिलालेख, नाकोड़ा	रंगमंडप, पार्श्वनाथ जिनालय,	वही, लेखांक ९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		मंगलवार	शिष्य कनकशेखर के शिष्य देवशेखर एवं सुमतिशेखर (शिलालेख के रचनाकार)		नाकोड़ा	
५४.	१६८१	आषाढ वदि ६ सोमवार	--	शिलालेख	नाभिमंडप, पार्श्वनाथ जिनालय, नाकोड़ा तीर्थ	वही, लेखांक ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के आचार्यों का जो पट्टक्रम निश्चित होता है, वह इस प्रकार है –

?

महेश्वरसूरि (प्रथम) (वि०सं० १३४५-१३६१)
|
अभयदेवसूरि (वि०सं० १३८३-१४०९)
|
आमसूरि (वि०सं० १४३५)
|
शांतिसूरि (वि०सं० १४५३-१४५८)
|
यशोदेवसूरि (वि०सं० १४७६-१५१३)
|
नन्नसूरि (वि०सं० १५२८-१५३०)
|
उद्योतनसूरि (वि०सं० १५३३-१५६६)
¦
महेश्वरसूरि (द्वितीय) (वि०सं० १५७५-१५९३)
|
अभयदेवसूरि (कोई लेख उपलब्ध नहीं)
|
आमसूरि (वि०सं० १६२४)
|
शांतिसूरि (कोई लेख उपलब्ध नहीं)
|
यशोदेवसूरि (वि०सं० १६६७-१६८१)

अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित महेश्वरसूरि 'प्रथम' (वि०सं० १३४५-१३६१) और **कालकाचार्यकथा** (वि०सं० १३६५/ई०स० १३०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की उपलब्ध प्रति) के रचनाकार महेश्वरसूरि को समसामयिकता, नामसाम्य आदि को दृष्टिगत रखते हुए एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। ठीक यही बात अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात नन्नसूरि (वि०सं० १५२८-१५३०) और **सीमंधरजिनस्तवन** (रचनाकाल वि०सं० १५४४-ई० सन् १४८८) के रचनाकार नन्नसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इसी प्रकार वि० सं० १५७३/ई०स० १५२४ में **विचारसारप्रकरण** के रचनाकार महेश्वरसूरि और वि०सं० १५७५-१५९३ के मध्य विभिन्न जिनप्रतिमाओं के प्रतिष्ठापक महेश्वरसूरि 'द्वितीय' भी एक ही व्यक्ति मालूम पड़ते हैं। जैसा कि पीछे हम देख चुके हैं, अजितदेवसूरि ने भी अपनी कृतियों में स्वयं को महेश्वरसूरि का शिष्य बताया है, जिन्हें महेश्वरसूरि 'द्वितीय' से अभिन्न माना जा सकता है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर पल्लीवालगच्छीय मुनिजनों की गुरु-परम्परा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है -

महेश्वरसूरि प्रथम (वि०सं० १३४५-१३६१)
| प्रतिमा लेख
| **कालकाचार्यकथा** के
| रचनाकार
अभयदेवसूरि (वि०सं० १३८३-१४०९)
| प्रतिमा लेख
| (**कालकाचार्यकथा** की
| वि०सं० १३६५/ई०स० १३०९
| में लिखी गई प्रति
| वि०सं०१३७८-ई०स० १३२२
| में इन्हें समर्पित की गई)
आमसूरि (वि०सं० १४३५)
| प्रतिमालेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांतिसूरि (वि०सं० १४५३-१४५८) प्रतिमालेख
|
यशोदेवसूरि (वि०सं० १४७६-१५१३) प्रतिमालेख
|
नन्नसूरि (वि०सं० १५२८-१५३०) प्रतिमालेख
(वि०सं० १५४४ में **सीमंधर जिनस्तवन** के रचनाकार)
|
उद्योतनसूरि (वि०सं० १५३३-१५५६) प्रतिमालेख
|
महेश्वरसूरि (वि०सं० १५७५-१५९३) प्रतिमालेख
(वि०सं० १५७३ में **विचार-सारप्रकरण** के रचनाकार)
|
अजितदेवसूरि (**पिंडविशुद्धि-दीपिका**, **कल्पसिद्धान्त-वीपिका** आदि के कर्ता)
|
हीराचंद (**चौबोलीचौपाई** के कर्ता)

अभयदेवसूरि (साक्ष्यअनुपलब्ध)
|
आमसूरि (वि०सं० १६२४) प्रतिमालेख
|
शांतिसूरि (साक्ष्य अनुपलब्ध)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
यशोदेवसूरि (वि०सं० १६६७
-१६८१)
प्रतिमालेख

जहां तक पल्लीवाल गच्छ की उक्त दोनों पट्टावलियों के विवरणों की प्रामाणिकता का प्रश्न है, उसमें प्रथम पट्टावली का यह कथन कि महेश्वरसूरि की शिष्यसंतति पल्लीवालगच्छीय कहलाई, सत्य के निकट प्रतीत होता है। चूँकि इस पट्टावली के अनुसार वि०सं० ११४५ में उनका निधन हुआ, अतः यह निश्चित है कि उक्त तिथि के पूर्व ही यह गच्छ अस्तित्व में आ चुका था। यद्यपि इस पट्टावली में उल्लिखित अनेक बातों का किन्हीं भी अन्य साक्ष्यों से समर्थन नहीं होता, अतः उन्हें स्वीकार कर पाना कठिन है, फिर भी इसमें पल्लीवालगच्छ के उत्पत्ति सम्बन्धी साक्ष्य उपलब्ध होने के कारण इसे महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

जहां तक दूसरी पट्टावली की प्रामाणिकता की बात है, इसमें यशोदेव- नन्नसूरि- उद्योतनसूरि- महेश्वरसूरि- अभयदेवसूरि- आमसूरि- शांतिसूरि- इन पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति दर्शाई गई है। जैसा कि हम पीछे देख चुके हैं, साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से इसका समर्थन होता है। इस प्रकार इस पट्टावली में दिए गए पट्टधर आचार्यों के नाम और उनके पट्टक्रम की प्रामाणिकता प्रायः सिद्ध हो जाती है, किन्तु इसमें ५७वें पट्टधर आमसूरि, ५८वें पट्टधर शांतिसूरि और ५९वें पट्टधर यशोदेवसूरि से संबद्ध तिथियों को छोड़कर प्रायः सभी तिथियां मात्र अनुमान के आधार पर कल्पित होने के कारण अभिलेखीय या अन्य साहित्यिक साक्ष्यों से उनका समर्थन नहीं होता तथापि पल्लीवाल गच्छ से संबद्ध आचार्यों का प्रामाणिक पट्टक्रम प्रस्तुत करने के कारण इसकी महत्ता निर्विवाद है। इस पट्टावली में ४१वें पट्टधर महेश्वरसूरि का निधन वि०सं० ११५० में बतलाया गया है। प्रथम पट्टावली में भी वि०सं० ११४५ में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महेश्वरसूरि के निधन की बात कही गई है और उन्हें पल्लीवालगच्छ का प्रवर्तक बताया गया है। दोनों पट्टावलियों द्वारा महेश्वरसूरि को समसामयिक सिद्ध करने से यह अनुमान ठीक लगता है कि महेश्वरसूरि इस गच्छ के प्रतिष्ठापक रहे होंगे।

मुनि कांतिसागर के अनुसार प्रद्योतनसूरि के शिष्य इन्द्रदेव से विक्रम संवत् की १२वीं शती में यह गच्छ अस्तित्व में आया[१२], किन्तु उनके इस कथन का आधार क्या है, ज्ञात नहीं होता।

उपकेशगच्छ से निष्पन्न कोरंटगच्छ में हर तीसरे आचार्य का नाम नन्नसूरि मिलता है[१३], इससे यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि पल्लीवालगच्छ भी उक्त गच्छों में से किसी एक गच्छ से उद्भूत हुआ होगा। इस गच्छ से संबद्ध १६वीं शती की ग्रन्थ-प्रशस्तियों में इसे कोटिकगण और चंद्रकुल से निष्पन्न बताया गया है, परंतु इस गच्छ में पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति को देखते हुए इसे चैत्यवासी गच्छ मानना उचित प्रतीत होता है। वस्तुतः यह गच्छ सुविहितमार्गीय था या चैत्यवासी, इसके आदिम आचार्य कौन थे, यह कब और क्यों अस्तित्व में आया साक्ष्यों के अभाव में ये सभी प्रश्न अभी अनुत्तरित ही रह जाते हैं।

सन्दर्भसूची

१. मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रंथमाला, ग्रन्थांक ५३, मुंबई १९६१ ई०., पृष्ठ ७२-७६.

२. श्री अगरचंद नाहटा, **पल्लीवालगच्छपट्टावली**।

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई, संपा० **श्री आत्मानन्दजी शताब्दी ग्रंथ**, मुंबई १९३६ ई०,. हिन्दी खण्ड, पृष्ठ १८२-१९६.

उक्त दोनों पट्टावलियां श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने स्वसंपादित **जैनगुर्जरकविओ भाग-३**, खंड-२, पृष्ठ २२४४-२२५४ में भी प्रकाशित की हैं.

३. Muni Punyavijaya, Ed. *Catalogue of Palm Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandara, Cambay*, G.O.S. No. 135, Baroda, 1961, A.D., pp 81-82.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४-५. श्री अगरचंद नाहटा, **पल्लीवालगच्छपट्टावली**, **श्री आत्मानन्दजी शताब्दी ग्रंथ**, पृष्ठ १९१.

६. A. P. Shah, Ed. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Muni Shree Punya Vijayji's Collection*, Vol. I, L. D. series No. 5, Ahmedabad 1965, A.D. P- 189, No. 3343.

७. **श्री आत्मानन्द शताब्दी ग्रंथ**, पृष्ठ १९१-१९२.

८. वही, पृष्ठ १९२.

९. वही, पृष्ठ १९४-१९५.

१०-११. वही, पृष्ठ १९२.

१२. मुनि कांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, कुशल पुष्प ४, कुशल संस्थान, जयपुर १९९० ई०, पृष्ठ ३७२.

१३. द्रष्टव्य इसी पुस्तकके अ-तर्गत कोरंटगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वचन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

श्वेताम्बर परम्परा में समय-समय पर अस्तित्व में आये विभिन्न गच्छों में नागपुरीयतपागच्छ भी एक है। इस गच्छ की पट्टावलियों के अनुसार वडगच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि द्वारा नागौर में उग्र तप करने के कारण वहां के शासक द्वारा उन्हें 'तपा' विरुद् प्रदान किया गया । धीरे-धीरे उनकी शिष्य सन्तति इसी आधार पर नागपुरीयतपागच्छ के नाम से विख्यात् हुई । इस गच्छ में कई विद्वान् और प्रभावशाली मुनिजन हो चुके हैं । इसी गच्छ में वि० सम्वत् की १६वीं शती के अंतिम चरण में हुए आचार्य हेमहंससूरि की परम्परा में हुए आचार्य साधुरत्नसूरि के शिष्य पार्श्वचन्द्रसूरि अपने समय के एक प्रखर विद्वान् और प्रभावशाली जैन आचार्य थे । उनके द्वारा रची गयी अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियां मिलती हैं । उनके पश्चात् इनकी शिष्यसंतति इन्हीं के नाम पर पार्श्वचन्द्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई और आज भी इस परम्परा के अनुयायी मुनिजन एवं साध्वियां विद्यमान हैं ।

पार्श्वचन्द्रगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये आवश्यक साहित्यिक एवं अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं । इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा रचित ग्रन्थों की प्रशस्तियों तथा उनके प्रेरणा से लिखवायी गयी या स्वयं अध्ययनार्थ लिखे गये ग्रन्थों की प्रशस्तियों के साथ-साथ इस गच्छ की तीन पट्टावलियाँ भी मिलती हैं । इन सब के साथ-साथ इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं, जो विक्रम सम्वत् की १८वीं शती से लेकर वि०सं० की २०वीं शती तक के हैं । साम्प्रत निबन्ध में उन सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करने का एक प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों-ग्रन्थ एवं पुस्तक प्रशस्तियों तथा पट्टावलियों और इनके पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है।

जैसा की ऊपर कहा जा चुका है आचार्य पार्श्वचन्द्रसूरि अपने समय के विद्वान् और प्रभावक जैन मुनि थे। उनके द्वारा रची गयी अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियाँ मिलती हैं[१] जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१. **आचारांगप्रथमश्रुतस्कन्धबालावबोध**
२. **तंदुलवेचारियपयन्नाबालावबोध**
३. **प्रश्नव्याकरणसूत्रबालावबोध**
४. **औपपातिकसूत्रबालावबोध**
५. **सूत्रकृतांगसूत्रबालावबोध**
६. **रूपकमाला** (रचनाकाल वि०सं० १५८६)
७. **साधुवंदना**
८. **चारित्रमनोरथमाला**
९. **श्रावकमनोरथमाला**
१०. **संगरंगप्रबन्ध**
११. **वस्तुपाल तेजपालरास** (रचनाकाल वि०सं० १५९७)
१२. **मुंहपत्तिछत्तीसी**
१३. **केशिप्रदेशीबंध**
१४. **खंधकचरित्र** (रचनाकाल वि०सं० १६००)

इनके शिष्य समरचन्द्र भी विद्वान् जैनाचार्य थे। अपने गुरु पार्श्वचन्द्रसूरि की स्तुति में इन्होंने **पार्श्वचन्द्रसूरिस्तुतिसंझाय** की रचना की[२]। इनके द्वारा रचित अन्य कृतियों[३] का विवरण निम्नानुसार है :

१. **चतुर्विंशतिजिननमस्कार** (रचनाकाल वि०सं० १५८८)
२. **प्रत्याख्यानचतुःसप्ततिका**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. **पंचविंशतिक्रियासंझाय**
४. **आवश्यकअक्षरप्रमाणसंझाय**
५. **शत्रुंजयमंडनपार्श्वनाथस्तवन**
६. **शांतिनाथजिनस्तवन**
७. **ब्रह्मचारी**
८. **उपदेशसाररत्नकोश**
९. **ऋषभस्तव**
१०. **कल्याणस्तव**
११. **शंखेश्वरस्तव**
१२. **नेमिस्तव**

अपनी कृतियों की प्रशस्तियों में इन्होंने अपने गुरु पार्श्वचन्द्रसूरि का सादर स्मरण किया है।

पार्श्वचन्द्रसूरि के दूसरे शिष्य विनयदेवसूरि हुए जिनसे सुधर्मगच्छ अस्तित्व में आया[४]। विनयदेवसूरि के प्रशिष्य मनजी ऋषि ने वि०सं० १६४६ में **विनयदेवसूरिरास** की रचना की।

पार्श्वचन्द्रगच्छ से सम्बद्ध अन्य साहित्यिक साक्ष्यों का विवरण इस प्रकार है।

सम्यकत्त्वकौमुदीरास – वि०सं० १६४२ में रची गयी इस कृति के रचनाकार के रूप में वच्छराज नामक मुनि का उल्लेख मिलता है। मरु-गूर्जर भाषा में रचित उक्त कृति की प्रशस्ति[५] में रचनाकार ने अपने गच्छ, गुरु-परम्परा, रचनाकाल आदि का सुन्दर विवरण दिया है, जो निम्नानुसार है :

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि — वाचक रत्नचारित्र
|
ऋषि वच्छराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(वि०सं० १६४२ में **सम्यकत्त्वकौमुदीरास** के रचनाकार)

ऋषि वच्छराज द्वारा रचित **नीतिशास्त्रपंचाख्यान** अपरनाम **पंचतंत्रचोपाई**[६] (रचनाकाल वि०सं० १६४८) नामक एक अन्य कृति भी प्राप्त होती है।

पार्श्वचन्द्रसूरिना ४२ दोहा – पार्श्वचन्द्रगच्छीय जयचन्द्रसूरि द्वारा रचित इस कृति की प्रशस्ति[७] में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का विवरण दिया है, जो इस प्रकार है :

पार्श्वचन्द्र पट्टोधरण, रामचंद्र गुरु सूर,
परेत गुरुने पालीया पंच महाव्रत पूर।
समरचंद्र गुरु सारिखा, राजचंद्र तिणरात,
खडगधार चारित्र खरो चढे धरा लग बात।
गच्छधोरी गाजे गुहिर विमलचंद्र वडवार,
पट्टोधरण प्रगटीयो जयचंद्र जगे आधार।
जे राजा परजाह जे सहुके नामे शीष,
जयचंद आयो जोधपुर पुगी सवहि जगीस।

अर्थात्

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचंद्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि (वि०सं० १७वीं शती के तृतीय चरण आस-पास **पार्श्वचन्द्रसूरिना सैंतालिस-दोहा** के रचनाकार)

इनके द्वारा रचित **राजरत्नरास** (वि०सं० १६५४), **रायचन्द्रसूरिरास** आदि कृतियां भी मिलती हैं।[८]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरामशोभाचरित्र के रचनाकार पूंजाऋषि भी इसी गच्छ के थे। अपनी उक्त कृति की प्रशस्ति[९] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा एवं रचनाकाल आदि का निर्देश किया है, जो इस प्रकार है :

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
रायचन्द्रसूरि
|
हंसचन्द्रसूरि
|
पूंजाऋषि (वि०सं० १६५२ /ई०स० १५९६ में **आरामशोभाचरित्र** के रचनाकार)

वि०सं० १६६३/ई० सन् १६०७ में रचित **अंजनासुन्दरीरास की प्रशस्ति**[१०] से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार विमलचारित्र भी इसी गच्छ से सम्बद्ध थे। इसकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो निम्नानुसार है :

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि — वाचक रत्नचारित्र
|
विमलचारित्र (वि०सं० १६६३/ई०स० १६०७ में **अंजनासुन्दरीरास** के रचनाकार)

वि०सं० १६६४/ई०स० १६०८ में रची गयी **नलदमयन्तीरास** के रचनाकार मेघराज ने भी स्वयं को पार्श्वचन्द्रगच्छ के मुनि के रूप में उल्लिखित किया है। इसकी प्रशस्ति[११] में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा, रचनाकाल आदि का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचंद्रसूरि
|
श्रवणऋषि
|
वाचक मेघराज (वि०सं० १६६४/ई०स० १६०८ में **नलदमयन्तीरास** के रचनाकार)

वाचक मेघराज द्वारा रची गयी **सोलहसतीरास**, **पार्श्वचन्द्रस्तुति**, **सद्गुरुस्तुति**, **राजप्रश्नीयउपांगबालावबोध** (वि०सं० १६७०), **समवायांगसूत्रबालावबोध**, **उत्तराध्ययनसूत्रबालावबोध**, **औपपातिकसूत्रबालावबोध**, **साधुसमाचारी** (वि०सं० १६६१), **क्षेत्रसमासबालावबोध** (वि०सं० १६७०) आदि विभिन्न कृतियां मिलती हैं[१२]।

जम्बूपृच्छारास (रचनाकाल वि०सं० १७२८/ई०स० १६७२) की प्रशस्ति[१३] से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार वीरचन्द्र भी पार्श्वचन्द्रगच्छ से सम्बद्ध थे। इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा निम्नलिखित रूप से बतलायी है :

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि
|
देवचन्द्र
|
वीरचन्द्र (वि०सं० १७२८/ई०स० १६७२ में **जम्बूपृच्छारास** के रचनाकार)

जयचन्द्रसूरि के एक शिष्य वाचक प्रमोदचंद्र हुए, जिनके द्वारा भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनके शिष्य कर्मचन्द्र द्वारा वि०सं० १७३०(७) में रचित **रोहिणीअशोकचंद्र चौपाई** नामक कृति प्राप्त होती है, जिसकी प्रशस्ति[१४] में इन्होंने अपने प्रगुरु, गुरु, गुरुभ्राता आदि का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

जयचन्द्रसूरि
- प्रमोदचन्द्र
  - कर्मचन्द्र (वि०सं० १७३०(७) में **रोहिणीअशोकचन्द्र चौपाई** के रचनाकार)
- पद्मचन्द्रसूरि
  - मुनिचन्द्रसूरि

इस गच्छ की पट्टावलियों में भी जयचन्द्रसूरि के पट्टधर के रूप में **पद्मचन्द्रसूरि** का नाम मिलता है।

जयचन्द्रसूरि के एक अन्य शिष्य हीरचंद्र हुए जिनके द्वारा रचित यद्यपि कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनके प्रशिष्य लक्ष्मीचंद्र द्वारा रचित **गणसारिणी** (रचनाकाल वि०सं० १७६०) नामक कृति मिलती है, जिसकी प्रशस्ति[१५] में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

जयचन्द्रसूरि
|
हीरचंद्रसूरि
|
जगच्चन्द्रसूरि
|
लक्ष्मीचंद्रसूरि (वि०सं० १७६० में **गणसारिणी** के कर्ता)

उक्त साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु-शिष्य परंपरा की एक तालिका संगठित की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रष्टव्य-तालिका क्रमांक - १

- पार्श्वचन्द्रसूरि (पार्श्वचन्द्रगच्छ के प्रवर्तक एवं अनेक कृतियों के रचनाकार)
  - विनयदेवसूरि (सुधर्मगच्छ के प्रवर्तक)
    - विनयकीर्तिसूरि
      - मनजीऋषि (वि०सं० १६४६ में **विनयदेवसूरिरास** के रचनाकार)
  - समरचन्द्रसूरि (अनेक संज्झाय, स्तवन आदि के रचयिता)
    - राजचन्द्रसूरि
      - विमलचन्द्र सूरि
        - जयचन्द्रसूरि
      - हंसचन्द्र
        - पूंजाऋषि वि०सं० १६४२ में **आरामशोभाचरित्र** के रचनाकार
      - देवचन्द्र
        - वीरचन्द्र वि०सं० १७२८में **जम्बूपृच्छारास** के कर्ता)
      - श्रवणऋषि (वि०सं० १६५७ में वि०सं० **ऋषिदत्तारास** के कर्ता)
        - मेघराज वि०सं० १६६४में **नलदमयन्तीरास** तथा अन्य कृतियों के रचनाकार:
    - रत्नचारित्र
      - विमलचारित्र (वि०सं०१६६३ में **अंजनासुंदरीरास** के कर्ता)
      - वच्छराज (वि०सं०१६४२ में **सम्यकत्त्वकौमुदीरास** के कर्ता)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमोदचन्द्र	हीरचन्द्र
|	|
कर्मचन्द	जगच्चन्द्र
	|
वि०सं० १७३० में	लक्ष्मीचन्द्र
(**रोहिणीअशोकचन्द्रचौपाई** के रचनाकार)	(वि०सं० १७६० में **गणसारिणी** के कर्ता)

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है पार्श्वचन्द्रगच्छ की चार पट्टावलियां आज प्राप्त होती हैं। इनमें से प्रथम पट्टावली[१६] वि०सं० की १८वीं शती में रची गयी प्रतीत होती है तथा अन्य तीनों विक्रम सम्वत् की २०वीं शती के अंतिम दशक में। प्रथम पट्टावली का प्रारम्भ सुधर्मा स्वामी से होता है। चूंकि इस गच्छ का उद्‌भव नागपुरीयतपागच्छ से माना जाता है और नागपुरीयतपागच्छ का बृहद्‌गच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि से। अतः इस पट्टावली में पद्मप्रभसूरि और उनके बाद के जिन पट्टधर आचार्यों का नाम और क्रम मिलता है, वह इस प्रकार है :

तालिका - २

पद्मप्रभसूरि (**भवुनदीपक** के प्रणेता)
|
प्रसन्नचन्द्रसूरि (वि०सं० ११७४ में **नागपुरीयतपागच्छ** के प्रवर्तक)
|
गुणसमुद्रसूरि
|
जयशेखरसूरि (वि०सं० १३०१ में आचार्य पद प्राप्त)
|
वज्रसेनसूरि (वि०सं० १३४२ में आचार्य पद प्राप्त)
|
हेमतिलकसूरि (वि०सं० १३९९ में दिल्ली के अधिपति फिरोजशाह तुगलक से भेंट किया)
|
रत्नशेखरसूरि (फिरोजशाह तुगलक के प्रतिबोधक)
|
हेमचन्द्रसूरि
|
पूर्णचन्द्रसूरि (वि०सं० १४२४ में आचार्य पद प्राप्त)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमहंससूरि (वि०सं० १४५३ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित)
|
पंन्यास लक्ष्मीनिवास

पंन्यास पुण्यरत्न (सर्वविद्याविशारद, वि०सं० १४९९ में विद्यमान)
|
पंन्यास साधुरत्न
|
पार्श्वचन्द्रसूरि (वि०सं० १५३७ में जन्म, १५४७ में दीक्षा, वि०सं० १५५४ में उपाध्याय पद, वि०सं० १५६५ में क्रियोद्धार, अनेक ग्रन्थों के रचनाकार, वि०सं० १६१२ में स्वर्गस्थ)
|
विनयदेवसूरि | समरचन्द्रसूरि (वि०सं० १६०५ में आचार्य पद प्राप्त, वि०सं० १६२६ में स्वर्गस्थ)
|
राजचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि (वि०सं० १६८८ में दीक्षा, वि०सं० १७४४ में स्वर्गस्थ)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि०सं० १७२२ में आचार्य पद, वि०सं० १७४४ में भट्टारक पद, वि०सं० १७५० में निधन)
|
नेमिचन्द्रसूरि (वि०सं० १७५० में भट्टारक पद प्राप्त)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वचन्द्रगच्छ की दूसरी पट्टावली[१७] में पद्मप्रभसूरि से लेकर मुनिवृद्धिचन्द्र तक का पट्टक्रम प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है :

तालिका - ३

पद्मप्रभसूरि
|
प्रसन्नचन्द्रसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
जयशेखरसूरि
|
वज्रसेनसूरि
|
हेमतिलकसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
पूर्णचन्द्रसूरि
|
हेमहंससूरि
|
लक्ष्मीनिवाससूरि
|
पुण्यरत्नसूरि
|
पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयचन्द्रसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
नेमिचन्द्रसूरि
|
कनकचन्द्रसूरि
|
शिवचन्द्रसूरि
|
भानुचन्द्रसूरि
|
विवेकचन्द्रसूरि
|
लब्धिचन्द्रसूरि
|
हर्षचन्द्रसूरि
|
मुक्तिचन्द्रसूरि
|
भ्रातृचन्द्रसूरि (वि०सं० १९२० में जन्म, वि०सं० १९३५ में दीक्षा, वि०सं० १९३७ में क्रियोद्धार, वि०सं० १९६७ में आचार्य पद, १९७२ में निधन)
|
सागरचन्द्रसूरि (वि०सं० १९४३ में जन्म, १९५८ में दीक्षा, वि०सं० १९९३ में आचार्य पद, वि०सं० १९९५ में स्वर्गस्थ)
|
मुनिवृद्धिचन्द्र

तृतीय पट्टावली तो गच्छ के प्रवर्तक पार्श्वचन्द्रसूरि से ही प्रारम्भ होती है। इसमें भी सागरचन्द्रसूरि तक का पट्टक्रम प्राप्त होता है,[१८] जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका - ४

पार्श्वचन्द्रसूरि (वि०सं० १५७२ में नागपुरीयतपागच्छ से अलग होकर वि०सं० १५७५ में अपना मत प्रकट किया)
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि (वि०सं० १६९९ में स्वर्गस्थ)
|
पद्मचन्द्रसूरि (वि०सं० १७४४ में स्वर्गस्थ)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि०सं० १७९७ में स्वर्गस्थ)
|
कनकचन्द्रसूरि
|
शिवचन्द्रसूरि (वि०सं० १८२३ में स्वर्गस्थ)
|
भानुचन्द्रसूरि
|
विवेकचन्द्रसूरि
|
लब्धिचन्द्रसूरि
|
हर्षचन्द्रसूरि (वि०सं० १९१३ में स्वर्गस्थ)
|
हेमचन्द्रसूरि (वि०सं० १९४० में स्वर्गस्थ)
|
भ्रातृचन्द्रसूरि (वि०सं० १९७२ में स्वर्गस्थ)
|
सागरचन्द्रसूरि (वि०सं० १९९३ में स्वर्गस्थ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ पट्टावली श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई द्वारा संपादित **जैनगूर्जर कविओ** भाग २ (प्रथम संस्करण) में दी गयी है[१९]। इसमें भी आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि से लेकर देवचंद्रसूरि तक का अपेक्षाकृत विस्तार से परिचय दिया गया है, जो इस प्रकार है :

तालिका - ५

वादिदेवसूरि
|
पद्मप्रभसूरि (वि०सं० ११९४ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित, **भुवनदीपक** नामक **ज्योतिषशास्त्र** की कृति के रचनाकार वि०सं० १२४० में स्वर्गस्थ)
|
प्रसन्नचन्द्र (वि०सं० १२३६ में आचार्य पद : वि०सं० १२८६ में स्वर्गस्थ)
|
गुणसमुद्रसूरि (वि०सं० १३०१ में स्वर्गस्थ)
|
जयशेखरसूरि (वि०सं० १३०१ में नागौर में आचार्य पद प्राप्त)
|
वज्रसेनसूरि (**लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, गुरुगुण-षट्त्रिंशका** आदि के कर्ता)
|
हेमतिलकसूरि (वि०सं० १३९९ या १४०० में बीलाडा में आचार्य पद प्राप्त) (**श्रीपालचरित** आदि अनेक कृतियों के कर्ता)
|
हेमचन्द्रसूरि (**श्रीपालचरित** की प्रथमादर्शप्रति के लेखक)
|
पूर्णचन्द्रसूरि (वि०सं० १४३० में आचार्य पद प्राप्त)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमहंससूरि (वि०सं० १४५३ में आचार्य पद प्राप्त)

- हेमसमुद्र
- पंन्यासलक्ष्मीनिवास (वि०सं० १४७० में विद्यमान)
  - पंन्यास पुण्यरत्न (वि०सं० १४९९ में विद्यमान)
  - पंन्यास साधुरत्न (वि०सं० १५३७ में आचार्य पद, वि०सं० १५६५ में स्वर्गस्थ)
  - पार्श्वचन्द्रसूरि (वि०सं० १५६५ में आचार्य पद, वि०सं० १५७२ में नागपुरीय-तपागच्छ से अलग होकर वि०सं० १५७५ में अपना मत प्रकट किया, वि०सं० १६१२ में स्वर्गस्थ)
  - समरचन्द्रसूरि (वि०सं० १६०५ में आचार्य पद, वि०सं० १६२६ में स्वर्गस्थ)
  - राजचन्द्रसूरि
  - विमलचन्द्रसूरि
  - जयचन्द्रसूरि (वि०सं० १६९९ में स्वर्गस्थ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्मचन्द्रसूरि (वि०सं० १७४४ में स्वर्गस्थ)

मुनिचन्द्रसूरि (वि०सं० १७४४ में आचार्य पद, वि०सं० १७५० में स्वर्गस्थ)

नेमिचन्द्रसूरि (वि०सं० १७५० में आचार्य पद, वि०सं० १७९० में स्वर्गस्थ)

कनकचन्द्रसूरि

शिवचन्द्रसूरि (वि०सं० १८२३ में स्वर्गस्थ)

भानुचन्द्रसूरि

विवेकचन्द्रसूरि

लब्धिचन्द्रसूरि

हर्षचन्द्रसूरि (वि०सं० १९१३ में स्वर्गस्थ)

हेमचन्द्रसूरि (वि०सं० १९४० में स्वर्गस्थ) मुक्तिचन्द्रसूरि

भ्रातृचन्द्रसूरि (वि०सं० १९६७ में आचार्यपद वि०सं० १९७२ में स्वर्गस्थ)

देवचन्द्रसूरि सागरचन्द्रसूरि (वि०सं० १९९५ में स्वर्गस्थ)

मुनि वृद्धिचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि ऊपर देख चुके हैं प्रथम पट्टावली में पद्मप्रभसूरि के पट्टधर प्रसन्नचन्द्रसूरि द्वारा वि०सं० ११७४ में नागपुरीयतपागच्छ की स्थापना का उल्लेख है। चूंकि नागपुरीयतपागच्छ से सम्बद्ध ग्रन्थ प्रशस्तियों[२०] तथा अन्य सभी पट्टावलियों में समान रूप से पद्मप्रभसूरि को यह श्रेय दिया गया है, अत: उक्त विवरण को पट्टावलीकार की भूल मानी जाये अथवा लेहिया की या ग्रन्थ के सम्पादक की, यह विचारणीय है।

चूँकि पार्श्वचन्द्रगच्छ का प्रादुर्भाव नागपुरीयतपागच्छ के मुनि साधुरत्न के शिष्य पार्श्वचन्द्रसूरि से हुआ है और जैसा कि पट्टावलियों में ऊपर हम देख चुके हैं इनमें पार्श्वचन्द्रसूरि और इनकी शिष्य परम्परा में हुए पट्टधर आचार्यों का क्रम एक-दो नामों को छोड़कर प्राय: समान रूप से मिलता है, जिसे एक तालिका के रूप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है :

तालिका - ६

पार्श्वचन्द्रसूरि
|
समरचन्द्रसूरि
|
राजचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
नेमिचन्द्रसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कनकचन्द्रसूरि
|
शिवचन्द्रसूरि
|
भानुचन्द्रसूरि
|
विवेकचन्द्रसूरि
|
लब्धिचन्द्रसूरि
|
हर्षचन्द्रसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि — मुक्तिचन्द्रसूरि
|
भ्रातृचन्द्रसूरि
|
देवचन्द्रसूरि — सागरचन्द्रसूरि
|
मुनिवृद्धिचन्द्र

पट्टावलियों के पार्श्वचन्द्रसूरि के केवल एक शिष्य समरचन्द्र का नाम मिलता है, किन्तु ग्रन्थप्रशस्तियों से उनके एक अन्य शिष्य विनयदेवसूरि का भी ज्ञात होता है, जिनसे सुधर्मागच्छ अस्तित्व में आया।[२०३अ] इसी प्रकार पट्टावलियों से जहाँ समरचन्द्रसूरि के एक शिष्य राजचन्द्रसूरि का नाम ज्ञात होता है, वहीं ग्रन्थ प्रशस्तियों से उनके दूसरे शिष्य रत्नचारित्र तथा प्रशिष्यों विमलचारित्र और वच्छराज का भी पता चलता है। इनके द्वारा रची गयी विभिन्न कृतियां मिलती हैं। राजचन्द्रसूरि के अन्य शिष्यों हंसचन्द्र, देवचन्द्र, श्रवणऋषि तथा उनके प्रशिष्यों पूंजाऋषि, वीरचन्द्र, मेघराज आदि के नाम ग्रन्थ प्रशस्तियों से ही ज्ञात होते हैं।

इसी प्रकार जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं पट्टावलियों में जयचन्द्रसूरि के पट्टधर के रूप में पद्मचन्द्रसूरि का नाम मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इनके द्वारा रचित **शालिभद्रचौढालिया** (रचनाकाल वि०सं० १७२१/ ई० सन् १६६५) नामक एक कृति प्राप्त होती है। इनके पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि और मुनिचन्द्रसूरि के नेमिचन्द्रसूरि हुए, जिनकी वि०सं० १७९८ में बीकानेर के श्रीसंघ ने चरणपादुका स्थापित करायी[२२]। मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर कनकचन्द्रसूरि हुए जिनका नाम वि०सं० १८३२/ ई० सन् १७७६ में प्रतिलिपि की गयी **श्रीपालकथाटब्बा** की दाता प्रशस्ति में भी मिलता है।[२३] जैसा कि पट्टावलियों में ऊपर हम देख चुके हैं कनकचन्द्रसूरि के पट्टधर के रूप में शिवचन्द्रसूरि का नाम मिलता है। इनके द्वारा वि०सं० १८१५ में अपने गुरु कनकचन्द्रसूरि की चरणपादुका स्थापित करायी गयी।[२४]

संवत् १८१५ वर्षे मासोत्तम श्री फाल्गुनमासे कृष्ण पक्षे षष्टी तिथौ रविवारे श्रीपूज्य **श्रीकनकचंद्रसूरिणां** पादुका कारापिता च भट्टारक **श्रीशिवचंद्रसूरिश्वरैः**

कनकचंद्रसूरि के एक अन्य शिष्य वक्तचन्द्र हुए जिनके एक शिष्य सागरचन्द्र ने वि०सं० १८८४ में अपने गुरु की चरणपादुका स्थापित करायी।[२५]

संवत १८८४ मिति जेठ सुदि ६ शुक्रवारे भट्टारक श्री १०८ श्रीकनकचंद्रसूरिजी संतानीय पं० श्रीवक्तचंदजीकानां पादुका प्रतिष्ठापिता श्रीबीकानेर नगरे।

पट्टावलियों में उल्लिखित शिवचन्द्रसूरि के पट्टधर भानुचन्द्रसूरि और उनके पट्टधर विवेकचंद्रसूरि के बारे में किन्हीं अन्य साक्ष्यों से कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। प्राय: यही बात विवेकचन्द्रसूरि के पट्टधर लब्धिचंद्रसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इनके पट्टधर हर्षचन्द्रसूरि हुए, जो अपने समय के प्रभावशाली आचार्य थे। इनके द्वारा रचित **चौबीसजिनपूजा** नामक कृति प्राप्त होती है।[२६] वि०सं० १९०२ में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्होंने अपने गुरु लब्धिचंद्रसूरि की चरणपादुका स्थापित[२७] की।

संवत् १९०२ शाके १९६७ प्र। मासोत्तमे आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे ८ अष्टम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिगच्छाधिराज भट्टारकोत्तम भट्टारक पुरन्दर भट्टाराकाणां श्री १०८ श्री श्री श्री लब्धिचंद्रसूरिश्वराणं पादुके प्रतिष्ठापिता तंच्छिष्य भट्टारकोत्तम भट्टारक श्रीहर्षचन्द्रसूरि जिद्धि श्रीरस्तुतराम्।

वि०सं० १९०९ में **अन्तरंगकुटुम्बकबीलाचौढालिया** के रचनाकार वीरचन्द्र भी हर्षचन्द्रसूरि के प्रशिष्य और मुनि इन्द्रचन्द्र के शिष्य थे।[२८] जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं पट्टावलियों में हर्षचन्द्रसूरि के दो अलग-अलग शिष्यों हेमचन्द्रसूरि और मुक्तिचन्द्रसूरि का नाम मिलता है और इन दोनों मुनिजनों के पट्टधर के रूप में भ्रातृचन्द्रसूरि का। भ्रातृचन्द्रसूरि के दो शिष्य सागरचन्द्र और देवचन्द्र हुए। इनका पट्टावलियों में ऊपर नाम आ चुका है। सागरचन्द्रसूरि के पट्टधर उनके शिष्य मुनि वृद्धिचन्द्र हुए। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पट्टावलियों से जहाँ इस गच्छ के केवल पट्टधर आचार्यों के नाम ज्ञात हो जाते हैं। यह बात सभी गच्छों के इतिहास के अध्ययन के संदर्भ में प्रायः समान रूप से कही जा सकती है। उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की एक विस्तृत तालिका निर्मित की जा सकती है, इस प्रकार है :

द्रष्टव्य - तालिका क्रमांक ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

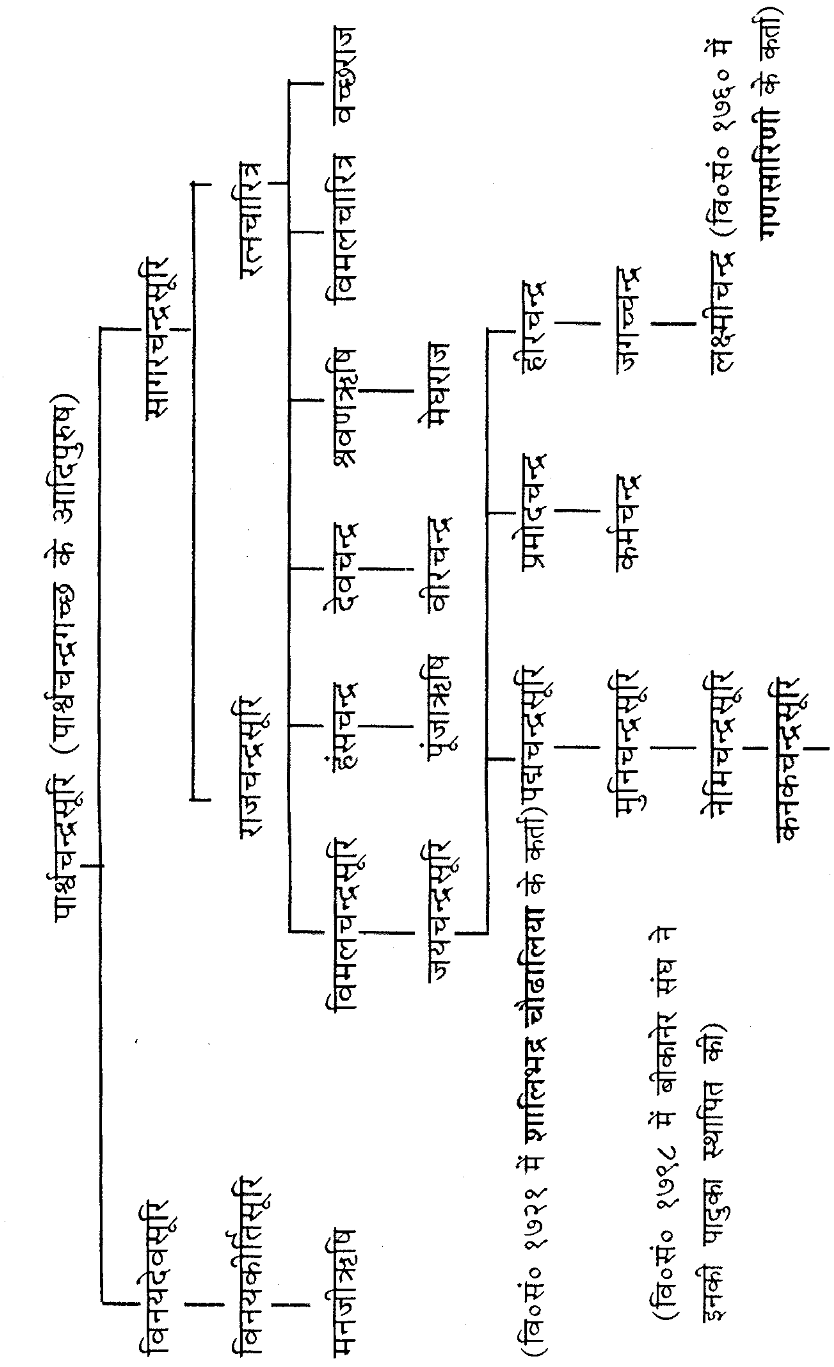

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिवचन्द्रसूरि (वि०सं० १८१५ में गुरु की पादुका के प्रतिष्ठापक)

भानुचन्द्रसूरि

विवेकचन्द्रसूरि — वक्तचन्द्र

लब्धिचन्द्रसूरि — सागरचन्द्र (वि०सं० १८८४ में अपने गुरु की पादुका का स्थापक)

हर्षचन्द्रसूरि(वि०सं० १९०२ में गुरु की पादुका के प्रतिष्ठापक)

मुनि इन्द्रचन्द्र — हेमचन्द्रसूरि — मुक्तिचन्द्रसूरि

मुनि वीरचन्द्र (वि०सं० १९०९ में अतरंगकुटुंबचौढालिया के कर्ता)

भातृचन्द्रसूरि

सागरचन्द्रसूरि — देवचन्द्रसूरि

मुनिवृद्धिचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान में इस गच्छ के नायक मुनि मुक्तिचन्द्रजी है[२९]। इनकी निश्रा में ८ साधु और ६२ साध्वियाँ हैं, जो राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में विचरण कर रही हैं[३०]।

संदर्भ :

१. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, नवीन संस्करण, बम्बई १९८६ ई० पृ०, २८८-३०५.

२. वही, पृ० ३४३-३५०.

३. वही, पृ० ३४३-३५०.

४. वही, पृ० ३२१-३३३.

५. वही, भाग २, पृ० १९२-९३.

६. वही, पृ० १९४-९७.

७. वही, पृ० २९३-९७.

८. वही, पृ० २९३-९७.

९. वही, पृ० २८६-८७.

१०. वही, भाग ३, पृ० ८१-८३.

११. वही, पृ० ४-८.

१२. वही, पृष्ठ ४-८.

१३. वही, भाग ४, पृ० ४२४

१४. वही, पृ० ४२८-३०

१५. A. P. Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muniraja Shree Punya Vijayaji's Collection*, Vol. III, L.D. Series No. 15, Ahmedabad 1968 A.D. No. 6713, p. 429.

१६. मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, बम्बई १९६१ ई०, 'नागपुरीय-तपागच्छपट्टावली', पृ० ४८-५२.

१७. मुनि कल्याणविजयगणि, संपा० **पट्टावलीपरागसंग्रह**, कल्याणविजय शास्त्रसंग्रह समिति, जालोर, १९६६, ई०सं०, पृ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२८-२९.

१८. वही, पृ० २३०.

१९. **जैनगूर्जर कविओ**, प्रथम संस्करण, भाग २, पृ० ७५७-६४.

२०. द्रष्टव्य, **सारस्वतव्याकरणदीपिका** की प्रशस्ति

A. P. Shah, Ibid, Part II, No. 5974, Pp. 376-77.

२०अ. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ४.

२१. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृ० ३१०-११.

२२. अगरचंद भंवरलाल नाहटा, संपा० **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, कलकत्ता १९५६ ई०स०, लेखांक २०१६, २०१७.

२३. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ६, पृ. ४१५.

२४. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २०१३.

२५. वही, लेखांक २०१९.

२६. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३७२.

२७. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २०१२.

२८. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ६, पृ० ३५८-५९.

२९. बाबू लाल जैन 'उज्जवल' संपा० **समग्र जैन चातुर्मास सूची-१९९५**, बम्बई १९९५ ई०स०, पृष्ठ २८५-८७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिप्पलगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ धर्म के श्वेताम्बर आम्नाय के अन्तर्गत पूर्वमध्यकाल और मध्यकाल में विभिन्न गच्छों के रूप में अनेक भेद-प्रभेद उत्पन्न हुए। चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) के आचार्य उद्योतनसूरि ने वि०सं० ९९४/ई० सन् ९३८ में अर्बुदगिरि की तलहटी में स्थित धर्माण (वरमाण) नामक सन्निवेश में वटवृक्ष के नीचे अपने आठ शिष्यों को आचार्य पद प्रदान किया, जिनकी शिष्यसंतति वटवृक्ष के कारण वडगच्छीय कहलायी।[१] इसी गच्छ में विक्रम सम्वत् की १२वीं शती के मध्य में आचार्य सर्वदेवसूरि, उनके शिष्य आचार्य शांतिसूरि और प्रशिष्य विजयसिंहसूरि हुए। पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध उत्तरकालीन साक्ष्यों के अनुसार आचार्य शांतिसूरि ने पीपलवृक्ष के नीचे विजयसिंहसूरि आदि ८ शिष्यों को आचार्य पद दिया, इसप्रकार वडगच्छ की एक शाखा के रूप में पिप्पलगच्छ का उद्भव हुआ।

अन्यान्य गच्छों की भाँति पिप्पलगच्छ में भी अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ। विभिन्न साक्ष्यों से इस गच्छ की त्रिभवीयाशाखा और तालध्वजीयाशाखा का पता चलता है।

पिप्पलगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के परवर्ती मुनिजनों द्वारा रची गयी कुछ कृतियों की प्रशस्तियों में उल्लिखित गुरु-परम्परा के साथ-साथ इसी गच्छ के धर्मप्रभसूरि नामक मुनि के किसी शिष्य द्वारा रचित **पिप्पलगच्छगुर्वावली** तथा किसी अज्ञात कवि द्वारा अपभ्रंश भाषा में रचित **पिप्पलगच्छगुर्वावलीगुरहमाल**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का उल्लेख किया जा सकता है। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की चर्चा की जा सकती है। ऐसे लेख बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। ये वि० सं० १२०८ से वि०सं० १७७८ तक के हैं। यहां उक्त साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

पिप्पलगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्य है विक्रम संवत् की पन्द्रहवीं शती के तृतीय चरण के आस-पास इस गच्छ के धर्मप्रभसूरि के किसी शिष्य द्वारा रचित **पिप्पलगच्छगुरुस्तुति**[२] या **पिप्पलगच्छगुर्वावली**। संस्कृत भाषा में १८ श्लोकों में निबद्ध इस कृति में रचनाकार ने पिप्पलगच्छ तथा इसकी त्रिभवीया शाखा के अस्तित्व में आने एवं अपनी गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है, जो इसप्रकार है :-

सर्वदेवसूरि
|
नेमिचन्द्रसूरि
|
शांतिसूरि
|
महेन्द्रसूरि | विजयसिंहसूरि | देवचन्द्रसूरि | पद्मचन्दसूरि | पूर्णचन्द्रसूरि
जयदेवसूरि | हेमप्रभसूरि | जिनेश्वरसूरि

(विजयसिंहसूरि)
|
देवभद्रसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
शीलभद्रसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिपूर्णदेवसूरि
|
विजयसेनसूरि
|
धर्मदेवसूरि(त्रिभवीयाशाखा के प्रवर्तक)
|
धर्मचन्द्रसूरि
|
धर्मरत्नसूरि
|
धर्मतिलकसूरि
|
धर्मसिंहसूरि
|
धर्मप्रभसूरि
|
धर्मप्रभसूरिशिष्य (नाम-अज्ञात) (**पिप्पलगच्छगुरुस्तुति** के रचनाकार)

पिप्पलगच्छीय सागरचन्द्रसूरि ने वि०सं० १४८४/ई० सन् १४२९ में **सिंहासनद्वात्रिंशिका**[३] की रचना की। कृति के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत उन्होंने स्वयं को जयतिलकसूरि का शिष्य बतलाया है :-

?
|
|
|
|
जयतिलकसूरि
|
सागरचन्द्रसूरि (वि०सं० १४८४/ई० सन् १४२९ में **सिंहासनद्वात्रिंशिका** के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रचनाकार)

पिप्पलगच्छीय हीराणंदसूरि की कई कृतियाँ मिलती हैं[४], जैसे-

वस्तुपालतेजपालरास - रचनाकाल वि०सं० १४८४।

विद्याविलासपवाडो - रचनाकाल वि०सं० १४८५।

कलिकालरास - रचनाकाल वि०सं० १४८६।

जम्बूस्वामीनुंविवाहलु - रचनाकाल वि०सं० १४९४।

दशार्णभद्ररास - रचनाकाल अज्ञात।

स्थूलभद्रबारहमास - रचनाकाल अज्ञात।

अपनी कृतियों की प्रशस्तियों में उन्होंने अपने को पिप्पलगच्छीय वीरदेवसूरि का प्रशिष्य और वीरप्रभसूरि का शिष्य बतलाया है[५] :-

?
|
|
वीरदेवसूरि
|
वीरप्रभसूरि
|
हीराणंदसूरि (ग्रन्थकार)

इसी गच्छ के आनन्दमेरुसूरि ने वि०सं० १५१३/ई० सन् १४५७ में **कालकसूरिभास** की रचना की। इसकी प्रशस्ति[६] में उन्होंने खुद को गुणरत्नसूरि का शिष्य बतलाया है :-

?
|
गुणरत्नसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दमेरु (वि०सं० १५१३/ई० सन् १४५७ में **कालकसूरिभास** के रचनाकार)

कल्पसूत्रआख्यान के रचनाकार भी यही आनन्दमेरुसूरि[७] माने जाते हैं।

पिप्पलगच्छीय नरशेखरसूरि ने वि०सं० १५८४/ई० सन् १५२८ में **पार्श्वनाथपत्नीपद्मावतीहरणरास**[८] की रचना की। इसकी प्रशस्ति में उन्होंने खुद को शांति (प्रभ) सूरि का शिष्य बतलाया है :-

?
|
|
शान्तिप्रभसूरि
|
नरशेखरसूरि (वि०सं० १५८४/ई० सन् १५२८ में **पार्श्वनाथपत्नी-पद्मावतीहरणरास** के रचनाकार)

२१ श्लोकों की अज्ञातकृतक **पिप्पलगच्छगुर्वावली**[९] नामक एक रचना भी उपलब्ध हुई है। श्री भंवरलाल नाहटा ने इसे प्रकाशित किया है। इसमें उल्लिखित गुरु-परम्परा इसप्रकार है :-

शांतिसूरि
|
विजयसिंहसूरि
|
देवभद्रसूरि
|

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

धर्मघोषसूरि
|
शीलभद्रसूरि
|
परिपूर्णदेवसूरि
|
विजयसेनसूरि
|
धर्मदेवसूरि (त्रिभवीयाशाखा के प्रवर्तक)
|
धर्मचन्द्रसूरि
|
धर्मतिलकसूरि
|
धर्मसिंहसूरि
|
धर्मप्रभसूरि
|
धर्मशेखरसूरि
|
धर्मसागरसूरि
|
धर्मवल्लभसूरि

यही इस गच्छ से सम्बद्ध प्रमुख साहित्यिक साक्ष्य हैं। धर्मप्रभसूरिशिष्यविरचित **पिप्पलगच्छगुरुस्तुति** और **पिप्पलगच्छीय** उपरोक्त गुर्वावली में धर्मप्रभसूरि तक पट्टधर आचार्यों की नामावली और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उनका क्रम समान रूप से मिल जाता है। जैसा कि इन दोनों गुर्वावलियों के विवरण से स्पष्ट होता है ये पिप्पलगच्छ की त्रिभवीयाशाखा से सम्बद्ध हैं।

अभिलेखीय साक्ष्य

यद्यपि पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध उपलब्ध सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य वि० सं० १२९१/ई० सन् १२३५ का है, किन्तु वि०सं० १४६५/ई० सन् १४०९ के एक प्रतिमालेख से ज्ञात होता है कि इस गच्छ के (पुरातन) आचार्य विजयसिंहसूरि ने वि०सं० १२०८ में डीडिला ग्राम में महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी जिसे वि०सं० १४६५ में वीरप्रभसूरि ने पुनर्स्थापित की।[१०] वर्तमान में यह प्रतिमा कोरटा स्थित एक जिनालय में संरक्षित है। यदि उक्त प्रतिमालेख के विवरण को सत्य मानें तो पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध प्राचीनतम साक्ष्य वि० सं० १२०८ का माना जा सकता है। इस गच्छ के कुल १७२ लेख मिले हैं जो वि०सं० १७७८ तक के है। इनमें १६वीं शती के लेख सर्वाधिक हैं जब कि १७वीं शती का केवल एक लेख मिला है। इनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिप्पलगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२०८	--	विजयसिंहसूरि	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, कोटरा, सिरोही	पूरनचन्द्र नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९६६
२.	१२९१	माघ सुदि ५ गुरुवार	सर्वदेवसूरि	युगलजिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढा, पूर्वोक्त लेखांक ३४
३.	१३७१	तिथि विहीन	विबुधप्रभसूरि	वासुपूज्य की की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६३३)
४.	१३८० (?)	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	धर्मरत्नसूरि	अस्पष्ट	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१३८३	माघ वदि ११ बुधवार	विबुधप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक २९७
६.	१३८६	वैशाख वदि १२	धर्मदेवसूरि	--	,,	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ३११
७.	१३८९	ज्येष्ठ वदि २ सोमवार	पद्मचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ३३२
८.	१३९०	वैशाख वदि ११ शनिवार	गुणाकरसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि	महावीर की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ३४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१३९६	मिति-विहीन	जिनदत्तसूरि के शिष्य आमदेवसूरि	तीर्थङ्कर की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४७
१०.	१३...१	ज्येष्ठ वदि ३ गुरुवार	विबुधप्रभसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ देरासर, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ८१८
११.	१४०४	वैशाख सुदि १२	"	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त-भाग ३, लेखांक २२६४
१२.	१४०६	फाल्गुन सुदि ११	"	वासुपूज्य की पंचतीर्थी	चन्द्रप्रभ जिनालय, तंबोलीशेरी,	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		गुरुवार		प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	राधनपुर	लेखांक ५७
१३.	१४१४	वैशाख...	वीरदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, लींच	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ७३
१४.	१४१७	वैशाख सुदि २ रविवार	उदयानन्दसूरि के पट्टधर गुणदेवसूरि	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्यजिनालय, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १३
१५.	१४१७	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथजिनालय, शांतिनाथ पोल, थराद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १३३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१४२०	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	वीरदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गूढमण्डप, पित्तलहर, आबू	मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग-२, लेखांक ४२४
१७.	१४२०	"	गुणसमुद्रसूरि	"	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त-लेखांक ४४३
१८.	१४२२	ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवार	मुनिप्रभसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ चैत्य, देसाई शेरी, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक २४५
१९.	१४२४	वैशाख वदि ५	धर्मतिलकसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय,	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		शनिवार		पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिशेरी, राधनपुर	लेखांक ६६
२०.	१४२६	माघ सुदि...	रत्नप्रभसूरि के शिष्य गुणसमुद्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रितमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ४८१
२१.	१४३०	माघ वदि ८ सोमवार	धर्मदेवसूरि के संतानीय प्रीतिसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त - लेखांक १०५
२२.	१४३१	ज्येष्ठ सुदि ८ शुक्रवार	राजशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहतापोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२३.	१४३४	वैशाख वदि २ बुधवार	मुनिप्रभसूरि	"	वीर चैत्य अन्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त- लेखांक १०२
२४.	१४३६	वैशाख वदि ११ मंगलवार	विजयप्रभसूरि के पट्टधर उदयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक ११२
२५.	१४३७	वैशाख सुदि ६ रविवार	धर्मतिलकसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ९३१
२६.	१४३७	वैशाख सुदि ११ सोमवार	जय (धर्म) तिलकसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त - लेखांक २०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२७.	१४४०	पौष सुदि १२ बुधवार	उदयानन्दसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, पाटडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ८५
२८.	१४४२	वैशाख वदि १० रविवार	सागरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त- लेखांक १६१
२९.	१४४७	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	जय.....सूरि	,,	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गौडीजी खड़की राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त- लेखांक ८१
३०.	१४५४	वैशाख वदि ११ रविवार	गुप्त (गुण) समुद्रसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३१.	१४५६	माघ सुदि १३ शनिवार	राजशेखरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ५७४
३२.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	वीरप्रभसूरि	पद्मप्रभ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, फैजाबाद	नाहर, पूर्वोक्त- भाग-२, लेखांक १६७५
३३.	१४६१	,,	,,	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ५९८
३४.	१४६१	,,	उदयचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथदेरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ११४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३५.	१४६१	,,	सागरचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ देरासर, कनासा पाडो, पाटण	वही, भाग-१, लेखांक ३६६
३६.	१४६४	पौष वदि ११ शुक्रवार	वीरप्रभसूरि	महावीर स्वामी की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ६११
३७.	१४६९	माघ सुदि ६ रविवार	,,	लेख	,,	वही, लेखांक ६४३
३८.	१४६७	चैत्र वदि १ शनिवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर सोमचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लिंबडी पाडा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३९.	१४७६	,,	,,	,,	जैन देरासर, लींच	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ११६
४०.	१४७८	वैशाख सुदि १३ सोमवार	कमलचन्द्रसूरि के पट्टधर प्रभानन्दसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ देरासर, वीरमगाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १५०७
४१.	१४७८	---	---	त्रुटित परिकर का लेख	जिनदत्तसूरि दादाबाडी, पालिताना	मुनि कान्तिसागर, सम्पा० **शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक ६३
४२.	१४८२	वैशाख वदि ४ गुरुवार	सागरचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर चैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक १६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४३.	१४८२	तिथि विहीन	वीरप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु प्रतिमा का उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त - लेखांक ७२१
४४.	१४८४	वैशाख वदि ११ रविवार	धर्मशेखरसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त- भाग-३ लेखांक ५५४७
४५.	१४८४	,,	धर्मसागरसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वर चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त - लेखांक १८६
४६.	१४८४	वैशाख सुदि ८ शुक्रवार	सोमचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासानो पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ३६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४७.	१४८९	वैशाख सुदि १ सोमवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १९८
४८.	१४८९	वैशाख सुदि ३ बुधवार	शांतिसूरि के पट्टधर मुनिशेखरसूरि	धर्मनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त- भाग १, लेखांक १३१०
४९.	१४८९	ज्येष्ठ वदि... सोमवार	पद्मचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त – लेखांक ७४१
५०.	१४९१	फाल्गुन वदि २ सोमवार	ललितचन्द्रसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	राजसी सेठ का शांतिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५१.	१४९१	,,	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मन्दिर, मिर्जापुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ४३०
५२.	१४९५	माघ वदि ८ शनिवार	,,	संभवनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ५३६
५३.	१४९६	ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रवार	वीरप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ७९०
५४.	१४९६	फाल्गुन वदि ३ रविवार	प्रीतिरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वर चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त - लेखांक १८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५५.	१४.... ?	वैशाख सुदि १० बुधवार	धर्मशेखरसूरि	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त–भाग–२, लेखांक १०९५
५६.	१४९९	माघ वदि ९ गुरुवार	वीरप्रभसूरि	पद्मप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त – लेखांक ८०८
५७.	१५०१	फाल्गुन वदि ७ बुधवार	,,	महावीर की धातुप्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ८५४
५८.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११	वीरप्रभसूरि एवं हीरसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**आबू**, भाग–५, लेखांक ५३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५९.	१५०३	मार्गशीर्ष सुदि ८ शनिवार	धर्मशेखरसूरि	तीर्थंकर की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वणा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १९१
६०.	१५०३	माघ वदि ५	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, भीनासर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त - लेखांक २१९२
६१.	१५०३	माघ सुदि .....?	विजयदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथजिनालय, खजूरी शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १३९
६२.	१५०४	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	उदयदेवसूरि	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६३.	१५०५	वैशाख सुदि २ शुक्रवार	धर्मशेखरसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ८०८
६४.	१५०५	पौष सुदि १५ गुरुवार	उदयदेवसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ देरासर, चिन्तामणि खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १४५
६५.	१५०६	माघ सुदि ५ शनिवार	विजयदेवसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथजिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २१८
६६.	१५०६	माघ सुदि १० शुक्रवार	चन्द्रप्रभसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६७.	१५०६	,,	धर्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयदेवसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १५६
६८.	१५०७	वैशाख वदि ४ सोमवार	गुणरत्नसूरि	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, प्रांतिज	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २३१
६९.	१५०८	चैत्र सुदि ५ शुक्रवार	सागरचन्द्रसूरि के पट्टधर शुभचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक ७४
७०.	१५०९	ज्येष्ठ वदि ९ शुक्रवार	उदयदेवसूरि	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त- लेखांक २५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७१.	१५०९	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	गुणरत्नसूरि	,,	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७००
७२.	१५०९	माघ सुदि २ गुरुवार	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय, दलाल का टेकड़ा, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४३५
७३.	१५०९	माघ सुदि १० शनिवार	,,	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक-२२
७४.	१५१०	कार्तिक वदि ४ रविवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर चन्द्रप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक ९३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७५.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	गुणरत्नसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	लोढण पार्श्वनाथ- देरासर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३७
७६.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	उदयदेवसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त लेखांक ११८
७७.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	,,	पद्मप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८६५
७८.	१५११	,,	विजयदेवसूरि	अजितनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना० जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७९.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक २६५
८०.	१५१२	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	,,	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथदेरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ११२६
८१.	१५१२	वैशाख सुदि.....	,,	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, भोंयरा पाडो, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक-८७७
८२.	१५१२	मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुवार	उदयदेवसूरि	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ जिना०, रागड़ी चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त - लेखांक १६९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८३.	१५१२	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	गुणरत्नसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २४७
८४.	१५१२	तिथि विहीन	,,	सुमतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १३३
८५.	१५१३	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	रत्नशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	राजसीशाह का घरदेरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २८९
८६.	१५१३	पौष वदि ४	गुणरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	केशरियानाथ का मंदिर मोती चौक, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८७.	१५१३	माघ सुदि १३ रविवार	शांतिसूरि के पट्टधर गुणरत्नसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़ अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८२१
८८.	१५१५	वैशाख वदि २ गुरुवार	चन्द्रप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वर चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३६
८९.	१५१५	वैशाख सुदि १३ रविवार	विजयदेवसूरि के उपदेश से शालिभद्रसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १४४
९०.	१५१५	वैशाख सुदि ६	,,	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिना०, भद्रावती	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९१.	१५१५	माघ सुदि ६ गुरुवार	उदयदेवसूरि	धर्मनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ९८
९२.	१५१५	,,	,,	नेमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिना० रीची रोड, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ९४१
९३.	१५१६	वैशाख वदि २ गुरुवार	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, भाग-१, लेखांक ९२२
९४.	१५१६	वैशाख सुदि २	विजयदेवसूरि के पट्टधर शालिभद्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ११५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ५५३
९५.	१५१६	आषाढ़ सुदि १ शुक्रवार	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्यान्तर्गत आदीश्वर चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक ८३
९६.	१५१७	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	विजयदेवसूरि के उपदेश से शालिभद्रसूरि	विमलनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लोद्रवा	नाहर, पूर्वोक्त-भाग-३, लेखांक २५५४
९७.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	गुणरत्नसूरि के उपदेश से गुणसागरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, रीचीरोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९८.	१५१७	,,	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मंदिर, लींबड़ी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त- लेखांक ३१३
९९.	१५१७	वैशाख सुदि १३ मंगलवार	गुणरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १३०
१००.	१५१७	माघ सुदि १० बुधवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर चन्द्रप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जीरावला देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त- लेखांक ३०६
१०१.	१५१७	फाल्गुन सुदि १० शुक्रवार	अभयचन्द्रसूरि	,,	आदिनाथ जिना०, जामनगर	वही, लेखांक ३०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०२.	१५१८	माघ सुदि ५ सोमवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	मुनिसुव्रत की धातुप्रतिमा का लेख	पोसीना पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १४७१
१०३.	१५१९	वैशाख वदि १० शुक्रवार	मुनिसिंहसूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो पाटण	वही, भाग-१, लेखांक ३०७
१०४.	१५१९	ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार	विजयदेवसूरि के पट्टधर शालिभद्रंसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, अमरेली	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४१
१०५.	१५१९	माघ वदि २ शनिवार	मुनिसुन्दरसूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०६.	१५२०	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	नमिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	नवखंडापार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३५१
१०७.	१५२२	माघ सुदि १३ बुधवार	,,	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ६९१
१०८.	१५२३	माघ वदि १० गुरुवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर चन्द्रप्रभसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३६९
१०९.	१५२३	वैशाख सुदि ९	धर्मसागरसूरिं	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भायखला, मुम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १९२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११०.	१५२४	वैशाख वदि २ सोमवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३८२
१११.	१५२४	,,	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	अभिनन्दननाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ३८३
११२.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीर चैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक १४५
११३.	१५२४	तिथि विहीन	,,	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ७३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११४.	१५२५	पौष वदि २ मंगलवार	,,	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन देरासर, वढवाण	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३८९
११५.	१५२५	माघ सुदि २ गुरुवार	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिना० सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २००
११६.	१५२५	फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार	गुणरत्नसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिना०, भरुच	वही, भाग-२, लेखांक ५५९
११७.	१५२६	कार्तिक सुदि १३ मंगलवार	अमरचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिना०, जैसलमेर	नाहटा, पूर्वोक्त, भाग - ३, लेखांक २७६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११८.	१५२७	,,	,,	,,	शीतलनाथ जिना०, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३, लेखांक २३९३
११९.	१५२७	पौष वदि ४ गुरुवार	विजयदेवसूरि के शिष्य शालिभद्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १३४
१२०.	१५२७	पौष वदि ५ गुरुवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	कुन्थुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८३१
१२१.	१५२७	माघ सुदि १३ रविवार	,,	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	दादा पार्श्वनाथ जिना० नरसिंहजी की पोल, बडोदरा	वही, भाग-२, लेखांक १२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२२.	१५२८	वैशाख वदि... सोमवार	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४१६
१२३.	१५२८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	विजयदेवसूरि के पट्टधर शालिभद्रसूरि	कुंथुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वर्धमानशाह का शांतिनाथ देरासर, जामनगर	वही, लेखांक ४१५
१२४.	१५२८	वैशाख सुदि १२ सोमवार	गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ९८७
१२५.	१५२८	माघ वदि ६ शुक्रवार	उदयदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२६.	१५२९	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	गुणसागरसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, दीयाणा	**आबू**, भाग-५, लेखांक ४९३
१२७.	१५२९	माघ सुदि ५ रविवार	अमरचन्द्रसूरि के उपदेश से सर्वदेवसूरि	कुंथुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिना०, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १०५१
१२८.	१५३०	वैशाख वदि ५ बुधवार	विजयदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, भानीपोल, राधनपुर	विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २३०
१२९.	१५३०	कार्तिक सुदि १२ सोमवार	मुनिसिंहसूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक ९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३०.	१५३०	पौष वदि ६ रविवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर चन्द्रप्रभसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिना०, श्रीमालों का मुहल्ला, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त- भाग-२, लेखांक १२२२
१३१.	१५३१	वैशाख सुदि १३ सोमवार	शालिभद्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक २०८
१३२.	१५३१	वैशाख वदि ८ सोमवार	"	संभवनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, ऊँझा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त-भाग-१, लेखांक २३८
१३३.	१५३१	माघ सुदि १० सोमवार	धर्मसागरसूरि	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ८४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३४.	१५३२	चैत्र सुदि ४ शुक्रवार	चन्द्रप्रभसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४४३
१३५.	१५३४	माघ सुदि १३ शुक्रवार	शालि(भद्र)सूरि	नमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, भिंडीबाजार, मुम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २३०
१३६.	१५३४	फाल्गुन सुदि ९ बुधवार	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	शामला पार्श्वनाथ जिनालय, बंबा वाली शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त- लेखांक २८६
१३७.	१५३४	ज्येष्ठ वदि १ शनिवार	धर्मसुन्दरसूरि के पट्टधर धर्मसागरसूरि	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३८.	१५३६	मार्गशिर सुदि ६ शुक्रवार	मुनिसिंधु(सिंह)सूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिना०, अजीमगंज, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ६
१३९.	१५३६	माघ सुदि ५ रविवार	सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना० खजूरी शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २९७
१४०.	१५३६	वैशाख वदि ३ गुरुवार	शालिप्रभसूरि	,,	जैन मंदिर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ३०
१४१.	१५३७	माघ सुदि २ सोमवार	अमरचन्द्रसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४२.	१५४२	कार्तिक वदि २ बुधवार	पद्माणंदसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़,	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त–भाग–१, लेखांक ८५६
१४३.	१५४५	पौष....५	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक २३४ ब
१४४.	१५४६	मार्गशीर्ष सुदि ६ शुक्रवार	गुणसागरसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिना०, गेलासेठ की शेरी, राधनपुर	विशालविजय, पूर्वोक्त– लेखांक ३०५
१४५.	१५४७	माघ सुदि १२	श्रीसूरि	तीर्थंकर की धातु प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिना० शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त–भाग–१, लेखांक १००६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४६.	१५४८	वैशाख वदि १० रविवार	रत्नदेवसूरि के के पट्टधर पद्माणंदसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिना० खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ८९५
१४७.	१५४८	,,	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक १३१
१४८.	१५५२	ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार	देवप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, परा, खेड़ा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४१३
१४९.	१५५३	वैशाख सुदि १३ सोमवार	पद्माणंदसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक ६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५०.	१५५३	माघ सुदि १२ शनिवार	धर्मवल्लभसूरि	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	अमीझरा पार्श्वनाथ देरासर, जीरारपाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त-भाग-२, लेखांक ७७५
१५१.	१५५३	,,	,,	शीतलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी जिना०, खारवोडा, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक १०६५
१५२.	१५५४	वैशाख सुदि १२ रविवार	वीरप्रभसूरि	आचार्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, अजारी	**आबू**, भाग-५, लेखांक ४३२
१५३.	१५५४	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	गुणसागरसूरि के पट्टधर शांतिप्रभसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ देरासर, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५४.	१५५५	कार्तिक वदि २ बुधवार	रत्नसागरसूरि के पट्टधर देवचन्द्रसूरि	,,	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिना०, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३१८
१५५.	१५५६	वैशाख सुदि ११ शुक्रवार	सर्वसूरि	सुविधिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिना०, अलिंग, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ८५८
१५६.	१५५७	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	पद्माणंदसूरि	शीतलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, रीचीरोड, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ९२०
१५७.	१५६३	माघ सुदि १५	देवप्रभसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जीका मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त - लेखांक ११३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५८.	१५६६	पौष वदि ५ सोमवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर विनयसागरसूरि	कुंथुनाथ की धातु की चौबीसी का लेख	आदिनाथ जिना०, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ४४४
१५९.	१५६६	तिथि विहीन	गुणप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिना०, सूरतगढ़, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त - लेखांक २५२३
१६०.	१५७३	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	विनयसागरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसा पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त-भाग-१, लेखांक १०५४
१६१.	१५७६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	वही, भाग१, लेखांक ४३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६२.	१५७९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	धर्मवल्लभसूरि के पट्टधर धर्मविमलसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिना०, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३३७
१६३.	१५७९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	श्रीसूरि	श्रेयोसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४५२
१६४.	१५८०	वैशाख सुदि ५ शनिवार	धर्मविमलसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, नांदिया	**आबू**, भाग-५, लेखांक ४६५
१६५.	१६१७	पौष सुदि १३ सोमवार	उदयरत्नसूरि	,,	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६६.	१६४६	मार्गशीर्ष सुदि... शुक्रवार	गुणसागरसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	शीतलनाथ की की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिना० जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २४३१
१६७.	१७७८	---	धर्मप्रभसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	प्रेमचन्द मोदी की टोंक, शत्रुंजय	वही, भाग १, लेखांक ६९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
|
|
|
धर्मशेखरसूरि (वि०सं० १४८४-१५०६) प्रतिमालेख
|
विजयदेवसूरि (वि०सं० १५०३-१५३०) प्रतिमालेख
|
शालिभद्रसूरि (वि०सं० १५१५-१५३४) प्रतिमालेख

?
|
|
शांतिसूरि
|
गुणरत्नसूरि (वि०सं० १५०७-१५१७) प्रतिमालेख
|
गुणसागरसूरि (वि०सं० १५१७-१५४६) प्रतिमालेख
|
शांतिप्रभसूरि (वि०सं० १५५४) प्रतिमालेख

?
|
|
मुनिसिंहसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
अमरचन्द्रसूरि (वि०सं० १५१९-१५३६)
प्रतिमालेख
|
|
सर्वदेवसूरि (वि०सं० १५२९)
प्रतिमालेख

घोघा स्थित नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय के निकट भूमिगृह से प्राप्त २४० धातु प्रतिमाओं में से ६ प्रतिमाओं पर पिप्पलगच्छीय मुनिजनों के नाम उत्कीर्ण है।[१०] इन प्रतिमाओं पर ई० सन् १३१५, १४४७, १४४९, १४५० और १४५७ के लेख खुदे हुए हैं। चूँकि ढांकी ने अपने उक्त निबन्ध में प्रतिमालेखों का मूल पाठ नहीं दिया है अतः इन लेखों में आये आचार्यों के नाम आदि के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा चुका है इस गच्छ की दो शाखाओं- त्रिभवीया और तालध्वजीया - का पता चलता है। प्रथम शाखा से सम्बद्ध **पिप्पलगच्छगुरुस्तुति** और **पिप्पलगच्छ गुर्वावली**[११] का पूर्व में उल्लेख आ चुका है। इसके अनुसार धर्मदेवसूरि ने गोहिलवाड़ (वर्तमान गुहिलवाड़, अमरेली, जिला भावनगर, सौराष्ट्र) के राजा सारंगदेव को उसके तीन भव बतलाये इससे उनकी शिष्यसन्तति त्रिभवीया कहलायी। यह सारंगदेव कोई स्थानीय राजा रहा होगा। पिप्पलगच्छीय प्रतिमालेखों की पूर्वप्रदर्शित लम्बी सूची में किन्ही धर्मदेवसूरि द्वारा वि०सं० १३८३ में प्रतिष्ठापित एक जिन प्रतिमा का उल्लेख आ चुका है। चूंकि उक्त **गुरुस्तुति** में रचनाकार ने अपने गुरु धर्मप्रभसूरि को त्रिभवीयाशाखा के प्रवर्तक धर्मदेवसूरि से ५ पीढ़ी बाद का बतलाया है, साथ ही पिप्पलगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की पूर्वप्रदर्शित तालिका में भी धर्मप्रभसूरि (वि०सं० १४७१-१४७६) का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख मिलता है। इसप्रकार अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित धर्मदेवसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और धर्मप्रभसूरि के बीच लगभग १०० वर्षों का अन्तर है और इस अवधि मे पाँच पट्टधर आचार्यों का पट्टपरिवर्तन असम्भव नहीं, अतः समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर वि०सं० १३८६/ई० सन् १३३० में प्रतिमाप्रतिष्ठापक पिप्पलगच्छीय धर्मदेवसूरि और इस गच्छ के त्रिभवीया शाखा के प्रवर्तक धर्मदेवसूरि एक ही व्यक्ति माने जा सकते हैं। ठीक यही बात **पिप्पलगच्छगुरुस्तुति** के रचनाकार के गुरु धर्मप्रभसूरि और पिप्पलगच्छीय धर्मप्रभसूरि के बारे में भी कही जा सकती है।

-४८ ऐसे भी प्रतिमालेख मिलते हैं जिनपर स्पष्ट रूप से पिप्पलगच्छ त्रिभवीयाशाखा का उल्लेख है। इनका विवरण निम्नानुसार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४१३	ज्येष्ठ वदि २ शुक्रवार	धर्मसंवरसूरि के पट्टधर धर्मसागरसूरि	सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, लिबडीपाड़ा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २८८
२.	१४७१	माघ सुदि ३	धर्मप्रभसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १५२
३.	१४७६	तिथि विहीन	,,	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, केकड़ी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क २१७
४.	१४८२	वैशाख वदि ४ बुधवार	धर्मप्रभसूरि के पट्टधर धर्मशेखरसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्र्तगत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक ६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१४८४	वैशाख सुदि ८ शुक्रवार	धर्मप्रभसूरि के पट्टधर धर्मशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शामलापार्श्वनाथ जिनालय, बंबावाली शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखांक १०९
६.	१४८५	माघ सुदि १० शनिवार	,,	,,	विमलनाथ चैत्य, देसाई शेरी, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक २३०
७.	१४८७	माघ सुदि १० शनिवार	धर्मशेखरसूरि के पट्टधर देवचन्द्रसूरि	देवकुलिका के स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख	जीरावलातीर्थ, चैत्यदेवकुलिका, थराद	वही, लेखांक ३१६
८.	१४८८	ज्येष्ठ सुदि ३ सोमवार	धर्मशेखरसूरि	विमलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	वही, लेखांक ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१४८९	ज्येष्ठ सुदि १२ शनिवार	,,	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त– लेखांक १४६
१०.	१४९४	श्रावण वदि ९ शनिवार	,,	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथचैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त– लेखांक १९६
११.	१४९७	वैशाख वदि ५ बुधवार	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, कनासानो पाडो, पाटण	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त– लेखांक १७२
१२.	१४९९	कार्तिक सुदि १५ गुरुवार	,,			लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३.	१४९९	,,	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	वही, लेखांक ७८
१४.	१४९९	,,	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १३२
१५.	१४९९	,,	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १९०
१६.	१४९९	,,	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ चैत्य, देसाई शेरी, थराद	वही, लेखांक २३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१५०१	वैशाख सुदि १३ शनिवार	धर्मसुन्दरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १८५
१८.	१५०३	माघ वदि ३	धर्मशेखरसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ देरासर, जामनगर	वही, लेखांक १९४
१९.	१५०३	माघ वदि ३	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	वही, लेखांक १९४
२०.	१५०५	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, कोलीयाक (कठियावाड़)	वही, लेखांक २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२१.	१५०६	वैशाख सुदि ८ रविवार	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्यान्तर्गत- आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त- लेखांक ४३
२२.	१५०६	,,	,,	,,	,,	वही, लेखांक ४६
२३.	१५०६	वैशाख सुदि ८ रविवार	,,	चन्द्रप्रभ स्वामी की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ चैत्य, देसाई शेरी, थराद	वही, लेखांक २२८
२४.	१५०६	माघ सुदि ५ शुक्रवार	,,	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१५०६	वैशाख सुदि ११ सोमवार	चन्द्रप्रभसूरि	वासुपूज्य की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ चैत्य, देसाई शेरी, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक २४८
२६.	१५०९	चैत्र वदि...	धर्मशेखरसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	मुनि जयन्तविजय- पूर्वोक्त, **आबू**-भाग-५, लेखांक ८३
२७.	१५१०	कार्तिक वदि ४ रविवार	क्षेमशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक ८१
२८.	१५१०	माघ सुदि ५ रविवार	धर्मशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२९.	१५१० (१५१७) (?)	पौष वदि ६ गुरुवार	धर्मसागरसूरि	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५९
३०.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	धर्मशेखरसूरि के पट्टधर धर्मसुन्दरसूरि	धर्मनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ८६
३१.	१५१३	चैत्र वदि ६ शुक्रवार	धर्मसुन्दरसूरि के पट्टधर धर्मसागरसूरि	वासुपज्य की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९१६
३२.	१५१५	वैशाख सुदि १३ रविवार	,,	अभिनन्दनस्वामी की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १२०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३३.	१५१५	माघ सुदि ६ बुधवार	धर्मसागरसूरि	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, शांतिनाथपोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त-भाग-१, लेखांक १२९१
३४.	१५१६	चैत्र वदि ५ गुरुवार	,,	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त-लेखांक ९९४
३५.	१५१७	पौष वदि ५ गुरुवार	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, साहूकार पेठ, मद्रास	नाहर, पूर्वोक्त-भाग २, लेखांक २०७३
३६.	१५१७	पौष वदि ७ गुरुवार (?)	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त-लेखांक १००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३७.	१५२०	वैशाख सुदि ९	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रांधेजा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त–भाग १, लेखांक ७१६
३८.	१५२०	चैत्र वदि ५ बुधवार	धर्मसूरि	कुन्थुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वीर चैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त – लेखांक १४३
३९.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	धर्मसागरसूरि	,,	लालचंदजी का मंदिर, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४०
४०.	१५२५	माघ.....	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सांगानेर	वही, भाग १, लेखांक ६७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४१.	१५२८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	,,	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य जिना०, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक १२
४२.	१५२८	कार्तिक सुदि ३ शनिवार	,,	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ५
४३.	१५३०	पौष वदि ६ रविवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर चन्द्रप्रभसूरि	,,	श्रीमालों का मन्दिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७२३
४४.	१५३०	माघ वदि ६ बुधवार	धर्मसागरसूरि	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त-भाग १, लेखांक ८०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४५.	१५३५	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, छाणी, बडोदरा	वही, भाग २, लेखांक २६८
४६.	१५३७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नया जैन मंदिर, नासिक	मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त- लेखांक २३९
४७.	१५६१	माघ वदि ५ शुक्रवार	धर्मसागरसूरि के पट्टधर धर्मप्रभसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत आदिनाथ चैत्य,	लोढ़ा, पूर्वोक्त- लेखांक ८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर पिप्पलगच्छ की त्रिभवीयाशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा का जो क्रम निश्चित होता है, वह इस प्रकार है :

?
|
धर्मप्रभसूरि (वि०सं० १४७१ - १४७६) प्रतिमालेख
|
धर्मशेखरसूरि (वि०सं० १४८४-१५१०) प्रतिमालेख
|
- देवचन्द्रसूरि (वि०सं० १४८७) प्रतिमालेख
- धर्मसुन्दरसूरि (वि०सं० १५११) प्रतिमालेख
  |
  धर्मसागरसूरि (वि०सं० १४८४-१५३५) प्रतिमालेख
  |
  धर्मप्रभसूरि (वि०सं० १५६१) प्रतिमालेख
- धर्मसूरि (वि०सं० १५२०) प्रतिमालेख

पिप्पलगच्छीय अभिलेखीय साक्ष्यों की पूर्व प्रदर्शित सूची में किन्हीं धर्मशेखरसूरि (वि०सं० १४८४-१५०५) का नाम आ चुका है[१२] जिन्हें समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर त्रिभवीयाशाखा के धर्मशेखरसूरि से अभिन्न माना जा सकता है यही बात उक्त सूची में ही उल्लिखित धर्मशेखरसूरि के शिष्य विजयसेनसूरि और प्रशिष्य शालिभद्रसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इस प्रकार त्रिभवीयाशाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की तालिका को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
|
|
|
धर्मप्रभसूरि (वि०सं० १४७१-१४७६) प्रतिमालेख
|
धर्मशेखरसूरि (वि०सं० १४८२-१५१०) प्रतिमालेख
|

देवचन्द्रसूरि	विजयदेवसूरि	धर्मसुन्दरसूरि	धर्मसूरि
(वि०सं० १४८७) प्रतिमालेख	(वि०सं० १५०३-१५३०) प्रतिमालेख	(वि०सं० १५११) प्रतिमालेख	(वि०सं० १५२०) प्रतिमालेख
	|	|	
	शालिभद्रसूरि (वि०सं० १५१६-२८) प्रतिमालेख	धर्मसागरसूरि (वि०सं० (१४८४-१५३५) प्रतिमालेख	
		|	
		धर्मप्रभसूरि (वि० सं० १५६१) प्रतिमालेख	

पिप्पलगच्छीयगुरुस्तुति द्वारा त्रिभवीयाशाखा के धर्मप्रभसूरि के पूर्ववर्ती आचार्यों के नाम से ज्ञात हो चुके हैं। **पिप्पलगच्छगुर्वावली**[१३] से हमें धर्मसागरसूरि के एक अन्य शिष्य धर्मवल्लभसूरि का बी पता चलता है। इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर पिप्पलगच्छ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की त्रिभवीयाशाखा की गुरु-परम्परा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है :-

सर्वदेवसूरि (वडगच्छीय)
|
नेमिचन्द्रसूरि (वडगच्छीय)
|
शांतिसूरि (वि०सं० ११८१/ई० सन् ११२५ में पिप्पलगच्छ के प्रवर्तक)
|
शांतिसूरि
|
महेन्द्रसूरि — विजयसूरि — देवचन्द्रसूरि — पद्मचन्दसूरि — पूर्णचन्द्रसूरि

(पूर्णचन्द्रसूरि के शिष्य:) जयदेवसूरि — देवप्रभसूरि — जिनेश्वरसूरि

(विजयसूरि के शिष्य:)
देवभद्रसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
शीलभद्रसूरि
|
परिपूर्णदेवसूरि
|
विजयसेनसूरि
|
धर्मदेवसूरि [त्रिभवीयाशाखा के प्रवर्तक, वि० सं० १३८६ / ई० स० १३३० के प्रतिमालेख में उल्लिखित]
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मचन्द्रसूरि

|

धर्मरत्नसूरि

|

धर्मतिलकसूरि

|

धर्मसिंहसूरि

|

धर्मप्रभसूरि (वि०सं० १४७१-१४७६)
पिप्पलगच्छगुरुस्तुति के रचयिता

|

धर्मप्रभसूरिशिष्य (वि०सं० १४८२-१५१०)
प्रतिमालेख

|

देवचन्द्रसूरि	विजयदेवसूरि	धर्मसुन्दरसूरि	धर्मसूरि
(वि०सं० १४८७)	(वि०सं० १५०३-१५३०)	(वि०सं० १५११)	(वि०सं० १५२०)
प्रतिमालेख	प्रतिमालेख	प्रतिमालेख	प्रतिमालेख

विजयदेवसूरि → शालिभद्रसूरि	धर्मसुन्दरसूरि → धर्मसागरसूरि
(वि०सं० १५२७-२८)	(वि०सं० (१४८५-१५३५)
प्रतिमालेख	प्रतिमालेख

धर्मसागरसूरि →

धर्मप्रभसूरि	धर्मवल्लभसूरि
(वि० सं० १५६१)	(**पिप्पलगच्छगुर्वावली** में उल्लिखित)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १५२८ और वि०सं० १५५९ के प्रतिमालेखों में पिप्पलगच्छ की तालध्वजीयाशाखा का उल्लेख मिलता है। सम्भवत: सौराष्ट्र में स्थित तलाजा नामक स्थान से यह शाखा अस्तित्व में आयी हो। इन प्रतिमालेखों का विवरण इस प्रकार है :-

१. सं० १५२८ वर्षे वैशाष (ख) विदि (वदि) सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० सामल भार्या वान्ह सुत सं० हासाकेन भार्या वीजू द्वितीय भार्या सहिजलदे सुत समधर कीका युतेन श्रीचन्द्रप्रभ--चतुर्विंशतिपट्ट (:) कारित: प्र० पिप्पलगच्छे तालध्वजीय श्रीगुणरत्नसूरिपट्टे पू० श्रीगुणसागरसूरिभि: घोघा वास्तव्य श्री: ।

विजयधर्मसूरि-सम्पा०, **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ४१६

२. सं० १५५९ फागुण सुदि ७ दिने श्रीश्रीमालज्ञातीय साहमाणिकभा० अपूरवपु० भाइआकेन स्वमातृपित्रो: श्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंब कारितं तलाझीआ श्रीशांतिसूरिभि: प्रतिष्ठितं ।

बुद्धिसागरसूरि-सम्पा० **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग-२, लेखांक ३०२

प्रथम लेख में गुणरत्नसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेखों के आधार पर पूर्वप्रदर्शित आचार्य परम्परा की छोटी-छोटी तालिकाओं में से एक में गुणरत्नसूरि के शिष्य गुणसागरसूरि का नाम आ चुका है।

शांतिसूरि
|
गुणरत्नसूरि (वि०सं० १५०७-१५१७) प्रतिमालेख
|
गुणसागरसूरि (वि०सं० १५१७-१५४६) प्रतिमालेख

अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित पिप्पलगच्छीय गुणसागरसूरि (वि०सं०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१७-१५४६-प्रतिमालेख) और तालध्वजीयाशाखा के गुणसागरसूरि (वि०सं० १५२८-प्रतिमालेख) को समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर एक ही व्यक्ति मानने में कोई बाधा नहीं दिखाई देती। ठीक इसी प्रकार तालध्वजीयाशाखा के शांतिसूरि (वि०सं० १५५९-प्रतिमालेख) और पिप्पलगच्छीय शांतिप्रभसूरि (वि०सं० १५५४-प्रतिमालेख)[१४] को एक ही व्यक्ति माना जा सकता है।

इसी प्रकार लेख के प्रारम्भ में साहित्यिक साक्ष्यों में उल्लिखित **कालकसूरिभास** (रचनाकाल वि०सं० १५१४/ई०सन् १४५७) और **कल्पसूत्रआख्यान** के रचनाकार पिप्पलगच्छीय आनन्दमेरु[१५] के गुरु गुणरत्नसूरि भी समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर तालध्वजीयाशाखा के ही गुणसागरसूरि (वि०सं० १५१७-१५४६-प्रतिमालेख) के गुरु गुणरत्नसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं। ठीक यही बात **पार्श्वनाथपत्नीपद्मावतीहरणरास** (रचनाकाल वि०सं० १५८४/ई०सन् १५२८) के रचनाकार पिप्पलगच्छीय नरशेखरसूरि[१६] और उनके गुरु शांति (प्रभ) सूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर पिप्पलगच्छ की तालध्वजीयाशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की जो तालिका निर्मित होती है, वह निम्नानुसार है :

?
|
शांतिसूरि
|
गुणरत्नसूरि
|
आनन्दमेरु — गुणसागरसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(वि०सं० १५१३ में **कालकसूरिभास** तथा **कल्पसूत्रआख्यान** के रचनाकार

(वि०सं० १५१७-१५४६) प्रतिमालेख
|
शांतिप्रभसूरि रचनाकार)
(वि०सं० १५५४-१५५९) प्रतिमालेख
|
नरशेखरसूरि
(वि०सं० १५८४ में **पार्श्वनाथपत्नीपद्मावतीहरणरास** के रचनाकार)

पिप्पलगच्छ की तालध्वजीयाशाखा के प्रवर्तक कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

जहाँ तक पिप्पलगच्छगुरु-स्तुति में वडगच्छीय शांतिसूरि द्वारा विजयसिंहसूरि आदि ८ शिष्यों को पीपलवृक्ष के नीचे आचार्यपद देने और इस प्रकार पिप्पलगच्छ के अस्तित्व में आने के विवरण की प्रामाणिकता का प्रश्न है और यह सत्य है कि वडगच्छ में शांतिसूरि और उनके शिष्य विजयसिंहसूरि हुए और उनके द्वारा क्रमशः रचित **पृथ्वीचंद्रचरित**[१७] (रचनाकाल वि०सं० ११६१/ई० सन् ११०५) और **श्रावकप्रतिक्रमण-सूत्रचूर्णी**[१८] (रचनाकाल वि०सं० ११८३/ई०सन् ११२६) उपलब्ध हैं किन्तु इनकी प्रशस्ति में इन्हें कहीं भी पिप्पलगच्छीय नहीं कहा गया है। चूँकि किसी भी गच्छ की अवान्तर शाखायें अपने उत्पत्ति के एक-दो पीढ़ी बाद ही नामविशेष से प्रसिद्ध होती हैं अतः उक्त गुर्वावली के उपरकथित विवरण को प्रामाणिक माना जा सकता है।

जैसा कि पीछे कहा जा चुका है पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध प्राचीनतम साक्ष्य वि०सं० १२९१ का है किन्तु वि०सं० १४६५ में एक प्रतिमालेख से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञात होता है कि वि०सं० १२०८ में वीरस्वामी की एक प्रतिमा को इस गच्छ के विजयसिंहसूरि ने डीडिला नामक ग्राम में स्थापित की थी। यदि इस विवरण को सत्य मानें तो वि०सं० १२०८ में इस गच्छ का अस्तित्त्व भी मानना पड़ेगा और ऐसी स्थिति में **श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णी** के रचनाकार विजयसिंहसूरि और वि०सं० १२०८ में प्रतिमाप्रतिष्ठापक विजयसिंहसूरि एक ही व्यक्ति माने जा सकते हैं। इसप्रकार यह माना जा सकता है कि विक्रम सम्वत् की तेरहवीं शती के प्रारम्भिक दशक में बृहद्गच्छ की एक शाखा के रूप में यह अस्तित्त्व में आ चुकी थी और तेरहवी शताब्दी के उत्तरार्ध में पिप्पलगच्छ के रूप में इसका नामकरण हुआ होगा।

पिप्पलगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों से यद्यपि इस गच्छ के अनेक मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं किन्तु उनमें से कुछ को छोड़कर शेष मुनिजनों के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती, फिर भी इतना स्पष्ट है कि धर्मघोषगच्छ, पूर्णिमागच्छ, चैत्रगच्छ आदि की भाँति पिप्पलगच्छ भी १६वीं शती तक विशेष प्रभावशाली रहा। १७वीं-१८वीं शताब्दी से अमूर्तिपूजक स्थानकवासी सम्प्रदाय के उदय और उसके बढ़ते हुए प्रभाव के कारण खरतरगच्छ, तपागच्छ और अंचलगच्छ को छोड़कर शेष अन्य मूर्तिपूजक गच्छों का महत्त्व क्षीण होने लगा और इनके अनुयायी ऐसी परिस्थिति में उक्त तीनों प्रभावशाली मूर्तिपूजक गच्छों में या स्थानकवासी परम्परा में सम्मिलित हो गये होंगे।

सन्दर्भ :

१. श्रीमत्यर्बुदतुंगशैलशिखरच्छायाप्रतिष्ठास्पदे,
धर्माणाभिधसन्निवेशविषये न्यग्रोधवृक्षो बभौ।
यत्शाखाशतसंख्यपत्रबहलच्छायास्वपायाहतं,
सौख्येनोषितसंघमुख्यशटकश्रेणीशतीपंचकम् ॥१॥
लग्ने क्वापि समस्तकार्यजनके सप्तग्रहालोकेन,
ज्ञात्वा ज्ञानवशाद् गुरुं......देवाभिधः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यान् रचयांचकार चतुरस्तंस्मात् प्रवृद्धो बभौ
वंद्रोऽयं वटगच्छनाम रुचिरो जीयाद् युगानां शतीम् ॥२॥

बृहद्गच्छीय वादिदेवसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि द्वारा रचित **उपदेशमालाप्रकरणवृत्ति** (रचनाकाल वि०सं० १२३८/ई०सन् ११८२) की प्रशस्ति Muni Punyavijaya, ***Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar, Cambay***, G. O. S. No. 149, Baroda - 1966 A.D., p.p. 284-286.

उक्त प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने बृहद्गच्छ के उत्पत्ति की तो चर्चा की है, परन्तु उक्त घटना की तिथि के सम्बन्ध में वे मौन हैं। मध्यकाल में रची गयी विभिन्न पट्टावलियों यथा तपागच्छीय मुनिसुंदरसूरि द्वारा रचित **गुर्वावली** (रचनाकाल वि०सं० १४६६/ई०सन् १४०९), तपागच्छीय आचार्य हीरविजयसूरि के शिष्य धर्मसागरसूरि द्वारा रचित **तपागच्छपट्टावली** (रचनाकाल वि०सं० १६४८/ई०सन् १५९२), बृहद्गच्छीय मुनिमाल द्वारा रचित **बृहद्गच्छगुर्वावली** (रचनाकाल वि०सं० १७५१/ई०सन् १६९५) आदि में यह घटना वि०सं० ९९४ में हुई बतलायी गयी है किन्तु पश्चात्कालीन होने से उल्लिखित उक्त मत की प्रामाणिकता संदिग्ध मानी जा सकती है। इस सम्बन्ध में विस्तार के लिये द्रष्टव्य बृहद्गच्छ का संक्षिप्त इतिहास **पं० दलसुखभाई मालवणिया अभिनन्दन ग्रन्थ**, वाराणसी १९९२ ई०, पृष्ठ १०५-११७.

२. P. Peterson - ***Operation in Search of Sanskrit MSS.*** Vol-V, Bombay 1896 A.D. pp. 125-126.

पुहवीचंदचरिय (पृथ्वीचंद्रचरित्र), सम्पा०-मुनि रमणीकविजय, प्राकृत ग्रन्थ परिषद, ग्रन्थांक १६, अहमदाबाद-वाराणसी १९७२ ई० सन्, इसी ग्रन्थ की प्रस्तावना में भी उक्त गुरु-स्तुति प्रकाशित है जिसका आधार प्रो० पीटर्सन का उक्त ग्रन्थ ही है।

३. A. P. Shah - ***Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS : Muni Shree Punyavijayaji's Collection***, L.D. Series No. 5, Ahmedabad 1965 A.D., No. 5479, p. 349.

४. मोहनलाल दलीचंद देसाई - **जैनगूर्जरकविओ**, भाग-१, नवीन संस्करण, सम्पा० डो० जयन्त कोठारी, अहमदाबाद, १९८६ ई०, पृष्ठ-५२.

५. वही

६. वही, भाग-१, पृष्ठ १०५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. वही

८. वही, भाग-१, पृष्ठ ३९७.

९. पिप्पलगच्छगुर्वावली, सम्पा०, भंवरलाल नाहटा, **आचार्य विजयवल्लभसूरि स्मारक ग्रन्थ**, बम्बई १९५६ ई०, हिन्दी खण्ड, पृष्ठ १३-२२.

१०. पूर्वं डींडिलाग्राम मूलनायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पलगच्छीय श्रीविजयसिंहसूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात् वीर पल्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रासादे पिप्पलाचार्य श्रीवीरप्रभसूरिभिः स्थापितः । संवत् १४६५ वर्षे । प्रतिष्ठा स्थान - जैन मंदिर कोटरा, सिरोही, पूरनचन्द नाहर - **जैनलेखसंग्रह**, भाग-१, कलकत्ता १९१८ ई०, लेखांक ९६६ ।

१०अ. मधुसूदन ढांकी अने हरिशंकर प्रभाशंकर शास्त्री - **घोघानो जैन प्रतिमानिधि,** श्री फार्बस गुजराती सभा, जनवरी-मार्च १९६५ ई०, पृष्ठ १९-२२.

११. धनु धनु धर्मदेवसूरि, सारंग रा प्रतिबोधिउ।
उगमतई नितु सूरि, सुहगुरु नितु नितु पणमीए ॥१०॥
त्रिनि भव सारंग राय, देवाएंसिंहि गुरि कहीय ।
घूघल जंग विक्खाय, पडिबोही त्रिनि भव कहीया ॥११॥
पिप्पलगच्छगुर्वावलि-गुरहमाल, द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ९.

११अ. द्रष्टव्य-पिप्पलगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की सूची - लेख क्रमांक ६.

१२. वही, लेख क्रमांक ६२, ६६, ६८, ७९.

१३. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ९.

१४. द्रष्टव्य, लेख क्रमांक १५६.

१५. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ६-७.

१६. संदर्भ क्रमांक ८.

१७. **पृथ्वीचंद्रचरित** - संपा० मुनि रमणीकविजय, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, ग्रन्थांक १६, अहमदाबाद-वाराणसी १९७२ ई० सन्.

१८. **श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णी** की प्रशस्ति
C.D. Dalal and L.B. Gandhi - **Descriptive Catalogue of MSS in the Jaina Bhandars at Pattan**, G. O. S. No. 76, Baroda - 1937 A.D. pp. 389-90.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णतल्लगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल से उद्‌भूत मध्यकालीन गच्छों में पूर्णतल्लगच्छ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है यह गच्छ राजस्थान प्रान्त के जोधपुर मंडल में स्थित प्राचीन पूर्णतल्लक या पूर्णतल्ल, वर्तमान पुन्ताला, नामक स्थान से अस्तित्व में आया प्रतीत होता है।[१] इस गच्छ में आम्रदेवसूरि, श्रीदत्तसूरि, यशोभद्रसूरि, प्रद्युम्नसूरि, गुणसेनसूरि, देवचन्द्रसूरि, कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि, प्रसिद्ध नाट्यशास्त्री रामचन्द्र-गुणचन्द्र आदि कई प्रसिद्ध और विद्वान् आचार्य हो चुके हैं।

जहाँ प्रायः सभी गच्छों से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थप्रशस्तियां, दो-एक पट्टावलियां तथा पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं जिनके आधार पर गच्छ विशेष के इतिहास की पुनर्रचना की जाती है, वहीं इस गच्छ की न तो कोई पट्टावली मिलती है और न ही बड़ी संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य ही मिलते हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ ग्रन्थ प्रशस्तियां मिलती हैं, किन्तु वे भी सीमित संख्या में हैं, फिर भी उनसे इस गच्छ के उद्भव और विकास का कुछ हद तक स्पष्ट स्वरूप प्रकाश में आ जाता है। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलशुद्धिप्रकरणसटीक – पूर्णतल्लगच्छीय प्रद्युम्नसूरि द्वारा प्राकृत भाषा में रची गयी कृति **मूलशुद्धिप्रकरण** पर उनके प्रशिष्य देवचन्द्रसूरि ने वि० सं० ११४६ / ई० सन् १०९० में वृत्ति की रचना की, जिसकी प्रशस्ति[2] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का विवरण दिया है। इसके अनुसार चन्द्रकुल के अन्तर्गत पूर्णतल्लगच्छ में आम्रदेवसूरि नामक आचार्य

हुए। उनके शिष्य का नाम श्रीदत्तगणि था, जिनके शिष्य यशोभद्रसूरि हुए; जिन्होंने उर्ज्जयन्तगिरि पर सल्लेखनापूर्वक शरीर त्याग किया। उनके पट्टधर प्रद्युम्नसूरि हुए, जिन्होंने **मूलशुद्धिप्रकरण** अपरनाम **स्थानकप्रकरण** का निर्माण किया। उनके शिष्य गुणसेनसूरि थे, जिनके पट्टधर देवचन्द्रसूरि ने वि० सं० ११४६ / ई. सन् १०९० में **मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति** की रचना की। इस कार्य में उन्हें अपने कनिष्ठ गुरुभ्राता अभयदेवसूरि तथा अपने शिष्य अशोकचन्द्र से सहायता प्राप्त हुई।

इसे तालिका के रूप में इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

आम्रदेवसूरि
|
श्रीदत्तगणि
|
यशोभद्रसूरि [उर्ज्जयन्तगिरि पर समाधिमरण]
|
प्रद्युम्नसूरि [**मूलशुद्धिप्रकरण** अपरनाम **स्थानकप्रकरण** के रचनाकार]
|
गुणसेनसूरि
|
देवचन्द्रसूरि [वि० सं० ११४६ / — अभयदेवसूरि [वृत्तिलेखन में सहायक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ई० सन् १०९० में
मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति
के रचनाकार]
|
अशोकचन्द्र
[**मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति**
की रचना में
अपने गुरु के सहायक]

आचार्य देवचन्द्रसूरि की दूसरी कृति है **शांतिनाथचरित** जो प्राकृत भाषा में वि० सं० ११६० / ईस्वी सन् ११०४ में रची गयी है। इसकी प्रशस्ति[३] में उन्होंने अपनी संक्षिप्त गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

यशोभद्रसूरि
|
प्रद्युम्नसूरि
|
गुणसेनसूरि
|
देवचन्द्रसूरि [वि० सं० ११६० / ईस्वी सन् ११०४ में खंभात में **शांतिनाथचरित** के रचनाकार]

महावीरचरित- आचार्य देवचन्द्रसूरि के शिष्य कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** का १०वां पर्व **महावीरचरित्र** के रूप में है। इसकी प्रशस्ति[४] में उन्होंने भी संक्षिप्त रूप से अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

यशोभद्रसूरि
|
प्रद्युम्नसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
गुणसेनसूरि
|
देवचन्द्रसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि [**त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** के रचनाकार]

त्रिषष्टिशलाकारपुरुषचरित का रचनाकाल वि० सं० १२१६-२८ के मध्य माना जाता है।

इसी संदर्भ में एक अन्य प्रशस्ति का भी उल्लेख किया जा सकता है, वह है वि० सं० १२०६ / ईस्वी सन् ११५१ में रची गयी **उत्पादसिद्धिप्रकरण** की प्रशस्ति[५] यद्यपि इसमें पूर्णतल्लगच्छ का उल्लेख नहीं है, फिर भी इसके रचनाकार चन्द्रसेन ने अपने गुरु प्रद्युम्नसूरि को सिद्धहेमगुरु का गुरुभ्राता बतलाया है, जो निश्चय ही कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्रसूरि से अभिन्न हैं।

[देवचन्द्रसूरि]
|
प्रद्युम्नसूरि — हेमचन्द्रसूरि
|
चन्द्रसेन [वि० सं० १२०७/ईस्वी सन् ११५१ में **उत्पादसिद्धिप्रकरणसटीक** के रचनाकार]

आचार्य हेमचन्द्रसूरि के करीब ८ शिष्यों का उल्लेख मिलता है, जिनके नाम हैं रामचन्द्रसूरि, गुणचन्द्रसूरि, बालचन्द्रसूरि, देवचन्द्रसूरि, सागरचन्द्र, यशचन्द्र, महेन्द्रसूरि, उदयचन्द्र और वर्धमानगणि[६]। किन्हीं उदयचन्द्रसूरि के शिष्य देवेन्द्रसूरि का भी उल्लेख मिलता है जिन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमचन्द्राचार्य विरचित **सिद्धहेमशब्दानुशासनबृहद्वृत्ति** पर **दुर्गपदव्याख्या** की रचना की। कतिपय विद्वान् इस उदयचन्द्र को हेमचन्द्रसूरि का शिष्य मानते हैं।[७]

जैसा कि पीछे कहा जा चुका है इस गच्छ का उल्लेख करने वाला सबसे प्राचीन साक्ष्य है **मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति** की प्रशस्ति, जो आचार्य देवचन्द्रसूरि द्वारा वि० सं० ११४६ / ई० स० १०९० में रची गयी है। इसमें टीकाकार ने अपने पूर्ववर्ती ५ पट्टधर आचार्यों का उल्लेख किया है। यदि इसमें से प्रत्येक आचार्य का नायकत्त्वकाल २५ वर्ष माना जाये तो देवचन्द्रसूरि से ५ पीढ़ी पूर्व हुये आचार्य आम्रदेवसूरि का समय वि० सं० १०२५ / ई० सन् ९६९ के आसपास माना जा सकता है। यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इसके प्रारम्भिक आचार्य कौन थे, यद्यपि इस बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिल पाती, फिर भी इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ईस्वी सन् की १० वीं शती के अंतिम चरण में यह गच्छ अस्तित्व में था। देवचन्द्रसूरि के समय इस गच्छ को विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त थी। इस समय उदयन जैसे उच्चशासनाधिकारी इस गच्छ के अनुयायी थे। आचार्य देवचन्द्रसूरि के शिष्य एवं पट्टधर हेमचन्द्राचार्य[८] की असाधारण प्रतिभा से गुर्जरभूमि में एक नई स्फूर्ति उत्पन्न हुई, जिससे न केवल पूर्णतल्लगच्छ बल्कि समग्र श्वेताम्बर परम्परा अपनी लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुंच गयी। आचार्य हेमचन्द्र सदैव नई सूझ-बूझ से कार्य लेते थे और सभी पर अपनी तलस्पर्शी मेघा का एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ देते थे। संभवत: उनकी चेतना की इसी विलक्षणता ने ही महापराक्रमी गुर्जरेश्वर जयसिंह सिद्धराज को आकृष्ट किया था। सिद्धराज एक महान् शासक और प्रजा के संरक्षक के रूप में सम्मानीय थे तो हेमचन्द्र धार्मिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे। आचार्य हेमचन्द्र का कुमारपाल के साथ गुरु-शिष्य का सम्बन्ध था। उसकी राजनैतिक सफलता, सामाजिक नवसुधार की योजना आदि के पीछे आचार्य का व्यक्तित्व, उनकी प्रेरणा एवं उनका वरद्हस्त था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमचन्द्र का शिष्य समूह भी उन्हीं के समान प्रतिभाशाली व्यक्तित्व सम्पन्न था। रामचन्द्रसूरि, गुणचन्द्रसूरि, बालचन्द्रसूरि, महेन्द्रसूरि, वर्धमानगणि, देवचन्द्रसूरि आदि उनके सुविख्यात शिष्य थे। इन्होंने हेमचन्द्र की कृतियों पर टीकायें तथा वृत्तियां लिखी हैं; साथ ही इनके द्वारा लिखे गये स्वतंत्र ग्रन्थ भी मिलते हैं। रामचन्द्रसूरि इन सभी शिष्यों में अग्रगण्य थे। इनमें कवि की अलौकिक प्रतिभा और श्रमणत्व का अलौकिक तेज था। इन्हें *शतप्रबन्धकर्ता* के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अपने गुरुभ्राता गुणचन्द्रसूरि के साथ **नाट्यदर्पण** और **द्रव्यालंकार** की टीका के साथ रचना की। महेन्द्रसूरि ने अपने गुरु हेमचन्द्रसूरि की कृति **अनेकार्थसंग्रहकोश** पर **अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी** की रचना की तथा देवचन्द्रसूरि ने **चन्द्रलेखाविजयप्रकरण** नामक नाटक का प्रणयन किया[९]।

किन्ही शांत्याचार्य द्वारा रचित **न्यायावतारवार्तिकवृत्ति, तिलकमंजरीटिप्पण, वृन्दावनकाव्यटिप्पण, घटकर्परकाव्यटिप्पण, मेघाभ्युदयकाव्यटिप्पण, शिवभद्रकाव्यटिप्पण, चन्द्रदूतकाव्यटिप्पण** आदि कई कृतियां मिलती हैं। **न्यायावतारवार्तिकवृत्ति** की प्रशस्ति[१०] में इन्होंने स्वयं को चन्द्रकुल के वर्धमानसूरि का शिष्य बतलाया है तथा **तिलकमंजरीटिप्पण** की प्रशस्ति[११] में अपने को पूर्णतल्लगच्छीय कहा है। पं० दलसुख मालवणिया ने विभिन्न प्रमाणों के आधार पर इनका काल वि० संवत् की ११ वीं - १२वीं शती का मध्य निश्चित किया है। चूंकि इन्होंने अपने गुरु के अतिरिक्त अपने गच्छ के किन्ही अन्य मुनि या आचार्य का उल्लेख नहीं किया है, अतः **मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति, शांतिनाथचरित, महावीरचरित, उत्पादसिद्धिप्रकरणसटीक** आदि की प्रशस्तियों में उल्लिखित पूर्णतल्लगच्छीय मुनिजनों के साथ इनका सम्बन्ध स्थापित कर पाना कठिन है, फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि पूर्णतल्लगच्छ की उक्त शाखा के अतिरिक्त एक और शाखा भी विद्यमान थी, जिसमें वर्धमानसूरि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांतिसूरि आदि आचार्य हुए और यह विक्रम सम्वत् की १२ वी शती में अस्तित्व में थी।

महामात्य तेजपाल द्वारा वि० सं० १२९८ / ई० सन् १२४२ में शत्रुंजय महातीर्थ पर एक पाषाणखंड पर उत्कीर्ण कराये गये शिलालेख[१२] में जहां विभिन्न गच्छों के आचार्यों का उल्लेख है, वही राजगुरु हेमसूरि की परम्परा में हुए किन्ही मेरुप्रभसूरि का नाम मिलता है। राजगुरु हेमसूरि यदि कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि से अभिन्न माने जायें तो विक्रम सम्वत् की १३ वीं शती के अन्त तक इस गच्छ का अस्तित्व प्रमाणित होता है। उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ की गुरु-शिष्य परम्परा की एक तालिका इस प्रकार निर्मित की जा सकती है :

द्रष्टव्य : तालिका संख्या - १

पूर्णतल्लगच्छ के प्रमुख आचार्यों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

प्रद्युम्नसूरि - जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है ये यशोभद्रसूरि के शिष्य और पट्टधर थें। इनके द्वारा रचित एकमात्र कृति है **मूलशुद्धिप्रकरण** अपरनाम **स्थानकप्रकरण** अपरनाम **सिद्धान्तसार** जो २५२ गाथाओं में महाराष्ट्रीय प्राकृत में निबद्ध है।[१३] इस ग्रन्थ में सम्यक्त्व के बारे में विवरण प्राप्त होता है। इसकी वि० सं० ११८६ / ई० सन् ११३० में लिखी गयी एक प्रति अहमदाबाद स्थित विमलगच्छीय उपाश्रय में संरक्षित है। जैसलमेर[१४] और खंभात[१५] के ग्रन्थ भंडारों से भी इसकी प्रतियां प्राप्त होती हैं। इनके पट्टधर गुणसेनसूरि हुए।

देवचन्द्रसूरि - ये उक्त गुणसेनसूरि के शिष्य और पट्टधर थे। इन्होंने अपने प्रगुरु प्रद्युम्नसूरि की कृति **मूलशुद्धिप्रकरण** पर वि० सं० ११४६/ ईस्वी सन् १०९० में १३००० श्लोक परिमाण वृत्ति की रचना की[१६]। इस ग्रन्थ के कुछ कथानकों की गाथायें निर्वृत्तिकुलीन शीलांकसूरि द्वारा रचित **चउपन्नमहापुरिसचरिय** रचनाकाल वि० सं० ९२५ / ई० सन् ८६९ से अक्षरशः मिलती है, जिसके आधार पर इस ग्रन्थ पर उक्त कृति का प्रभाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बतलाया जाया है।[१७] इनकी दूसरी कृति **सांतिनाहचरिय [शांतिनाथचरित]** वि० सं० ११६०/ई० सन् ११०४ में स्तम्भतीर्थ (वर्तमान खंभात) में रची गयी है।[१८] यह १२००० श्लोक परिमाण है। १६ वें तीर्थंकर पर प्राकृत भाषा में रची गयी कृतियों में यह सबसे प्राचीन और विशाल है।

देवचन्द्रसूरि अपने समय के एक प्रतिभाशाली और विद्वान् आचार्य थे। अपने भावी शिष्य के रूप में एक शैव धर्मानुययायी गृहस्थ की अनुपस्थिति में उसकी अनुमति के बिना उसके अल्पवयस्क पुत्र को प्राप्त करना तथा इससे उत्पन्न तत्कालिक समस्याओं का मंत्री उदयन के सहयोग से सर्वमान्य हल ढूंढ निकालना इनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

हेमचन्द्रसूरि – पूर्वोक्त आचार्य देवचन्द्रसूरि के सुविश्रुत शिष्य और पट्टधर आचार्य हेमचन्द्रसूरि श्वेताम्बर जैन परम्परा में 'कलिकालसर्वज्ञ' के नाम से प्रसिद्ध हैं और इनका काल हैमयुग या सुवर्णयुग के नाम से जाना जाता है। विद्या और साहित्य के क्षेत्र में हेमचन्द्र का योगदान अद्वितीय है।[१९] इन्होंने अपने बारे में स्वरचित **द्व्याश्रयमहाकाव्य** [संस्कृत और प्राकृत], **सिद्धहेमशब्दानुशासन** की प्रशस्ति तथा **त्रिषष्टिशलाका-पुरुषचरित** की प्रशस्ति में कुछ जानकारी दी है, किन्तु उत्तरकालीन विभिन्न श्वेताम्बर जैन ग्रन्थकारों ने अपनी कृतियों में इनके जीवनचरित पर पर्याप्त प्रकाश डाला है।[२०] इनका विवरण इस प्रकार है :

ग्रन्थ	रचनाकार
१. **मोहराजपराजय**	मंत्री यशश्चन्द्र, रचनाकाल वि० सं० १२२८-३२/ ई० सन् ११७२-७६
२. **कुमारपालप्रतिबोध**	वडगच्छीय सोमप्रभसूरि, रचनाकाल वि० सं० १२४१ / ई० सन् ११८३
३. **प्रभावकचरित**	राज्यगच्छीय प्रभाचन्द्रसूरि, रचनाकाल वि० सं० १३३४ / ई० सन् १२७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. **प्रबन्धचिन्तामणि**	नागेन्द्रगच्छीय मेरुतुंगसूरि, रचनाकाल वि०सं० १३६१ / ई० सन् १३०५
५. **कल्पप्रदीप** अपरनाम **विविधतीर्थकल्प**	खरतरगच्छीय आचार्य जिनप्रभसूरि, रचनाकाल वि० सं० १३८९ / ई० सन् १३३३
६. **प्रबन्धकोश**	मलधारगच्छीय राजशेखरसूरि, रचनाकाल वि० सं० १४०५/ ई० सन् १३४९
७. **पुरातनप्रबन्धसंग्रह**	अज्ञात, रचनाकाल विक्रम सम्वत् की १५ वीं शताब्दी के आसपास
८. **कुमारपालचरित्र**	कृष्णर्षिगच्छीय आचार्य जयसिंहसूरि, रचनाकाल वि० सं० १४२२ / ई० सन् १३६६
९. **कुमारपालप्रबन्ध**	तपागच्छीय जिनमण्डनगणि, रचनाकाल वि० सं० १४९२/ ई० सन् १४३६

प्राप्त विवरणानुसार इनका जन्म वि० सं० ११४५ / ई० सन् १०८९ में धंधूका नगरी में हुआ था। इनके पिता का नाम चाचिग और माता का नाम पाहिणी था। ये श्रीमोढ़ वणिक ज्ञाति के थे। चाचिग शैवधर्मानुयायी थे और उनकी पत्नी पाहिणी जैन धर्मानुयायी थी। साम्प्रदायिक सद्भाव का यह उच्च आदर्श आज भी जैन परम्परा में विद्यमान है।

हेमचन्द्र का बचपन का नाम चांगदेव था। ८ वर्ष की आयु में स्तम्भतीर्थ (वर्तमान खंभात) में इनकी दीक्षा हुई और सोमचन्द्र नाम रखा गया। अल्पायु में ही इन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया और वि० सं० ११६६ / ई० सन् १११० में हेमचन्द्र के नाम से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। जयसिंह सिद्धराज के ये सम्माननीय विद्वत् मित्र थे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और सिद्धराज का उत्तराधिकारी कुमारपाल (वि० सं० ११९९ - १२२९ / ई० सन् ११४४ - ११७३) इन्हें अपना गुरु मानता था। इन्हीं के प्रभाव से उसने अनेक जिनालयों का निर्माण कराया, तीर्थयात्रायें कीं तथा अपने साम्राज्य में वर्ष के विशेष दिनों में पशुवध पर रोक लगा दी। वि० सं० १२२९ में ८४ वर्ष की आयु में हेमचन्द्रसूरि का देहावसान हुआ।

आचार्य हेमचन्द्र की साहित्य-साधना का क्षेत्र विशाल था। व्याकरण, छंद, अलंकार, कोश एवं काव्यविषयक इनकी अद्वितीय रचनाओं से प्रभावित होकर पाश्चात्य विद्वानों ने इन्हें 'ज्ञानमहोदधि' कहा है। हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है।[२१]

व्याकरण	-	**सिद्धहेमशब्दानुशासन, सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति, सिद्धहेमशब्दानुशासन-बृहद्वृत्ति, सिद्धहैमशब्दानुशासनप्राकृत-वृत्ति, धातुपारायण, लिंगानुशासन, बृहन्न्यास, उणादिगणविवरण**
कोश	-	**अभिधानचिन्तामणि स्वोपज्ञ टीका सहित, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टुशेष स्वोपज्ञ टीका सहित, देशीनाममाला स्वोपज्ञ टीका सहित**
अलंकार	-	**काव्यानुशासन स्वोपज्ञ अलंकारचूड़ामणि और विवेकवृत्ति के साथ**
छन्द	-	**छन्दानुशासन स्वोपज्ञटीका के साथ**
दर्शन	-	**प्रमाणमीमांसा स्वोपज्ञ वृत्ति के साथ**
इतिहास, काव्य	-	**संस्कृतद्वयाश्रयमहाकाव्य**
एवं व्याकरण	-	**प्राकृतद्वयाश्रयमहाकाव्य**
पौराणिक एवं	-	**त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, परिशिष्ट पर्व,**
योग	-	**योगशास्त्रसटीक**

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

इसके अतिरिक्त इन्होंने **वीतरागस्तोत्र, अन्ययोगव्यवच्छेद-द्वात्रिंशिका, अयोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका** और **महादेवस्तोत्र** की भी रचना की है।

रामचन्द्रसूरि – ये हेमचन्द्रसूरि के योग्यतम शिष्य थे और उनके निधन के पश्चात् वि० सं० १२२९ / ई० स० ११७३ में उनके पट्टधर बने। इनकी विद्वत्तता की ख्याति पूरे देश में थी और उस काल के विद्वानों में हेमचन्द्रसूरि के पश्चात् इन्हीं का स्थान था। इनके ज्ञाति, जन्मस्थान, माता-पिता आदि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। चौलुक्यनरेश जयसिंह सिद्धराज ने इनकी विद्वता से प्रभावित होकर इन्हें 'कविकटारमल्ल' की उपाधि दी थी। हेमचन्द्रसूरि की मृत्यु से दुःखी कुमालपाल के शोक का शमन रामचन्द्रसूरि ने ही किया था। कुमारपाल के उत्तराधिकारी अजयपाल (वि० सं० १२२९-१२३२ / ई० सन् ११७३-११७६) और अपने कनिष्ठ गुरुभ्राता एवं प्रतिद्वन्द्वी बालचन्द्र के सम्मिलित षड्यन्त्र से राजद्रोह के अभियोग में रामचन्द्रसूरि को असमय मृत्यु का वरण करना पड़ा।[२२]

रामचन्द्रसूरि अपने समय के श्रेष्ठतम विद्वानों में से थे। इन्होंने अपने ग्रन्थों में *प्रबन्धशतकर्तृ* इस इस विशेषण का प्रयोग किया है। पं० लालचंद भगवान गांधी का मत है कि इन्होंने १०० प्रबन्ध अवश्य लिखे होंगे, जिनमें से कुछ आज अनुपलब्ध हैं।[२३] डॉ० भोगीलाल सांडेसरा का मत है कि 'प्रबन्धशत' शब्द किसी संख्या को सूचित नहीं करता अपितु इस नाम का कोई स्वतंत्र ग्रन्थ ही रचा गया होगा।[२४] उनके द्वारा रची गयी प्रमुख कृतियां इस प्रकार हैं।

रघुविलास, यदुविलास, सत्यहरिश्चन्द्र, निर्भयभीमव्यायोग, मल्लिकामकरन्दप्रकरण, रोहिणीमृगांकप्रकरण, वनमालानाटिका, कौमुदीमित्रानन्द, नलविलास आदि ११ नाटक तथा **सुधाकलश** नामक सुभाषित संग्रह, **युगादिदेवद्वात्रिंशिका, प्रासादद्वात्रिंशिका, आदिदेवस्तव, मुनिसुव्रतद्वात्रिंशिका** आदि कई स्तोत्र। **कुमारविहारशतक** और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयनविहारप्रशस्ति[२५] भी इन्हीं की कृतियां हैं। अपने कनिष्ठ गुरुभ्राता गुणचन्द्र के साथ इन्होंने **द्रव्यालंकार** और **नाट्यदर्पण** की वृत्ति के साथ रचना की। इसके अतिरिक्त इनकी अन्य कृतियां भी मिलती हैं। रामचन्द्र मुद्रावाले जो अनेक स्तोत्र प्राप्त हुए हैं, वे इन रामचन्द्र के न होकर जावालिपुर के बृहद्गच्छीय रामचन्द्रसूरि के अब सिद्ध हुए हैं।[२६]

महेन्द्रसूरि - ये हेमचन्द्र के शिष्यों में एक थे। इन्होंने अपने गुरु द्वारा रचित **अनेकार्थसंग्रहकोष** पर उनके निधन के पश्चात् उन्हीं के नाम पर **अनेकार्थकैरवाककौमुदी** नामक टीका की रचना की। इनके द्वारा रचित अन्य किसी कृति का उल्लेख नहीं मिलता है। हेमचन्द्र के अन्य शिष्यों वर्धमानगणि और देवचन्द्र की कृतियों का पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है। उनके अन्य शिष्यों के किन्हीं कृतियों की सूचना नहीं मिलती।

पूर्णतल्लगच्छ के आदिम आचार्य कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया; यद्यपि इस बारे में कोई साक्ष्य नहीं मिलता है, फिर भी ईस्वी सन् की १० वीं शताब्दी के अंतिम चरण में इस गच्छ का अस्तित्व प्रमाणित होता है। हेमचन्द्र की बहुमुखी प्रतिभा के कारण जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल के समय यह गच्छ गच्छविशेष की संकीर्णता से ऊपर उठकर श्वेताम्बर श्रमण संघ का पर्याय बन गया। हेमचन्द्र के मृत्योपरान्त उनकी शिष्य मंडली में उत्पन्न कलह तथा इसी समय कुमारपाल की मृत्यु के बाद जैनों के प्रति उत्पन्न राजकीय कोप से इस गच्छ का प्रभाव समाप्तप्राय हो गया। यद्यपि वि० सम्वत् की १३वी शती के अन्त तक इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध होता है, फिर भी इस समय तक यह अपने पूर्व गौरवमय स्थिति से निश्चितरूप से च्युत हो चुका था। किन्तु जनमानस में हेमचन्द्र का आज भी वही आदरपूर्ण स्थान है जो जयसिंह और कुमारपाल के समय में था और यह अपने आप में अभूतपूर्व है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका संख्या – १

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित पूर्णतल्लगच्छीय मुनिजनों का विद्यावंशवृक्ष

?

|

आम्रदेवसूरि

|

श्रीदत्तगणि

|

यशोभद्रसूरि [उर्ज्जयन्तगिरि पर समाधिमरण]

|

प्रद्युम्नसूरि 'प्रथम' [**मूलशुद्धिप्रकरण** अपरनाम **स्थानकप्रकरण** के रचनाकार]

|

गुणसेनसूरि

|

देवचन्द्रसूरि [वि० सं० ११४६ / ई० सन् १०९० में **मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति** तथा वि० सं० ११६० / ई० सन् ११०४ में **शांतिनाथचरित** के रचनाकार]

|

अभयदेवसूरि [**मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति** के लेखन में अपने गुरुभ्राता के सहायक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशोकचन्द्र [**मूलशुद्धिप्रकरण-वृत्ति** के लेखन में अपने गुरु के सहायक]

हेमचन्द्रसूरि [जयसिंह सिद्धराज एवं कुमारपाल के समकालीन, अनेक ग्रन्थों के रचनाकार]

प्रद्युम्नसूरि [द्वितीय]

रामचन्द्रसूरि [अनेक कृतियों के कर्ता]

बालचन्द्र

गुणचन्द्र

देवचन्द्र

यशश्चन्द्र

उदयचन्द्र

सागरचन्द्र

वर्धमानगणि

चन्द्रसेन [वि० सं० १२०७ / ई० सन् ११५१ में [वि० सं० १२०७ / **उत्पादसिद्धि-प्रकरण** सटीक के रचनाकार]

?

मुनिमेरुप्रभ [वि ० सं० १२९८/ ईस्वी सन् १२४२ के शत्रुंजय के एक शिलालेख में उल्लिखित]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची :

१. Dasharatha Sharma - ***Early Chauhans Dynesties***, New Delhi 1959, A. D., p. 24.

२. आसीच्चन्द्रकुलाम्बरैकशशिनि श्रीपूर्णतल्लीयके,

गच्छे दुर्धरशीलधारणसहैः संपूरिते संयतैः ।

निःसम्बन्धविहारहारिचरितश्चचरित्रः शुचिः

श्रीसूरिर्मलवर्जितोर्जितमतिश्चार्वाम्रदेवाभिधः ॥ १ ॥

तच्छिष्य श्रीदत्तो, गणिरभवत् सर्वसत्त्वसमचित्तः ।

नरनायकादिवित्तः, सद्वृत्तो वित्तनिर्मुक्तः ॥ २ ॥

सूरिस्ततोऽभूद् गुणरत्नसिन्धुः, श्रीमान् यशोभद्र इतीद्धसंज्ञः ।

विद्वान् क्षितीशैर्नतपादपद्मः, सन्नैष्ठिको निर्मलशीलधारी ॥ ३ ॥

नीरोगोऽपि विधानतो निजतत्तं (नुं) संलिख्य सर्वादरात्,

सर्वाहारविवर्जनादनशनं कृत्वोज्जयन्ते गिरौ ।

कालेऽप्यत्र कलौ त्रयोदशदिनान्याश्चर्यहेतुर्जने,

शस्यं पूर्वमुनीश्वरीयचरितं संदर्शयामास यः ॥ ४ ॥

तच्छिष्यो भूरिबुद्धिर्मुनिवरनिकरैः सेवितः सर्वकालं,

सच्छास्त्रार्थप्रबन्धप्रवरवितरणाल्लब्धविद्वत्सुकीर्तिः ।

येनेदं स्थानकानां विरचितमनघं सूत्रमत्यन्तरम्यं,

श्रीमत्प्रद्युम्नसूरिर्जितमदनभटोऽभूत् सतामग्रगामी ॥ ५ ॥

राद्धान्त-तर्क-साहित्य-शब्दशास्त्रविशारदः ।

निरालम्बविहारी च, यः शमाम्बुमहोदधिः ॥ ६ ॥

सिद्धान्तदुर्गम महोदधिपारगामी,

कन्दर्पदर्पदलनोऽनघकीर्तियुक्तः ।

दान्ताऽतिदुर्दमहृषीकमहातुरङ्गः

श्रीमांस्ततः समभवद् गुणसेनसूरिः ॥ ७ ॥

जगत्यपि कृताश्चर्यं, सुराणामपि दुर्लभम् ।

निशाकरकराकारं, चारित्रं यस्य राजते ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चरणरेणुकल्पः सूरिश्रीदेवचन्द्रसंज्ञोऽभूत्।
तच्छिष्यो गुरुभक्तस्तद्विधधिषणो विनिर्मुक्त ॥ ९ ॥
श्रीमदभयदेवाभिधसूरेर्यो लघुसहोदरः स इह।
स्थानकवृत्तिं चक्रे सूरिः श्रीदेवचन्द्राख्यः ॥ १० ॥
मतिविकलेनापि मया, गुरुभक्तिप्रेरितेन रचितेयम्।
तस्मादियं विशोध्या, विद्वद्भिर्मयि कृपां कृत्वा ॥ ११ ॥
आवश्यक - सत्पुस्तकलेखन-जिनवन्दनाऽर्चनोद्युक्तः।
शय्यादानादिरतः, समभूदिह वीहकः श्राद्धः ॥ १२ ॥
तद्गुणगणानुयायी, श्रीवत्वस्तत्सुतः समुत्पन्नः।
तद्वसतावधिवसता, रचितेयं स्तम्भतीर्थपुरे ॥ १३ ॥
रस-युग-रुद्रै (११४६) र्वीतैर्विक्रम संवत्सरात् समाप्तेयम्।
फाल्गुनसितपञ्चम्यां, गुरुवारे प्रथमनक्षत्रे ॥ १४ ॥
अणहिलपाटकनगरे, वृत्तिरियं शोधिता सुविद्वद्भिः।
श्रीशीलभद्रप्रमुखैराचार्यैः शास्त्रतत्त्वज्ञैः ॥ १५ ॥
साहाय्यमत्र विहितं, निजशिष्याशोकचन्द्रगणिनाम्ना।
प्रथमप्रतिमालिखता, विश्रामविवर्जितेन भृशम् ॥ १६ ॥
प्रत्यक्षरं निरूप्यास्या ग्रन्थमानं विनिश्चितम्।
अनुष्टुभां सहस्राणि संपूर्णानि त्रयोदश ॥ १७ ॥

मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति की प्रशस्ति

श्री जितेन्द्र बी० शाह, नियामक, शारदाबेन चिमनभाई एजुकेशन रिसर्च सेन्टर, अहमदाबाद के सौजन्य से उक्त प्रशस्ति प्राप्त हुई है, जिसके लिये लेखक उनका हृदय से आभारी है।

श्री अम्बालाल पी० शाह द्वारा सम्पादित **कालिकाचार्यकथासंग्रह** [अहमदाबाद १९४९ इ० सन्] के पृष्ठ २३-२४ पर भी उक्त प्रशस्ति दी गयी है।

३. C.D. Dalal. - *A Descriptiue Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan*, Vol. 1
G.O.S. No. - LXXVI, Baroda 1937 A.D., Pp 335-343.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर से ईस्वी सन् १९०६ - १९१३ में प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ का १०वां पर्व **महावीरचरित** के रूप में है, जो वि० सं० १९६५ / ई० सन् १९०९ में प्रकाशित हुआ है। कृति के अन्त में ग्रन्थकार ने २१ श्लोकों की प्रशस्ति दी है। इसका एच० जानसन द्वारा किया गया आंग्लभाषानुवाद गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला के अन्तर्गत - ६ भागों में प्रकाशित हो चुका है।

५. मायापरैर्हतपरैः स्फुटमिन्द्रकल्पैस्तीर्थ्यैकल्पकुविकल्पशतैर्विलुप्ता।
दृष्टिर्यदीरितपदत्रमन्त्रात् सम्यक्तववमेति भविनां जयताज्जिनोऽसौ ॥ १ ॥

कुदृष्टो यद्वशतः सुदुष्टिभावं ययुस्त्यक्तविरोधसङ्गाः।
शिवं शिवं तज्जिनशासनं नस्तनोतु निःशेषसमृद्धिहेतुः ॥ २ ॥

श्रीमांश्चान्द्रकुलेऽभवद्गुणनिधिः प्रद्युम्नसूरिप्रभु-
र्बन्धुर्यस्य स सिद्धहेमविधये श्रीहेमसूरिर्विधिः।
तच्छिष्यावयवोऽत्र सूरिरजनि श्रीचन्द्रसेनाभिध-
स्तेनेदं रचितं प्रकाशपदवीं नेयं पुनः साधुभिः ॥ ३ ॥

कृत्वा प्रकरणमेतद् यत्कुशलमिहार्जितं मया किञ्चित्।
तस्मात्तत्त्वैकरुचिर्भवतु जनः सिद्धसद्बोधः ॥ ४ ॥

द्वादशवर्षशतेषु श्रीविक्रमतो गतेषु मुनिभिः।
चैत्रे संपन्नमिदं साहाय्यं चात्र ये नेमेः ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धहेमगुरुभ्रातृश्रीप्रद्युम्नसूरिशिष्यश्रीचंद्रसेनाचार्यरचित स्वोपज्ञं श्रीउत्पादादि-सिद्धद्वात्रिंशिकाविवरण समाप्तं।

यह कृति ऋषभदेव केशरीमलजी श्वेताम्बर संस्था, रतलाम द्वारा वि० सं० १९९३ / ई० सन् १९३६ में प्रकाशित हो चुकी है।

६. भोगीलाल सांडेसरा - **हेमचन्द्राचार्य का शिष्य मंडल**, जैन संस्कृति संशोधन मण्डल, वाराणसी १९५१ ई०, पृ० ३-२०.

एम०ए० ढांकी - 'कवि रामचन्द्र अने कवि सागरचन्द्र' **सम्बोधि**, वर्ष ११, अंक १-४, अहमदाबाद १९८५ ईस्वी, पृष्ठ ६८-८०.

७. सांडेसरा, पूर्वोक्त, पृष्ठ १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. G. Buhler - ***The Life of Hemachandracharya***, Translated from Original German By Mani Lal Patel, Singhi Jaina Series No. 11, Shantiniketan 1936 A.D.

९ सांडेसरा, पूर्वोक्त

१०. सूरिश्चन्द्रकुलामलैकतिलकश्चारित्र रत्नाम्बुधिः

सारे लाघवमादधाति च गिरेर्यो वर्धमानाभिधः।

तच्छिष्यावयवः स सूरिरभवच्छीशान्तिनामा कृता

येनेयं विवृतिर्विचारकलिका नामा स्मृतावा (त्मनः) ॥ १ ॥

अवज्ञानं हीने समधिकगुणे द्वेषमधिकम्

समाने संस्पर्धां गुणवति गुणी यत्र कुरुते।

तदस्मिन् संसारे विरलसुजनेऽपास्तविषया

प्रतिष्ठाशा शास्त्रे तदपि च भवेत् कृत्यकरणम् ॥ २ ॥

पं० दलसुख मालवणिया - संपा०. **न्यायावतारवार्तिकवृत्ति**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला ग्रन्थांक २०, बंबई वि० सं० २००५, प्रशस्ति, पृष्ठ १२२.

११. श्रीशांतिसूरिरिह श्रीमति पूर्णतले (ल्ले) गच्छे वरो मंतिमतां बहुशास्त्रवेत्ता।

तेनामलं विरचित बहुधा विमृश्य संक्षेपतो वरमिगं बुद्ध ! टिप्पितं भोः ॥

इदं विधाय यत् पुण्यं निर्मलं समुपार्जितं।

तेन भव्या दिवं लब्ध्वा पश्चात् निर्वांतु मानवाः ॥

शांत्याचार्यकृत **तिलकमंजरीटिप्पन** की प्रशस्ति

दलाल, पूर्वोक्त, पृ० ८७.

मेघाभ्युदयकाव्यटिप्पन की प्रशस्ति में भी उन्होंने अपना गच्छ पूर्णतल्ल ही बतलाया है :

श्रीपूर्णतल्लगच्छसम्बन्धिश्रीवर्धमानाचार्यस्वपट्टस्थापितश्रीशांतिसूरिविरचिता मेघाभ्युदयकाव्यवृत्तिः समाप्ताः ॥

Munu Punyavijaya - ED. ***New Catalogue of Saskrit and Prakrit Manuscripts : Jesalmer Collection*** L.D. Series No. 36, Ahmeabad - 1972 A.D. P., 149.

12. U.P. Shah - `A Forgotten chapter in the History of Svetambara Jaina Church' ***Journal of the Asiatic Society of Bombay***, Vol. 32 Part I, 1955 A.D., p.p. 100-113.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

13. H. D. Velankar - ***Jinaratnakosa***, Government Oriental Series, Class C, No. 4, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona-1944 A.D., P-312-13

मूलशुद्धिप्रकरण के चार स्थानक देवचन्द्रसूरि कृत वृत्ति के साथ श्री अमृतलाल मोहनलाल भोजक द्वारा सम्पादित और प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी अहमदाबाद द्वारा ई० सन् १९७१ में प्रकाशित हो चुके हैं। शेष भाग अभी भी अप्रकाशित ही है।

१४. Muni Punyavijaya - ***A New Catalogue of Samskrit and Prakrit Mss : Jesalmer Collection***, P. 60.

१५. Muni Punyavijaya - Ed. ***Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Santinatha Jain Bhandar, Cambay***, G. O. S. No. 135 - 149, Baroda, 1961-66 A.D. Pp 158, 163, 168, 180.

१६. द्रष्टव्य संदर्भ संख्या २.

१७. गुलाबचन्द्र चौधरी, **जैन साहित्य का बृहद इतिहास**, भाग-६, पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २०, वाराणसी १९७३ ई०, पृष्ठ ८६.

१८. एकारसहिं सएहिं विक्कमसंवच्छराउ सट्ठेहिं।
रइयं खंभाइत्थे रज्जे जयसिंघरायस्स॥

C. D. Dalal - ***A Descriptive Catalogue of Mss In the Jaina Bhandars at Pattan*** P. 339.

शांतिनाथचरित अद्यावधि अप्रकाशित है।

१९. बुहलर, पूर्वोक्त.

२०. R.C. Parikha - ***An Introduction of Kavyanusasana***, Vol. II, Part I, Bombay 1938, Pp. I-CCCXXX. वि० भा० मुसलगांवकर - **आचार्य हेमचन्द्र,** भोपाल १९७१ ई०, पृष्ठ ५ और आगे.

२१. मोतीचन्द गिरधरलाल कापडिया - 'श्रीमद् हेमचन्द्राचार्यनी कृतियो' **श्री हेम सारस्वत सत्र, पाटण, अहेवाल अने निबंध संग्रह,** बम्बई १९४१ ई०, पृष्ठ १७७-१९१.

२२. जी० के० श्रीगोन्डेकर एवं लालचन्द्र भगवानदास गांधी - संपा० **नलविलास,** बड़ोदरा १९२६ ईस्वी, प्रस्तावना, पृष्ठ २३, और आगे.

२३. वही, पृष्ठ ३२.

२४. सांडेसरा, पूर्वोक्त, पृष्ठ ७-८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. लालचन्द्र भगवानदास गांधी – 'उदयनविहार' **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष १९, पृष्ठ ७५, १०७, १५७, १७४, २२२ आदि.

२६. ढांकी, पूर्वोक्त, पृष्ठ ६८–७३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

मध्ययुग में श्वेताम्बर श्रमण संघ का विभिन्न गच्छों और उपगच्छों के रूप में विभाजन एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। श्वेताम्बर श्रमण संघ की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शाखा चन्द्रकुल [बाद में चन्द्रगच्छ] का विभिन्न कारणों से समय-समय पर विभाजन होता रहा, परिणामस्वरूप अनेक नये-नये गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ, इनमें पूर्णिमागच्छ भी एक है। पाक्षिकपर्व पूर्णिमा को मनायी जाये या चतुर्दशी को ? इस प्रश्न पर पूर्णिमा का पक्ष ग्रहण करने वाले चन्द्रकुल के मुनिगण पूर्णिमापक्षीय या पूर्णिमागच्छीय कहलाये। वि० सं० ११४९ / ई० सन् १०९३ अथवा वि० सं० ११५९ / ई० सन् ११०३ में इस गच्छ का आविर्भाव माना जाता है। चन्द्रकुल के आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य चन्द्रप्रभसूरि इस गच्छ के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इस गच्छ में धर्मघोषसूरि, देवसूरि, चक्रेश्वरसूरि, समुद्रघोषसूरि, विमलगणि, देवभद्रसूरि, तिलकाचार्य, मुनिरत्नसूरि, कमलप्रभसूरि आदि तेजस्वी विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए हैं। इस गच्छ के पूनमियागच्छ, राकापक्ष आदि नाम भी बाद में प्रचलित हुए। इस गच्छ से कई शाखायें उद्भूत हुईं, जैसे प्रधानशाखा या ढंढेरिया शाखा, साधुपूर्णिमा या सार्धपूर्णिमाशाखा, कच्छोलीवालशाखा, भीमपल्लीयाशाखा, बटपद्रीयाशाखा, बोरसिद्धीयाशाखा, भृगुकच्छीयाशाखा, छापरियाशाखा आदि।

पूर्णिमागच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये सद्भाग्य से हमें विपुल परिमाण में साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा लिखित ग्रन्थों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की प्रशस्तियों, गच्छ के विद्यानुरागी मुनिजनों की प्रेरणा से प्रतिलिपि करायी गयी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि की प्रशस्तियां तथा पट्टावलियां प्रमुख हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित तीर्थंकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की चर्चा की जा सकती है। यहां उक्त साक्ष्यों के आधार पर पूर्णिमागच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त रूप में प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। अध्ययन की सुविधा हेतु सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है :

दर्शनशुद्धि -

यह पूर्णिमागच्छ के प्रकटकर्ता आचार्य चन्द्रप्रभसूरि की कृति है। इनकी दूसरी रचना है - **प्रमेयरत्नकोश**। इन रचनाओं में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख तो नहीं किया है, परन्तु इनके प्रशिष्य विमलगणि ने अपने दादागुरु की रचना पर वि० सं० ११८१/ ई० सन् ११२५ में वृत्ति लिखी, जिसकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का सुन्दर परिचय दिया है[१] वह इस प्रकार है :

सर्वदेवसूरि
|
जयसिंहसूरि
|
चन्द्रप्रभसूरि [**दर्शनशुद्धि** के रचनाकार]
|
धर्मघोषसूरि
|
विमलगणि [वि० सं० ११८१/ई० सन् ११२५ में **दर्शनशुद्धिवृत्ति** के रचनाकार]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दर्शनशुद्धिबृहद्वृत्ति -

पूर्णिमागच्छीय विमलगणि के शिष्य देवभद्रसूरि ने वि० सं० १२२४/ ई० सन् ११६८ में अपने गुरु की कृति **दर्शनशुद्धिवृत्ति पर बृहद्वृत्ति** की रचना की। इसकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है[२] :

जयसिंहसूरि
|
चन्द्रप्रभसूरि
|
समन्तभद्रसूरि — धर्मघोषसूरि
|
विमलगणि
|
देवभद्रसूरि
[वि० सं० १२२४ /ई० सन् ११६८ में **दर्शनशुद्धिबृहद्वृत्ति के** रचनाकार]

प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्ति -

यह पूर्णिमागच्छीय हेमप्रभसूरि की कृति है। रचना के अंत में वृत्तिकार ने अपनी गुरु-परम्परा और रचनाकाल का उल्लेख किया है[३], जो इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
यशोघोषसूरि
|

हेमप्रभसूरि [वि० सं० १२२३ / ई० सन् ११६७ में **प्रश्नोत्तररत्न-मालावृत्ति** के रचनाकार]

अममस्वामिचरितमहाकाव्य –

पूर्णिमागच्छीय समुद्रघोषसूरि के विद्वान् शिष्य मुनिरत्नसूरि द्वारा यह प्रसिद्ध कृति वि० सं० १२५२ / ई० सन् ११९६ में रची गयी है। रचना के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है[४], जो इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक]
|
धर्मघोषसूरि
|
समुद्रघोषसूरि
|
मुनिरत्नसूरि [वि० सं० ११५२/ई० सन् ११९६ में **अममस्वामिचरित-महाकाव्य** के रचनाकार]

प्रश्नोत्तरसंग्रहवृत्ति –

पूर्णिमागच्छीय मलयचन्द्रसूरि ने वि० सं० १२६० / ई० सन् १२०४ में अपने गुरु मानतुंगसूरि द्वारा रचित **जयन्तीचरित्र** अपरनाम **प्रश्नोत्तरसंग्रह** पर वृत्ति की रचना की। वृत्तिकार के गुरु-परम्परा इस प्रकार मिलती है :[४अ]

सर्वदेवसूरि
|
जयसिंहसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्रप्रभसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
शीलगुणसूरि
|
मानतुंगसूरि [**जयन्तीचरित्र** अपरनाम **प्रश्नोत्तरसंग्रह** के रचनाकार]
|
|
मलयचन्द्रसूरि [वि० सं० १२६० में **जयन्तीचरित्र** अपरनाम **प्रश्नोत्तरसंग्रह** पर वृत्ति के रचनाकार]

प्रत्येकबुद्धचरित -

पूर्णिमागच्छीय शिवप्रभसूरि के शिष्य श्रीतिलकसूरि अपरनाम तिलकाचार्य ने वि० सं० १२६१ / ई० सन् १२०५ में इस ग्रन्थ की रचना की। श्रीतिलकसूरि द्वारा रचित कई कृतियां मिलती हैं। श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने इनकी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है[५], जो इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रकटकर्ता]
|
धर्मघोषसूरि
|
चक्रेश्वरसूरि
|
शिवप्रभसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

श्रीतिलकसूरि [वि० सं० १२६१ / ई० सन् १२०५ में **प्रत्येकबुद्धचरित** के रचनाकार]

प्रत्येकबुद्धचरित अभी अप्रकाशित है।

शान्तिनाथचरित -

यह कृति पूर्णिमागच्छ के अजितप्रभसूरि द्वारा वि० सं० १३०७ में रची गयी है। जैसलमेर और पाटण के ग्रन्थ भंडारों में इसकी प्रतियां संरक्षित हैं। कृति के अन्त में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है[६], जो इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि

|

देवसूरि

|

तिलकप्रभसूरि

|

वीरप्रभसूरि

|

अजितप्रभसूरि [वि० सं० १३०७ /ई० सन् १२५१ में **शांतिनाथचरित** के रचनाकार]

पुण्डरीकचरित -

पूर्णिमापक्षीय चन्द्रप्रभसूरि की परम्परा में हुए रत्नप्रभसूरि के शिष्य कमलप्रभसूरि ने वि० सं० १३७२/ ई० सन् १३१६ में उक्त कृति की रचना की। कृति के अन्त में प्रशस्ति के अर्न्तगत उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का इस प्रकार विवरण दिया है[७] :

चन्द्रप्रभसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
चकेश्वरसूरि
|
त्रिदशप्रभसूरि
|
धर्मप्रभसूरि
|
अभयप्रभसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
कमलप्रभसूरि [वि० सं० १३७२ / ई० सन् १३१६ में **पुण्डरीकचरित** के रचनाकार]

क्षेत्रसमासवृत्ति -

यह कृति पूर्णिमागच्छीय पद्मप्रभसूरि के शिष्य देवानन्दसूरि द्वारा वि० सं० १४५५ / ई० सन् १३९९ में रची गयी है। कृति के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत रचनाकार ने अपनी लम्बी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है[८], जो इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
भद्रेश्वरसूरि
|
मुनिप्रभसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

सर्वदेवसूरि

|

सोमप्रभसूरि

|

रत्नप्रभसूरि

|

चन्द्रसिंहसूरि

|

देवसिंहसूरि

|

पद्मतिलकसूरि

|

श्रीतिलकसूरि

|

देवचन्द्रसूरि

|

पद्मप्रभसूरि

|

देवानन्दसूरि [वि०सं० १४५५ /ई० सन् १३९९ में **क्षेत्रसमासवृत्ति** के रचनाकार]

श्रीपालचरित -

पूर्णिमागच्छीय गुणसमुद्रसूरि के शिष्य सत्यराजगणि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित ५०० श्लोकों की यह कृति वि० सं० १५१४ में रची गयी है। इसकी वि० सं० १५७५ / ई० सन् १५१९ की एक प्रतिलिपि जैसलमेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के ग्रन्थभंडार में संरक्षित है। रचना के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का विस्तृत परिचय न देते हुए मात्र अपने गुरु का ही नामोल्लेख किया है[९] :

गुणसमुद्रसूरि
|
सत्यराजगणि [वि०सं० १५१४/ई० सन् १४५८ में **श्रीपालचरित** के रचनाकार]

पूर्णिमागच्छगुर्वावली -

यह गुर्वावली पूर्णिमागच्छ के सुमतिरत्नसूरि के शिष्य उदयसमुद्रसूरि द्वारा वि० सं० १५८०/ई० सन् १५२४ में रची गयी है[१०]। इसमें उल्लिखित पूर्णिमागच्छ के आचार्यों का क्रम निम्नानुसार है :

चन्द्रगच्छीय चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक]
|
धर्मघोषसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
जिनदत्तसूरि
|
शांतिभद्रसूरि
|
भुवनतिलकसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
हेमतिलकसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
हेमरत्नसूरि
|
हेमप्रभसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
रत्नसागरसूरि
|
गुणसागरसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
सुमतिप्रभसूरि
|
पुण्यरत्नसूरि
|
सुमतिरत्नसूरि
|
उदयसमुद्रसूरि [वि०सं० १५८० /ई० सन् १५२४ में **पूर्णिमागच्छ-गुर्वावली** के रचनाकार]

पूर्णिमागच्छीय रचनाकारों की पूर्वोक्त कृतियों की प्रशस्तियों से उपलब्ध छोटी-बड़ी गुर्वावलियों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की एक विस्तृत तालिका की संरचना की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

द्रष्टव्य - तालिका संख्या - १.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका १ : प्रशस्तियों के आधार पर निर्मित पूर्णिमापक्ष के आचार्यों की गुरु-परम्परा

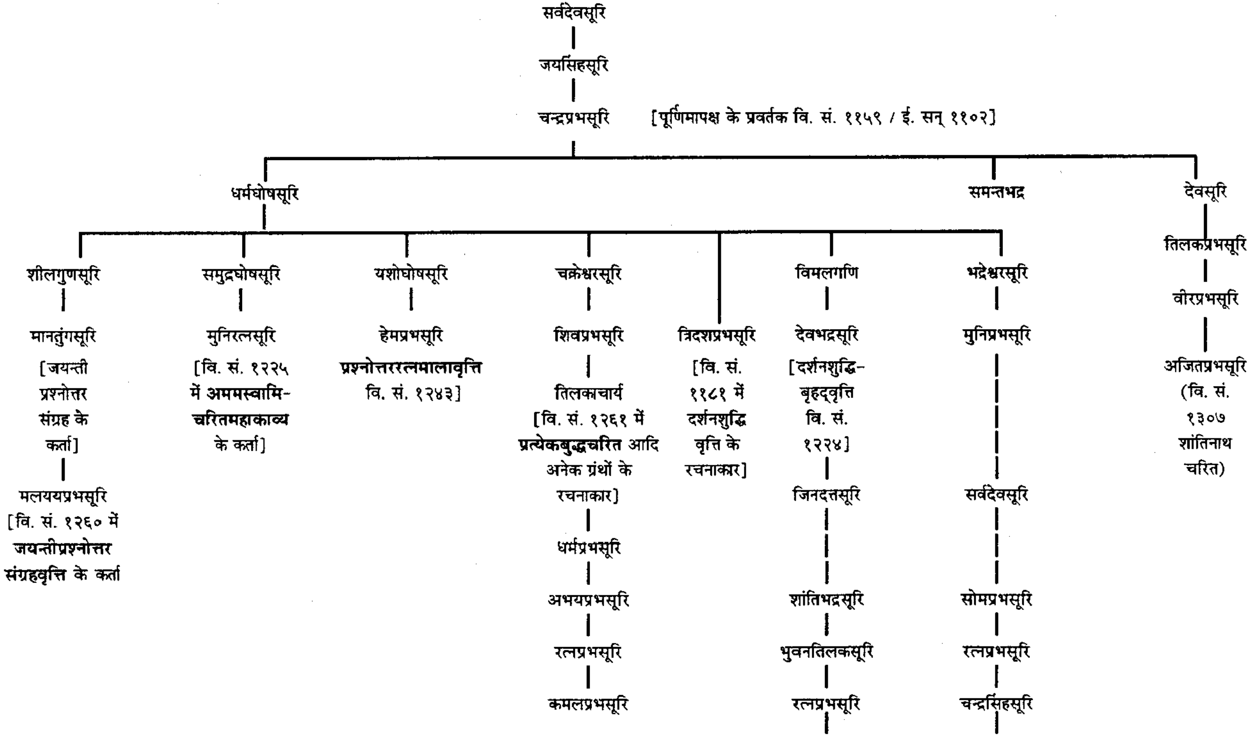

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[वि. सं. १३७२
में **पुण्डरीकचरित**
के रचनाकार]

|
हेमतिलकसूरि
|
हेमरत्नसूरि
|
हेमप्रभसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
रत्नसागरसूरि
|
गुणसागरसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
|— सुमतिप्रभसूरि
| |
| पुण्यरत्नसूरि
| |
| सुमतिरत्नसूरि
| |
| उदयसमुद्रसूरि
| [वि. सं. १५८० में पूर्णिमापक्ष-
| गुर्वावली के रचनाकार]
|
|— सत्यराजगणि

|
देवसिंहसूरि
|
पद्मतिलकसूरि
|
श्रीतिलकसूरि
|
देवचन्द्रसूरि
|
पद्मप्रभसूरि
|
देवानन्दसूरि
[वि. सं. १४५५ में क्षेत्रसमासवृत्ति
के रचनाकार]
|
अभयचन्द्रसूरि
|
रामचन्द्रसूरि
[वि. सं. १४९० में विक्रमचरित
के रचनाकार]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमागच्छीय मुनिजनों की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ४०० से अधिक जिन प्रतिमायें आज मिलती हैं। इन पर वि० सं० १३६८ से वि०सं० १७७४ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इन प्रतिमालेखों में इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के नाम मिलते हैं, परन्तु उनमें से कुछ के पूर्वापर सम्बन्ध ही स्थापित हो पाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

सर्वाणंदसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित तीन प्रतिमायें मिली हैं जिनपर वि०सं० १४८० से वि० सं० १४८५ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १४८०	ज्येष्ठ सुदि ७ मंगलवार	प्र० ले० सं० भाग १	लेखांक २२३
वि० सं० १४८१	वैशाख वदि १२ रविवार	बी० जै० ले० सं०	लेखांक ७०४
वि० सं० १४८५	ज्येष्ठ सुदि ७ मंगलवार	जै० ले० सं० भाग-२	लेखांक १२४१

गुणसागरसूरि

आपकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमायें मिली हैं, जिन पर वि० सं० १४८३ से वि० सं० १५११ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि०सं० १४८३	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २	लेखांक ४६५
वि०सं० १४८३	फाल्गुन सुदि १० गुरुवार	वही, भाग २	लेखांक १०१४
वि० सं० १४८३	फाल्गुन सुदि १० गुरुवार	वही, भाग १	लेखांक ११७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १४८६	वैशाख सुदि ३	वही, भाग १	लेखांक १०६७
वि० सं० १५०४	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	वही, भाग १	लेखांक ११७१
वि० सं० १५११	आषाढ वदि ९ शनिवार	बी० जै० ले० सं०	लेखांक ९४५

वि० सं० १५११ के लेख में सर्वाणंदसूरि के पट्टधर (?) के रूप में इनका उल्लेख मिलता है।

गुणसागरसूरि के शिष्य हेमरत्नसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें मिली हैं, जो वि० सं० १४८६ और वि० सं० १५२१ की हैं :

वि० सं० १४८६	ज्येष्ठ सुदि ९ बुधवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २	लेखांक १३९
वि०सं० १५२१	वैशाख सुदि ३ सोमवार	वही, भाग १	लेखांक ८४७

गुणसागरसूरि के पट्टधर गुणसमुद्रसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २१ जिन प्रतिमायें मिली हैं, जो वि०सं० १४९२ से वि०सं० १५१२ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १४९२	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	प्रा० ले० सं०	लेखांक १५८
वि० सं० १५०१	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १	लेखांक २२५
वि० सं० १५०१	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	जै० ले० सं०, भाग १	लेखांक १५६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५०४	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	प्रा० ले० सं०	लेखांक २०५
वि० सं० १५०५	वैशाख सुदि ५ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २	लेखांक ८१२
वि० सं० १५०५	माघ सुदि ५ रविवार	जै० प्र० ले० सं०	लेखांक ३६०
वि० सं० १५०६	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	बी० जै० ले० सं०	लेखांक २४७८
वि० सं० १५०६	माघ वदि ७ बुधवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग	लेखांक १०७९
वि० सं० १५०७	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	वही, भाग १	लेखांक ४२५
वि० सं० १५०७	माघ सुदि ११ बुधवार	वही, भाग २	लेखांक ४४१
वि० सं० १५०८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	वही, भाग २	लेखांक ९५७
वि० सं० १५०८	ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार	जै० ले० सं०, भाग ३	लेखांक २३२६
वि० सं० १५०८	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १	लेखांक १०१७
वि० सं० १५०९	ज्येष्ठ सुदि १० गुरुवार	वही, भाग २	लेखांक १०३४
वि० सं० १५१०	फाल्गुन सुदि ११ शनिवार	वही, भाग २	लेखांक ९६४
वि० सं० १५११	ज्येष्ठ वदि १० सोमवार	वही, भाग २	लेखांक १३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५११	ज्येष्ठ वदि १० सोमवार	वही, भाग २	लेखांक ४६२
वि० सं० १५११	आषाढ़ सुदि ५ शुक्रवार	वही, भाग २	लेखांक ३७७
वि० सं० १५११	माघ वदि ३ बुधवार	प्रा० ले० सं०	लेखांक २६७
वि० सं० १५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	रा० प्र० ले० सं०	लेखांक १७१
वि० सं० १५१२	ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार	जै० ले० सं०, भाग ३	लेखांक २१३६

गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर पुण्यरत्नसूरि

पुण्यरत्नसूरिकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ३० सलेख जिन प्रतिमायें मिली हैं, जो वि०सं० १५१२ से वि०सं० १५३६ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५१२	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	अ० प्र० जै० ले० सं०	लेखांक ५८२
वि० सं० १५१२	ज्येष्ठ सुदि ८ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १	लेखांक १०६
वि० सं० १५१५	फाल्गुन सुदि ९ रविवार	रा० प्र० ले० सं०	लेखांक १९२
वि० सं० १५१७	वैशाख वदि ८ शुक्रवार	जै० ले० सं०, भाग २,	लेखांक २०८५
वि० सं० १५१७	माघ वदि ८ बुधवार	श्री० प्र० ले० सं०	लेखांक ७१
वि० सं० १५१८	फाल्गुन वदि १ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २	लेखांक १७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	जै० ले० सं० लेखांक १५६७ भाग २
वि० सं० १५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	जै० धा० प्र० लेखांक ८२२ ले० सं०, भाग २
वि० सं० १५२०	वैशाख सुदि ११ बुधवार	रा० प्र० ले० सं०लेखांक २२९
वि० सं० १५२०	माघ सुदि १० बुधवार	वही, लेखांक १८०
वि० सं० १५२२	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	जै० धा० प्र० लेखांक ५३३ ले० सं०, भाग २
वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	वही, भाग १ लेखांक ११७०
वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	बी० जै० ले० सं० लेखांक १८७७
वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	जै० ले० सं०, लेखांक २५८४ भाग ३
वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	जै० धा० प्र० लेखांक १०८१ ले० सं०, भाग २
वि० सं० १५२७	ज्येष्ठ वदि १० बुधवार	श० वै० लेखांक १९०
वि० सं० १५२७	ज्येष्ठ वदि १० बुधवार	श्री०प्र० ले० सं० लेखांक ७९
वि० सं० १५२८	माघ वदि ५ गुरुवार	जै० धा० प्र० लेखांक ८८७ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५३०	तिथिविहीन	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक २७२ भाग १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	जै० ले० सं०, लेखांक ६६ भाग १
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० लेखांक २१९
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ४३८
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	वही, लेखांक ४३९
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	वही, लेखांक ४४०
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	वही, लेखांक ४४१
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	जै० धा० प्र० ले० लेखांक ४४० सं०, भाग २,
वि० सं० १५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार	वही, भाग २ लेखांक ४४९
वि० सं० १५३२	वैशाख वदि २ शुक्रवार	प्र० ले० सं०, लेखांक ७४३ भाग १
वि० सं० १५३४	वैशाख सुदि २ रविवार	वही, लेखांक ७६९
वि० सं० १५३६	तिथि विहीन	श्री० प्र० ले० सं० लेखांक ११

गुणसमुद्रसूरि के पट्टधर गुणधीरसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित १९ जिनप्रतिमायें मिलती हैं जो वि० सं० १५१६ से वि० सं० १५३६ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार हैं :

वि० सं० १५१६	वैशाख वदि १० गुरुवार	जै० धा० प्र० लेखांक ९६० ले० सं०, भाग १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५१६	ज्येष्ठ वदि ९ शुक्रवार	जै० ले० सं० लेखांक २४८१ भाग ३
वि० सं० १५१६	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	जै० धा० प्र० लेखांक १०९ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५१६	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	श्री० प्र० ले० सं०,लेखांक १४०
वि० सं० १५१६	तिथिविहीन	वही, लेखांक ३२
वि० सं० १५१७	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	जै० धा० प्र० ले० लेखांक १६५
वि० सं० १५१८	ज्येष्ठ वदि १० रविवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ३२५
वि० सं० १५१८	ज्येष्ठ वदि १० रविवार	जै० ले० सं० लेखांक २१९१ भाग ३,
वि० सं० १५१८	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	जै० धा० प्र० ले० लेखांक १६६ सं० भाग
वि० सं० १५१८	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	प्रा० ले० सं० लेखांक ३२६
वि० सं० १५१८	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	जै० ले० सं० लेखांक २१३० भाग ३ एवं. बी० जै० ले० सं० लेखांक २८१२
वि० सं० १५१९	आषाढ सुदि १ सोमवार	अ० प्र०जै० लेखांक १८७ ले० सं०,
वि० सं० १५१९	आषाढ वदि ११ शुक्रवार	जै० धा० प्र० ले०लेखांक १०२२ सं०, भाग १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५२१	वैशाख सुदि १० रविवार	अ० प्र० जै० ले० सं०	लेखांक १८४
वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि २ रविवार	जै० स० प्र०, वर्ष ६, अंक १०	
वि० सं० १५३०	माघ सुदि १० शुक्रवार	श० वै०	लेखांक २०३
वि० सं० १५३१	वैशाख सुदि १० शनिवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग २	लेखांक ७५०
वि० सं० १५३२	वैशाख वदि ५ सोमवार	जै० ले० सं०, भाग ३	लेखांक २५२२
वि० सं० १५३६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	श्री० प्र० ले० सं०	लेखांक ९५

चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणिशेरी-राधनपुर में प्रतिष्ठापित श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर वि०सं० १५१२ माघ सुदि १० बुधवार का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठाकी प्रेरणा देने वाले आचार्य पुण्यरत्नसूरि तथा उनके पूर्ववर्ती तीन आचार्यों - गुणसागरसूरि, गुणसमुद्रसूरि और सुमतिप्रभसूरि का भी नाम मिलता है, जो इस प्रकार है :

गुणसागरसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
सुमतिप्रभसूरि
|
पुण्यरत्नसूरि [वि०सं० १५१२ में श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा के प्रतिष्ठापक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस प्रकार पुण्यरत्नसूरि का गुणसमुद्रसूरि और सुमतिप्रभसूरि दोनों के पट्टधर के रूप में उल्लेख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सुमतिप्रभसूरि और पुण्यरत्नसूरि दोनों परस्पर गुरुभ्राता थे और इन दोनों मुनिजनों के गुरु थे गुणसमुद्रसूरि। गुणसमुद्रसूरि के पश्चात् उनके शिष्य सुमतिप्रभसूरि उनके पट्टधर बने और सुमतिप्रभसूरि के पट्टधर उनके कनिष्ठ गुरुभ्राता पुण्यरत्नसूरि हुए। इसीलिये गुणसमुद्रसूरि और सुमतिप्रभसूरि दोनों के पट्टधर के रूप में पुण्यरत्नसूरि का उल्लेख मिलता है।

उक्त प्रतिमालेखीय साक्ष्यों के आधार पर पूर्णिमागच्छीय मुनिजनों की जो छोटी-छोटी गुर्वावली प्राप्त होती है उन्हें इस प्रकार समायोजित किया जा सकता है :

तालिका २

सर्वाणंदसूरि [वि०सं० १४८० - १४८५]
|
गुणसागरसूरि [वि०सं० १४८३ - १५११]
|
- हेमरत्नसूरि [वि०सं० १४८६]
- गुणसमुद्रसूरि [वि०सं० १४९२ - १५१२]
  - सुमतिप्रभसूरि [मुख्यपट्टधर]
  - पुण्यरत्नसूरि [पट्टधर] [वि०सं० १५१२-१५३४] प्रतिमालेख
  - गुणधीरसूरि [शिष्यपट्टधर] [वि०सं० १५१६-१५३६] प्रतिमालेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमागच्छ से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों से कुछ अन्य मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्ध भी स्थापित होते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

मुनिशेखरसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि

पूर्णिमागच्छीय साधुरत्नसूरि की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २८ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इन पर वि० सं० १४८५ से १५२७ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १४८५	वैशाख सुदि ६ रविवार	जै० धा० प्र० ले०	लेखांक ७७
वि० सं० १४८५	ज्येष्ठ वदि ५ रविवार	बी० जै० ले० सं०	लेखांक ७२८
वि० सं० १४८५	ज्येष्ठ वदि ११ शनिवार	वही,	लेखांक १५९८
वि० सं० १४८७	कार्तिक वदि ५ गुरुवार	जै० ले० सं० भाग ३	लेखांक २३००
वि० सं० १४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	श०गि०द०,	लेखांक ४६७
वि० सं० १४८९	वैशाख सुदि	प्रा० ले० सं०	लेखांक १४४
वि० सं० १४८९	फाल्गुन सुदि ३	जै० ले० सं० भाग ३	लेखांक २३०५
वि० सं० १५०२	पौष वदि १० बुधवार	बी० जै० ले० सं०	लेखांक ८६१
वि० सं० १५०३	ज्येष्ठ सुदि ७ सोमवार	प्रा० ले० सं०	लेखांक १९६
वि० सं० १५०६	माघ सुदि १३ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं०	लेखांक ११३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५०९	वैशाख सुदि ३ शनिवार	बी० जै० ले० सं० लेखांक १४३५
वि० सं० १५०९	पौष वदि ५ रविवार	जै० धा० प्र० ले० सं० लेखांक १४३५
वि० सं० १५१०	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	प्र० ले० सं०, लेखांक ४६० एवं रा० प्र० ले० सं० लेखांक १६७
वि० सं० १५१०	माघ सुदि १० बुधवार	श्री०प्र० ले० सं० लेखांक २२१
वि० सं० १५१२	माघ सुदि ५ सोमवार	श०गि०द०, लेखांक ४२२
वि० सं० १५१३	पौष वदि २ बुधवार	जै० धा० प्र० ले० सं०, भाग १ लेखांक १२३२
वि० सं० १५१३	पौष वदि ३ गुरुवार	वही, भाग २ लेखांक ७९०
वि० सं० १५१५	ज्येष्ठ सुदि ९	श्री० प्र० ले० सं० लेखांक २
वि० सं० १५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक २९९
वि० सं० १५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	जै० धा० प्र० ले० सं० भाग २ लेखांक ९४९
वि० सं० १५१६	वैशाख वदि १२ शुक्रवार एवं	जै. ले. सं. भाग १ लेखांक ५५४
		प्र० ले० सं० लेखांक ५५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५१७	माघ सुदि ५ गुरुवार	श०गि०द०, लेखांक ४८५
वि० सं० १५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक २२१
वि० सं० १५१९	मार्गशिर सुदि ४ गुरुवार	श्री० प्र० ले० सं०, लेखांक ८
वि० सं० १५२२	ज्येष्ठ वदि ८ सोमवार	जै० ले० सं०, लेखांक २३४६ भाग ३
वि सं. १५२७	ज्येष्ठ वदि ७ सोमवार	जै० स० प्र० पृष्ठ ३०३ वर्ष ८, अंक १० लेखांक १६

साधुरत्नसूरि के शिष्य (?) श्रीसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित एक प्रतिमा प्राप्त हुई है जिस पर वि०सं० १४८६ ज्येष्ठ सुदि ६ रविवार का लेख उत्कीर्ण है।

साधुरत्नसूरि के पट्टधर साधुसुन्दरसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित प्रतिमायें मिली हैं जो वि०सं० १५०७ से वि०सं० १५३३ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५०७	वैशाख वदि ११ बुधवार	जै० धा० प्र० लेखांक १००४ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५१५	फाल्गुन सुदि ४	श्री०प्र० ले० सं० लेखांक २६२
वि० सं० १५१५	फाल्गुन सुरि ८ शनिवार	अ० प्र० जै० लेखांक १७१ ले० सं०
वि० सं० १५१५	,,	जै० धा० प्र० ले० लेखांक १५०
वि० सं० १५१५	,,	जै० स० प्र०, वर्ष ५, अंक ४ "धातु

		प्रतिमाना लेखो" संपा० मुनि कांतिसागर लेखांक २५
वि० सं० १५१७	ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रवार	जै० धा० प्र० लेखांक ८८५ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५१७	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक २१०
वि० सं० १५१७	,,	जै० धा० प्र० लेखांक ९८३ ले० सं०, भाग २
वि० सं० १५१७	,,	वही, भाग २, लेखांक ११३०
वि० सं० १५१७	,,	वही, भाग १, लेखांक ३४५
वि० सं० १५१७	फाल्गुन सुदि शनिवार	वही, भाग २, लेखांक १०२६
वि०सं० १५१८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	श० वै० लेखांक १५९ एवं ३५९
वि० सं० १५१८	,,	जै० धा० प्र० ले०, लेखांक १६७
वि० सं० १५१८	,,	जै० धा० प्र० लेखांक ८७४ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	वही, भाग १, लेखांक ८८३
वि० सं० १५१९	,,	प्रा० ले० सं०, लेखांक ३३७
वि० सं० १५१९	माघ सुदि ४ रविवार	वही, लेखांक ३३१
वि० सं० १५२१	ज्येष्ठ सुरि ५ शुक्रवार	जै० धा० प्र० लेखांक ६१८ ले० सं०, भाग २,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५२१	फाल्गुन सुरि ५ गुरुवार	अ० प्रा० जै० लेखांक ५०९ ले० सं०
वि० सं० १५२२	पौष वदि १ गुरुवार	रा० प्र० ले० सं०, लेखांक २४१
वि० सं० १५२३	वैशाख सुदि ४ बुधवार एवं	प्र० ले०सं०, लेखांक ६२७
		जै० ले० सं० लेखांक ११५६ भाग २,
वि० सं० १५२३	वैशाख सुदि ९ सोमवार	जै० स० प्र०, वर्ष ५ अंक ४ "धातु प्रतिमाना लेखो" संपा० मुनि कांतिसागर, लेखांक ३२
वि० सं० १५२३	,,	जै० धा० प्र० ले०, लेखांक१८७
वि० सं० १५२३	माघ सुदि १ बुधवार	वही, लेखांक १८८
वि० सं० १५२५	वैशाख वदि १ गुरुवार	प्र० ले० सं०, लेखांक ६५६
वि० सं० १५२५	,,	जै० धा० प्र० लेखांक २२६ ले० सं०, भाग २,
वि० सं० १५२५	पौष वदि ५ सोमवार	जै० धा० प्र० लेखांक २७ ले० सं० भाग १,
वि० सं० १५२६	आषाढ़ सुदि ८ शुक्रवार	वही, भाग १, लेखांक ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५२७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार एवं	प्र० ले० सं०, लेखांक ६८३
		जै० ले० सं०, लेखांक ७६८ भाग १
वि० सं० १५२७	,,	प्रा० ले० सं०, लेखांक ४१०
वि० सं० १५२७	वैशाख वदि १०	जै० धा० प्र० लेखांक ८०७ ले० सं०, भाग १
वि० सं० १५२७	वैशाख वदि ११ बुधवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ४१२
वि० सं० १५२९	माघ सुदि ६ सोमवार एवं	प्र० ले० सं०, लेखांक ७१७
		जै० ले० सं० लेखांक १२८१ भाग २
वि० सं० १५३०	पौष वदि २ बुधवार	प्रा० ले० सं०, लेखांक ४२७
वि० सं० १५३१	कार्तिक सुदि १२ शनिवार	जै० धा० प्र० लेखांक ४७ ले० सं० भाग १
वि० सं० १५३२	चैत्र वदि २ गुरुवार एवं	प्र० ले० सं०, लेखांक ७४०
		जै० ले० सं० लेखांक ५६१ भाग १,
वि० सं० १५३२	कार्तिक वदि १ सोमवार	जै० धा० प्र० लेखांक १०३९ ले० सं०, भाग २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५३३	वैशाख सुदि ४ बुधवार	प्रा० ले० सं०	लेखांक ४५२

साधुसुन्दरसूरि के पट्टधर देवसुन्दरसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ३ प्रतिमायें मिली हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५४५	फाल्गुन वदि २ मंगलवार	श्री प्रतिमा ले० सं०,	लेखांक २१७
वि० सं० १५४७	माघ सुदि १० गुरुवार	प्रा० ले० सं०,	लेखांक ४९५
वि० सं० १५४८	कार्तिक सुदि १२ शुक्रवार	रा० प्र० ले० सं०,	लेखांक ३१०

उक्त प्रतिमालेखीय साक्ष्यों के आधार पर पूर्णिमागच्छीय गुरु-परम्परा की एक संक्षिप्त तालिका इस प्रकार बनायी जा सकती है :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका ३

?

|

मुनिशेखरसूरि

|

साधुरत्नसूरि [वि०सं० १४८५ - १५१९]
२३ प्रतिमालेख

|

- श्रीसूरि
  [वि०सं० १४८६]
  १ प्रतिमालेख
- साधुसुन्दरसूरि
  [वि०सं० १५०६ - १५३३]
  ३७ प्रतिमालेख
  - देवसुन्दरसूरि
    [वि०सं० १५४५-१५४८]
    ३ प्रतिमालेख

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर पूर्णिमागच्छ के कुछ अन्य मुनिजनों के भी पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होते हैं, परन्तु उनके आधार पर इस गच्छ की गुरु-परम्परा की किसी तालिका को समायोजित कर पाना कठिन है। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

१. जयप्रभसूरि [वि० सं० १४६५]

२. जयप्रभसूरि के पट्टधर जयभद्रसूरि [वि० सं० १४८९-१५१९]

३. विद्याशेखरसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि [वि० सं० १५०४ - १५२४]

४. जिनभद्रसूरि [वि० सं० १४७३ - १४८१]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. जिनभद्रसूरि के पट्टधर धर्मशेखरसूरि [वि० सं० १५०३ - १५२०]
६. धर्मशेखरसूरि के पट्टधर विशालराजसूरि [वि० सं० १५२५ - १५३०]
७. वीरप्रभसूरि [वि० सं० १४६४ - १५०६]
८. वीरप्रभसूरि के पट्टधर कमलप्रभसूरि [वि० सं० १५१० - १५३३]

अभिलेखीय साक्ष्यों से पूर्णिमागच्छ के अन्य बहुत से मुनिजनों के नाम भी ज्ञात होते हैं, परन्तु वहां उनकी गुरु-परम्परा का नामोल्लेख न होने से उनके परस्पर सम्बन्धों का पता नही चल पाता। साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर संकलित गुरु-शिष्य परम्परा [तालिका संख्या १] के साथ भी इन मुनिजनों का पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता, फिर भी इनसे इतना तो स्पष्ट रूप से सुनिश्चित हो जाता है कि इस गच्छ के मुनिजनों का श्वेताम्बर जैन समाज के एक बड़े वर्ग पर लगभग ४०० वर्षों के लम्बे समय तक व्यापक प्रभाव रहा।

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित गुरु-शिष्य परम्परा की तालिका संख्या ३ का साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर संकलित गुरु-शिष्य परम्परा की तालिका संख्या १ के साथ परस्पर समायोजन संभव नहीं हो सका, किन्तु तालिका संख्या १ और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर संकलित तालिका संख्या २ के परस्पर समायोजन से पूर्णिमागच्छीय मुनिजनों की जो विस्तृत तालिका बनती है, वह इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका ४

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित पूर्णिमागच्छीय गुरु-शिष्य परम्परा

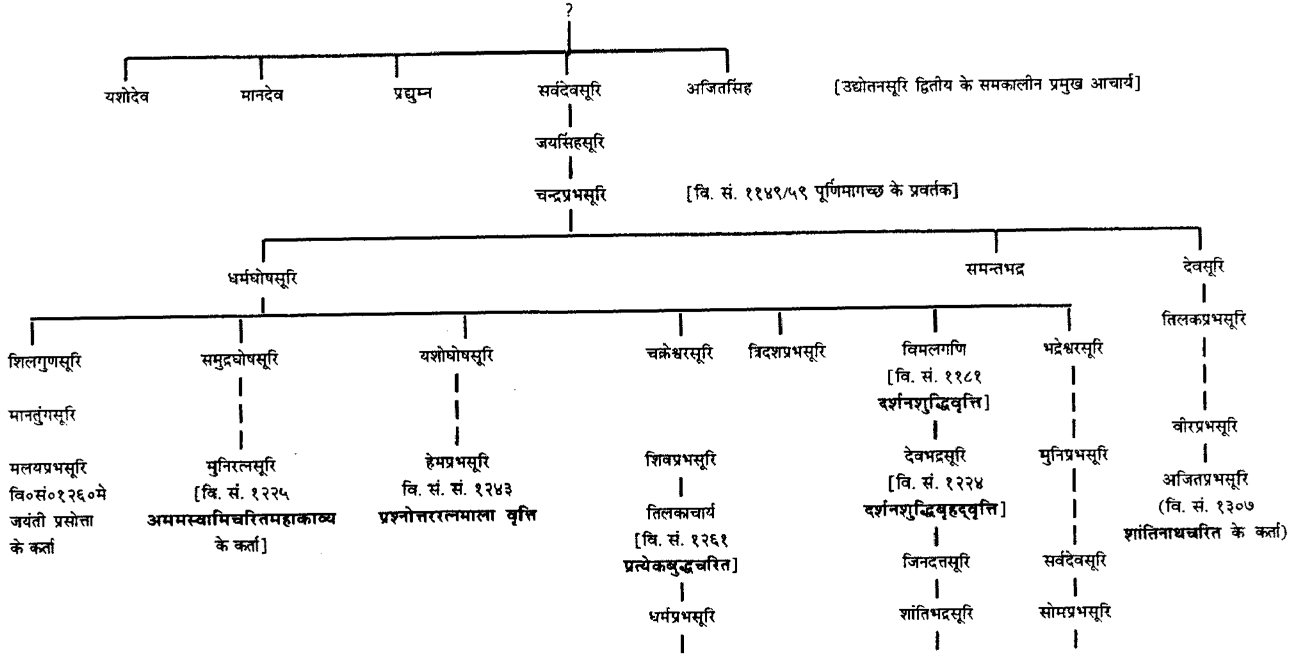

अभयप्रभसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
कमलप्रभसूरि
[वि. सं. १३६२
में पुण्डरीकचरित
के रचनाकार]

भुवनतिलकसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
हेमतिलकसूरि
|
हेमरत्नसूरि
|
हेमप्रभसूरि
|
रत्नशेखरसूरि
|
रत्नसागरसूरि
|
गुणसागरसूरि
[वि. सं. १४८३-१५११
प्रतिमालेख]
|
गुणसमुद्रसूरि
|
- सुमतिप्रभसूरि [वि. सं. १५१२-१५३६ - प्रतिमालेख]
  |
  उदयसमुद्रसूरि
  [वि. सं. १५८० **पूर्णिमागच्छगुर्वावली** के रचनाकार]
- गुणधीरसूरि
  [वि. सं. १५१६-१५३६]
  |
  पुण्यरत्नसूरि
  |
  सुमतिरत्नसूरि
  |
- सत्यराजगणि

रत्नप्रभसूरि
|
चन्द्रसिंहसूरि
|
देवसिंहसूरि
|
पद्मतिलकसूरि
|
श्रीतिलकसूरि
|
देवचन्द्रसूरि
|
पद्मप्रभसूरि
|
देवानन्दसूरि
[वि. सं. १४५५ में **क्षेत्रसमासवृत्ति**
के कर्ता]
|
अभयचन्द्रसूरि
|
रामचन्द्रसूरि
[वि. सं. १४९०
विक्रमचरित
के रचनाकार]

संदर्भसूची :

१. तस्मिन्नुग्रविशालशीलकलितस्वाध्यायध्यानोद्यतो-

त्सर्पच्चारुतपः सुसंयमयुतश्रेयः सुधाः... लयः ।

सच्छीलांगदलः कलंकविकलो ज्ञानादिगंधोद्धुरः

सेव्यो देवनृपद्विरेफसुततेः श्रीचन्द्रगच्छोऽबुजः ॥ ४ ॥

तस्मिंस्तीर्थविभूषकेऽभवदथ श्रीसर्वदेवप्रभः

सूरि सीलनिधिर्धिया जितमरुत्सूरिः सतामग्रणीः ।

तस्याऽप्यद्भुतचारुचंचदमलोत्सर्पद्गुणैकास्पदं

स्याच्छिष्यो जयसिंहसूरिरमलस्तस्यापि भूभूषणम् ॥ ५ ॥

हेलानिर्जितवादिवृंदकलिकालाशेषलुप्तव्रता-

चारोत्सर्पितसत्पथैककदिनः सिंहः कुमार्गद्विपे ।

चंचच्चंचलचित्तवृत्तिकरणग्रामाश्वघातो वभू

श्रीचंद्रप्रभसूरिचारुचरितश्चारित्राणामग्रणीः ॥ ६ ॥

ज्ञानादित्रयरत्नरोहणगिरिः सच्छीलपाथोनिधि-

र्द्धीरो धीधनसाधुसंहतिपतिः श्रीधर्मधूर्धारकः ।

स्यात् सिद्धांतहिरण्यघर्षणकृते पट्टः पटुः शुद्धधीः

शिष्यो गच्छपतिः प्रतापतरणिः श्रीधर्मघोषप्रभुः ॥ ७ ॥

तच्छिष्यविमलगणिना कृतिना भ्रात्राऽनुजेन शास्त्रस्य ।

अस्योच्चैर्वृत्तिरियं विहिता साहाय्यतः सुधिया ॥ ८ ॥

दर्शनशुद्धिवृत्ति की प्रशस्ति

Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm - Leaf Mss in the Shanti Natha Jain Bhandar, Cambay* [G.O.S. No. 135 and 149] Baroda 1961 - 66 A.D., pp. 269-270.

२. C.D. Dalal - *A Descriptive Catalogue of Mss in the Jaina Bhandars at Pattan* [G.O.S. No. LXXVI] Baroda - 1937. A.D., pp. 5-7.

३. Muni Punyavijaya - *New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss : Jesalmer Collection,* [L.D. Series No. 36] Ahmedabad 1972 A.D. p. 79.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm - Leaf Mss in the Shanti Natha Jain Bhandar, Cambay*, pp. 349-356.

४अ. मोहनलाल दलीचन्द देसाई - **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, मुंबई १९३३ ई०, कंडिका ४९४.

५. वही, कंडिका ४९५.

६. वही, पृष्ठ ४१०.

७. वही, पृष्ठ ४३२.

८. वही, पृष्ठ ४४४.

९. Muni Punyavijaya - *New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss : Jesalmer Collection*, P. 236.

देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ ३७९

गुलाबचंद्र चौधरी - **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ६

(पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २०) वाराणसी १९७३ ई०, पृष्ठ ५१५.

१०. मुनिजिनविजय - संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह.**

सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३ बम्बई १९६१ ई० पृष्ठ २३२ - २३४.

मुनि कल्याणविजय - संपा० **पट्टावलीपरागसंग्रह,**

श्री कल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालौर १९६६ ई० पृष्ठ २१९.

संकेत सूची

जै० ले० सं० - **जैनलेखसंग्रह**, भाग १-३, संपा० पूरनचन्द नाहर, कलकत्ता १९१८, १९२७, १९२९ ई०

प्रा०जै० ले० सं०- **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, संपा० मुनि जिनविजय, जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर १९२१ ई०

प्रा० ले० सं० - **प्राचीनलेखसंग्रह**, संपा० विजयधर्मसूरि, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला भावनगर १९२९ ई०

जै० धा० प्र० ले० सं० - **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १-२, संपा० बुद्धिसागरसूरि, श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडल, पादरा १९२४ ई०

अ०प्रा०जै० ले० सं० - **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह (आबू)** - भाग २, संपा० मुनि जयन्तविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, उज्जैन वि० सं० १९९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ० प्र० जै० ले० सं० - **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, आबू** - भाग ५, संपा० मुनि जयन्तविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि० सं० २००५

जै० धा० प्र० ले०- **जैनधातुप्रतिमालेख**, संपा० मुनि कांतिसागर, प्रकाशक- श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, सूरत १९५० ई०

प्र० ले० सं० - **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, संपा० महोपाध्याय विनयसागर, सुमतिसदन, कोटा-राजस्थान १९५३ ई०

बी० जै० ले० सं०- **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, संपा० अगरचन्द नाहटा व भंवरलाल नाहटा, नाहटा ब्रदर्स, ४ जगमोहन मलिक लेन, कलकत्ता १९५५ ई०

श्री प्र० ले० सं०- **श्रीप्रतिमालेखसंग्रह**, संपा० दौलतसिंह लोढ़ा, प्रका०- यतीन्द्र साहित्य सदन, धामणिया, मेवाड १९५१ ई०

जै० स० प्र० - **जैन सत्य प्रकाश**

श०गि०द० - **शत्रुंजयगिरिराजदर्शन**, संपा० मुनि कंचनसागर, प्रका० - आगमोद्धारक ग्रन्थमाला, कपडवज १९८२ ई०

श०वै० - **शत्रुंजयवैभव**, संपा० मुनि कांतिसागर, कुशलसंस्थान, पुष्प ४, जयपुर १९९० ई

रा० प्र० ले० सं०- **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह**, संपा० मुनि विशालविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९६० ई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमागच्छ - प्रधानशाखा अपरनाम ढंढेरियाशाखा का संक्षिप्त इतिहास

चन्द्रकुल के आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य आचार्य चन्द्रप्रभसूरि द्वारा वि०सं० ११४९/ई० सन् १०९३ अथवा वि० सं० ११५९ /ई० सन् ११०३ में प्रवर्तित पूर्णिमागच्छ की कई अवान्तर शाखायें समय-समय पर अस्तित्व में आयीं, यथा प्रधानशाखा या ढंढेरियाशाखा, कच्छोलीवालशाखा, भीमपल्लीयाशाखा, सार्धपूर्णिमाशाखा, भृगुकच्छीयाशाखा, वटप्रदीयाशाखा आदि। इन शाखाओं में प्रधानशाखा या ढंढेरियाशाखा सबसे प्राचीन मानी जाती है। आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के प्रशिष्य समुद्रघोषसूरि के द्वितीय शिष्य सुरप्रभसूरि इस शाखा के प्रथम आचार्य माने गये हैं। इस शाखा में आचार्य जयसिंहसूरि, जयप्रभसूरि, भुवनप्रभसूरि, यशस्तिलकसूरि, कमलप्रभसूरि, पुण्यप्रभसूरि, महिमाप्रभसूरि, ललितप्रभसूरि आदि कई प्रखर विद्वान् आचार्य हो चुके हैं।

पूर्णिमागच्छ की प्रधानशाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये इस शाखा के मुनिजनों द्वारा रची गयी कृतियों की प्रशस्तियां तथा बड़ी संख्या में दूसरों से लिखवायी गयी अथवा स्वयं उनके द्वारा की गयी प्रतिलिपियों की प्रशस्तियां, पट्टावली, प्रतिमालेख आदि उपलब्ध हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए यहां सर्वप्रथम ग्रन्थ एवं पुस्तक प्रशस्तियों तत्पश्चात् पट्टावली और अन्त में अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमागच्छ की इस शाखा से सम्बद्ध लगभग ५७ ग्रन्थप्रशस्तियां और पुस्तकप्रशस्तियां या प्रतिलेखनप्रशस्तियां मिलती हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि- कार	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५२०	चैत्र सुदि ५ सोमवार	किरातार्जुनीय- अवचूरि	मूल प्रशस्ति	जयप्रभसूरि	जयप्रभसूरि	*Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss : Muniraja Shree Punyavijayaji's Collection*, Ed. A.P. Shah, Ahmedabad - 1963-68 A. D.
२.	१५२०	माघ सुदि ५ गुरुवार	क्रियाकलाप	प्रतिलेखन प्रशस्ति	जयप्रभसूरि एवं उनके शिष्य पूर्णकलश	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ६०३३, पृ० ३८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
३.	१५२१	मार्गशीर्ष वदि ४ रविवार	नन्दीसूत्र	,,	जयसिंहसूरि के शिष्य जयप्रभसूरि	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ७२६, पृ० ६३
४.	१५२३	कार्तिक सुदि २ शुक्रवार	प्रश्नोत्तर-रत्नमाला	,,	जयप्रभसूरि	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ३३९६, पृ० १९३
५.	१५२७	चैत्र सुदि ७ गुरुवार	शब्दपदार्थी-सूत्रवृत्ति	,,	जयप्रभसूरि एवं उनके शिष्य यशस्तिलकमुनि	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक १५२ पृ० १३
६.	१५२९	फाल्गुन सुदि १ शुक्रवार	न्यायप्रवेशवृत्ति	,,	,,	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक १९० पृ० १६

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१५५१	आश्विन शुक्ल १ बुधवार	कर्पूरप्रकरण	प्रतिलेखन प्रशस्ति	जयप्रभसूरि एवं उनके शिष्य जयमेरु	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ३८०५, पृष्ठ २२०
८.	१५५३	चैत्र सुद ८ रविवार	पाक्षिकसूत्र- अवचूरि	,,	भुवनप्रभसूरि एवं उनके शिष्य कमलसंयम तथा वीरकलश	–	वही, क्रमांक ९५० पृ० ७८
९.	१५५५	आश्विन सुद १३	स्नात्रपंचाशिका	,,	भुवनप्रभसूरि एवं शिष्य वीरकलश	वीरकलश	वही, क्रमांक २२७८ पृष्ठ ११०
१०.	१५५५	भाद्रपद सुदि ९	चतुःशरण- अवचूरि	,,	जयप्रभसूरि	जयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ४६४, पृ० ४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
११.	१५५५	मार्गशीर्ष वदि ४ रविवार	पाक्षिकसूत्र-अवचूरि	,,	भुवनप्रभसूरि एवं उनके शिष्य मुनि रत्नमेरु	मुनिरत्नमेरु	वही, क्रमांक ९५१, पृ० ७८
१२.	१५६५	भाद्रपद वदि ४ रविवार	प्रज्ञापनासूत्र	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	भुवनप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक २६६, पृ० ३५
१३.	१५६६	श्रावण प्रतिपदा	भगवतीसूत्र-वृत्ति	,,	भुवनप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक ३८८, पृ० ३५
१४.	१५६६	कार्तिक वदि ४	प्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	प्रतिलेखन प्रशस्ति	भुवनप्रभसूरि एवं उनके शिष्य कमलप्रभसूरि	मुनि राजसुन्दर	वही, क्रमांक ८००, पृ० ६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि- कार	संदर्भ ग्रन्थ
१५.	१५७८	ज्येष्ठ वदि ९	वत्सकुमारकथा	प्रतिलेखन प्रशस्ति	भुवनप्रभसूरि एवं उनके शिष्य कमलप्रभसूरि एवं उनके शिष्य राजमाणिक्य	राजमाणिक्य	वही, क्रमांक ४८७७, पृ० ३०७
१६.	१५७४	चैत्र सुदि १३ बुधवार	आदिनाथ- महाकाव्य	,,	जयप्रभसूरि के शिष्य भुवनप्रभसूरि एवं उनके शिष्य मुनिरत्नमेरु	मुनि रत्नमेरु	वही, क्रमांक ४७४८, पृ० २७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१५७५	ज्येष्ठ वदि ४ गुरुवार	कृतकर्मनृप-चरित्र	,,	कमलप्रभसूरि एवं उनके शिष्य राजमाणिक्य	राजमाणिक्य	वही, क्रमांक ३८९१, पृ० २२४
१८.	१५८८	तिथि विहीन	प्रमाणमंजरी	,,	जयसिंहसूरि एवं उनके शिष्य यशस्तिलकसूरि	यशस्तिलक-सूरि	वही, क्रमांक १४४, पृ० १२
१९.	१५९०	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	दशवैकालिक-वृत्ति	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	कमलप्रभसूरि एवं उनके पट्टधर पुण्यप्रभसूरि	–	वही, क्रमांक १०३५, पृ० ८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१५९६	पौष वदि ५	दशवैकालिक-अवचूरि	,,	पुण्यप्रभसूरि एवं उनके शिष्य भीमा	भीमा	वही, क्रमांक १०८४ पृ० ८७
२१.	१५९९	तिथि विहीन	संगीतोपनिषत्-सारोद्धार	,,	,,	,,	वही, क्रमांक ६३६५, पृ० ४१७-४१८
२२.	१५९९	कार्तिक सुदि ६ शनिवार	औपपातिकसूत्र	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	कमलप्रभसूरि एवं उनके पट्टधर पुण्यप्रभसूरि	–	वही, क्रमांक ३५१ पृ० ३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
२३.	१६०५	भाद्रपद वदि ५ शुक्रवार	आचारांग-दीपिका	,,	भुवनप्रभसूरि एवं उनके पट्टधर कमलप्रभसूरि एवं उनके पट्टधर पुण्यप्रभसूरि		वही, क्रमांक २०६, पृ० १८
२४.	१६०८	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	यतिदिनचर्या	,,	कमलप्रभसूरि एवं उनके पट्टधर पुण्यप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक २८००, पृ० १४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि- कार	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१६०९	चैत्र सुदि ५	प्रज्ञापनावृत्ति	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	भुवनप्रभसूरि के पट्टधर कमलप्रभसूरि के पट्टधर पुण्यप्रभसूरि	–	वही, क्रमांक ३९६, पृ० ३६
२६.	१६११	पौष सुदि ९ मंगलवार	जिनस्तवन- अवचूरि	प्रतिलेखन प्रशस्ति	पुण्यप्रभसूरि	–	वही, क्रमांक ११९३, पृ० ९०
२७.	१६२४	चैत्र सुदि ५ शनिवार	त्रिष्टिशलाका- पुरुषचरित एवं परिशिष्टपर्व	,,	भुवनप्रभसूरि के शिष्य पुण्यप्रभसूरि के	–	वही, क्रमांक ३७८३, पृ० २१६-२१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/मुनि का नाम	प्रतिलिपिकार	संदर्भ ग्रन्थ
					पट्टधर विद्याप्रभसूरि		
२८.	१६५०	कार्तिक सुदि ५	तत्त्वचिन्तामणि	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	विद्याप्रभसूरि के शिष्य ललितप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक १५, पृ० १०
२९.	१६५४	आषाढ़ सुदि १३ शुक्रवार	पंचवस्तुकवृत्ति	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	ललितप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक २३६२, पृ० १२२
३०.	१६७५	आषाढ़ सुदि १३ गुरुवार	कल्पसूत्रान्तर्वाच्य	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	,,	-	वही, क्रमांक ६११, पृ० ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
३१.	१६७७	आश्विन वदि ३ बुधवार	कल्पान्तरवाच्य टिप्पनक	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	ललितप्रभसूरि	वाचक गुणजी	वही, क्रमांक ७००, पृ० ६१
३२.	१६९८	... वदि १०	भगवतीबीजक	प्रतिलेखन प्रशस्ति	ललितप्रभसूरि के पट्टधर विनयसूरि के पट्टधर मुनिहेमराज	मुनिहेमराज	वही, क्रमांक २८०, पृ० २७
३३.	१७०१	आश्विन १० मंगलवार	शब्दशोभा	,,	विनयप्रभसूरि		वही, क्रमांक ५९५१, पृ० ३७४-७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
३४.	१७१४	ज्येष्ठ वदि १३ शुक्रवार	उत्तराध्ययनसूत्र की संस्कृत छाया	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	विनयप्रभसूरि के शिष्य मुनिकीर्तिरत्न	विनयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ९९८, पृ० ८१
३५.	१७२२	आश्विन वदि ३ मंगलवार	औपपातिक-स्तवन	,,	विनयप्रभसूरि	विनयप्रभसूरि	वही, क्रमांक ३६०, पृ० ३३
३६.	१७३७	चैत्र १४ मंगलवार	न्यायसिद्धान्त-मंजरी लघु-चिन्तामणि	प्रतिलेखन प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि	महिमाप्रभसूरि	वही, क्रमांक १०८, पृ० १०-११
३७.	१७५०	तिथि विहीन	वरडाक्षेत्रपाल-स्तोत्र अवचूरि	मूलप्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि पट्टधर भावप्रभसूरि	-	वही, क्रमांक ४३४३, पृ० २६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
३८.	१७६१	आश्विन वदि २ मंगलवार	तत्त्वार्थसूत्र-बालावबोध	प्रतिलेखन प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि के शिष्य मुनि सहजरत्न	मुनि सहजरत्न	वही, क्रमांक ३४७३, पृ० २००
३९.	१७६२	माघ सुदि १३ मंगलवार	ज्ञानसार अष्टक बालावबोध	,,	महिमाप्रभसूरि के शिष्य भावरत्नसूरि	भावरत्नसूरि	वही, क्रमांक २४८८, पृ० १२५-२६
४०.	१७६२	श्रावण सुदि ११	वीतराग-कल्पलता	,,	पुण्यप्रभसूरि के शिष्य विद्याप्रभसूरि के शिष्य ललितप्रभसूरि के शिष्य		वही, क्रमांक २५३३, पृ० १२९-१३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि- कार	संदर्भ ग्रन्थ
					विनयप्रभसूरि के शिष्य महिमाप्रभसूरि		
४१.	१७६४		संग्रहणीप्रकरण	,,	महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावरत्नसूरि	भावरत्नसूरि	वही, क्रमांक ३०७७, पृ० १६९
४२.	१७६७	तिथि विहीन	शब्दरत्नाकार	,,	विनयप्रभसूरि के पट्टधर भावरत्नसूरि	भावरत्नसूरि	वही, क्रमांक ६२१४, पृ० १६९
४३.	१७६७	मार्गशीर्ष वदि ९	अंचलमत- दलन- बालावबोध	,,	महिमाप्रभसूरि के शिष्य मुनिलाल	मुनिलाल	वही, क्रमांक ३२४७, पृ० १७८-१७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
४४.	१७७२	कार्तिक सुदि ५ मंगलवार	सिद्धान्तकौमुदी	प्रतिलेखन प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि के शिष्य भावप्रभसूरि		वही, क्रमांक ५८१२, पृ० ३६९
४५.	१७८१	मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी	श्रीपालचरित्र	प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि के शिष्य भावप्रभसूरि	भावप्रभसूरि	वही, क्रमांक ४२०६, पृ० २३९
४६.	१७८१		अष्टाहिका-धुराख्यान (गद्य)	मूलप्रशस्ति	विनयप्रभसूरि के पट्टधर महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि	,,	वही, क्रमांक २३३३, पृ० ११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
४७.	१७८२	ज्येष्ठ शुक्ल ५	फाल्गुन-चातुर्मासी-व्याख्यान	,,	विद्याप्रभसूरि के पट्टधर ललितप्रभसूरि के पट्टधर विनयप्रभसूरि के पट्टधर महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि	,,	वही, क्रमांक २३२६, पृ० ११२
४८.	१७९०	माघ वदि १३ बुधवार	द्वादशव्रतोच्चार विधि	प्रतिलेखन प्रशस्ति	भावप्रभसूरि	,,	वही, क्रमांक २४२४, पृ० १२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/ मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/ प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/ मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
४९.	१७९०	माघ सुदि ...?	नैषधमहाकाव्य	प्रतिलेखन प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि	भावप्रभसूरि	वही, क्रमांक ४७७९, पृ० २७८-७९
५०.	१७९१	भाद्रपद वदि ८ सोमवार	जिनधर्मवर-स्तव	मूलप्रशस्ति	भावप्रभसूरि एवं उनके गुरुभ्राता मुनिलाल	मुनिलाल	वही, क्रमांक १५११, पृ० ९६
५१.	१७९२	पौष वदि २ शनिवार	कल्पसूत्र-अन्तरवाच्य	,,	भावप्रभसूरि एवं उनके शिष्य भावरत्न	भावप्रभसूरि	वही, क्रमांक ६६२, पृ० ५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	ग्रन्थ का नाम	मूल प्रशस्ति/प्रतिलेखन प्रशस्ति	प्रशस्तिगत आचार्य/मुनि का नाम	प्रतिलिपि-कार	संदर्भ ग्रन्थ
५२.	१७९३	माघ सुदि ७ गुरुवार	प्रतिमाशतक-लघुवृत्ति	मूलप्रशस्ति	भावप्रभसूरि		पूर्वोक्त, क्रमांक ३२६३, पृ० १८०-१८१
५३.	१७९५	तिथि विहीन	धातुपाठ विवरण	प्रतिलेखन प्रशस्ति	भावप्रभसूरि के पट्टधर भावरत्नसूरि	भावरत्नसूरि	वही, क्रमांक ६००९, पृ० ३८७
५४.	१७९५	भाद्रपद वदि १३ गुरुवार	महावीरस्तोत्र वृत्ति	मूल प्रशस्ति	भावप्रभसूरि		वही, क्रमांक १७५९, पृ० १००
५५.	१७९८	तिथि विहीन	मुद्रितकुमुदचन्द्र	प्रतिलेखन प्रशस्ति	महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि	भावप्रभसूरि	वही, क्रमांक ५१९६, पृ० ३३७-३३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रशस्तियों की उक्त तालिका में उल्लिखित मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्धों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

१. जयसिंहसूरि के पट्टधर जयप्रभसूरि
२. जयप्रभसूरि के पट्टधर यशस्तिलकसूरि, भुवनप्रभसूरि और जयमेरुसूरि
३. भुवनप्रभसूरि के पट्टधर कमलप्रभसूरि, मुनि राजसुन्दरसूरि, मुनिरत्नमेरुसूरि, कमलसंयमसूरि और वीरकलशसूरि
४. कमलप्रभसूरि के पट्टधर राजमाणिक्य और पुण्यप्रभसूरि
५. पुण्यप्रभसूरि के पट्टधर विद्याप्रभसूरि
६. विद्याप्रभसूरि के पट्टधर ललितप्रभसूरि
७. ललितप्रभसूरि के पट्टधर विनयप्रभसूरि
८. विनयप्रभसूरि के पट्टधर कीर्तिरत्नसूरि, मुनि हेमराजसूरि और महिमाप्रभसूरि
९. महिमाप्रभसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि, भावरत्नसूरि और मुनिलाल
१०. भावप्रभसूरि के पट्टधर भावरत्नसूरि और ज्योतिरत्नसूरि

उक्त विवरण के आधार पर इन मुनिजनों के गुरु-शिष्य परम्परा की एक तालिका अथवा विद्यावंशवृक्ष तैयार होता है, जो इस प्रकार है -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रशस्तियों के आधार पर निर्मित पूर्णिमागच्छ (प्रधानशाखा) के मुनिजनों का वंशवृक्ष

?
|
जयसिंहसूरि
|
जयप्रभसूरि [वि० सं० १५२० – १५५१] प्रशस्ति

- यशस्तिलकसूरि [वि० सं० १५२७ – १५२९] प्रशस्ति
- भुवनप्रभसूरि [वि०सं० १५६५–१५६६] प्रशस्ति
  - कमलप्रभसूरि
    - राजमाणिक्यसूरि [वि०सं० १५७४ में **वैरकुमारकथा** के प्रतिलिपिकर्ता
    - पुण्यप्रभसूरि [वि०सं० १५९० – १६११] दाताप्रशस्ति
      - विद्याप्रभसूरि [वि० सं० १६२४] प्रतिलेखनप्रशस्ति
        - |
  - मुनिराजसुन्दरसूरि [वि०सं० १५६६] प्रशस्ति
  - मुनिरत्नमेरुसूरि [वि० सं० १५७४ में **आदिनाथ-महाकाव्य** के प्रतिलिपिकार]
  - कमलसंयमसूरि [वि० सं० १५५३ में इनके सानिध्य में **पाक्षिकसूत्रअवचूरि** की प्रतिलिपि की गयी]
  - मुनिवीरकलश [वि० सं० १५५५ में **स्नात्रपंचाशिका** के प्रतिलिपिकार]
- जयमेरुसूरि [वि० सं० १५५१] प्रशस्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ललितप्रभसूरि [वि० सं० १६५० - १६७७] दाताप्रशस्ति

विनयप्रभसूरि [वि० सं० १७१४ - १७२२] प्रतिलेखनप्रशस्ति

- कीर्तिरत्नसूरि [वि० सं० १७१४ में प्रतिलिपित **उत्तराध्ययनसूत्र** की दाताप्रशस्ति में उल्लिखित]
- मुनिहेमराजसूरि [वि० सं. १६९८] प्रतिलेखनप्रशस्ति
- महिमाप्रभसूरि [वि० सं० १७३६] प्रतिलेखनप्रशस्ति
  - सहजरत्नसूरि [वि० सं० १७६१] प्रतिलिपि प्रशस्ति
  - भावप्रभसूरि [वि० सं० १७८१-१७९३]
    - ज्योतिरत्नसूरि
  - भावरत्नसूरि [वि० सं० १७६२-१७९२]
  - मुनिलाल [वि० सं० १७६७-१७९१]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने पूर्णिमागच्छ और उसकी कुछ शाखाओं की पट्टावली दी है। इनमें पूर्णिमागच्छ की प्रधानशाखा अपरनाम ढंढेरियाशाखा की भी एक पट्टावली है[१], जिसमें उल्लिखित इस शाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा इस प्रकार है :

चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक]
|
धर्मघोषसूरि
|
समुद्रघोषसूरि
|
सुरप्रभसूरि [पूर्णिमापक्षीय प्रधानशाखा के प्रवर्तक]
|
जिनेश्वरसूरि
|
भद्रप्रभसूरि
|
पुरुषोत्तमसूरि
|
देवतिलकसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
तिलकप्रभसूरि
|
ललितप्रभसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिप्रभसूरि
|
जयसिंहसूरि
|
जयप्रभसूरि
|
भुवनप्रभसूरि
|
कमलप्रभसूरि
|
पुण्यप्रभसूरि
|
विद्याप्रभसूरि
|
ललितप्रभसूरि
|
विनयप्रभसूरि
|
महिमाप्रभसूरि
|
भावप्रभसूरि

पूर्णिमापक्षीय प्रधानशाखा के मुनिजनों की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई है जो वि० सं० १५१२ से वि० सं० १७६८ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

जयसिंहसूरि के पट्टधर जयप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा द्वारा द्वारा प्रतिष्ठापित ९ प्रतिमायें मिली हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५१२	माघ सुदि ५ सोमवार	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, संपा० बुद्धिसागरसूरि लेखांक ९६३
वि० सं० १५१९	कार्तिक वदि ५ शुक्रवार	वही, लेखांक ७४३
वि० सं० १५१९	,,	**प्राचीनलेखसंग्रह**, संग्राहक विजयधर्मसूरि, लेखांक ३२९
वि० सं० १५१९	माघ सुदि ५ सोमवार	**श्रीप्रतिमालेखसंग्रह**, संपा० दौलतसिंह लोढा, लेखांक २६१
वि० सं० १५२१	माघ पूर्णिमा गुरुवार	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५७८
वि० सं० १५२५	वैशाख वदि ११ रविवार	वही, भाग १, लेखांक १४९२
वि० सं० १५२५	माघ वदि ५	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, संपा० विनयसागर, लेखांक ६६७
वि० सं० १५२८	कार्तिक सुदि १२ शुक्रवार	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, संपा० पूरनचन्द नाहर, लेखांक २३४९
वि० सं० १५३१	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	**राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह** संपा० मुनि विशालविजय, लेखांक २७४

जयप्रभसूरि के पट्टधर जयभद्रसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित तीन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५२५	वैशाख सुदि ३ सोमवार	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, संपा० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, लेखांक १३१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५३४	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	वही, लेखांक १४३४
वि० सं० १५३६	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९६

जयप्रभसूरि के द्वितीय पट्टधर भुवनप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें मिलती हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५५१	पौष सुदि १३ शुक्रवार	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२०२
वि० सं० १५७२	वैशाख वदि ४ रविवार	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १०१

कमलप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित एक प्रतिमा प्राप्त हुई है जो संभवनाथ की है। यह प्रतिमा आदिनाथ जिनालय, थराद में है। इसका विवरण निम्नानुसार है :-

वि० सं० १५८२	वैशाख सुदि ३	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २०७

कमलप्रभसूरि के पट्टधर पुण्यप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें मिलती हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १६०८	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२४
वि० सं० १६१०	फाल्गुन वदि २ सोमवार	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३४८

विद्याप्रभसूरि के पट्टधर ललितप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित एक प्रतिमा मिली है, जिस पर वि० सं० १६५४ का लेख उत्कीर्ण है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १६५४	माघ वदि १ रविवार	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१

महिमाप्रभसूरि

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठित वि०सं० १७६८ की एक प्रतिमा मिली है :

वि० सं० १७६८	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३३२

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा पूर्णिमापक्ष की प्रधानशाखा के जिन मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, उनमें जयप्रभसूरि के शिष्य जयभद्रसूरि को छोड़कर शेष सभी नाम **पुस्तकप्रशस्तियों** में भी मिलते हैं साथ ही उनका पूर्वापर सम्बन्ध भी सुनिश्चित किया जा चुका है।

श्री देसाई द्वारा दी गयी पूर्णिमापक्ष-प्रधानशाखा की पट्टावली में सर्वप्रथम पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक चन्द्रप्रभसूरि का उल्लेख है। इसके बाद धर्मघोषसूरि एवं उनके बाद समुद्रघोषसूरि का नाम आता है। उक्त पट्टावली के अनुसार समुद्रघोषसूरि के शिष्य सुरप्रभसूरि से पूर्णिमागच्छ की प्रधानशाखा का आविर्भाव हुआ। वि० सं० १२५२ में पूर्णिमागच्छीय मुनिरत्नसूरि द्वारा रचित **अममस्वामिचरित्रमहाकाव्य**[२] की प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपने गुरुभ्राता सुरप्रभसूरि का उल्लेख किया है। पट्टावली में सुरप्रभसूरि के बाद जिनेश्वरसूरि, भद्रप्रभसूरि, पुरुषोत्तमसूरि, देवतिलकसूरि, रत्नप्रभसूरि, तिलकप्रभसूरि, ललितप्रभसूरि, हरिप्रभसूरि आदि ८ आचार्यों का पट्टानुक्रम से जो उल्लेख है, उनके बारे में अन्यत्र कोई सूचना नहीं मिलती। हरिप्रभसूरि के शिष्य जयसिंहसूरि का अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लेख मिलता है। चूंकि भुवनप्रभसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें वि० सं० १५१२ से वि० सं० १५३१ तक की हैं अतः उनके गुरु जयसिंहसूरि का समय वि० सं० १५०० के आस-पास माना जा सकता है। चूंकि इस शाखा के प्रवर्तक सुरप्रभसूरि के गुरुभ्राता मुनिरत्नसूरि का समय वि० सं० की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरहवीं शती का द्वितीयचरण [वि० सं० १२५२] सुनिश्चित है, अतः यही समय सुरप्रभसूरि का भी माना जा सकता है। सुरप्रभसूरि से जयसिंहसूरि तक २५० वर्षों की अवधि तक १० आचार्यों का नायकत्व काल असंभव नहीं लगता। इस आधार पर सुरप्रभसूरि से जयसिंहसूरि तक की गुरु-परम्परा, जो पट्टावली में दी गयी है, प्रामाणिक मानी जा सकती है। इसी प्रकार जयसिंहसूरि और उनके पट्टधर जयप्रभसूरि से लेकर भावप्रभसूरि तक जिन ९ आचार्यों का नाम पट्टावली में आया है, वे सभी **पुस्तक-प्रशस्तियों** द्वारा निर्मित पट्टावली में आ चुके हैं। इस प्रकार श्री देसाई द्वारा प्रस्तुत पूर्णिमागच्छ की प्रधानशाखा की एक मात्र उपलब्ध पट्टावली प्रामाणिक सिद्ध होती है।

ग्रन्थप्रशस्तियों के आधार पर निर्मित **पूर्णिमागच्छ प्रधानशाखा** की गुरु-परम्परा की तालिका जयसिंहसूरि से प्रारम्भ होती है और जयसिंहसूरि के पूर्ववर्ती आचार्यों के नाम एवं पट्टानुक्रम श्री देसाई द्वारा प्रस्तुत पट्टावली से ज्ञात हो जाते हैं, अतः इस शाखा की गुरु-परम्परा की एक विस्तृत तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है :

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित पूर्णिमागच्छ प्रधानशाखा के मुनिजनों का विद्यावंशवृक्ष

|
चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक, वि. सं. ११४९]
|
धर्मघोषसूरि
|
समुद्रघोषसूरि (परमारनरेश) नरवर्मा [वि. सं. ११५१/ई. सन्० १०९४- वि. सं. ११९०/ ई. सन् ११३३ और जयसिंह सिद्धराज [वि. सं. ११५१ / ई. सन् १०९५ - वि. सं. ११९९ /ई. सन् ११४३ के राजदरबार में सम्मानित]
|
सुरप्रभसूरि [प्रधानशाखा या ढंढेरिया शाखा के प्रवर्तक]
|
जिनेश्वरसूरि
|
भद्रप्रभसूरि
|
पुरुषोत्तमसूरि
|
देवतिलकसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
तिलकप्रभसूरि
|
ललितप्रभसूरि [प्रथम]
|
हरिप्रभसूरि
|
जयसिंहसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- जयप्रभसूरि [वि. सं. १५१२-१५५१] प्रशस्ति एवं प्रतिमालेख
  - जयभद्रसूरि [वि. सं. १५२५-३४] प्रतिमालेख
  - यशस्तिलकसूरि [वि. सं. १५२७-२९] प्रशस्ति में उल्लिखित
    - कमलप्रभसूरि [वि. सं. १५८२] प्रतिमालेख
      - माणिक्यसूरि
      - पुण्यप्रभसूरि [वि. सं. १५९०-१६११] प्रशस्ति एवं प्रतिमालेख
        - विद्याप्रभसूरि [वि. सं. १६२४] प्रतिलेखन प्रशस्ति
          - ललितप्रभसूरि [द्वितीय] [वि. सं. १६५०-१६७७] प्रशस्ति एवं प्रतिमालेख
            - विनयप्रभसूरि [वि. सं. १७१४-१७२२] प्रतिलेखन प्रशस्ति
              - कीर्तिरत्नसूरि [वि.सं. १७१४] प्रतिलिपि प्रशस्ति
              - मुनिहेमराजसूरि [वि. सं. १६८९] प्रतिलेखन प्रशस्ति
              - महिमाप्रभसूरि [वि. सं. १७३६-१७६८] प्रशस्ति एवं प्रतिमालेख
                - सहजरत्नसूरि [वि. सं. १७६१] प्रतिलिपि प्रशस्ति
                - भावप्रभसूरि [वि. सं. १७८३-१७९५] प्रशस्ति
                  - मुनिज्योतिरत्न
                - भावरत्नसूरि [वि. सं. १७६२-१७९५] प्रशस्ति
                - मुनिलाल [वि. सं. १७६७-१७९१] प्रशस्ति
    - मुनिराजसुन्दरसूरि [वि. सं. १५६६] प्रशस्ति
    - मुनिरत्नमेरुसूरि [वि. सं. १५७४ में **आदिनाथमहाकाव्य** के प्रतिलिपिकार]
    - कमलसंयमसूरि [वि. सं. १५५३ में इनके सानिध्य में **पाक्षिकसूत्रअवचूरि** की प्रतिलिपि की गयी]
    - मुनिवीरकलश [वि. सं. १५५५ में **स्नात्रपंचाशिका** के रचनाकार]
  - भुवनप्रभसूरि [वि. सं. १५५१-१५७२] प्रशस्ति एवं प्रतिमालेख
  - जयमेरुसूरि [वि. सं. १५५१] प्रशस्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची

१. **मोहनलाल दलीचन्द देसाई - जैनगूर्जरकविओ**, द्वितीय संशोधित संस्करण, भाग ८, संपा० जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८७ ईस्वी, पृष्ठ १८९-१९१.

२. Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar, Cambay* [G.O.S. No. 135 and 149] Baroda 1961 - 66 A.D., pp. 352-53.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सार्धपूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल [बाद में चन्द्रगच्छ] की एक शाखा वडगच्छ या बृहद्गच्छ से वि० सं० ११४९ या ११५९ में उद्भूत पूर्णिमागच्छ या पूर्णिमापक्ष से भी समय-समय पर विभिन्न उपशाखायें अस्तित्व में आयीं, इनमें सार्धपूर्णिमागच्छ भी एक है। विभिन्न पट्टावलियों में पूर्णिमागच्छीय आचार्य सुमतिसिंहसूरि द्वारा वि० सं० १२३६/ईस्वी सन् ११८० में अणहिल्लपुरपत्तन में इस शाखा का उदय माना गया है।[१] विवरणानुसार श्वेताम्बर श्रमणसंघ में विभिन्न मतभेदों के कारण निरन्तर विभाजन की प्रक्रिया से खिन्न होकर चौलुक्यनरेश कुमारपाल [वि० सं० ११९९-१२२९/ईस्वी सन् ११४३-११७३] ने नये-नये गच्छों के मुनिजनों का अपने राज्य में प्रवेश निषिद्ध करा दिया। वि० सं० १२३६ में पूर्णिमागच्छीय आचार्य सुमतिसूरि विहार करते हुए पाटन पहुंचे। वहां श्रावकों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने अपने को पूर्णिमागच्छीय नहीं अपितु सार्धपूर्णिमागच्छीय बतलाकर वहां विहार की अनुमति प्राप्त कर ली। इसी समय से सुमतिसूरि की शिष्य परम्परा सार्धपूर्णिमागच्छीय कहलायी। इस गच्छ के मुनिजन भी पूर्णिमागच्छीय मुनिजनों की भांति प्रतिमाप्रतिष्ठापक न होकर मात्र उपदेशक ही रहे हैं, किन्तु ये संडेरगच्छ, भावदेवाचार्यगच्छ, राजगच्छ, चैत्रगच्छ, नाणकीयगच्छ, वडगच्छ आदि के मुनिजनों की भांति चतुर्दशी को पाक्षिक पर्व मनाते थे।[२] यद्यपि इस गच्छ का उदय वि० सं० १२३६ में हुआ माना जाता है, किन्तु इससे सम्बद्ध जो भी साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य आज मिलते हैं वे वि० सं० की १४वीं शती के पूर्व के नहीं हैं। अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है :

१. श्री शांतिनाथचरित -

वि० सं० १४१२ में लिपिबद्ध की गयी इस कृति की प्रशस्ति[३] में सार्धपूर्णिमागच्छ के आचार्य अभयचन्द्रसूरि का उल्लेख है। किन्तु वे किसके शिष्य थे, यह बात उक्त प्रशस्ति से ज्ञात नहीं होती। चूंकि सार्धपूर्णिमागच्छ से सम्बद्ध यह सबसे प्राचीन उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्य है, इसलिये महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

२. रत्नाकरावतारिकाटिप्पण -

वडगच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि की प्रसिद्ध कृति **प्रमाणनय-तत्त्वावलोक** [रचनाकाल वि० सं० ११८१/ईस्वी सन् ११२५] पर सार्धपूर्णिमागच्छीय गुणचन्द्रसूरि के शिष्य ज्ञानचन्द्रसूरि ने मलधारगच्छीय राजशेखरसूरि के निर्देश पर **रत्नाकरावतारिकाटिप्पण** [रचनाकाल वि० सं० की १५वीं शती के प्रथम या द्वितीय दशक के आसपास] की रचना की[४]। यह बात उक्त कृति की प्रशस्ति से ज्ञात होती है।

३. न्यायावतारवृत्ति की दाता प्रशस्ति -

आचार्य सिद्धसेनदिवाकर प्रणीत **न्यायावतारसूत्र** पर निर्वृत्तिकुलीन सिद्धर्षि द्वारा रचित वृत्ति [रचनाकाल - विक्रम सम्वत् की १०वीं शती के तृतीय चरण के आसपास] की वि० सं० १४५३ में लिपिबद्ध की गयी एक प्रति की दाता प्रशस्ति[५] में सार्धपूर्णिमागच्छीय अभयचन्द्रसूरि के शिष्य रामचन्द्रसूरि का उल्लेख है। इस प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि उक्त प्रति रामचन्द्रसूरि के पठनार्थ लिपिबद्ध करायी गयी थी। इन्हीं रामचन्द्रसूरि ने वि० सं० १४९०/ईस्वी सन् १४३४ में **विक्रमचरित**[६] की रचना की।

४. सम्यकत्वरत्नमहोदधि वृत्ति की दाताप्रशस्ति -

पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक आचार्य चन्द्रप्रभसूरि कृत **सम्यकत्व-रत्नमहोदधि** अपरनाम **दर्शनशुद्धि** [रचनाकाल विक्रम सम्वत् की १२वीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शती के मध्य के आसपास] पर पूर्णिमागच्छ के ही चक्रेश्वरसूरि और तिलकाचार्य द्वारा रची गयी वृत्ति [रचनाकाल विक्रम सम्वत् की १३वीं शती के मध्य के आसपास] की वि० सं० १५०४ में लिपिबद्ध की गयी प्रति की दाताप्रशस्ति[७] में सार्धपूर्णिमागच्छ के पुण्यप्रभसूरि के शिष्य जयसिंहसूरि का उल्लेख है। उक्त प्रशस्ति में इस गच्छ के किन्हीं अन्य मुनिजनों के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती।

५. आरामशोभाचौपाइ -

यह कृति सार्धपूर्णिमागच्छ के विजयचन्द्रसूरि के शिष्य [श्रावक ?] कीरति द्वारा वि० सं० १५३५/ईस्वी सन् १४७९ में रची गयी है। ग्रन्थ की प्रशस्ति[८] के अन्तर्गत रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

रामचन्द्रसूरि
|
पुण्यचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
कीरति [वि० सं० १५३५/ई० सन् १४७९ में **आरामशोभा-चौपाइ** के रचनाकार]

६. आवश्यकनिर्युक्तिबालावबोध की प्रतिलिपि की प्रशस्ति -

सार्धपूर्णिमागच्छीय विद्याचन्द्रसूरि ने वि० सं० १६१० में उक्त कृति की प्रतिलिपि करायी। इसकी दाताप्रशस्ति[९] में उनकी गुरु-परम्परा का विवरण मिलता है, जो इस प्रकार है :

उदयचन्द्रसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिचन्द्रसूरि

|

विद्याचन्द्रसूरि [वि० सं० १६१० में इनके उपदेश से **आवश्यक-निर्युक्ति बालावबोध** की प्रतिलिपि की गयी]

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित वि० सं० १३३१ से वि० सं० १६२४ तक की ५० से अधिक जिनप्रतिमायें मिलती है। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३३१	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	देवेन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा० **अर्बुदप्राचीन जैनलेखसंदोह**, लेखांक ५३०
२.	१४२१	वैशाख वदि शनिवार	धर्मचन्द्रसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५७९
३.	१४२४	आषाढ़ सुदि ६ गुरुवार	अभयचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों का मुहल्ला, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, **बीकानेरजैन-लेखसंग्रह**, लेखांक १६२८
४.	१४२४	,,	धर्मचन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मतिलकसूरि	,,	चिन्तामणिजीका मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ४६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१४२८	वैशाख वदि २ सोमवार	,,	,,	,,	वही, लेखांक ४८५
६.	१४३२	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक१५८
७.	१४३२	–	,,		चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४९९
८.	१४३३	वैशाख सुदि ९ शनिवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ११२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१४३३	वैशाख सुदि ९ शनिवार	,,	महावीर की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५०५
१०.	१४३४	वैशाख वदि ११ मंगलवार	,,	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५१३
११.	१४३९	पौष वदि ९ रविवार	,,	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	विमलवसही, देहरी क्रमांक ८, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५८
१२.	१४५०	माघ वदि ९ सोमवार	,,	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, डागों का मुहल्ला, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३	–	... सुदि मंगलवार	,,	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ८२७
१४.	१४५८	वैशाख वदि २ बुधवार	अभयचन्दसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५८३
१५.	१४६६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, बीकानेर	वही, लेखांक १९३८
१६.	१४७१	माघ सुदि ५ शनिवार	पासचन्द्रसूरि	अभिनन्दननाथ की धातु की चौबीसी का लेख	नेमिनाथ जिनालय, गेला सेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० **राधनपुर-प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१४८३	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	धर्मतिलकसूरि के पट्टधर हीराणंदसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७२२
१८.	१४८६	चैत्र सुदि १४ बुधवार	अभयचन्द्रसूरि के पट्टधर रामचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिचन्द्रगणि तथा शीलचन्द्र, नयसार, विनयरत्न आदि	शिलालेख	देवकुलिका स्थित लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ३४२
१९.	१४९३	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	रामचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १६०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१५०२	माघ वदि २ रविवार	हीरानन्दसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५९
२१.	,,	,,	,,	,,	आदिनाथ जिनालय, करमदी	वही, भाग १, लेखांक ३६१
२२.	१५०४	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	रामचन्द्रसूरि के पट्टधर पूर्णचन्द्रसूरि	अजितनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	पूरनचन्द नाहर, संपा० **जैनलेख-संग्रह**, भाग २, लेखांक १७३२
२३.	१५०७	तिथि विहीन	पुण्यचन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९०९
२४.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	रामचन्द्रसूरि के पट्टधर पुण्यचन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिना०, बीकानेर	वही, लेखांक १६२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१५०९	पौष वदि ५ रविवार	सागरचन्द्रसूरि के पट्टधर सोमचन्द्रसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	शामला पार्श्वनाथ जिनालय, डभोइ	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७
२६.	–	तिथि/ मिति विहीन	,,	धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिना०, थराद	दौलतसिंह लोढा, संपा० **श्रीप्रतिमा-लेखसंग्रह**, लेखांक २२६
२७.	१५०९	माघ सुदि १० शनिवार	रामचन्द्रसूरि के पट्टधर पुण्यचन्द्रसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, कनासा पाडो, पाटन	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३२३
२८.	१५१२	फाल्गुन वदि १ रविवार	पुण्यचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२९.	१५१३	वैशाख सुदि १० बुधवार	गुणचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिना०, कालू, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५१४
३०.	१५१३	ज्येष्ठ वदि ७ मंगलवार	पुण्यचन्द्रसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, ऊंझा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १६८
३१.	१५१६	माघ वदि ८ सोमवार	हीरानन्दसूरि के पट्टधर देवचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ९९८
३२.	१५१८	आषाढ़ सुदि १० बुधवार	,,	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, नाहटों में, बीकानेर	वही, लेखांक १८२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३३.	१५२०	वैशाख वदि ८ शुक्रवार	पुण्यचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिना०, पन्नाबाई का उपाश्रय, बीकानेर	वही, लेखांक १८७९
३४.	१५२१	वैशाख वदि ८ शुक्रवार	रामचन्द्रसूरि के पट्टधर चन्द्रसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मन्दिर, सराफा बाजार, लस्कर, ग्वालियर	नाहटा, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३७८
३५.	१५२२	माघ वदि १ गुरुवार	पुण्यचन्द्रसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जगतसेठ का मंदिर, महिमापुर, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७२
३६.	१५२४	आषाढ़ सुदि १० शुक्रवार	पुण्यचन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३७.	१५२८	आषाढ़ सुदि ६ रविवार	श्रीसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना०, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३५४
३८.	१५२८	पौष वदि ५	पुण्यचन्द्रसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	यति श्यामलाल का उपाश्रय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७०९
३९.	१५२८	माघ वदि ५ गुरुवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, बालुचर, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५
४०.	१५३३	माघ सुदि ५	जयशेखरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, सराफा बाजार, लस्कर, ग्वालियर	वही, भाग २, लेखांक १४०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४१.	१५३३	माघ सुदि १३ सोमवार	,,	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	,,	वही, भाग २, लेखांक १३८१
४२.	१५३३	,,	,,	,,	शांतिनाथ जिना०, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांत ७६५
४३.	१५३७	वैशाख सुदि १० सोमवार	सिद्धसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८४४
४४.	१५४४	ज्येष्ठ सुदि ९ सोमवार	आचार्य का नाम नष्ट	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, संपा० **प्राचीन-लेखसंग्रह**, लेखांक ४९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४५.	१५५०	वैशाख सुदि ५ रविवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०९८
४६.	१५५३	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	पुण्यरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२००
४७.	१५५३	पौष वदि १० गुरुवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयचन्द्रसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना०, आदिनाथ खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३१५
४८.	१५७२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	उदयचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिराजसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४९.	१५७५	फाल्गुन वदि ४ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	,,	अक्षयसिंह का देरासर, जैसलमैर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक १४६९
५०.	१५७९	वैशाख सुदि १२ रविवार	उदयचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सेठ धीरूशाह का देरासर, जैसलमैर	वही, भाग ३, लेखांक २४५७
५१.	१५९६	वैशाख सुदि ९	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर विद्याचन्द्रसूरि	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १११८
५२.	१६१०	फाल्गुन वदि २	विद्याचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	प्रतिष्ठा वर्ष	तिथि/ मिति	लेख में उल्लिखित आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५३.	१६२४	माघ सुदि १ सोमवार	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	लुआणा चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होते हैं। उनका विवरण इस प्रकार है :

१. धर्मचन्द्रसूरि और उनके पट्टधर धर्मतिलकसूरि :

धर्मचन्द्रसूरि की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित १ प्रतिमा मिली है। जिस पर वि० सं० १४२१ का लेख उत्कीर्ण है। इनके पट्टधर धर्मतिलकसूरि का ९ जिनप्रतिमाओं पर नाम मिलता है। ये प्रतिमायें वि० सं० १४२४ से वि० सं० १४५० के मध्य प्रतिष्ठापित की गयी थीं। इसके अतिरिक्त एक ऐसी भी प्रतिमा मिली हैं, जिस पर प्रतिष्ठावर्ष नहीं दिया गया है।

२. धर्मतिलकसूरि के पट्टधर हीराणंदसूरि :

वि० सं० १४८३ और १५०२ में प्रतिष्ठापित ३ प्रतिमाओं पर इनका नाम मिलता है।

३. हीराणंदसूरि के पट्टधर देवचन्द्रसूरि :

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें [वि० सं० १५१६ और वि० सं० १५१८] मिली है।

४. अभयचन्द्रसूरि और उनके पट्टधर रामचन्द्रसूरि :

अभयचन्द्रसूरि की प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ३ प्रतिमाओं [वि० सं० १४२४, १४५८ और १४६६] का उल्लेख मिलता है। इनके पट्टधर रामचन्द्रसूरि का नाम वि० सं० १४९३ के प्रतिमालेख में मिलता है।

५. रामचन्द्रसूरि के पट्टधर पुण्यचन्द्रसूरि :

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ५ प्रतिमायें मिली है, जिन पर वि० सं० १५०४, १५०७, १५०८, १५२० और १५२४ के लेख उत्कीर्ण हैं।

६. रामचन्द्रसूरि के शिष्य मुनिचन्द्रसूरि :

आबू स्थित लूणवसही की एक देवकुलिका पर उत्कीर्ण वि० सं० १४८६ के लेख में मुनिचन्द्रसूरि का नाम मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. रामचन्द्रसूरि के शिष्य चन्द्रसूरि :

पद्मप्रभ की वि० सं० १५२१ में प्रतिष्ठापित प्रतिमा पर चन्द्रसूरि का नाम मिलता है।

८. पुण्यचन्द्रसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि :

वि० सं० १५१३, १५२२ और १५२८ में प्रतिष्ठापित ३ प्रतिमाओं पर विजयचन्द्रसूरि का नाम मिलता है।

९. विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर उदयचन्द्रसूरि :

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें मिली हैं, जो वि० सं० १५५० और १५५३ की हैं।

१०. उदयचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिराजसूरि :

वि० सं० १५७२ में प्रतिष्ठापित श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा पर इनका नाम मिलता है।

११. उदयचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि :

वि० सं० १५७५ और १५७९ में प्रतिष्ठापित २ जिनप्रतिमाओं पर इनका नाम मिलता है।

१२. मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर विद्याचन्द्रसूरि :

इनकी प्रेरणा से प्रतिष्ठापित ३ जिनप्रतिमाओं का उल्लेख पीछे आ चुका है, ये वि० सं० १५९६, १६१० और १६२४ की हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर गुर्वावालियों की दो तालिकायें संकलित की जा सकती हैं :

तालिका -१

?
|
धर्मचन्द्रसूरि [वि० सं० १४२१] १ प्रतिमालेख
|
धर्मतिलकसूरि [वि० सं० १४२४-१४५०] ७ प्रतिमालेख
|
हीराणंदसूरि [वि० सं० १४८३-१५०२] २ प्रतिमालेख
|
देवचन्द्रसूरि [वि० सं० १५१६-१५१८] २ प्रतिमालेख

तालिका -२

?
|
अभयचन्द्रसूरि [वि० सं० १४२४-१४६६] ३ प्रतिमालेख
|
रामचन्द्रसूरि [वि० सं० १४९३] १ प्रतिमालेख
|
पुण्यचन्द्रसूरि [वि० सं० १५१६-१५१८] २ प्रतिमालेख | मुनिचन्द्रसूरि [प्रथम] [वि० सं० १४८६] १ प्रतिमालेख | चन्द्रसूरि [वि० सं० १५२१] १ प्रतिमालेख

पुण्यचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५१३-१५२८] ३ प्रतिमालेख
|
उदयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५५०-१५५३] २ प्रतिमालेख
|
मुनिराजसूरि | मुनिचन्द्रसूरि [द्वितीय] [वि० सं० १५७५-१५७९] २ प्रतिमालेख

मुनिचन्द्रसूरि [द्वितीय]
|
विद्याचन्द्रसूरि [वि० सं० १५९६-१६२४] ३ प्रतिमालेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित उक्त दोनों तालिकाओं में परस्पर समायोजन सम्भव नहीं होता, किन्तु द्वितीय तालिका के अभयचन्द्रसूरि, रामचन्द्रसूरि, विजयचन्द्रसूरि, उदयचन्द्रसूरि आदि मुनिजनों के नाम सार्धपूर्णिमा गच्छ के साहित्यिक साक्ष्यों में भी आ चुके हैं, इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु-शिष्य परम्परा ही एक बड़ी तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका - ३

?

|

अभयचन्द्रसूरि [वि० सं० १४२४-१४६६] ३ प्रतिमालेख
वि० सं० १४१२ में लिखित **शांतिनाथचरित** में उल्लिखित

|

रामचन्द्रसूरि [वि० सं० १४९३] १ प्रतिमालेख
वि० सं० १४५३ में इनके पठनार्थ **न्यायावतारवृत्ति** की प्रतिलिपि की गयी, वि० सं० १४९० में **विक्रमचरित के रचनाकार**

- पुण्यचन्द्रसूरि [वि० सं० १५०४-२४] ५ प्रतिमालेख
  - विजयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५१३-१५२८] ३ प्रतिमालेख
    - उदयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५५०-१५५३] २ प्रतिमालेख
      - मुनिराजसूरि [वि० सं० १५९२] १ प्रतिमालेख
      - मुनिचन्द्रसूरि [द्वितीय] [वि० सं० १५७५-१५७९] २ प्रतिमालेख
        - विद्याचन्द्रसूरि [वि० सं० १५९६-१६२४] ३ प्रतिमालेख
          वि० सं० १६१० में इनके उपदेश से **आवश्यकनिर्युक्ति बालावबोध** की प्रतिलिपि की गयी
    - कीरति [वि० सं० १५३५ में **आरामशोभाचौपाइ** के रचनाकार]
  - जयसिंहसूरि [वि० सं० १५०४ में लिखित **सम्यकत्वरत्नमहोदधि** की प्रशस्ति में उल्लिखित]
- मुनिचन्द्रसूरि [प्रथम] [वि० सं० १४८६ के प्रतिमालेख में उल्लिखित
- शीलचन्द्रसूरि
- जयसार
- विनयरत्नसूरि
- चन्द्रसूरि [वि० सं० १५२१] १ प्रतिमालेख

सन्दर्भसूची :

१. षट्त्र्यर्क्केषु (१२३६) च सार्धपूर्णिम... ।

मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, भारतीय विद्याभवन, बम्बई १९६१ ईस्वी, पृष्ठ २१, ३९, ६५, २०१ आदि.

२. त्रिपुटी महाराज – **जैनपरम्परानो इतिहास**, भाग २, चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५४, अहमदाबाद १९६० ईस्वी, पृष्ठ ५४४-५४६.

३. संवत् १४१२ वर्षे पौष वदि १२ गुरौ अद्येह श्रीमदणहिलपट्टने श्री साधुपूर्णिमापक्षीय श्रीअभयचन्द्रसूरीणां पुस्तकं लिखितं पंडित महिमा(पा?)केन । शुभं भवतु ।

शांतिनाथचरित की दाता प्रशस्ति

मुनि जिनविजय – संपा० **जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १८, भारतीय विद्याभवन, बम्बई १९४४ ईस्वी, पृष्ठ १३९, प्रशस्ति क्रमांक ३१०.

४. मूल ग्रन्थ और उसकी प्रशस्ति उपलब्ध न होने से उक्त उद्धरण निम्नलिखित ग्रन्थों के आधार पर दिया गया है :

H. D. Velankar - *JINARATNAKOSHA*, Government Oriental Series, Class C, No. 4, B.O.R.I., Poona-1944 A.D., p. 267-268.

मोहनलाल दलीचन्द देसाई – **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृष्ठ ४३७.

५. संवत् १४५३ वर्षे फाल्गुनसुदिपूर्णिमादिने अद्येह श्रीमत्पत्तने श्रीराउतवाटके श्रीसाधुपूर्णिमापक्षीय भट्टारकश्रीअभयचन्द्रसूरि – शिष्यरामचन्द्रसूरि पठनार्थं ज्ञा(न्या)यावतारवृत्तिप्रकरणं लल(ललित)कीर्तिमुनिना लिखितं । शुभं भवतु ।

A. P. Shah - Ed. *Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS : Muni Punyavijayaji's Collection*, Part I, L. D. Series No. 2 Ahmedabad 1963 A.D. p. 201. No. 3494.

६. अगरचन्द नाहटा – "विक्रमादित्य सम्बन्धी जैन साहित्य" **विक्रमस्मृतिग्रन्थ,** संपा० हरिहर निवास द्विवेदी तथा अन्य, उज्जैन वि० सं० २००१, पृष्ठ १४१-१४८.

७. संवत् १५०४ वर्षे आसो सुदि १० सोमवारे साधुपूण्णिमागच्छे चन्द्रप्रभसूरिसंताने भ० श्रीपुण्यचन्द्रसूरि-शिष्यगणिवरजयसिंहगणिना राणपुरनगरे सम्यक्त्वरत्न-महोदधिग्रन्थपुस्तकं लिखितम् ॥

A. P. Shah, Ibid pp. 149-151, No. 2934.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. पुण्यइं लाभइं सुखसंयोग, पुण्यइ काजइ देवगह भोग,
पुण्यइं सवि अंतराय टलइ, मनवंछित फल पुण्य लहइ ॥

साधपूनिम पक्ष गच्छ अहिनाण, श्रीरामचन्द्रसूरि सुगुरु सुजाण।
नवरसे फरइ अमृत वखाणि, चतुर्विध श्री संघ मनि आण ॥

तस पाटधर साहसधीर, पाप पखालइ जाणे नीर,
पंच महाव्रत पालणवीर, श्रीपुण्यचन्द्रसूरि गुरु बा गंभीर ॥

तास पट्ट उदया अभिनवा भाणु, जाणे महिमा मेरु समान।
गिरुआ गुणह तण् निधान, श्री विजयचन्द्रसूरि युगप्रधान ॥

संवत पंनर पांत्रीसु जाणि, आसोइ पूनमि अहिनाणि।
गुरुवारइ पूक्ष नक्षत्र होइ, पूरव पुण्य तणां फल जोई ॥

कर जोडी कीरति प्रणमइ, आरामसोभा रास जे सुणइ।
भणइ गुणइ जे नर नि नारि, नवनिधि वलसइं तेह घरबारि ॥

-- इति आरामसोभा रास समाप्त।

मोहनलाल दलीचन्द देसाई - **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, द्वितीय परिवर्धित संस्करण - संपा० जयन्त कोठारी, महावीर जैन विद्यालय, बम्बई १९८६ ईस्वी, पृष्ठ ४८३-४८४.

९. इतिश्रीआवश्यकसूत्रस्य बालावि (व) बोध समाप्तं।

श्रीरस्तु संवत् १६१० वर्षे वैशाख वदि ३ शुक्रे म० गोवाल लिखितं श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे मुख्य भट्टारकश्रीउदयचन्द्रसूरि तत्पट्टे पु (पू) ज्यराज्य (ध्य) श्रीमुनिचन्द्रसूरि तत्पट्टे गच्छाधिराज बारधुरिंधरश्रीश्रीश्री विद्याचन्द्र (?सू) रिंद्रे एषा पुस्तिका लिखापिता ॥ सर्वेषां शश्यानां वाचनार्थं ॥

H. R. Kapadia - Ed. *Descriptive Catalogue of the Govt. Collection of MSS deposited at the B.O.R.I.*, Volume XVII B.O.R.I. Poona 1940 A.D. p. 456.१०१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णिमापक्ष - भीमपल्लीयाशाखा का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल [बाद में चन्द्रगच्छ] से उद्भूत गच्छों में पूर्णिमागच्छ भी एक है। पाक्षिक पर्व पूर्णिमा को मनायी जाये या अमावास्या को, इस प्रश्न पर पूर्णिमा का पक्ष ग्रहण करने वाले चन्द्रगच्छीय मुनिजन पूर्णिमापक्षीय या पूर्णिमागच्छीय कहलाये। वि० सं० ११४९ या ११५९ में इस गच्छ का प्रादुर्भाव माना जाता है। चन्द्रकुल के आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य चन्द्रप्रभसूरि इस गच्छ के प्रवर्तक माने जाते हैं। इस गच्छ से भी समय-समय पर विभिन्न शाखाओं का जन्म हुआ, जिसमें प्रधानशाखा या ढंढेरियाशाखा, भीमपल्लीयाशाखा, सार्धपूर्णिमाशाखा, कच्छोलीवालशाखा आदि प्रमुख हैं। यहां भीमपल्लीयाशाखा के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

पूर्णिमागच्छ की यह शाखा भीमपल्ली नामक स्थान से अस्तित्व में आयी प्रतीत होती है। इसके प्रवर्तक कौन थे, यह कब और किस कारण से अस्तित्व में आयी, इस सम्बन्ध में आज कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस शाखा में देवचन्द्रसूरि, पार्श्वचन्द्रसूरि, जयचन्द्रसूरि, भावचन्द्रसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, विनयचन्द्रसूरि आदि कई महत्त्वपूर्ण आचार्य हुए हैं। भीमपल्लीयाशाखा से सम्बद्ध जो भी साक्ष्य आ उपलब्ध हुए हैं, वे वि० सं० की १५वीं शती से वि० सं० की १८वीं शती तक के हैं और इनमें अभिलेखीय साक्ष्यों की बहुलता है। अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम अभिलेखीय और तत्पश्चात् साहित्यिक साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिलेखीय साक्ष्य :

पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा के मुनिजनों के उपदेश से श्रावकों द्वारा प्रतिष्ठापित ५४ जिनप्रतिमायें अद्यावधि उपलब्ध हुई हैं। इन पर वि० सं० १४५९ के वि० सं० १५९८ तक के लेख उत्कीर्ण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ये प्रतिमायें उक्त कालावधि में प्रतिष्ठापित की गयी थीं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४५९	चैत्र सुदि १५ शनिवार	देवचन्द्रसूरि के पट्टधर पार्श्वचन्द्रसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैन धातु प्रतिमालेखसंग्रह**, भाग–१, लेखांक ११८९
२.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	,,	पद्मप्रभस्वामी की चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द संपा० **बीकानेर जैन लेख संग्रह**, लेखांक ५९७
३.	१४८२	चैत्र वदि ५ शुक्रवार	पार्श्वचन्द्रसूरि के पट्टधर जयचन्द्रसूरि	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सुधिटोला, लखनऊ	नाहर, पूरनचन्द संपा० **जैन लेख संग्रह**, भाग २, लेखांक १५६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१५८५	वैशाख सुदि ८ सोमवार	जयचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, हद्राण ग्राम	मुनि जयन्तविजय, संपा० **अर्बुदाचल-प्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह**, [**आबू**-भाग ५], लेखांक १९८
५.	१४९२	चैत्र वदि ५ शुक्रवार	,,	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३०९
६.	१४९२	चैत्र वदि ५ शुक्रवार	पार्श्वचन्द्रसूरि के पट्टधर जयचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/ मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१४९६	वैशाख सुदि ११ बुधवार	जयचन्द्रसूरि	वासुपूज्यस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ७८९
८.	१५०१	वैशाख सुदि ३	,,	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ८४२
९.	१५०२	माघ सुदि २ शुक्रवार	,,	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३०
१०.	१५०२	माघ सुदि १३ रविवार	,,		चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८६२
११.	१५०३	ज्येष्ठ वदि १३ शनिवार	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय,, मीयागाम	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१५०३	आषाढ़ वदि १३ शनिवार	जयचन्द्रसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभस्वामी का जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३ लेखांक २३१८
१३.	१५०३	माघ वदि २ शुक्रवार	,,	चन्द्रप्रभस्वामी की धातु की प्रतिमा का लेख		विजयधर्मसूरि, संपा० **प्राचीन लेख संग्रह**, लेखांक ७८
१४.	१५०४	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	,,	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९९
१५.	१५०६	वैशाख सुदि १२ गुरुवार	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासा पाड़ो, पाटण	वही, भाग १, लेखांक १९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१५०७	वैशाख सुदि १० बुधवार	जयचन्द्रसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चाणस्मा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११३
१७.	१५०८	माघ सुदि ५ सोमवार	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागरपोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८२७
१८.	१५०९	फाल्गुन सुदि ३ गुरुवार	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभस्वामी का मंदिर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३२
१९.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	,,	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	प्रेमचन्द्र मोदी नी टोंक, शत्रुंजय	वही, भाग १, लेखांक ६९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	जयचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २१०
२१.	१५११	पौष वदि ५	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९४८
२२.	१५११	माघ वदि १	,,	,,	पार्श्वनाथ जिनालय, साणंद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६३६
२३.	१५०६	माघ सुदि ५ रविवार	,,	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० **राधनपुर प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक २२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/ मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२४.	१५१३	माघ सुदि १३ सोमवार	जयचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	विनयसागर, संपा. **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ५२१
२५.	१५१४	माघ सुदि २ सोमवार	,,	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ग्राम – चवेली	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४८
२६.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, सराफा बाजार, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूरनचन्द पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३७६
२७.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	,,	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	देहरी नं. २६८/१ शत्रुंजय	मुनि कंचनसागर, संपा. **शत्रुंजय-गिरिराजदर्शन**, लेखांक १९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१५१५	फाल्गुन वदि ५ गुरुवार	जयचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, दीनाजपुर, बंगाल	नाहर, पूरनचन्द्र, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६२९
२९.	१५१६	वैशाख सुदि गुरुवार	,,	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	,,	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २१६१
३०.	१५१६	माघ वदि ८ सोमवार	,,	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, भाग २, लेखांक ६३२
३१.	१५१८	वैशाख वदि १ गुरुवार	,,	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/ मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३२.	१५१८	वैशाख वदि १ गुरुवार	जयचन्द्रसूरि	नमिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोघा	वही, लेखांक ३२१
३३.	१५१८	ज्येष्ठ वदि ९ शनिवार	,,	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खेडा अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त–भाग–२, लेखांक ४१७
३४.	१५१८	माघ सुदि १३ गुरुवार	,,	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३४२
३५.	१५२०	वैशाख वदि ८ रविवार	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग ५, लेखांक ५३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३६.	१५२०	कार्तिक वदि २ शनिवार	जयचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासा पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २९९
३७.	१५२३	वैशाख वदि १ सोमवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ३०५
३८.	१५२४ सोमवार	पौष वदि ५	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ३४
३९.	१५२६	आश्विन सुदि ८ शुक्रवार	,,	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि/मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४०.	१५२७	ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवार	जयचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भींडीबाजार, बम्बई	मुनि कान्तिसागर, संपा० **जैन धातु प्रतिमालेख**, लेखांक ६७७
४१.	१५३६	माघ वदि ७ सोमवार	भावचन्द्रसूरि के पट्टधर चारित्रचन्द्रसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३४४
४२.	१५४७	पौष वदि १० बुधवार	जयचन्द्रसूरि के पट्टधर जयरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी का मंदिर, उदयपुर	विजरधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४९४
४३.	१५५३	आषाढ़ सुदि २ शुक्रवार	चारित्रचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	अभिनन्दनस्वामी का मंदिर, रसियासेरी, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, **श्रीप्रतिमालेख-संग्रह**, लेखांक २६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४४.	१५५४	माघ वदि २	चारित्रचन्द्रसूरि के पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११२४
४५.	१५५८	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	,,	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त भाग २, लेखांक ११२
४६.	१५६०	वैशाख सुदि ३	,,	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, गवाड़ा	वही, भाग १, लेखांक ६५०
४७.	१५७१	वैशाख सुदि ५	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय आदिनाथ खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि/ मिति	आचार्यनाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४८.	१५७६	चैत्र वदि ५ शनिवार	मुनिचन्द्रसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९६२ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३०२
४९.	१५७७	वैशाख सुदि १३	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त भाग १ लेखांक १३२
५०.	१५७८	माघ सुदि ९ सोमवार	,,	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५१.	१५९१	वैशाख वदि २ सोमवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मप्रभसूरि	वासुपूज्यस्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, काठीपोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ६२
५२.	१५९८	पौष वदि ११ सोमवार	विनयचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, पुरानी मंडी, बडोदरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६२
५३.	१५९८	पौष वदि ३ सोमवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पूर्णचन्द्रजी का घर देरासर, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त प्रतिमालेखीय साक्ष्यों द्वारा यद्यपि पूर्णिमागच्छ की भीमपल्लीया शाखा के विभिन्न मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं किन्तु उनमें से मात्र ८ मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्ध ही स्थापित हो सके हैं, जो इस प्रकार है :

?
|
देवचन्द्रसूरि
|
पार्श्वचन्द्रसूरि [वि० सं० १४५९-१४६१] २ प्रतिमालेख
|
जयचन्द्रसूरि [वि० सं० १४८२-१५२७] ३९ प्रतिमालेख
|
जयरत्नसूरि [वि० सं० १५४७] १ प्रतिमालेख

?
|
भावचन्द्रसूरि
|
चारित्रचन्द्रसूरि [वि० सं० १५३६] १ प्रतिमालेख
|
मुनिचन्द्रसूरि [वि० सं० १५५३-१५९१] ९ प्रतिमालेख
|
विनयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५९८] १ प्रतिमालेख

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीया-शाखा की उक्त छोटी-छोटी दो अलग-अलग गुर्वावलियों का उक्त आधार पर परस्पर समायोजन सम्भव नहीं हो सका, अतः इसके लिये पूर्णिमापक्षीय साहित्यिक साक्ष्यों पर भी दृष्टिपात करना अपरिहार्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथचरित की वि० सं० १५०४ में प्रतिलिपि की गयी एक प्रति की दाताप्रशस्ति में भीमपल्लीयाशाखा के पासचन्द्रसूरि [पार्श्वचन्द्रसूरि] के शिष्य जयचन्द्रसूरि का उल्लेख है।[1] इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि एक श्रावक परिवार ने अपने माता-पिता के श्रेयार्थ उक्त ग्रन्थ की एक प्रति जयचन्द्रसूरि को प्रदान की। जयचन्द्रसूरि की प्रेरणा से वि० सं० १४८२/ई० सन् १४२६ से वि० सं० १५२६/ई० सन् १४६१ के मध्य प्रतिष्ठापित ३९ जिनप्रतिमायें आज मिलती हैं, जिनका अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत उल्लेख आ चुका है। पूर्णिमागच्छीय किन्हीं भावचन्द्रसूरि ने स्वरचित **शांतिनाथचरित**[2] [रचनाकाल वि० सं० १५३५/ई० सन् १४७९] की प्रशस्ति में अपने गुरु का नाम जयचन्द्रसूरि बतलाया है, जिन्हें इस गच्छ की भीमपल्लीयाशाखा के पूर्वोक्त जयचन्द्रसूरि से समसामयिकता, गच्छ, नामसाम्य आदि के आधार पर एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। ठीक इसी प्रकार इसी शाखा के भावचन्द्रसूरि [वि० सं० १५३६ के प्रतिमालेख में उल्लिखित] और **शांतिनाथचरित** के रचनाकार पूर्वोक्त भावचन्द्रसूरि को एक दूसरे से अभिन्न माना जा सकता है।

पूर्णिमागच्छीय किन्हीं जयराजसूरि ने स्वरचित **मत्स्योदररास**[3] [रचनाकाल वि० सं० १५५३/ई० सन् १४९७] की प्रशस्ति में और इसी गच्छ के विद्यारत्नसूरि ने वि० सं० १५७७/ई० सन् १५२० में रचित **कूर्मापुत्रचरित**[4] की प्रशस्ति में मुनिचन्द्रसूरि का अपने गुरु के रूप में उल्लेख किया है। पूर्णिमागच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों में तो नहीं किन्तु भीमपल्लीयाशाखा से सम्बद्ध वि० सं० १५५३-१५९१ के प्रतिमालेखों में मुनिचन्द्रसूरि का उल्लेख मिलता है। अतः समसामयिकता और गच्छ की समानता को देखते हुए उन्हें एक ही व्यक्ति मानने में कोई बाधा नहीं है। चूंकि पूर्णिमागच्छ की एक शाखा के रूप में ही भीमपल्लीयाशाखा का जन्म और विकास हुआ, अतः इस शाखा के किन्हीं मुनिजनों द्वारा कहीं-कहीं अपने मूलगच्छ का ही उल्लेख करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होता और संभवतः यही कारण है कि उक्त ग्रन्थकारों ने अपनी कृतियों की प्रशस्ति में अपना परिचय पूर्णिमागच्छ की भीमपल्लीयाशाखा के मुनि के रूप में नहीं अपितु पूर्णिमागच्छ के मुनि के रूप में ही दिया है। विभिन्न गच्छों के इतिहास में इस प्रकार के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

प्रतिमालेखों और ग्रन्थप्रशस्तियों के आधार पर पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की एक तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित

पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा के मुनिजनों का विद्यावंशवृक्ष

?

चन्द्रप्रभसूरि [पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक]

|

धर्मघोषसूरि [चौलुक्यनरेश जयसिंह सिद्धराज (ई० सन् १०९४-११४२) द्वारा सम्मानित]

|

सुमतिभद्रसूरि

|

देवचन्द्रसूरि

|

पासचन्द्र [पार्श्वचन्द्रसूरि] [वि० सं० १४५९-१४६१] प्रतिमालेख

|

जयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५०४ में लिपिबद्ध **पार्श्वनाथचरित** में उल्लिखित]

|

भावचन्द्रसूरि [वि० सं० १५३५ **शांतिनाथचरित** के कर्ता]

उदयरत्नसूरि [वि० सं० १५४७] प्रतिमालेख

भावचन्द्रसूरि

|

चारित्रचन्द्रसूरि [वि० सं० १५३६] प्रतिमालेख

|

मुनिचन्द्रसूरि [वि० सं० १५५३-१६९१] प्रतिमालेख

|

जयराजसूरि [वि० सं० १५५३ में **मत्स्योदररास** के कर्ता]

विद्यारत्नसूरि [वि० सं० १५७७ में **कूर्मापुत्रचरित्र** के कर्ता]

विनयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५९८] प्रतिमालेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्दर्भसूची :

१. संवत् १५०३ वर्षे आसो वदि ४ गुरौ श्रीपार्श्वनाथचरित्र पुस्तकं लिखापितमस्ति ॥

संवत् १५०४ वर्षे वैशाख सुदि षष्ठी भौमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय मं० धना भार्या धांधलदे पुत्र मं० मारू भार्या चमकू पितृमातृ स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथचरित्रपुस्तकं अलेषि ॥ श्रीभीमपल्लीय श्रीपूर्णिमापक्षे मुक्ष [मुख्य] श्रीपासचन्द्रसूरिपट्टे श्री ३ जयचन्द्रसूरिभिः प्रदत्त ॥

अमृतलाल मगनलाल शाह – संपा० **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, अहमदाबाद वि० सं० १९९३, भाग २, पृष्ठ १०.

२. इति श्री श्री श्रीभावचन्द्रसूरिविरचिते गद्यबंधे श्रीशांतिनाथचरिते द्वादशभववर्णनो नाम षष्ठः प्रस्तावः ॥

H. R. Kapadia - Ed. *Descriptive Catalogue of MSS in the Govt. MSS Library deposited at the Bhadarkar Oriental Research Institute,* Serial No. 27 B.O.R.I. Poona, 1987 A. D. No. 733, pp. 118-119.

३. पूनिमपक्ष मुनिचन्द्रसूरि राजा, तासु ससि जंपइ पइ जइराज ।

पनर त्रिपन्न कीधु रास, भणइ गुणइ तेह पूरि आस ॥

मोहनलाल दलीचन्द देसाई – **जैन गूर्जर कविओ** भाग १, नवीन संस्करण [संपा० डॉ. जयन्त कोठारी] महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९८६ ईस्वी, पृष्ठ २०३-२०४.

४. इति श्रीपूर्णिमापक्षे भट्टारकश्रीमुनिचन्द्रसूरि – शिष्यमुनिविद्यारत्नविरचिते श्रीकूर्म्मापुत्र-केवलिचरित्रे शिवगतिवर्णनो नाम चतुर्थोल्लासः परिपूर्णस्तत्परिपूर्णोपरिपूर्णताम-भजतायमपि ग्रन्थ इति भद्रम् ॥

A. P. Shah - Ed. **Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS : Muni Shree Punyavijayji's Collection** Part II, L. D. Series No. 5, Ahmedabad, 1965, A. D. No. 4042 pp. 300-302.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्माणगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर आम्नाय में पूर्वमध्यकाल में प्रकट हुए विभिन्न चैत्यवासी गच्छों में ब्रह्माणगच्छ भी एक है। जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है, यह गच्छ अर्बुदगिरि के निकट स्थित ब्रह्माण[१] (वर्तमान वरमाण) नामक स्थान से अस्तित्व में आया। ब्रह्माणगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते है जो वि० सं० ११२४-ई० स० १०७८ से लेकर वि० सं० १५७६ - ई० स० १५२० तक के हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों की तुलना में इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्य संख्या की दृष्टि से प्रायः नगण्य ही हैं।

ब्रह्माणगच्छ से सम्बद्ध सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्य है **नवपदप्रकरण** की वि० सं० ११९२-ई० स० ११३६ में लिखी गयी दाताप्रशस्ति[२], जिसमें इस गच्छ के विमलाचार्य के एक श्रावक शिष्य द्वारा उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि तैयार करवा कर वहां विराजित साध्वियों को पठनार्थ दान में देने का उल्लेख है। चूंकि इस प्रशस्ति में ब्रह्माणगच्छ के एक आचार्य के नामोल्लेख के अतिरिक्त कोई अन्य ऐतिहासिक सूचना प्राप्त नहीं होती, फिर भी इस गच्छ से सम्बद्ध और अद्यावधि उपलब्ध प्राचीनतम साहित्यिक साक्ष्य होने से यह प्रशस्ति महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

ब्रह्माणगच्छ से सम्बद्ध द्वितीय साहित्यिक साक्ष्य है वि० सं० १२१७-ई० स० ११६१ में लिखी गयी **चन्द्रप्रभचरित** की दाताप्रशस्ति[३], जिसके अन्त में इस गच्छ के पं. अभयकुमार का नाम मिलता है।

भवभावनाप्रकरण की वि० सं० १२८० में लिखी गयी दाताप्रशस्ति[४] के अनुसार ब्रह्माणगच्छ की चन्द्रशाखा में देवचन्द्रसूरि हुए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उनके पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १२४० – ई० स० ११८४ में पद्रग्राम (पादरा) में उक्त ग्रन्थ की प्रथम बार वाचना की। मुनिचन्द्रसूरि के शिष्य वाचनाचार्य अभयकुमार हुए जिन्होंने वि० सं० १२४८ में द्वितीय बार इस ग्रन्थ की वाचना की। इसी प्रकार वि० सं० १२५३, १२६५ और १२८० में भी इस ग्रन्थ की वाचना होने का इस प्रशस्ति में उल्लेख है। प्रशस्ति के अन्त में पं० अभयकुमारगणि को उक्त ग्रन्थ भेंट में देने की बात कही गयी है।[५]

इस प्रकार उक्त दोनों प्रशस्तियों में पं० अभयकुमार का नाम समान रूप से मिलता है। यद्यपि इन दोनों प्रशस्तियों के मध्य ६३ वर्षों की दीर्घ कालावधि (वि०सं० १२१७ से वि० सं० १२८०) का अन्तराल है, तथापि इतने लम्बे काल तक किसी भी व्यक्ति का सामाजिक या धार्मिक क्रियाकलापों में संलग्न रहना नितान्त असंभव नहीं लगता। चूंकि ब्रह्माणगच्छ सर्वसुविधासम्पन्न एक चैत्यवासी गच्छ था और ऐसा प्रतीत होता है कि पं० अभयकुमार की मुनिदीक्षा कम उम्र (अल्पायु) में हुई होगी और ये दीर्घायु भी हुए इसी कारण ब्रह्माणगच्छ के रंगमंच पर इनकी लम्बे समय तक पंडित, वाचनाचार्य और गणि के रूप में उपस्थित बनी रही।

वि० सं० १५२७ में लिखी गयी **नेमिनाथचरित्र** की प्रतिलेखन प्रशस्ति[६] में प्रतिलिपिकार ब्रह्माणगच्छीय हर्षमति ने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

शीलगुणसूरि
|
जगत्सूरि
|
हर्षमति (वि० सं० १५२७ – ई० स० १४७१ में **नेमिनाथचरित्र** के प्रतिलिपिकर्ता)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि एक श्रावक परिवार द्वारा उक्त प्रति श्री आनन्दविमलसूरि के प्रशिष्य और धनविमलगणि के शिष्य (शिव) विमलगणि को पठनार्थ प्रदान की गयी। आनन्दविमलसूरि किस गच्छ के थे इस बारे में कोई सूचना नहीं मिलती। प्रताप सिंह जी का मंदिर, रामघाट, वाराणसी में संरक्षित नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १५२० के लेख[७] में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में भी ब्रह्माणगच्छीय किन्हीं शीलगुणसूरि का नाम मिलता है जो समसामयिकता, नामसाम्य, गच्छसाम्य आदि बातों को देखते हुए उक्त प्रशस्ति में उल्लिखित शीलगुणसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं।

रसरत्नाकर की वि० सं० १५९८ में लिखी गयी प्रति की दाताप्रशस्ति[८] में प्रतिलिपिकार ब्रह्माणगच्छीय वाचक शिवसुन्दर ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

विमलसूरि
|
साधुकीर्ति
|
वा० शिवसुन्दर (वि० सं० १५९८ में **रसरत्नाकर** के प्रतिलिपिकार)

ब्रह्माणगच्छ में भावकवि[९] नामक एक रचनाकार हो चुके हैं। इनके द्वारा मरु-गुर्जर भाषा में रचित **हरिश्चन्द्ररास** और **अंबडरास** ये दो कृतियाँ मिलती हैं[१०]। इनकी प्रशस्तियों में इन्होंने अपने गुरु, प्रगुरु, गच्छ आदि का तो उल्लेख किया है। किन्तु रचनाकाल के बारे में वे मौन हैं। **अंबडरास** की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इन्होंने अपने शिष्य लक्ष्मीसागर के आग्रह पर इसकी रचना की थी[११]। **हरिश्चन्द्ररास** की वि० सं० १६०७ में लिखी गयी एक प्रति मुनि श्रीपुण्यविजय जी के संग्रह में उपलब्ध है[१२], जिसके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आधार पर इसका रचनाकाल वि० सं० की १६वीं शती माना जा सकता है। प्रशस्ति में उल्लिखित गुर्वावली इस प्रकार है -

बुद्धिसागरसूरि
|
विमलसूरि
|
गुणमाणिक्य
|
भावकवि (**अंबडरास** और **हरिश्चन्द्ररास** के रचनाकार)

बालावसही, शत्रुंजय में प्रतिष्ठापित धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १५७६ के लेख[१३] में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में विमलसूरि का नाम मिलता है जिन्हें समसामयिकता, नामसाम्य आदि के आधार पर उक्त दोनों प्रशस्तियों में उल्लिखित विमलसूरि से अभिन्न मानने में कोई बाधा दिखाई नहीं देती।

उक्त दोनों प्रशस्तियों के आधार पर विमलसूरि की शिष्य परम्परा की एक छोटी तालिका बनायी जा सकती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका-१

|

विमलसूरि (वि० सं० १५७६ - ई० स० १५२०)

|

साधुकीर्ति — गुणमाणिक्य

साधुकीर्ति
|
वा० शिवसुन्दर (वि० सं० १५९८- ई० स० १५४२ में **रसरत्नाकर** के प्रतिलिपिकार)

गुणमाणिक्य
|
भावकवि (**अंबडरास** और **हरिश्चन्द्ररास** के कर्ता)

युगादिदेवस्तवनम् की वि० सं० १६१०-ई० स० १५५४ में लिखी गयी प्रति की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार ब्रह्माणगच्छीय नयकुंजर ने स्वयं को गुणसुन्दरसूरि का शिष्य बतलाया है।

गुणसुन्दरसूरि
|
नयकुंजर (वि० सं० १६१०-ई० स० १५५४ में **युगादिदेवस्तवन** प्रतिलिपिकार)

ब्रह्माणगच्छ से सम्बद्ध १७वीं शताब्दी के प्रथम चरण का साक्ष्य होने से यह प्रशस्ति इस गच्छ के इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है ब्रह्माणगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य मिलते हैं जो वि० सं० ११२४ से वि० सं० १५९२ तक के हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	११२४	--	यशोभद्राचार्य, यशोवर्धन, वैरसिंह, जज्जगसूरि, प्रद्युम्नसूरि	प्रतिमा लेख	जैनमंदिर, रांतेज	**जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष २, पृ० ३८३, **प्राचीनजैनलेख-संग्रह**, मुनि जिनविजय, भाग-२, लेखांक ४६४
२.	११२४	-	यशोभद्रसूरि	-	वही	मुनि जिनविजय, वही, भाग २, लेखांक ४६३
३.	११२९		-	महावीर स्वामी की धातु प्रतिमा का लेख	वही	**जैनसत्यप्रकाश** वर्ष ९, पृ. ३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४.	११३४	फाल्गुन सुदि ७ गुरुवार	प्रद्युम्नसूरि संतानीय	महावीर स्वामी की प्रतिमा का लेख	चतुर्मुख विहार (आदिनाथ प्रासाद), अचलगढ	मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ४६५
५.	११४४	माघ सुदि ११	देवाचार्य	अस्पष्ट	नवलखा मंदिर पाली	पूरनचन्द नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग-१, लेखांक ८११
६.	११४४	माघ सुदि ११	देवाचार्य	–	वही	**प्राचीनजैनलेख-संग्रह**, भाग-२, लेखांक ३८२
७.	११६८	ज्येष्ठ वदि ३	आम्रदेवसूरि	एकतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, अजारी	**आबू**, भाग ५, लेखांक ४०३

v **लेखांक ५ और लेखांक ६ एक ही प्रतीत होते हैं, किन्तु दोनों में पाठभेद द्रष्टव्य है।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
८.	११७०	–	शालिभद्राचार्य	परिकर का लेख	जैनमंदिर, रांतेज	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४६८
९.	११८५	–	यशोभद्रसूरि	धातु की चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख	अनन्तनाथ जिनालय, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, जैन **धातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग २, लेखांक २९८
१०.	११८५	चैत्र सुदि १३	"	प्रतिमालेख	त्रैलोक्यदीपक जिनालय, रैनूपुर तीर्थ, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७०१
११.	११८८	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	श्रीपतट्टुतसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथजिनालय, लिंबडीपाड़ा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१२.	११९०	आषाढ सुदि ९	यशोभद्रसूरि	जिनप्रतिमा का लेख	शत्रुंजय	**सम्बोधि**, जिल्द ४, पृष्ठ १५, लेखांक ४
१३.	११९०	मिति विहीन	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	जिनप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीसनगर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५०६
१३(अ)	११९५	फाल्गुन सुदि ११	उद्योतनाचार्य-संतानीय	अरिष्टनेमि की प्रतिमा का लेख	घोघा	"घोघानी मध्यकालीन धातुप्रतिमा" लक्ष्मण भोजक, **निर्ग्रन्थ**, जिल्द १, पृष्ठ ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१४.	१२१३	फाल्गुन सुदि ६	वीरसूरि	पंचतीर्थी का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासा पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३२५
१५.	१२१७	वैशाख वदि १	प्रद्युम्नसूरि	धातुप्रतिमा लेख	वीरचैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक-२००
१६.	१२१९	मिति विहीन	,,	–	–	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १९
१७.	१२२१	वैशाख सुदि ११	विमलसूरि के संतानीय प्रद्युम्नसूरि	धातु की एकतीर्थी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, भणशाली शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१८.	१२२३	फाल्गुन वदि २ मंगलवार	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	अस्पष्ट	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३२
१९.	१२२४	अनुपलब्ध	प्रद्युम्नसूरि	महावीर प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	अगरचंद नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८७
२०.	१२२४	चैत्र वदि ५	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	धातुप्रतिमा के परिकर का लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, सिरोही	**अर्बुदाचल-प्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह** (**आबू**-भाग ५), लेखांक २४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२१.	१२३४	माघ सुदि ५	महेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवी पोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक ६२०
२२.	१२३५	फाल्गुन वदि २	प्रद्युम्नसूरि	महावीर की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १९
२३.	१२४२	चैत्र सुदि १५ शनि	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	दीवाल पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, वरमाण	**आबू**, भाग ५, लेखांक ११०
२४.	१२५९	वैशाखसुदि ४ बुधवार	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	कायोत्सर्ग प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, मंडार	वही, भाग ५, लेखांक ६५
२५.	१२६१	ज्येष्ठ सुदि २	जयप्रभसूरि	खंडित परिकर का लेख	जैन मंदिर, भारोल	**श्रीभारोलतीर्थ**, लेखक, मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
		रविवार				विशालविजय, लेखांक १
२६.	१२६३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	विमलसूरि	महावीर की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९२७
२७.	१२७०	वैशाख सुदि	प्रद्युम्नसूरि के संतानीय	नेमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ९३२
२८.	१२९०	वैशाखसुदि ६ रविवार	मुनिचन्द्रसूरि	त्रितीर्थी धातु-प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रोहिडा	**आबू**, भाग ५, लेखांक ५६२
२९.	१२९५	पोष वदि ५ गुरुवार	देवसूरि के प्रशिष्य माणिक्यसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
३०.	१३०२	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	लेख अपूर्ण होने से प्रतिष्ठापक का नाम नहीं मिलता	मूर्ति के साधन पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय अचलगढ़	**आबू**, भाग २ लेखांक ४९२
३१.	१३०५	फाल्गुन सुदि ५	वीरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, सलषणपुर	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४८७
३२.	१३०९	–	प्रद्युम्नसूरि	–	–	**जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष १८, पृ० २३७–३८
३३.	१३११	चैत्र वदि ७ बुधवार	जज्जगसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितानाथ जिनालय, कवीरपुरा, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
३४.	१३१६	वैशाख वदि.....	विमलसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, रांतेज	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ३४६
३५.	१३२०	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	जज्जगसूरि के पट्टधर वयरसेण उपाध्याय	महावीर स्वामी की प्रितमा का लेख	जैनमंदिर, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २०९८
३६.	१३२६	माघ वदि २ रविवार	बुद्धिसागरसूरि	नेमिनाथ की चौबीसी का लेख	जैनमंदिर, शंखेश्वर, अगल-बगल देवकुलिकाओं में स्थित प्रतिमाओं के लेख	मुनि जयन्तविजय, **शंखेश्वर महातीर्थ**, लेखांक २-३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
३७.	१३२६	माघ वदि २ रविवार	बुद्धिसागरसूरि	आदिनाथ की चौबीसी का लेख	वही	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५००
३८.	१३२७	चैत्र वदि ७ गुरुवार	मदनप्रभसूरि	धातुप्रतिमालेख	जैनमंदिर, मडार	**आबू**, भाग ५, लेखांक ६८
३९.	१३२८	वैशाख वदि ५ गुरुवार	विमलसूरि के पट्टधर बुद्धिसागरसूरि	धर्मनाथ की चौबीसी का लेख	जैनमंदिर, सेलवाड़ा, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३२२
४०.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	जज्जगसूरि	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, सलषणपुर	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४१.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	जज्जगसूरि	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४७०
४२.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	वीरसूरि	प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४७२
४३.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	वयरसेण उपाध्याय	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	भोंयरा स्थित प्राचीन परिकर का लेख, जैनमंदिर, सलषणपुर	वही, भाग २, लेखांक ४७८
४४.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	वीरसूरि	महावीर स्वामी की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४७९

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४५.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	जज्जगसूरि	शांतिनाथ चैत्य में जिनविम्ब प्रतिष्ठा का उल्लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४९०
४६.	१३३०	चैत्र वदि ७ शनिवार	,,	सुविधनाथ की प्रतिमा का लेख	मूलनायक पार्श्वनाथ की प्रतिमा के दोनों ओर स्थित प्रतिमाओं के लेख, जैनमंदिर, शंखेश्वर	वही, भाग २, लेखांक ४९७
४७.	१३३०	वैशाख सुदि ९ सोमवार	,,	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचासरा पार्श्वनाथ जिनालय, पाटण	वही, भाग २, लेखांक ५१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४८.	१३३०	वैशाख सुदि ९ सोमवार	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २ लेखांक ५१९
४९.	१३३९	चैत्र वदि २ शुक्रवार	वयरसेणोपाध्याय के शिष्य	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहता चौक, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग२, लेखांक १६९
५०.	१३३९	पौष वदि ९ सोमवार	बुद्धिसागरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ का पंचायती बड़ामंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ११३७
५१.	१३४०	-	मुनिचन्द्रसूरि	प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख	नया जैन मंदिर में भोयरा स्थित प्राचीन परिकर का लेख, सलषणपुर	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
५२.	१३४१	मिति विहीन	श्रीधरसूरि	तीर्थंकर प्रतिमा का लेख	वीर चैत्यालय के अन्तर्गत स्थित आदिनाथ चैत्यालय का लेख, जैनमंदिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १४९
५३.	१३४४	ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रवार	वीरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९९
५४.	१३४७	ज्येष्ठ वदि २	–	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	भोयरा स्थित प्राचीन परिकर का लेख, जैनमंदिर, सलषणपुर	जिनविजय, पूर्वोक्त-भाग २, लेखांक ४७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
५५.	१३४९	चैत्र वदि ६ रविवार	जज्जगसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४७३
५६.	१३४९	चैत्र वदि ६ रविवार	,,	अरिष्टनेमि की रत्न प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख	पंचासरा पार्श्वनाथ जिनालय, पाटण	वही, भाग २, लेखांक ५०२
५७.	१३५१	माघ वदि १ सोमवार	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम अनुपलब्ध	पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर स्थित कायोत्सर्ग प्रतिमा का लेख, वरमाण	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३२५
५८.	१३५१	तिथि/मिति अनुपलब्ध	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वरमाण	**आबू**, भाग ५, लेखांक ११२

v लेखांक ५६ और ५८ एक ही लेख प्रतीत होते हैं। दोनों लेखों की वाचनाओं में पाठभेद द्रष्टव्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
५९.	१३५१	पौष वदि ३ बुधवार	–	अम्बिका की मूर्ति का लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२३०
६०.	१३५५	तिथि विहीन	विमलसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, करेड़ा, मेवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९२२
६१.	१३५७	तिथि विहीन	वीरसूरि	धातुप्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १५८
६२.	१३५९	तिथि विहीन	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	वही, लेखांक १५८
६३.	१३६७	–	,,	धातुप्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, धनारी	**आबू**, भाग ५, लेखांक ५०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
६४.	१३७०	चैत्र वदि ५ शुक्रवार	जज्जगसूरि	महावीर स्वामी की पंचतीर्थी का लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ११२
६५.	१३७०	तिथि विहीन	भद्रेश्वरसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथमुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५१२
६६.	१३७०	पौष वदि ५ सोमवार	मुनिचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आबू, अनुपूर्ति लेख	**आबू**, भाग २, लेखांक ५४२
६७.	१३७१	तिथि विहीन	विमलसूरि	पंच परमेष्ठी की प्रतिमा की	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल,	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
				प्रतिष्ठा करने का उल्लेख	खंभात	लेखांक ८२९
६८.	१३७५	तिथि विहीन	मदनप्रभ के शिष्य विजयसेनसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, घीया मंडी, मथुरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४३४
६९.	१३८०	ज्येष्ठ सुदि १४ गुरुवार	बुद्धिसागरसूरि	वही	महावीर जिनालय, रिलीफ रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९९१
७०.	१३८०	वैशाख सुदि १० रविवार	विजयसेनसूरि	महावीर की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो, पाटण	वही, भाग १, लेखांक ३३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७१.	१३८२	वैशाख सुदि १४ गुरुवार	जज्जगसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०१३
७२.	१३८६	माघ वदि २	बुद्धिसागरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अनन्तनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक २९९
७३.	१३८७	वैशाख सुदि २ रविवार	जज्जगसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १७९
७४.	१३८८	वैशाख सुदि १५	बुद्धिसागरसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	मोतीसा का मंदिर, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७५.	१३८९	तिथि विहीन	गुणाकरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ देरासर, वीरमग्राम	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४८९
७६.	१३८९	वैशाख सुदि ८	वीरसूरि	धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३३०
७७	१३९३	माघ सुदि १५ शुक्रवारे	पद्मदेवसूरि	आदिनाथपंचतीर्थी का लेख	यति उपाश्रय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३८
७८.	१४०५	मार्गशीर्ष सुदि १	बुद्धिसागरसूरि	धातु की परिकरवाली शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, जीरावला	**आबू**, भाग ५, लेखांक ११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७९.	१४०५	वैशाख सुदि ३ सोमवार	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४०३
८०.	१४०५	–	बुद्धिसागरसूरि	धातुप्रतिमा लेख	प्राचीन जिनालय, लिंबडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ७०
८१.	१४०६	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	बुद्धिसागरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४०६
८१(अ)	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	विजयसेनसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
८२.	१४१०	माघ वदि २ सोमवार	,,	महावीर की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ६०
८३.	१४११	ज्येष्ठ वदि ९ शनिवार	लब्धिसागरसूरि	वैरुट्या देवी की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २२४
८४.	१४१२	आश्विन वदि ४ बुधवार	विजयसेनसूरि के शिष्य रत्नाकरसूरि	देवकुलिका का लेख	जीरावला तीर्थ	वही, लेखांक ३११
८५.	१४१७	ज्येष्ठ सुदि ९	विजयसेनसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
८६.	१४२०	वैशाख सुदि १० बुधवार	.......?	शांतिनाथ की पंचतीर्थी की लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**आबू**, भाग २, लेखांक ५७६
८७.	१४२५	वैशाख सुदि ११	बुद्धिसागरसूरि	धातुपंचतीर्थी का लेख	जैनमंदिर, जेतड़ा (थराद)	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ३७२
८८.	१४२६	द्वितीय वैशाख सुदि ९ रविवार	विजयसेनसूरि के पट्टधर रत्नाकरसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४७७
८९.	१४२६	वैशाख सुदि १० रविवार	बुद्धिसागरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
९०.	१४२९	माघ वदि ६ सोमवार	विजयसेनसूरि के शिष्य रत्नाकरसूरि	शांतिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक-४९३
९१.	१४२९	तिथि विहीन	सावदेवसूरि, बुद्धिसागरसूरि	शांतिनाथ की पञ्चतीर्थी का लेख	संभवनाथ जिनालय, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७४३
९२.	१४३२	वैशाख सुदि १२ गुरुवार	देवचंद्रसूरि	शांतिनाथ चौबीसी का लेख	आबू, अनुपूर्ति लेख	**आबू**, भाग २, लेखांक ५८८
९३.	१४३२	द्वितीय वैशाख	हेमतिलकसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
		वदि ११ सोमवार				
९४.	१४३३	तिथि विहीन	मुनिचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय कनासा पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३४१
९५.	१४३४	वैशाख वदि २ बुधवार	हेमतिलकसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**आबू**, भाग २, लेखांक ५९२
९६.	१४३४	वैशाख वदि २ बुधवार	मुनिचन्द्रसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	वही	वही, लेखांक ५९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
९७.	१४३५	फाल्गुन वदि १२ सोमवार	हेमतिलकसूरि	वासुपूज्य पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५१९
९८.	१४३७	–	रत्नाकरसूरि के पट्टधर हेमतिलकसूरि	धातु प्रतिमा लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ८२
९९.	१४३७	द्वितीय वैशाख वदि ११	,,	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११२३
१००.	१४३९	पौष वदि ९ सोमवार	बुद्धिसागरसूरि	शांतिनाथ पंचतीर्थी का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १६५ तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
						नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५७२
१०० (अ)	१४४०	–	रत्नाकरसूरि के पट्टधर हेमतिलकसूरि	महावीर की धातु-प्रतिमा का लेख	सिरोही	सोहनलाल पटनी, संपा० **अर्बुद-परिमंडल की जैन धातुप्रतिमायें एवं मंदिरावली**, पृष्ठ ५७, लेखांक ४४
१०१.	१४४१	फाल्गुन सुदि ९	प्रद्युम्नसूरि के शिष्य	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय,	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
		सोमवार	शीलगुणसूरि		चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	लेखांक ७७
१०२.	१४४५	फाल्गुन वदि ११ रविवार	विमलसूरि	संभवनाथ की चौबीसी का लेख	अनन्तनाथ जिनालय, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३०४
१०३.	१४४६	वैशाख वदि ११ बुधवार	मदनप्रभसूरि के पट्टधर भद्रेश्वरसूरि के पट्टधर विजयसेनसूरि पट्टधर रत्नाकरसूरिके पट्टधर हेमतिलकसूरि	स्तम्भ लेख	वीर जिनालय, वरमाण	**आबू**, भाग ५, लेखांक ११३; नाहर, पूर्वोक्त, भाग १,
१०४.	१४४७	फाल्गुन वदि ५	मुनिचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, छाणी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१०५.	१४४६	माघ वदि १२ गुरुवार	उदयाणंदसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६३१
१०६.	१४५०	ज्येष्ठ वदि ११ शनिवार	जहागर (जज्जिग) सूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ८३
१०७.	१४५४	माघ सुदि ८ शनिवार	हेमतिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९७३
१०८.	१४५४	माघ सुदि ८ शनिवार	,,	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१०८. (अ)	१४५६	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	बुद्धिसागरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ५७२
१०९.	१४५८	वैशाख वदि २ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, पाटडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ९८
११०.	१४५९	चैत्र वदि १	उदयाणंदसूरि	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा **का लेख**	खरतरगच्छीय बड़ा जिनालय, कलकत्ता	मुनि कान्तिसागर, संपा०, **जैनधातु-प्रतिमालेख**, लेखांक ६२
१११.	१४५९	चैत्र वदि १५ शनिवार	हेमतिलकसूरि के पट्टधर उदयाणंदसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
११२.	१४५९	चैत्र वदि १	उदयाणंदसूरि	पद्मप्रभ की धातु प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ पंचायती बड़ा मंदिर, बड़ाबाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५
११३.	१४५९	ज्येष्ठ वदि १० शनिवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५९०
११४.	१४६२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	,,	चन्द्रप्रभ की धातु-प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६०५
११५.	१४६५	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	देवेन्द्रसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडापार्श्वनाथ, जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
११६.	१४६६	माघ वदि १२ गुरुवार	उदयाणंदसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६३१
११७.	१४६६	वैशाख सुदि १० सोमवार	वीरसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११३५
११८.	१४६६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३९४
११९.	१४७१	माघ सुदि १३ बुधवार	उदयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलवसही, आबू	**आबू**, भाग २, लेखांक १७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१२०.	१४७१	माघ सुदि १० रविवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर वीरचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पद्मावती देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४१८
१२१	१४७१	माघ सुदि १३ बुधवार	उदयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, विमलवसही, आबू	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०१६
१२२.	१४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	वीरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ९९
१२३.	१४८१		उदयप्रभसूरि	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	ग्राम का जिनालय, चांदवाड़, नासिक	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१२४.	१४८३	ज्येष्ठ वदि ८ रविवार	वीरसूरि के पट्टधर मुनिचंद्रसूरि	नेमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २३
१२५.	१४८३	ज्येष्ठ सुदि ९ मंगलवार	वीरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१०१
१२६.	१४८४	वैशाख सुदि २ शुक्रवार	प्रद्युम्नसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ११०
१२७.	१४८७	पौष वदि ६	वीरसूरि	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा	नया मंदिर, शंखेश्वर महातीर्थ	**श्रीशंखेश्वर-महातीर्थ**, संपा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
		शुक्रवार		का लेख		मुनि विशालविजय, लेखांक १५
१२८.	१४८६	–	वीरसूरि	धातुप्रतिमा लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मांडल	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३१६
१२९.	१४८९	वैशाख सुदि ३	पजून(प्रद्युम्न)सूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३०४
१३०.	१४८९	वैशाख सुदि ३ बुधवार	क्षमासूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१३१.	१४९०	वैशाख सुदि ३ सोमवार	वीरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७४८
१३२.	१४९१	माघ सुदि ५ बुधवार	उदयप्रभसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, पामेरा	**आबू**, भाग ५, लेखांक ८२८
१३३.	१४९२	पौष वदि ... शनिवार	वीरसूरि	विमलनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५०८
१३४.	१४९३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	बुद्धिसागरसूरि के शिष्य श्रीसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१३५.	१४९३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	जज्जगसूरि के पट्टधर पजूनसूरि	नेमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८२८
१३६.	१४९३	वैशाख वदि ११ मंगलवार	मुनिचन्द्रसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १६१
१३७.	१४९५	आषाढ़ सुदि ९ रविवार	जज्जगसूरि के शिष्य प्रद्युम्नसूरि	धर्मनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १४
१३७. (अ)	१४९७	आषाढ़ सुदि ८ सोमवार	मुनिचन्द्रसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	धनवसही, बाबूमंदिर तलहटी, पालिताना	कांतिसागर, संपा०, **शत्रुंजयवैभव**, लेखांक ८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१३८.	१४९८	–	,,	–	आदिनाथ जिनालय, नदियाड़	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३९०
१३९.	१५००	वैशाख सुदि ३	विमलसूरि	शीतलनाथ पंचतीर्थी का लेख	जैन मंदिर, सराफाबाजार लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३६८
१४०.	१५०१	वैशाख सुदि ७ बुधवार	प्रद्युम्नसूरि	मुनिसुव्रत स्वामी की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १८८
१४१.	१५०१	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	उदयप्रभसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१४२.	१५०१	माघ सुदि ५ बुधवार	मुनिचन्द्रसूरि	धातुप्रतिमा लेख	शांतिनाथ जिनालय, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक १७८
१४३.	१५०१	माघ सुदि ५ बुधवार	उदयप्रभसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८५३
१४४.	१५०१	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	पजून (प्रद्युम्न)सूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ९१
१४४अ.	१५०१	-	हेमतिलकसूरि वीरचन्द्र- जयाणंद मुनितिलकसूरि	पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, सादड़ी,	अरविन्द कुमार सिंह, चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर के तीन जैन प्रतिमा लेख -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
						Aspects of Jainology Vol. III, P. 172-173
१४५.	१५०३	ज्येष्ठ वदि ७	पजून (प्रद्युम्न) सूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १६०९
१४६.	१५०४	–	मणिचन्द्र (मुनिचन्द्र) सूरि	–	–	**जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ६, पृ० ३७२-७४
१४७.	१५०५	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	वीरसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१४८.	१५०५	पौष वदि ७ गुरुवार	विमलसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २०९
१४९.	१५०५	वैशाख सुदि ५	मुनिचन्द्रसूरि	विमलनाथ की चौबीसी का लेख	अजितनाथ देरासर, शेख पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १०६३
१५०.	१५०६	फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार	उदयप्रभसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९०८
१५१.	१५०६	फाल्गुन सुदि ५ शुक्रवार	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१५२.	१५०६	चैत्र वदि १ रविवार	बुद्धिसागरसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८०८
१५३.	१५०६	माघ सुदि ५ रविवार	वीरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २४३
१५४.	१५०७	फाल्गुन वदि ११ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक १४८
१५५.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि ११ सोमवार	विमलसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१५६.	१५०९	माघ सुदि २ गुरुवार	पजून (प्रद्युम्न) सूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १९८
१५७	१५१०	ज्येष्ठ सुदि १०	बुद्धिसागरसूरि विमलसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय, पालिताना	**शत्रंजयवैभव**, लेखांक १२८
१५८.	१५१०	फाल्गुन सुदि ११ शनिवार	,,	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	अष्टापदजी का मंदिर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१६८
१५९.	१५१०	फाल्गुन सुदि ११ शनिवार	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१६०.	१५१०	माघ सुदि ५ शुक्रवार	,,	,,	महावीर स्वामी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १३५६
१६१.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	पजूनसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०७
१६२.	१५११	फाल्गुन वदि २ सोमवार	उदयप्रभसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ५५
१६३.	१५११	माघ सुदि ९ सोमवार	मुनिचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ९७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१६४.	१५११	पौष वदि ५ बुधवार	विमलसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, माणिकतल्ला, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११७
१६५.	१५११	पौष वदि ५ बुधवार	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भोंयरा शेरी, राधनपुर	मुनिविशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १६९
१६६.	१५११	पौष वदि १३ शुक्रवार	मुनिचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, विजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२६
१६७.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	श्रीमालों का मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१६८.	१५११	माघ वदि २ सोमवार	उदयप्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९५१
१६९.	१५११	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६८
१७०.	१५१२	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११२५
१७१.	१५१३.	पौष वदि ५ रविवार	विमलसूरि	पार्श्वनाथ की देहरी का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ देरासर, पटोलीया पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१७२.	१५१३	फाल्गुन वदि १२ सोमवार	उदयप्रभसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५२५
१७३.	१५१३	माघ सुदि ५ शुक्रवार	मुनिचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३
१७४.	१५१३	पौष सुदि ७	उदयप्रभसूरि (ब्रह्माणगच्छीय) एवं पूर्णचन्द्रसूरि के पट्टधर तपागच्छीय हेमहंससूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१७५.	१५१५	आषाढ सुदि ५ बुधवार	उदयप्रभसूरि	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी का लेख	जैन मंदिर, जूनीया	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५४४
१७६.	१५१५	कार्तिक वदि ५ गुरुवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५५७
१७७.	१५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	नवखंडापार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३००
१७८.	१५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	,,	नेमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, जूनागढ़	वही, लेखांक २९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१७९.	१५१६	वैशाख वदि १	श्रीसूरि (?)	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४८०
१८०.	१५१६	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर वीरसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, चूड़ी वाली गली, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५५१
१८१.	१५१६	,,	बुद्धिसागरसूरि के पट्टधर विमलसूरि	जीवंतस्वामी शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथदेरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०८१
१८३.	१५१७	माघ सुदि १० बुधवार	प्रद्युम्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१८४.	१५१७	चैत्र सुदि १० गुरुवार	उदयप्रभसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, जूनीमंडी, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५८८
१८५.	१५१८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, कोचरों का मुहल्ला, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५५८
१८६.	१५१८	माघ सुदि ४ बुधवार	विमलसूरि	धर्मनाथ पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, अजीमगंज, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०११
१८७.	१५१८	माघ सुदि ६ बुधवार	वीरसूरि	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१८८.	१५१९	कार्तिक वदि ४ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर वीरसूरि	अजितनाथ की चौबीसी का लेख	धर्मनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०४
१८९.	१५१९	माघ सुदि ५ सोमवार	विमलसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १२६९
१९०.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	,,	धर्मनाथ पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, अजबगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५९५
१९१.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	उदयप्रभसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	आबू, भाग २, लेखांक ६४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१९२.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	विमलसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३४५
१९३.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	,,	मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा का लेख	पोरवाडों का मंदिर, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३३८
१९४.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	,,	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	वही, लेखांक ३३९
१९५.	१५१९	माघ सुदि ५ सोमवार	,,	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ामंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१९६.	१५१९	फाल्गुन वदि ४ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर वीरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, प्रेमचद मोदी की टोंक, शत्रुंजय	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६९३
१९७.	१५२०	माघ वदि १० गुरुवार	श्रीसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८१६
१९८.	१५२०	पौष सुदि १३ शुक्रवार	शीलगुणसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	कुशलाजी का मंदिर, रामघाट, वाराणसी	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२२
२००.	१५२१	चैत्र वदि ९ शुक्रवार	विमलसूरि	अभिनंदनस्वामी की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२०१.	१५२२	मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुवार	वीरसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३६०
२०२.	१५२२	ज्येष्ठ वदि ७ गुरुवार	,,	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११२०
२०३.	१५२३	वैशाख वदि ४ गुरुवार	,,	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९०१
२०४.	१५२३	वैशाख सुदि १३	विमलसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	भीड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२०५.	१५२४	चैत्र वदि ६ बुधवार	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६८९
२०६.	१५२४	चैत्र सुदि ५ शनिवार	वीरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६३७
२०७.	१५२४	वैशाख सुदि २ शनिवार	विमलसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ का मंदिर, भारज, सिरोही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०८८ तथा **आबू**, भाग ५, लेखांक ६१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२०७ अ.	१५२४	,,	,,	,,	महावीर जिनालय, रिची रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ९५६
२०८.	१५२५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	वीरसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २४०
२०९.	१५२५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	,,	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ८७
२१०.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७ शनिवार	,,	शांतिनाथ की चौबीसी का लेख	वीर चैत्य, थराद	वही, लेखांक २५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२११.	१५२७	तिथि विहीन	उदयप्रभसूरि	सुमतिनाथ पंचतीर्थी का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६९९
२१२.	१५२८	–	वीरसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८२५
२१३.	१५२८	–	बुद्धिसागरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमाका लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९००
२१४.	१५२८	वैशाख वदि ५ गुरुवार	विमलसूरि के पट्टधर बुद्धिसागरसूरि	धर्मनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, सेलवाड़ा	**आबू**, भाग ५, लेखांक १८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२१५.	१५२८	वैशाख सुदि ४ बुधवार	उदयप्रभसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०५७
२१६.	१५२८	मार्गशीर्ष सुदि २	बुद्धिसागरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, डग	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०७
२१७.	१५२८	मार्गशीर्ष सुदि २	,,	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	,,	वही, लेखांक ७०८
२१८.	१५२८	माघ सुदि १ बुधवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२१९.	१५३०	फाल्गुन वदि २	उदयप्रभसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	मुनि कान्तिसागर, संपा०, **शत्रुंजय-वैभव**, लेखांक २०६
२२०.	१५३०	फाल्गुन वदि १३ सोमवार	उदयप्रभसूरि के पट्टधर राजसुन्दरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४४१
२२१.	१५३१	वैशाख सुदि ३ शनिवार	वीरसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भोंयरा शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २७५
२२२.	१५३२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	विमलसूरि के पट्टधर बुद्धिसागरसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२२३.	१५३६	पौष वदि २ गुरुवार	बुद्धिसागरसूरि	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९४६
२२४.	१५३६	,,	वीरसूरि	जीवितस्वामी सुमतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ९२३
२२५.	१५३६	मार्गशीर्ष सुदि ९ शुक्रवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	गांव का जिनालय, चांदवड़, नासिक (महा०)	मुनि कान्तिसागर, संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेख**, लेखांक २३५
२२६.	१५४०	वैशाख सुदि १० बुधवार	बुद्धिसागरसूरि	पद्मप्रभ की पंचतीथी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सूरतगढ़	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२२७.	१५५९	वैशाख सुदि १३ सोमवार	विमलसूरि के पट्टधर बुद्धिसागरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का आलेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८८
२२८.	१५६३	वैशाख सुदि १२ गुरुवार	जाजीग(जज्जग)सूरि	आदिनाथ की प्रमिका का लेख	आदिनाथ जिनालय, डीसा	वही, भाग ३, लेखांक २०९७
२२९.	१५७३	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	विमलसूरि के पट्टधर बुद्धिसागरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	वही, भाग ३, लेखांक २३६३
२३०.	१५७६	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	विमलसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२३१.	१५७७	वैशाख सुदि ११ गुरुवार	विमलसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	ऋषभदेव जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २४३०
२३२.	१५७९	फागुन सुदि ८ गुरुवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर वीरसूरि	कुंथुनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गोपटी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग२, लेखांक ७०४
२३३.	१५८९	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	बुद्धिसागरसूरि के पट्टधर विमलसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, खारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०६१
२३४.	१५९२	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	श्रीसूरि	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	झवेरी फतेभाई अमीचंद का घर देरासर, बडोदरा	वही, भाग २, लेखांक २४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की छोटी-छोटी कुछ तालिकायें निर्मित की जा सकती हैं, जो इस प्रकार हैं :

तालिका-२

वीरसूरि (वि० सं० १२१३)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि० सं० १२९०)
|
वीरसूरि (वि० सं० १३०५-१३३०)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि० सं० १३४७-१३७०)
|
वीरसूरि (वि० सं० १३५९-१३८९)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि० सं० १४३३-१४५८)
|
वीरसूरि (वि० सं० १४६६-१४८३)
|
मुनिचन्द्रसूरि (वि० सं० १४८३-१५१३)
|
वीरसूरि (वि० सं० १५१६-१५३६)
|
(मुनिचन्द्र)
|
वीरसूरि (वि० सं० १५६८)

तालिका-३

मदनप्रभसूरि (वि० सं० १३२७)
|
भद्रेश्वरसूरि (वि० सं० १३७०)
|
विजयसेनसूरि (वि० सं० १३७५-१३८०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
रत्नाकरसूरि (वि० सं० १४१२-१४२९)
|
हेमतिलकसूरि (वि० सं० १४३२-१४५४)
|
उदयाणंदसूरि (वि० सं० १४४६-१४७१)

तालिका-४

?
|
विमलसूरि (वि० सं० १३१६)
|
बुद्धिसागरसूरि (वि० सं० १३२६-१३३९)
|
विमलसूरि (वि० सं० १३५५)
|
बुद्धिसागरसूरि (वि० सं० १३८०)
|
(विमलसूरि)
|
बुद्धिसागरसूरि (वि० सं० १४०५-१४३९)
|
(विमलसूरि)
|
(बुद्धिसागरसूरि)
|
विमलसूरि (वि० सं० १५००-१५२४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

बुद्धिसारसूरि (वि० सं० १५२८-१५५९)

|

विमलसूरि (वि० सं० १५७६-१५८९)

तालिका-५

?

|

जज्जगसूरि

प्रद्युम्नसूरि (वि० सं० १२१७-१२३५)

जज्जगसूरि (वि० सं० १२३४)

प्रद्युम्नसूरिसंतानीय

(प्रद्युम्नसूरि)

(जज्जगसूरि)

(प्रद्युम्नसूरि)

जज्जगसूरि (वि०सं० १३३०-१३४९)

(प्रद्युम्नसूरि)

जज्जगसूरि (वि० सं० १३८७)

(प्रद्युम्नसूरि)

(जज्जगसूरि)

प्रद्युम्नसूरि (वि० सं० १४८९-१५१७)

(जज्जगसूरि)

(प्रद्युम्नसूरि)

जज्जगसूरि (वि० सं० १६६३)

चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, सादड़ी (राजस्थान) में प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १५०१/ई० स० १४४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के लेख में हेमतिलकसूरि, वीरचन्द्रसूरि, जयाणंदसूरि तथा प्रतिष्ठाकर्ता मुनितिलकसूरि के नाम अंकित हैं।

डॉ० अरविन्दकुमार सिंह ने इस लेख की वाचना दी है[१५], जो इस प्रकार है :

१. संवत् १५०१ वर्षे श्रीपार्श्वनाथः (प्रतिमा) स्थापितः

२. ने (?) ने (न) डूलाई प्रासा (द) ++ न परिन ++ श्रावके

३. छे श्री हेमतिलक सूरितः। तत् पट्टे श्री वीरचन्द्र सू (रि) ++देम त.

४. (श्री) जयाणंद सूरि प्रतिष्ठित गछनायक

५. (श्री) मुनि तिलक सूरि श्रा० ....

६. ....

वीर जिनालय, वरमाण से प्राप्त एक स्तम्भ लेख[१६] जो वि० सं० १४४६/ई० स० १३९० का है, में ब्रह्माणगच्छीय कुछ मुनिजनों की गुर्वावली दी गयी है, जो इस प्रकार है :

मदनप्रभसूरि
|
भद्रेश्वरसूरि
|
विजयसेनसूरि
|
रत्नाकरसूरि
|
हेमतिलकसूरि

सादड़ी से प्राप्त उक्त लेख में भी हेमतिलकसूरि का नाम मिलता है। जैसा कि पूर्व में हम देख चुके हैं वि० सं० १४३२ से १४५४ तक के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभिन्न लेखों में हेमतिलकसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में नाम मिलता है। ऐसा संभव है कि वि० सं० १५०१/ई० स० १४४५ के लेख में उल्लिखित हेमतिलकसूरि और ब्रह्माणगच्छीय हेमतिलकसूरि एक ही व्यक्ति हों। ऐसा मान लेने पर ब्रह्माणगच्छ के तीन पश्चात्कालीन मुनिजनों के नाम उक्त अभिलेख ज्ञात हो जाते हैं जिन्हें तालिका के रूप में इस प्रकार रखा ज़ा सकता है :

तालिका-६

?
|
मदनप्रभसूरि (वि०सं० १३२७) प्रतिमालेख
|
भद्रेश्वरसूरि (वि०सं० १३७०) प्रतिमालेख
|
विजयसेनसूरि (वि०सं० १३७५-१३८०) प्रतिमालेख
|
रत्नाकरसूरि (वि० सं० १४१२-१४२९) प्रतिमालेख
|
हेमतिलकसूरि (वि० सं० १४३२-१४५४) प्रतिमालेख
|

उदयानंदसूरि (वि०सं० १४४६-१४७१) प्रतिमालेख	वीरचन्द्रसूरि
	|
	जयाणंदसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

मुनितिलकसूरि
(वि० सं० १५०१/ई०स०
१४४५ में नाड़लाई
स्थित पार्श्वनाथ जिनालय
में प्रतिमा प्रतिष्ठापक)

ब्रह्माणगच्छीय अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित इस गच्छ के अनेक मुनिजनों में कुछ को छोड़कर अन्य मुनियों के पूर्वापर सम्बन्धों एवं उपलब्धियों के बारे में किन्ही भी साक्ष्यों से किसी भी प्रकार की कोई जानकारी नहीं मिलती। इन मुनिजनों की नामावली एवं तिथि इस प्रकार है :

यशोभद्रसूरि	(वि० सं० ११२४ / ई० स० १०६८)
देवाचार्य	(वि० सं० ११४४ / ई० स० १०८८)
आम्रदेवसूरि	(वि० सं० ११६८ / ई० स० १११२)
शालिभद्रसूरि	(वि० सं० ११७० / ई० स० १११४)
महेन्द्रसूरि	(वि० सं० १२३४ / ई० स० ११७८)
जयप्रभसूरि	(वि० सं० १२६१ / ई० स० १२०५)
देवसूरि के प्रशिष्य	
माणिक्यसूरि	(वि० सं० १२९५ / ई० स० १२३९)
जज्जगसूरि के शिष्य	
वयरसेण उपाध्याय	(वि० सं० १३२०-१३३० / ई०स० १२६४-१२७४)
श्रीधरसूरि	(वि० सं० १३४१ / ई० स० १२८५)
भद्रेश्वरसूरि	(वि० सं० १३७० / ई० स० १३१४)
गुणाकरसूरि	(वि० सं० १३८९ / ई० स० १३२३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्मदेवसूरि	(वि०सं० १३९३ / ई० स० १३३७)
सावदेवसूरि के पट्टधर	
बुद्धिसागरसूरि	(वि० सं० १४२९ / ई० स० १३६३)
लब्धिसागरसूरि	(वि० सं० १४११ / ई० स० १३५६)
देवचन्द्रसूरि	(वि० सं० १४३२ / ई० स० १३६६)
प्रद्युम्नसूरि के शिष्य	
शीलगुणसूरि	(वि० सं० १४४१ / ई० स० १३८५)
देवेन्द्रसूरि	(वि० सं० १४६५ / ई० स० १४०९)
उदयप्रभसूरि	(वि० सं० १४८१-१५२८ / ई० स० १४२५-१४७२)
क्षमासूरि	(वि० सं० १४८९ / ई० स० १४३३)
शीलगुणसूरि	(वि० सं० १५२० / ई० स० १४६४)
उदयप्रभसूरि के पट्टधर	
राजसुन्दरसूरि	(वि० सं० १५३० / ई० स० १५७४)

विक्रम संवत् की १८वीं शती के छठे दशक के पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध अद्यावधि कोई भी साक्ष्य प्राप्त न होने से यह अनुमान किया जा सकता है कि इस समय के पश्चात् यह गच्छ नामशेष हो गया होगा। संभवत: इसकी मुनिपरम्परा समाप्त हो गयी और इसके अनुयायी श्रावक-श्राविकायें किन्हीं अन्य गच्छों की सामाचारी का पालन करने लगे होंगे। यह गच्छ कब और किस कारण अस्तित्व में आया ? इसके आदिम आचार्य या प्रवर्तक कौन थे ? प्रमाणों के अभाव में ये सभी प्रश्न आज भी अनिर्णित ही रह जाते हैं।

सन्दर्भसूची

१. मुनि जयन्तविजय, **अर्बुदाचलप्रदक्षिणा, (आबू**-भाग ४), भावनगर वि०सं० २००४, पृष्ठ ८१-८७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. (१) संवत् ११९२ ज्येष्ठ सुदि

(२) (ति) अवंतीनाथ श्रीजयसिंहदेव कल्याण विजयराज्ये एवं काले प्रवर्तमाने।

इहैव पा.........................ग्रामे........................

(३) लिषिते साधु साध्वी श्रावक श्राविकाचरणाकृते। श्रीब्रह्माणीयगच्छे श्रीविमलाचार्य शिष्य श्रावक आ व टि श................

(४) तिहई साढदेव आंवप्रसाद आंबवीर श्रावक .... यक नवपदलघुवृत्ति-पूजाष्टकपुस्तिका श्राविका वाल्हविजसदेवि दूल्हेवि श्रीयादेवि सरली वालमत.................................... समस्त श्राविका नाणपंचमी तपकृत निर्जरार्थं च लिषापिता अर्पिता च अत्रस्थित साध्वी मीनागणि नंदागणि तस्य सिसिणी लषमी देमत..................... । मुनि जिनविजय, संपा०, **जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १८, मुम्बई १९४३ ई० स० पृष्ठ. १०३

३. Muni PunyaVijaya, Ed. *New Catalogue of Prakrit & Sanskrit Mss. Jesalmer Collection,* L.D. Series No. 36, Ahmedabad 1972 A.D. P. 99-101.

४. Ibid, P-85-87

५. पण्डिताभयकुमारगणये पुस्तकं ददे। वाचनार्थं जयत्येदं स्वमात्रोः पुण्यवृद्धये ॥२४॥ Ibid, P-87

६. श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा०, **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, श्री जैन साहित्य प्रदर्शन, श्री देशविरति धर्माराजक समाज, अहमदाबाद वि० सं० १९९३, भाग २, पृष्ठ ३१.

७. पूरनचंद नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४२२.

८. इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथसिद्धविरचिते **रसरत्नाकरे** मन्वखण्डे मोहनाद्युच्चाटनं नाम नवमोपदेशः।

संवत् १५९८ वर्षे आसो वदि १० गुरु। श्रीब्रह्माणगच्छे पूज्यभट्टारकश्री ६ विमलसूरि वा० श्रीसाधुकीर्ति-तत्शिष्येण वा० शिवसुन्दरलक्षि (लिखि) तं परोपकाराय मंगल्य (ल) श्रेयसे भवतु ॥ वढीआरमद्धे (ध्ये) बोलिराग्रामे चातुर्मासिके स्थिता लक्षि (लिखि) तम्

A. P. Shah. Ed. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Muni Shree PunyaVijayaJi's Collection*, Part II, L.D. Series No. 5, Ahmedabad 1965 A.D., P. 270, No. 4627.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९-१०. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग१, द्वितीय संशोधित संस्करण, संपादक, डा० जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८६ ई० स०, पृष्ठ ३७६-३७७.

११. उवझाय भावक कहि, रखे कोइनि हिणंति ।

शिष्य ज लख्यमीसागरह, कारण करिउ प्रबंध ॥

....

वही, भाग १, पृष्ठ ३७९.

१२. Vidhartri Vora, Ed. *Catalogue of Gujarati Manuscripts : Muni Shree Punyavijayaji's Collection*, L.D. Series No. 71 Ahmedabad 1978 A.D. p. 641.

१३. मुनि कांतिसागर, संपा०, **शत्रुंजयवैभव**, कुशल संस्थान, पुष्प१, जयपुर १९९० ई०, लेखांक २७३.

१४. संवत् १६१० वर्षे श्री बृहद्ब्रह्माणीयागच्छे भट्टारक श्री ५ श्री गुणसुन्दरसूरि शिष्य गणि नयकुंजर लषतं श्रीमोहणग्रामे फागुण वदि ५ शुक्रवासरे ॥

युगादिदेवस्तवनम् की प्रतिलेखनप्रशस्ति

श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ १०९.

१५. अरविन्द कुमार सिंह, चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर का तीन जैन प्रतिमा लेख *Aspects of Jainology*, Vol. III, Ed. M. A. Dhaky and S.M. Jain, Varanasi 1991 A.D., Pp. 172-173.

१६. संवत् १४४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्माणगच्छीय भट्टारक श्रीमदनप्रसूरि पट्टे श्रीनंदीश्वरसूरि पट्टे श्रीविजयसेनसूरि पट्टे श्रीरत्नाकरसूरिपट्टेश्रीहेमतिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयार्थं रंगमंडपः कारापितः ॥, पूरनचन्द नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९६८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहद्गच्छ का संक्षिप्त इतिहास

सातवीं शताब्दी में प्रश्चिम भारत में निर्ग्रन्थ श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जो चैत्यवास की नींव पड़ी वह आगे की शताब्दियों में उत्तरोत्तर दृढ होती गयी और परिणामस्वरूप अनेक आचार्य एवं मुनि शिथिलाचारी हो गये। इनमें से कुछ ऐसे भी आचार्य थे जो चैत्यवास के विरोधी और सुविहितमार्ग के अनुयायी थे। चौलुक्य नरेश दुर्लभराज [वि० सं० १०६७-७८/ई० सन् १०१०-२२] की राजसभा में चैत्यवासियों और सुविहितमार्गियों के मध्य जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसमें सुविहितमार्गियों की विजय हुई। इन सुविहितमार्गियों में बृहद्गच्छ के आचार्य भी थे।

बृहद्गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये भी हमारे पास दोनों प्रकार के साक्ष्य हैं -

१. साहित्यिक २. अभिलेखिक

साहित्यिक साक्ष्यों को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है, प्रथम तो ग्रन्थों एवं पुस्तकों की प्रशस्तियाँ और द्वितीय गच्छों की पट्टावलियाँ, गुर्वावलियाँ आदि।

यहां उक्त सक्ष्यों के आधार पर बृहद्गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

वडगच्छ /बृहद्गच्छ के उल्लेख वाली प्राचीनतम प्रशस्तियाँ १२वीं शताब्दी के मध्य की हैं। इस गच्छ के उत्पत्ति के विषय में चर्चा करने वाली सर्वप्रथम प्रशस्ति वि० सं० १२३८/ई० सन् ११८२ में बृहद्गच्छीय वादिदेवसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि द्वारा रचित **उपदेशमालाप्रकरणवृत्ति**[१] की है, जिसके अनुसार आचार्य उद्योतनसूरि ने आबू की तलहटी में स्थित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्माण नामक सन्निवेश में न्यग्रोध वृक्ष के नीचे सात ग्रहों के शुभ लग्न को देखकर सर्वदेवसूरि सहित आठ मुनिजनों को आचार्यपद प्रदान किया। सर्वदेवसूरि वडगच्छ के प्रथम आचार्य हुये। तत्पश्चात् तपागच्छीय मुनिसुन्दरसूरि द्वारा रचित **गुर्वावली**[२] (रचनाकाल वि० सं० १४६६ /ई० सन् १४९०), हरिविजयसूरि के शिष्य धर्मसागरसूरि द्वारा रचित **तपागच्छपट्टावली**[३] [रचनाकाल वि० सं० १६४८/ई० सन् १५९१] बृहद्गच्छीय भावरत्नसूरि के शिष्य पुण्यरत्न द्वारा वि० सं० १६२० में रचित **बृहद्गच्छगुर्वावली**[३A] और मुनिमाल द्वारा रचित **बृहद्गच्छगुर्वावली**[४] [रचनाकाल वि० सं० १७५१/ई० सन् १६९४]; के अनुसार "वि० सं० ९९४ में अर्बुदगिरि के तलहटी में टेली नामक ग्राम में स्थित वटवृक्ष के नीचे सर्वदेवसूरि सहित आठ मुनियों को आचार्य पद प्रदान किया गया। इस प्रकार निर्ग्रन्थ श्वेताम्बर संघ में एक नये गच्छ का उदय हुआ जो वटवृक्ष के नाम को लेकर वटगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।" चूंकि वटवृक्ष के शाखाओं-प्रशाखाओं के समान इस गच्छ की भी अनेक शाखायें-प्रशाखायें हुई, अतः इसका एक नाम बृहद्गच्छ भी पड़ा।

गच्छ निर्देश सम्बन्धी धर्माण सन्निवेश के सम्बन्ध में दो दलीलें पेश की जा सकती हैं-

प्रथम यह कि उक्त मत एक स्वगच्छीय आचार्य द्वारा उल्लिखित है और दूसरे १५वीं शताब्दी के तपागच्छीय साक्ष्यों से लगभग दो शताब्दी प्राचीन भी है अतः उक्त मत को विशेष प्रामाणिक माना जा सकता है।

जहाँ तक धर्माण सन्निवेश का प्रश्न है आबू के निकट उक्त नाम का तो नहीं बल्कि **वरमाण** नामक स्थान है, जो उस समय भी जैन तीर्थ के रूप में मान्य रहा। अतः यह कहा जा सकता है कि लिपि-दोष से वरमाण की जगह धर्माण हो जाना असंभव नहीं।

सबसे पहले हम वडगच्छीय आचार्यों की गुर्वावली को, जो ग्रन्थ प्रशस्तियों, पट्टावलियों एवं अभिलेखों से प्राप्त होती है, इकत्र कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्यावंशवृक्ष बनाने का प्रयास करेंगे । इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम हम वडगच्छ के सुप्रसिद्ध आचार्य नेमिचन्द्रसूरि द्वारा रचित **आख्यानकमणिकोश,**[५] (रचनाकाल ई० सन् ११ वीं शती का प्रारम्भिक चरण) की उत्थानिका में उल्लिखित बृहद्गच्छीय आचार्यों की विद्यावंशावली का उल्लेख करेंगे, जो इस प्रकार है ।[६]

अब हम **उत्तराध्ययनसूत्र की सुखबोधा टीका**[७] (रचनाकाल वि० सं० ११२९/ई० सन् १०७२) में उल्लिखित नेमिचन्द्रसूरि के इस वक्तव्य पर विचार करेंगे कि ग्रन्थकार ने अपने गुरुभ्राता मुनिचन्द्रसूरि के अनुरोध पर उक्त ग्रन्थ की रचना की ।

मुनिचन्द्रसूरि ने स्वरचित ग्रन्थों में जो गुरु परम्परा दी है, उससे ज्ञात होता है कि उनके गुरु का नाम यशोदेव और दादागुरु का नाम सर्वदेव[८] था । प्रथम तालिका में उद्योतनसूरि 'द्वितीय' के समकालीन जिन ५ आचार्यों का उल्लेख है, उनमें से चौथे आचार्य का नाम देवसूरि है । ये देवसूरि मुनिचन्द्रसूरि के प्रगुरु सर्वदेवसूरि से अभिन्न हैं ऐसा प्रतीत होता है । इस प्रकार नेमिचन्द्रसूरि और मुनिचन्द्रसूरि परस्पर सतीर्थ्य सिद्ध होते हैं ।

मुनिचन्द्रसूरि का शिष्य परिवार बड़ा विशाल था । इनके ख्यातिनाम शिष्यों में देवसूरि[९], मानदेवसूरि[१०] और अजितदेवसूरि[११] के नाम मिलते हैं । इसी प्रकार देवसूरि (वादिदेव सूरि) के परिवार में भद्रेश्वरसूरि, रत्नप्रभसूरि, विजयसिंहसूरि आदि शिष्यों एवं प्रशिष्यों का उल्लेख मिलता है ।[१२] इसी प्रकार वादिदेवसूरि के गुरुभ्राता मानदेवसूरि के शिष्य जिनदेवसूरि और उनके शिष्य हरिभद्रसूरि का नाम मिलता है ।[१३] वादिदेवसूरि के तीसरे गुरुभ्राता अजितदेवसूरि के शिष्यों में विजयसेनसूरि और उनके शिष्य सुप्रसिद्ध सोमप्रभाचार्य भी हैं ।[१४] मुनिचन्द्रसूरि के शिष्य परिवार का जो वंशवृक्ष बनता है, वह इस प्रकार है[१५]-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिचनद्रसूरि द्वारा रचित **महावीरचरियं** [रचनाकाल वि० सं० ११४१/ई० सन् १०८४] की प्रशस्ति में वडगच्छ को चन्द्रकुल से उत्पन्न माना गया है,[१६] अतः समसामयिक चन्द्रकुल [जो पीछे चन्द्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ] की आचार्य परम्परा पर भी एक दृष्टि डालना आवश्यक है। चन्द्रगच्छ में प्रख्यात वर्धमानसूरि, जिनेश्वरसूरि, बुद्धिसागरसूरि, नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि आदि अनेक आचार्य हुए। आचार्य जिनेश्वर जिन्होंने चौलक्य नरेश दुर्लभराज की सभा में चैत्यवासियों को शास्त्रार्थ में परास्त कर गुर्जरधरा में विधिमार्ग का बलतर समर्थन किया था, वर्धमानसूरि के शिष्य थे।[१७] आबू स्थित विमलवसही के प्रतिमा प्रतिष्ठापकों में वर्धमानसूरि का भी नाम लिया जाता है।[१८] इनका समय विक्रम संवत् की ११वीं शती सुनिश्चित है। वर्धमानसूरि कौन थे ? इस प्रश्न का भी उत्तर ढूंढना आवश्यक है।

खरतरगच्छीय आचार्य जिनदत्तसूरि द्वारा रचित **गणधरसार्धशतक** [रचनाकाल वि० सं० बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध] और जिनपालोध्याय द्वारा रचित **खरतरगच्छवृहद्गुर्वावली** [रचनाकाल वि० सं० तेरहवीं शती कां अंतिम चरण] से ज्ञात होता है कि वर्धमानसूरि पहले एक चैत्यवासी आचार्य के शिष्य थे, परन्तु बाद में उनके मन में चैत्यवास के प्रति विरोध की भावना जागृत हुई और उन्होंने अपने गुरु से आज्ञा लेकर सुविहितमार्गीय आचार्य उद्योतनसूरि से उपसम्पदा ग्रहण की।[१९]

गणधरसार्धशतक की गाथा ६१-६३ में देवसूरि, नेमिचन्द्रसूरि और उद्योतनसूरि के बाद वर्धमानसूरि का उल्लेख है। पूर्वप्रदर्शित तालिका नं० १ में देवसूरि, नेमिचन्द्रसूरि (प्रथम), उद्योतनसूरि (द्वितीय) के बाद आम्रदेवसूरि का उल्लेख है। इस प्रकार उद्योतनसूरि के दो शिष्यों का अलग-अलग साक्ष्यों से उल्लेख प्राप्त होता है। इस आधार पर उद्योतनसूरि (प्रथम) और वर्धमानसूरि को परस्पर गुरुभ्राता माना जा सकता है। अब वर्धमानसूरि की शिष्य परम्परा पर भी प्रसंगवश कुछ प्रकाश डाला जायेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि का उल्लेख प्राप्त होता है।[२०] जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि जिनेश्वरसूरि ने चौलुक्यनरेश दुर्लभराज की सभा में शास्त्रार्थ में चैत्यवासियों को परास्त कर विधिमार्ग का समर्थन किया था।

जिनेश्वरसूरि के ख्यातिनाम शिष्यों में नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि, जिनभद्र अपरनाम धनेश्वरसूरि और जिनचन्द्रसूरि के उल्लेख प्राप्त होते हैं।[२१] इनमें अभयदेवसूरि की शिष्य परम्परा आगे चली।

अभयदेवसूरि के शिष्यों में प्रसन्नचन्द्रसूरि, जिलवल्लभसूरि और वर्धमानसूरि के उल्लेख मिलते हैं।[२२] प्रसन्नचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रसूरि हुए, जिन्होंने जिनवल्लभसूरि और जिनदत्तसूरि को आचार्यपद प्रदान किया।[२३]

जिनवल्लभसूरि वास्तव में एक चैत्यवासी आचार्य के शिष्य थे, परन्तु इन्होंने अभयदेवसूरि के पास विद्याध्ययन किया था और बाद में अपने चैत्यवासी गुरु की आज्ञा लेकर अभयदेवसूरि से उपसम्पदा ग्रहण की।[२४] जिलवल्लभसूरि से ही खरतरगच्छ का प्रारम्भ हुआ। **युगप्रधानाचार्यगुर्वावली** में यद्यपि वर्धमानसूरि को खरतरगच्छ का आदिम आचार्य कहा गया है, परन्तु वह समीचीन प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः अभयदेवसूरि के मृत्योपरान्त उनके अन्यान्य शिष्यों के साथ जिनवल्लभसूरि की प्रतिस्पर्धा रही, अतः इन्होंने *विधिपक्ष* की स्थापना की, जो आगे चलकर **खरतरगच्छ** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[२५]

अभयदेवसूरि के तीसरे शिष्य और पट्टधर वर्धमानसूरि हुए। इन्होंने **मनोरमाकहा** [रचनाकाल वि० सं० ११४०/ई० सन् १०८३] और **आदिनाथचरित** [रचनाकाल वि० सं० ११६०/ई० सन् ११०३] की रचना की।[२६] वि० सं० ११८७ एवं वि० सं० १२०८ के अभिलेखों में वडगच्छीय चक्रेश्वरसूरि को वर्धमानसूरि का शिष्य कहा गया है।[२७] इसी प्रकार वि० सं० १२१४ के वडगच्छ से ही सम्बन्धित एक अभिलेख में वडगच्छीय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमानन्दसूरि के गुरु का नाम चक्रेश्वरसूरि और दादागुरु का नाम वर्धमानसूरि उल्लिखित है।[२८] इसी प्रकार वडगच्छीय चक्रेश्वरसूरि के गुरु और परमानन्दसूरि के दादागुरु वर्धमानसूरि और अभयदेवसूरि के शिष्य वर्धमानसूरि को अभिन्न माना जा सकता है। जहाँ तक गच्छ सम्बन्धी समस्या का प्रश्न है, उसका समाधान यह है कि चन्द्रगच्छ और वडगच्छ दोनों का मूल एक होने से इस समय तक आचार्यों में परस्पर प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं दिखाई देती। गच्छीयप्रतिस्पर्धा के युग में भी एक गच्छ के आचार्य दूसरे गच्छ के आचार्य के शिष्यों को विद्याध्ययन कराना अपारम्परिक नहीं समझते थे। अत: बृहद्गच्छीय चक्रेश्वरसूरि एवं परमानन्दसूरि के गुरु चन्द्रगच्छीय वर्धमानसूरि हों तो यह तथ्य प्रतिकूल नहीं लगता।

इस प्रकार चन्द्रगच्छ और खरतरगच्छ के आचार्यों का जो विद्यावंशवृक्ष बनता है, वह इस प्रकार है[२९] :-

अब हम वडगच्छीय वंशावली और पूर्वोक्त चन्द्रगच्छीय वंशावली को परस्पर समायोजित करते हैं, उससे जो विद्यावंशवृक्ष निर्मित होता है, वह इस प्रकार है[३०]-

अब इस तालिका के बृहद्गच्छीय प्रमुख आचार्यों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला जायेगा।

नेमिचन्द्रसूरि[३१] - जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वडगच्छ के उल्लेख वाली प्राचीनतम प्रशस्तियाँ इन्हीं की हैं। इनका समय विक्रम सम्वत् की बारहवीं शती सुनिश्चित है। इनके द्वारा लिखे गये ५ ग्रन्थ उपलब्ध हैं जो इस प्रकार हैं -

१. **आख्यानकमणिकोष** [मूल]
२. **आत्मबोधकुलक**
३. **उत्तराध्ययनवृत्ति** [सुखबोधा]
४. **रत्नचूड़कथा**
५. **महावीरचरियं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इनमें प्रथम दो ग्रन्थ सामान्य मुनि अवस्था में रचे गये थे, इसी लिये इन ग्रन्थों की अन्त्य प्रशस्तियों में इनका नाम **देविन्द** लिखा मिलता है। **उत्तराध्ययनवृत्ति** और **रत्नचूड़कथा** की प्रशस्तियों में देवेन्द्रगणि नाम मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि उक्त ग्रन्थ गणि "पद" मिलने के पश्चात् रचे गये। उक्त दोनों ग्रन्थों के कुछ ताड़पत्र की प्रतियों में नेमिचन्द्रसूरि नाम भी मिलता है। अन्तिम ग्रन्थ **महावीरचरियं** वि० सं० ११४१/ ई० सन् १०८५ में रचा गया है। उक्त ग्रन्थों की प्रशस्तियों से ज्ञात होता है कि इनके गुरु का नाम आम्रदेवसूरि और प्रगुरु का नाम उद्योतनसूरि था, जो सर्वदेवसूरि की परम्परा के थे।

मुनिचन्द्रसूरि[३२] - आप उपरोक्त नेमिचन्द्रसूरि के सतीर्थ्य थे। आचार्य सर्वदेवसूरि के शिष्य यशोभद्रसूरि एवं नेमिचन्द्रसूरि थे। यशोभद्रसूरि से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की एवं नेमिन्द्रसूरि से आचार्य पद प्राप्त किया। ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने कुल ३१ ग्रन्थ रचे थे। इनमें से आज १० ग्रन्थ विद्यमान हैं जो इस प्रकार हैं -

१. **अनेकान्तजयपताका टिप्पनक**

२. **ललितविस्तरापञ्जिका**

३. **उपदेशपद-सुखबोधावृत्ति**

४. **धर्मबिन्दु-वृत्ति**

५. **योगबिन्दु-वृत्ति**

६. **कर्मप्रवृत्ति-विशेषवृत्ति**

७. **आवश्यक [पाक्षिक] सप्ततिका**

८. **रसाउलगाथाकोष**

९. **सार्धशतकचूर्णी**

१०. **पार्श्वनाथस्तवनम्**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इनके ख्यातिनाम शिष्यों में वादिदेवसूरि, मानदेवसूरि और अजितदेवसूरि प्रमुख थे। वि० सं० ११७८ में इनका स्वर्गवास हुआ।

वादिदेवसूरि - आप मुनिचन्द्रसूरि के शिष्य थे। आबू से २५ मील दूर **मडार** नामक ग्राम में वि० सं० ११४३/ई० सन् १०८६ में इनका जन्म हुआ था।[३३] इनके पिता का नाम वारिनाग और माता का नाम जिनदेवी था। आचार्य मुनिचन्द्रसूरि के उपदेश से माता-पिता ने बालक को उन्हें सौंप दिया और उन्होंने वि० सं० ११५२/ई० सन् १०९६ में इन्हें दीक्षित कर मुनि रामचन्द्र नाम रखा। वि० सं० ११७४ / ई० सन् १११७ में इन्होंने आचार्य पद प्राप्त किया और देवसूरि नाम से विख्यात हुए।[३४] वि० सं० ११८१-८२ / ई० सन् ११२४ में अणहिलपत्तन स्थित चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज की राजसभा में इन्होंने कर्णाटक से आये दिगम्बर आचार्य कुमुदचन्द्र को शास्त्रार्थ में पराजित किया और वादिदेवसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए।[३५] वादविषयक ऐतिहासिक उल्लेख कवि यशश्चन्द्र कृत **मुद्रितकुमुदचन्द्र** नामक नाटक में प्राप्त होता है। ये गुजरात में प्रमाणशास्त्र के श्रेष्ठ विद्वानों में से थे। इन्होंने प्रमाणशास्त्र पर **प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार** नामक ग्रन्थ आठ परिच्छेदों में रचा और उसके ऊपर **स्याद्वादरत्नाकर** नामक मोटी टीका की भी रचना की। इस ग्रन्थ की रचना में आपको अपने शिष्यों भद्रेश्वरसूरि और रत्नप्रभसूरि से सहायता प्राप्त हुई।[३६] इसके अलावा इनके द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार हैं-

मुनिचन्द्रसूरिगुरुस्तुति, मुनिचन्द्रगुरुविरहस्तुति, यतिदिनचर्या, उपधानस्वरूप, प्रभातस्मरण, उपदेशकुलक, संसारोदिग्नमनोरथ-कुलक, कलिकुंडपार्श्वस्तवनम्[३७] आदि।

हरिभद्रसूरि[३८] - बृहद्गच्छीय आचार्य मानदेव के प्रशिष्य एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य जिनदेव के शिष्य हरिभद्रसूरि चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज के समकालीन थे। इनके द्वारा रचित ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि द्रव्यानुयोग, उपदेश, कथाचरितानुयोग आदि विषयों में संस्कृत-प्राकृत भाषा में इनकी खास विद्वता और व्याख्या शक्ति विद्यमान थी। वि० सं० ११७२ /ई० सन् १११६ में इन्होंने तीन ग्रन्थों की रचना की जो इस प्रकार है -

बंध स्वामित्व षटशीति कर्म ग्रन्थ के ऊपर वृत्ति; जिनवल्लभसूरि द्वारा रचित **आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण** पर वृत्ति और **श्रेयांसनाथचरित**।

वि० सं० ११८५/ई० सन् ११२९ के पाटण में यशोनाग श्रेष्ठी के उपाश्रय में रहते हुए इन्होंने **प्रशमरतिप्रकरण** पर वृत्ति की रचना की।

रत्नप्रभसूरि[३९] - आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि विशिष्ट प्रतिभाशाली, तार्किक, कवि और विद्वान् थे। इन्होंने **प्रमाणनय-तत्त्वालोकालंकार** पर ५००० श्लोक प्रमाण **रत्नाकरावतारिका** नाम की टीका की रचना की है। इसके अलावा इन्होंने **उपदेशमाला** पर **दोघट्टी वृत्ति** [रचनाकाल वि० सं० १२३८/ई० सन् ११८२]० **नेमिनाथचरित** [रचनाकाल वि० सं० १२३३/ई० सन् ११७६], **मतपरीक्षापंचाशत**; **स्याद्वादरत्नाकर** पर लघु टीका आदि ग्रन्थों की रचना की है।

हेमचन्द्रसूरि[४०] - आप आचार्य अजितदेवसूरि के शिष्य एवं आचार्य मुनिचन्द्रसूरि के प्रशिष्य थे। इन्होंने **नाभेयनेमिकाव्य** की रचना की, जिसका संशोधन महाकवि श्रीपाल ने किया। श्रीपाल जयसिंह-सिद्धराज के दरबार का प्रमुख कवि था।

हरिभद्रसूरि - इनका जन्म और दीक्षादि प्रसंग जयसिंह सिद्धराज के काल में उन्हीं के राज्य प्रदेश में हुआ, ऐसा माना जाता है।[४१] ये प्रायः अणहिलवाड़ में ही रहा करते थे। सिद्धराज और कुमारपाल के मन्त्री श्रीपाल की प्रार्थना पर इन्होंने संस्कृत-प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौबीस तीर्थङ्करों के चरित्र की रचना की। इनमें से चन्द्रप्रभ, मल्लिनाथ और नेमिनाथ के चरित्र ही आज उपलब्ध हैं। तीनों ग्रन्थ २४००० श्लोक प्रमाण हैं। यदि एक तीर्थङ्कर का चरित्र ८००० श्लोक माना जाये तो २४ तीर्थङ्करों का चरित्र कुल दो लाख श्लोक के लगभग रहा होगा, ऐसा अनुमान किया जाता है।[४२] **नेमिनाथचरिउ** की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ की रचना वि० सं० १२१६ में हुई थी।[४३] अपने ग्रन्थों के अन्त में इन्होंने जो प्रशस्ति दी है, उसमें इनके गुरुपरम्परा का भी उल्लेख है जिसके अनुसार वर्धमान महावीर स्वामी के तीर्थ में कोटिक गण और वज्र शाखा में चन्द्रकुल के वडगच्छ के अन्तर्गत जिनचन्द्रसूरि हुए। उनके दो शिष्य थे, आम्रदेवसूरि और श्रीचन्द्रसूरि। इन्हीं श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य थे आचार्य हरिभद्रसूरि जिन्हें आम्रदेवसूरि ने अपने पट्ट पर स्थापित किया।[४४]

सोमप्रभसूरि[४५] - आचार्य अजितदेवसूरि के प्रशिष्य एवं आचार्य विजयसिंहसूरि के शिष्य आचार्य सोमप्रभसूरि चौलुक्य नरेश कुमारपाल [वि० सं० ११९९-१२२९/ ई० सन् ११४२-११७२] के समलकालीन थे। इन्होंने वि० सं० १२४१/ई० सन् ११८४ में कुमारपाल की मृत्यु के १२ वर्ष पश्चात् अणहिलवाड़ में **कुमारपालप्रतिबोध** नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में हेमचन्द्रसूरि और कुमारपाल सम्बन्धी वर्णित तथ्य प्रामाणिक माने जाते हैं। इनकी अन्य रचनाओं में "**सुमतिनाथचरित**", **सुक्तमुक्तावली** और **सिन्दूरप्रकरण** के नाम मिलते हैं।

नेमिचन्द्रसूरि[४६] - ये आम्रदेवसूरि [**आख्यानकमणिकोशवृत्ति** के रचयिता] के शिष्य थे। इन्होंने **प्रवचनसारोद्धार** नामक दार्शनिक ग्रन्थ जो ११९९ श्लोक प्रमाण है, की रचना की।

अन्य गच्छों के समान वडगच्छ से भी अनेक शाखायें एवं प्रशाखायें अस्तित्व में आयीं। वि० सं० ११४९ में यशोदेव - नेमिचन्द्र के शिष्य और मुनिचन्द्रसूरि के ज्येष्ठ गुरुभ्राता आचार्य चन्द्रप्रभसूरि से पूर्णिमा पक्ष का आविर्भाव हुआ।[४७] इसी प्रकार आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने वि० सं० ११७४/ई० सन् १११७ में नागौर में तप करने से **नागौरी तपा** विरुद् प्राप्त किया और उनके शिष्य **नागोरीतपागच्छीय** कहलाने लगे।[४८] इसी प्रकार इस गच्छ के अन्य शाखाओं का भी उल्लेख प्राप्त होता है।[४९]

श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय से सम्बद्ध प्रकाशित जैन लेख संग्रहों में वडगच्छ से सम्बन्धित अनेक लेख संग्रहीत हैं। इन अभिलेखों में वडगच्छीय आचार्यों द्वाराजिन प्रतिमा प्रतिष्ठा, जिनालयों की स्थापना आदि का उल्लेख है। ये लेख १२वीं शताब्दी से लेकर १७वीं - १८वीं शताब्दी तक के हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि वडगच्छीय आचार्य साहित्य सृजन के साथ-साथ जिनप्रतिमा प्रतिष्ठा एवं जिनालयों की स्थापना में समान रूप से रुचि रखते रहे। वर्तमान काल में इस गच्छ का अस्तित्व नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका नं० १

आख्यानकमणिकोष की प्रस्तावना में दी गयी बृहद्गच्छीय आचार्यों की तालिका

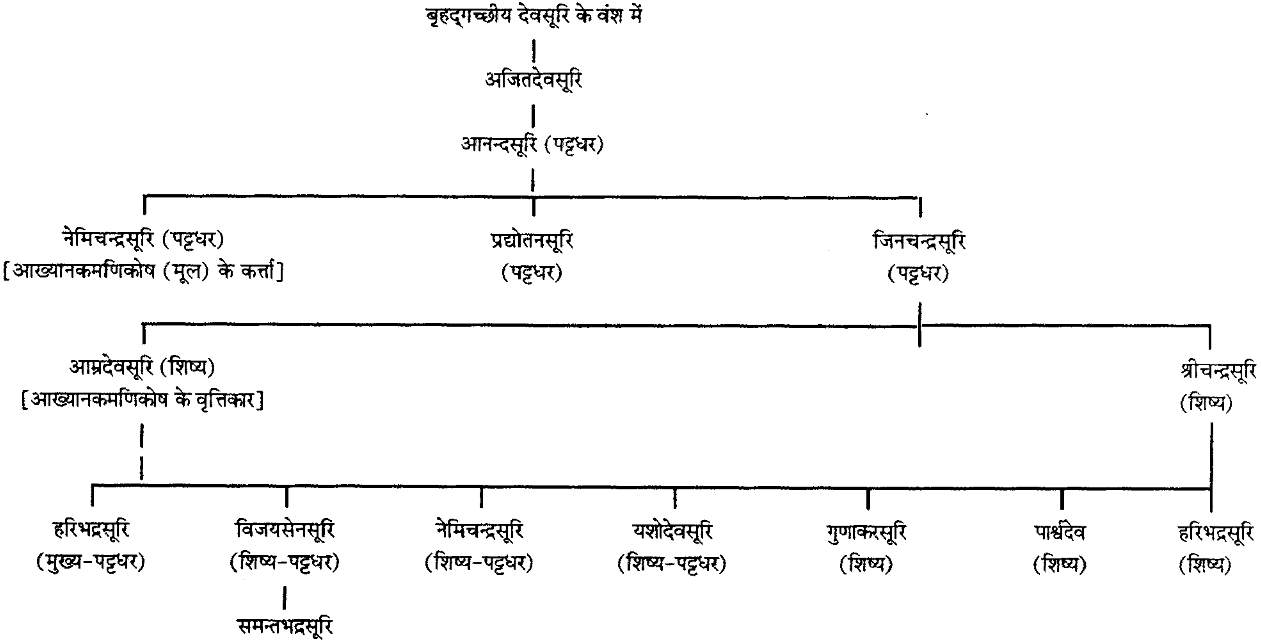

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका नं० २
वडगच्छीय आचार्य मुनिचन्द्रसूरि के गुरु-शिष्य परम्परा की तालिका

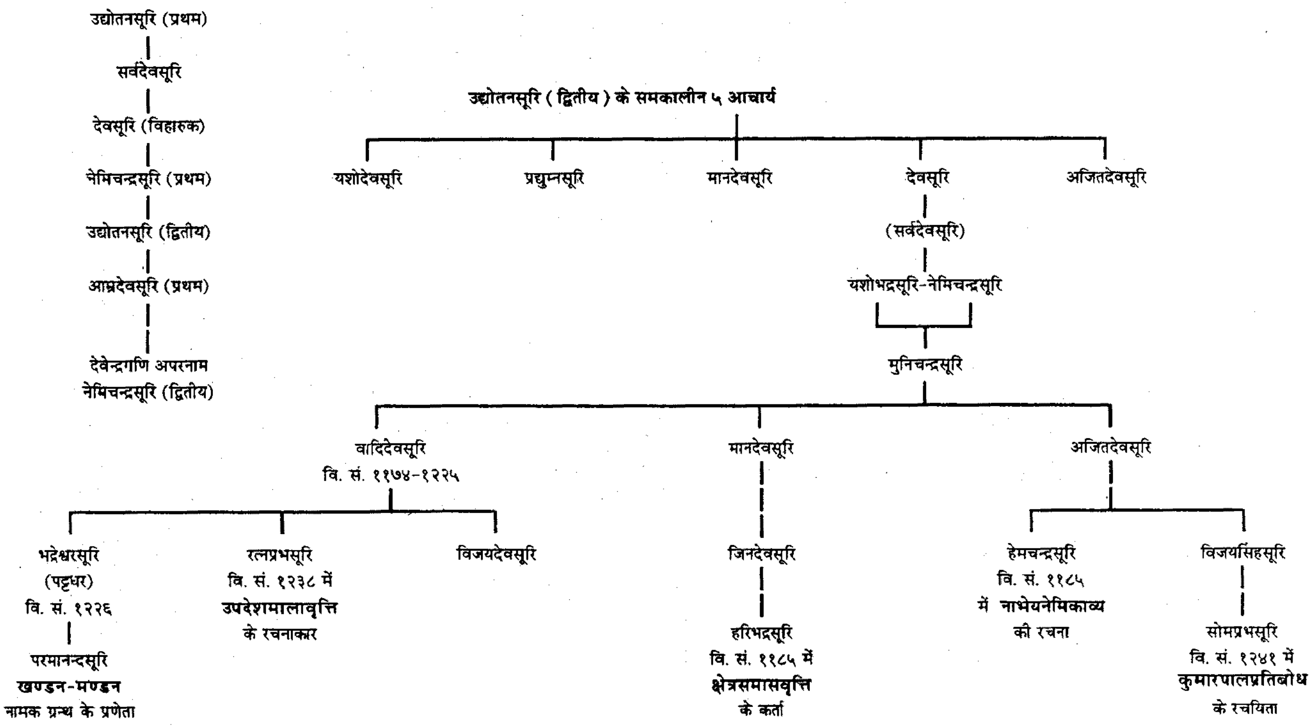

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका नं० ३
चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) के आचार्यों का विद्यावंशवृक्ष

- उद्योतनसूरि (प्रथम)
  - वर्धमानसूरि
    - जिनेश्वरसूरि — प्रमालक्षण [सटीक], पञ्चलिंगीप्रकरण, निर्वाणलीलाकथा वीरचरित्र, हरिभद्रसूरि के अष्टकों पर टीका षट्स्थानप्रकरण, कथाकोषप्रकरण आदि ग्रन्थों के प्रणेता
      - जिनचन्द्रसूरि [पट्टधर] **संवेगरंगशाला** के रचनाकार [वि. सं. ११२५]
      - अभयदेवसूरि (पट्टधर) — उपदेशपद [हरिभद्र] टीका, उपदेशमालाबृहट्टीका उपमितिभवप्रपंचनामसमुच्चय आदि ग्रन्थों के प्रणेता वि. सं. १०८८ में आबू स्थित विमलवसही में प्रतिमा प्रतिष्ठापक
        - प्रसन्नचन्द्रसूरि
          - देवभद्रसूरि
            - चन्द्रगच्छीय)
        - जिनवल्लभसूरि
          - जिनदत्तसूरि (खरतरगच्छ प्रारम्भ)
        - वर्धमानसूरि [अभयदेवसूरि के पट्टधर] वि. सं. ११४० में **मनोरमाकहा** वि. सं. ११६० में **आदिनाथचरित्र** [वि. सं. ११८७-१२८८ अभिलेखानुसार]
          - चक्रेश्वरसूरि (बृहद्गच्छीय)
      - जिनभद्र अपरनाम धनेश्वरसूरि **सुरसुन्दरीकहा** [वि. सं. १०९५]
    - बुद्धिसागरसूरि [वि. सं. १०८० में **पञ्चग्रंथी-व्याकरण** की रचना]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका नं० ४

वडगच्छीय वंशावली और चन्द्रगच्छीय वंशावली के परस्पर समायोजन से निर्मित विद्यावंशवृक्ष

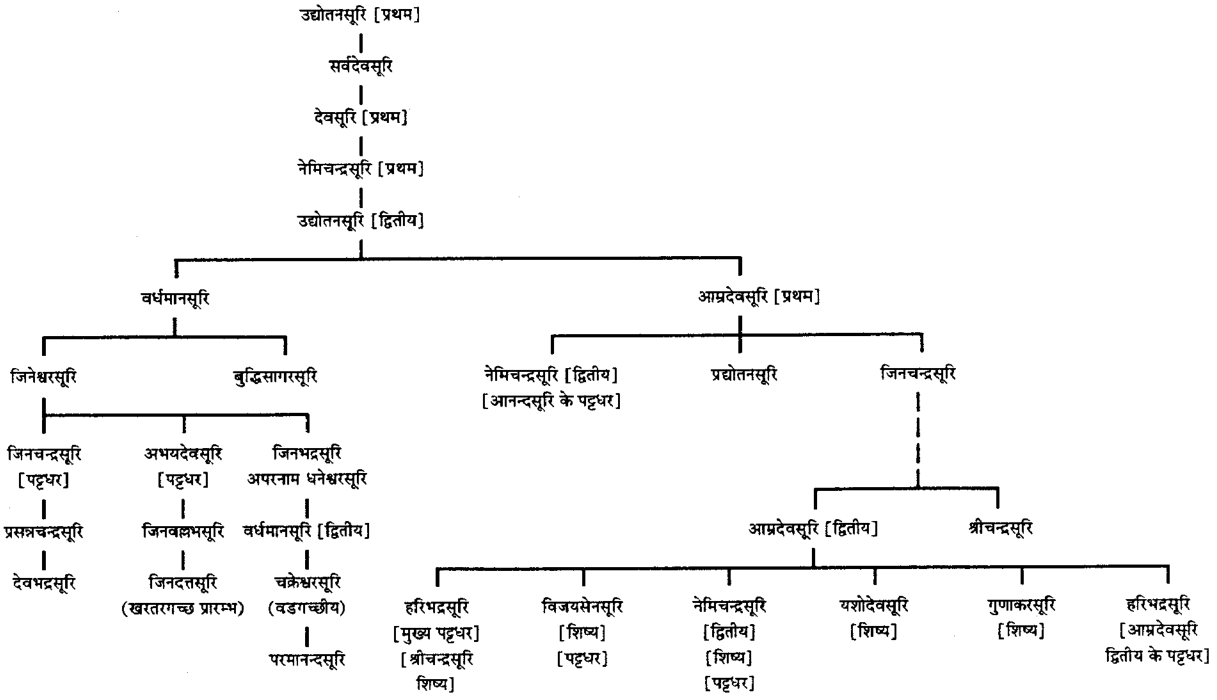

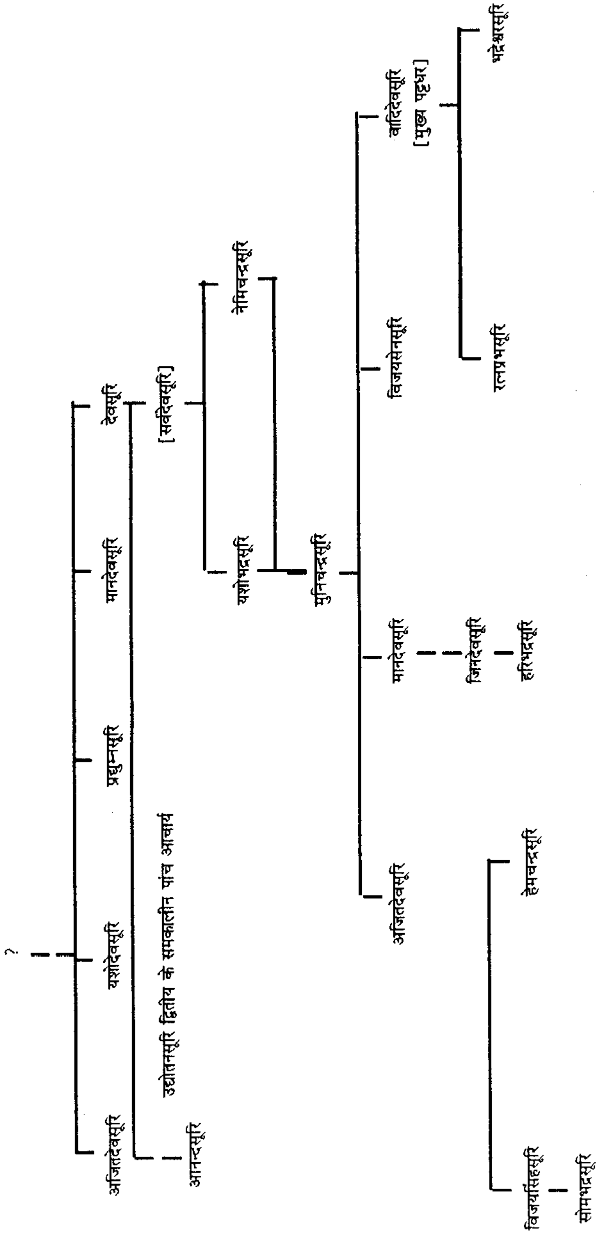

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची :

१. श्रीमत्यर्बुदतुंगशैलशिखरच्छायाप्रतिष्ठास्पदे
धर्माणाभिधसन्निवेशविषये न्यग्रोधवृक्षो बभौ ।
यत्शाखाशतसंख्यपत्रबहलच्छायास्वपायाहतं
सौख्येनोषितसंघमुख्यशटकश्रेणीशतीपंचकम् ॥ १ ॥
लग्ने क्वापि समस्तकार्यजनके सप्तग्रहलोकने
ज्ञात्वा ज्ञानवशाद्, गुरुं ... देवाभिधः ।
आचार्यान् रचयांचकार चतुरस्तंस्मात् प्रवृद्धो बभौ
वंद्रोऽयं वटगच्छनाम रुचिरो जीयाद् युगानां शतीम् ॥ २ ॥
Muni Punyavijay, Ed. *Catalogue of Palm-Leaf MSS in the Shantinath Jain Bhandar, Cambay*, Part II, Pp. 284-86.

२. मुनि दर्शन विजय-संपा० **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृ० ३४.

३. वही, पृ. ५२-५३.

३A. मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, पृ० ५२-५५.

४. मुनिदर्शन विजय, पूर्वोक्त, भाग २, पृ० १८८.

५. प्राकृत टेक्स्ट सोसाइटी, वाराणसी द्वारा ई० सन् १९६२ में प्रकाशित.

६. देखिये - तालिका नं० १.

७. देवेन्द्रगणिश्चेमामुद्धृतवान् वृत्तिकां तद्विनेयः ।
गुरुसोदर्यश्रीमन्मुनिचन्द्राचार्यवचनेन ॥ ११ ॥
शोधयतु बृहदनुग्रहबुद्धिं मयि संविधान विज्ञजनः ।
तत्र च मिथ्यादुष्कृतमस्तु कृतमसंगतं यदिह ॥ १२ ॥
मुनि पुण्यविजय - पूर्वोक्त, भाग १, पृ० ११४.

८. मोहनलाल दलीचन्द देसाई -**जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृ० २४१-४२.

९. वही, पृ० २४८-४९.

१०. वही, पृ० २८३.

११. वही, पृ० ३२१.

१२. मुनि पुण्यविजय, भाग २, पृ० २८८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. वही, भाग २, पृ० २३९-४०.

१४. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० २८३-४.

१५. देखिये - तालिका नं० २.

१६. मुनि पुण्यविजय, पूर्वोक्त, भाग २, पृ० ३३९.

१७. **कथाकोशप्रकरण** - प्रस्तावना विभाग, संपादक - मुनि जिनविजय, पृ० २.

१८. अगरचन्द नाहटा, - "विमलसही के प्रतिष्ठापकों में वर्धमानसूरि भी थे।"
-**जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ५, अंक ५-६, पृ० २१२-१२४.

१९. मुनि जिनविजय - पूर्वोक्त पृ० २६.

२०. वही, पृ० २८.

२१. देसाई, पूर्वोक्त पृ० २०८.

२२. वही, पृ० २१७-१९.

२३. मुनि जिनविजय - पूर्वोक्त पृ० १५.

२४. वही, पृ० १६.

२५. वही, पृ० ५.

२६. वही, पृ० १४.

२७. सं[वत्] ११८७ [वर्षे] फागु[ल्गु]ण वदि ४ सोमे रूद्रसिणवाडास्थानीय प्राग्वाटवंसा[शा]न्वये श्रे० साहिलसंताने पलाद्वंदा [?] श्रे० पासल संतणाग देवचंद्र आसधर आंबा अंबकुमार श्रीकुमार लोयण प्रकृति श्वासिणि शांतीय रामति गुणसिरि प्रडूहि तथा पल्लडीवास्तव्य अंबदेवप्रभृतिसमस्तश्रावकश्राविकासमुदायेन अर्बुदचैत्यतीर्थे श्रीरि[ऋ]षभदेवबिंबं निःश्रेयसे कारितं बृहद्गच्छीय श्रीसंविज्ञविहारि श्रीवर्धमानसूरिपादपद्मोप[सेवि]श्रीचक्रेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

मुनि जयन्तविजय - संपा० **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसन्दोह**, लेखांक ११४.

ओम् । संवत् १२०८ फागुणसुदि १० रवौ श्रीबृहद्गच्छीयसंविंज्ञविहारी [रि] श्रीवर्धमानसूरिशिष्यैः श्रीचक्रेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

मुनि विशालविजय, संपा० **श्रीआरासणातीर्थ**, लेखांक ११.

२८. संवत् १२१४ फाल्गुण वदि-७ शुक्रवारे श्रीबृहद्गच्छोद्भसंविग्नविहारि श्रीवर्धमानसूरीयश्रीचक्रेश्वरसूरिशिष्य... श्रीपरमानन्दसूरिसमेतैः .... प्रतिष्ठितं ।

मुनि विशालविजय, वही, लेखांक १४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. देखिये, तालिका नं० ३.

३०. तालिका नं० ४.

३१. विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य -
मुनि पुण्यविजय द्वारा सम्पादित **आख्यानकमणिकोष** की प्रस्तावना, पृ० ६-८;
मोहनलाल दलीचन्द देसाई, **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,** पृ० २१८.

३२. रसिकलाल छोटालाल परीख एवं केशवराम काशीराम शास्त्री, संपा० **गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास**, भाग ४, पृ० २९-९१; देसाई, पूर्वोक्त पृ० ३४१-४३.

३३. त्रिपुटी महाराज - **जैनपरम्परानो इतिहास**, भाग २, पृ० ५६०.

३४. परीख और शास्त्री - पूर्वोक्त भाग ४, २९४.

३५. वही.

३६. वही.

३७. मुनि चतुरविजय - संपा० **जैनस्तोत्रसन्दोह,** भाग १, पृ० ११८.

३८. परीख और शास्त्री-वही;
देसाई, पूर्वोक्त पृ० २५०.

३९. परीख और शास्त्री, - पूर्वोक्त पृ० ३०३-४.

४०. मोहनलाल दलीचन्द देसाई, - पूर्वोक्त पृ० २३५.

४१. लालचन्द भगवानदास गांधी - **ऐतिहासिकलेखसंग्रह**, पृ० १३३.

४२. वही पृ० १३३.

४३. वही पृ० १३४.

४४. मुनि पुण्यविजय संपा० **आख्यानकमणिकोषवृत्ति**, प्रस्तावना, पृ० ८.

४५. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० २७५.

४६. मुनि पुण्यविजय, पूर्वोक्त पृ० ८.

४७. अगरचन्द नाहटा, - "जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश", **श्रीयतीन्द्रसूरि अभिनन्दन ग्रन्थ** पृ० १५३.

४८. वही पृ० १५१ तथा इसी पुस्तक के अन्तर्गत द्रष्टव्य: नागपुरीय तपागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

४९. वही पृ० १५४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मडाहडागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल से उद्भूत गच्छों में बृहद्गच्छ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह गच्छ विक्रम सम्वत् की १०वीं शती में उद्भूत माना जाता है। उद्योतनसूरि, सर्वदेवसूरि आदि इस गच्छ के पुरातन आचार्य माने जाते हैं।[१] अन्यान्य गच्छों की भाँति इस गच्छ से भी समय-समय पर विभिन्न कारणों से अनेक शाखाओं - प्रशाखाओं का जन्म हुआ और छोटे-छोटे कई गच्छ अस्तित्व में आये। **बृहद्गच्छ गुर्वावली**[२] [रचनाकाल वि० सं० १६२०] में उसकी अन्यान्य शाखाओं के साथ मडाहडाशाखा का भी उल्लेख मिलता है। यही शाखा आगे चलकर महाहडागच्छ के रूपमें प्रसिद्ध हुई। यहां इसी गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है मडाहडा नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया होगा। मडाहडा की पहचान वर्तमान मडार नामक स्थान से की जाती है जो राजस्थान प्रान्त के सिरोही जिले में डीसा से चौबीस मील दूर ईशानकोण में स्थित है।[३] चक्रेश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। यह गच्छ कब और किस कारण से अस्तित्व में आया, इस बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। अन्य गच्छों की भाँति इस गच्छ से भी कई अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ। विभिन्न साक्ष्यों से इस गच्छ की रत्नपुरीयशाखा, जाखड़ियाशाखा, जालोराशाखा आदि का पता चलता है।

महाहडागच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं, किन्तु अभिलेखीय साक्ष्यों की तुलना में साहित्यिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साक्ष्य संख्या की दृष्टि से स्वल्प हैं साथ ही वे १६वीं शताब्दी के पूर्व के नहीं हैं। अध्ययन की सुविधा के लिये तथा प्राचीनता की दृष्टि से पहले अभिलेखीय साक्ष्यों तत्पश्चात् साहित्यिक साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है।

अभिलेखीय साक्ष्य - इस गच्छ से सम्बद्ध पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो वि० सं० १२८७ से लेकर वि० सं० १७८७ तक के हैं। इनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१२८७	मार्गशीर्ष सुदि ६ सोमवार	आचार्य का नाम नष्ट हो गया है।	चबुतरे पर उत्कीर्ण लेख	मडारदेवी का मन्दिर, मडार	मुनिजयंतविजय, संपा० **अर्बुदाचल-प्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह**, लेखांक ६६
२.	१३३५	माघ सुदि १३ शुक्रवार	चक्रेश्वरसूरि संतानीय सोमप्रभसूरि के शिष्य वर्धमानसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, आरासणा	मुनि विशालविजय, संपा० **आरासणा-तीर्थ**, लेखांक ३०
३.	१३३५	मिति विहीन	,,	जिनयुगल प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पल्लवियापार्श्वनाथ जिनालय, पालनपुर	मुनि जिनविजय, संपा० **प्राचीनजैन-**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
						लेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ५५०
४.	१३५१	मिति विहीन	रत्नाकरसूरि के पट्टधर सोमतिलकसूरि	महावीरकी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय उदयपुर	पूरनचन्द नाहर, **जैन लेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०४६
५.	१३५८	मिति विहीन	आनन्दप्रभसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २२४२
६.	१३६२	वैशाख	पासदेवसूरि	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७.	१३६६	मिति विहीन	आनन्दप्रभसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३५
८.	१३६७	वैशाख सुदि ९	चन्द्रसिंहसूरि के शिष्य रविकरसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीलडियातीर्थ चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ३३४
९.	१३६७	आषाढ सुदि ३ रविवार	आनंदप्रभसूरि	धातु की जिन-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३७
१०.	१३७१	मिति विहीन	आनन्दसूरि के पट्टधर हेमप्रभसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक २४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
११.	१३७१	,,	यशोदेवसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	**अर्बुदप्राचीन-जैनलेखसंदोह** (आबू, भाग २), लेखांक ५४३
१२.	१३७३	,,	शांतिसूरि	परिकर का लेख	मडारदेवी का मन्दिर, मडार	**अर्बुदाचल-प्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह** (**आबू**, भाग ५), लेखांक ७१
१३.	१३७९	मिति विहीन	आचार्य का नाम नष्ट	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
१४.	१३८१	वैशाख वदि ८	हेमसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनूपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा० **आबू**, भाग २, लेखांक ५५१
१५.	१३८६	मिति विहीन	सर्वदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३१६
१६.	१३८७	–	चक्रेश्वरसूरिसंतानीय पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर जयदेवसूरि के शिष्य	यशोदेवसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचासरा पार्श्वनाथ जिनालय, पाटण	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५०८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
			यशोदेव की प्रतिमा को शांतिसूरि ने प्रतिष्ठापित की			
१७.	१३८७	मिति विहीन	हेमप्रभसूरि के पट्टधर सर्वदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३२१
१८.	१३८९	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	रत्नसागरसूरि	,,	अनुपूर्तिलेख. आबू	मुनिजयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ५५८
१९.	१३८९	मिति विहीन	धर्मदेवसूरि के पट्टधर देवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२०.	१३८९	तिथि विहीन	रत्नाकरसूरि के पट्टधर सोमतिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अरनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, **जैनधातुप्रतिमा-लेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ७६८
२१.	१३९३	ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रवार	सोमतिलकसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३५६
२२.	१३९२	–	सर्वदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ३४८
२३.	१४०४	वैशाख वदि १ शनिवार	मुनिप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ४०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२४.	१४११	ज्येष्ठ १२ शनिवार	माणिक्यसूरि के पट्टधर मानदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन प्रतिमा जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४६०
२५.	१४१३	–	पासदेवसूरि	महावीर की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४३१
२६.	१४१५	ज्येष्ठ वदि १३ रविवार	मानदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ४३४
२७.	१४२०	वैशाख सुदि १० बुधवार	पूर्णचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
२८.	१४२३	फाल्गुन सुदि ९	उदयप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४६२
२९.	१४३५	माघ वदि १२	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४६३
३०.	१४३६	वैशाख वदि ११ सोमवार	विजयसिंहसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५९५
३१.	१४३७	,,	सोमचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
३२.	१४४०	पौष सुदि १२	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५३६
३३.	१४४१	फाल्गुन वदि २ रविवार	मुनिप्रभसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५४४
३४.	१४४१	वैशाख सुदि ३ सोमवार	पूर्णचन्द्रसूरि के पट्टधर हरिभद्रसूरि	,,	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५९९
३५.	१४४५	ज्येष्ठ सुदि ...	सोमप्रभसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
३६.	१४४६	वैशाख वदि ३ सोमवार	मुनिप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनूपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६०२
३७.	१४५४	आषाढ सुदि ५ गुरुवार	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३४६
३८.	१४५७	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	वही, लेखांक ५८०
३९.	१४५९	चैत्र वदि १५	–	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४०.	१४५९	चैत्र सुदि १५ सोमवार	सोमचन्द्रसूरि	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५८९
४१.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	मुनिप्रभसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, लूणकणसर	वही, लेखांक २४९७
४२.	१४६२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	हरिभद्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्यान्तर्गत-वासुपूज्यचैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १०३
४३.	१४७३	वैशाख वदि १	मुनिप्रभसूरि	अभिनन्दनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथजिनालय, बूँदी	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २१०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४३अ.	१४६९	पौष वदि ५ शुक्रवार	उदयप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, औरंगाबाद	वही, भाग २, लेखांक ४६
४४.	१४८०	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	,,	,,	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७००
४५.	१४८१	वैशाख सुदि ३ शनिवार	,,	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२६
४६.	१४८१	,,	,,	अभिनन्दनस्वामी की धातु प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, हैदराबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
४७.	१४८२	माघ सुदि ५ सोमवार	ज्ञानचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५१५
४८.	१४८२	,,	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ५१६
४९.	१४८२	,,	,,	,,	,,	वही, लेखांक ५१७
५०.	१४८२	,,	,,	,,	,,	वही, लेखांक ५१९
५१.	१४९२	वैशाख सुदि २ बुधवार	,,	,,	,,	वही, लेखांक ७५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
५२.	१४९२	मार्गशीर्ष वदि ४ गुरुवार	मुनिप्रभसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	वही, लेखांक १५१५
५३.	१४९५	ज्येष्ठ वदि १४ बुधवार	मतिप्रभसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० **राधनपुर-प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक १२५
५४.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	मुनिप्रभसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८९४
५५.	१४--	-	,,	महावीरस्वामी की धातु-प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
५६.	१५०१	वैशाख सुदि ३ शनिवार	गुणसागरसूरि	सुविधिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ८४०
५७.	१५०४	फाल्गुन सुदि ८ गुरुवार	वीरभद्रसूरि के पट्टधर नयचन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ८८६
५८.	१५०५	फाल्गुन वदि ९ सोमवार	,,	मुनिसुव्रत की धातु-प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक ८९६
५९.	१५०७	माघ सुदि ५ रविवार	नयकीर्तिसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमन्दिर, जूनावेड़ा, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
६०.	१५०८	चैत्र बुधवार सुदि ८	हीराणंदसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी का लेख	संभवनाथ जिनालय, देशनोंक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २२१७
६१.	१५०९	आषाढ़ वदि ९ गुरुवार	नयणचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	वही, लेखांक ९३०
६२.	१५२०	आषाढ़ सुदि २ गुरुवार	हरिभद्रसूरि के शिष्य कमलप्रभसूरि	पार्श्वनाथ पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	अगरचन्द नाहटा, "मडाहडागच्छ की कालकाचार्यकथा की प्रशस्ति" **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष २०, अंक २, पृ० ४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
६३.	१५२५	माघ वदि ६	विजयचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६७२
६४.	१५२७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	नयचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथजिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२७६
६५.	१५३२	वैशाख वदि ५ रविवार	चक्रेश्वरसूरि के संतानीय के कमलप्रभसूरि के शिष्य ...?	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०७३
६६.	१५३५	माघ वदि ५ मंगलवार	वीरभद्रसूरि के शिष्य नयचन्द्रसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, केकड़ी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
६७.	१५३५	,,	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, साथा	वही, लेखांक ७८९
६८.	१५४२	फाल्गुन वदि २ शनिवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	सेठ थीरूशाह का देरासर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २४५६
६९.	१५४२	,,	,,	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय, घाट, उदयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८३१
७०.	१५४५	ज्येष्ठ वदि ११ रविवार	,,	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७१.	१५५९	पौष वदि ४ गुरुवार	मतिसुन्दरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमन्दिर, चैलपुरी, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४९६
७२.	१५८३	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	गुणकीर्तिसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, हीराबाड़ी, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९७२
७३.	१५९२	आषाढ वदि	दयाहरसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नौहर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४८३
७४.	१५९४	वैशाख सुदि ७ बुधवार	नाणचन्द्रसूरि (ज्ञानचन्द्रसूरि)	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक ११४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७५.	१६२०	आश्विन वदि ४ सोमवार	भट्टारक श्री माणिक्य...	,,	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६४
७६.	१७२८	वैशाख सुदि ११	–	तीर्थयात्रा का उल्लेख करनेवाला शिलालेख	लूणवसति, आबू	वही, भाग २, लेखांक २९४
७७.	१७७१	वैशाख सुदि ३	–	मडारदेवी के के मन्दिर में एक चरणचिह्न पर उत्कीर्ण लेख	मडार देवी का मन्दिर, मडार	**आबू,** भाग ५, लेखांक १०१
७८.	१७८७	माघ सुदि ५	भट्टारक चक्रेश्वरसूरि एवं भट्टारक देवचन्द्रसूरि	मडारदेवी के मन्दिर में उत्कीर्ण लेख	,,	वही, भाग ५, लेखांक १०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्राप्ति स्थान	संदर्भग्रन्थ
७९.	१७८७	माघ सुदि ५ रविवार	चक्रेश्वरसूरि	धातुप्रतिमालेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	वही, भाग ५, लेखांक १०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के नामों का पता चलता है, किन्तु उसके आधार पर उनके गुरु-शिष्य परम्परा की कोई विस्तृत तालिका की संरचना कर पाना तो सम्भव नहीं है। फिर भी कुछ मुनिजनों की गुरु-परम्परा की छोटी-छोटी गुर्वावलियों की संरचना की जा सकती है, जो इस प्रकार है-

चक्रेश्वरसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि
|
यशोदेवसूरि
|
शांतिसूरि
[वि० सं० १३७०-८७ प्रतिमालेख]

चक्रेश्वरसूरि
|
जयसिंहसूरि
|
सोमप्रभसूरि
|
वर्धमानसूरि [वि० सं० १३३५ प्रतिमालेख]

?
|
मानदेवसूरि
|
सोमचन्द्रसूरि [वि० सं० १४३७-५९] प्रतिमालेख
|
ज्ञानचन्द्रसूरि [वि० सं० १४९३] प्रतिमालेख]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक साक्ष्य

मडाहडागच्छ के सम्बद्ध प्रथम साहित्यिक साक्ष्य है **कालिकाचार्य-कथा** की ९ श्लोकों की दाताप्रशस्ति[४]। यह प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह में संरक्षित है। इस प्रशस्ति के प्रथम ६ श्लोकों में सितरोहीपुर (वर्तमान सिरोही, राजस्थान) निवासी श्रावक तिहुणा-महुणा के पूर्वजों का उल्लेख है। अन्तिम तीन श्लोकों में उक्त श्रावक द्वारा लक्षभूपति [राणालाखा अपरनाम राणालक्षसिंह[५] वि० सं० १४६१-१४७६ / ईस्वी सन् १४०५-१४२०] के शासनकाल में महाहडागच्छीय आचार्य कमलप्रभसूरि के शिष्य वाचनाचार्य गुणकीर्ति को **कल्पसूत्र** के साथ उक्त ग्रन्थ की एक प्रति भेंट में देने का उल्लेख है।

मडाहडागच्छीय अभिलेखीय साक्ष्यों की पूर्व प्रदर्शित सूची [लेख क्रमांक ६२, वि० सं० १५२०] में हरिभद्रसूरि के शिष्य कमलप्रभसूरि का नाम आ चुका है। यद्यपि एक मुनि या आचार्य का नायकत्त्वकाल सामान्य रूप से ३०-३५ वर्ष माना जाता है, किन्तु कोई - कोई मुनि और आचार्य दीर्घजीवी भी होते हैं, इसी कारण स्वाभाविक रूप से उनका नायकत्त्वकाल सामान्य से कुछ अधिक अर्थात् ४०-४५ वर्ष का होता रहा। अतः वि० सं० की १५वीं शताब्दी के तृतीय चरण में भी इन्हीं कमलप्रभसूरि का विद्यमान होना असंभव नहीं लगता। इसलिए उक्त प्रतिमालेख [वि० सं० १५२०] में उल्लिखित धनप्रभसूरि के गुरु कमलप्रभसूरि उपरोक्त **कालिकाचार्यकथा** के प्रतिलेखन की दाताप्रशस्ति [लेखनकाल वि० सं० १४६१-१४७६] में उल्लिखित कमलप्रभसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं।

श्री अगरचन्द नाहटा ने अपनी सिरोही यात्रा के समय वहाँ स्थित मडाहगच्छीय उपाश्रय में रहने वाले एक महात्मा-गृहस्थ कुलगुरु से ज्ञात इस गच्छ के मुनिजनों की एक नामावली प्रकाशित की है[६], जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१.	चक्रेश्वरसूरि	१६.	उदयसागरसूरि
२.	जिनदत्तसूरि	१७.	देवसागरसूरि
३.	देवचन्द्रसूरि	१८.	लालसागरसूरि
४.	गुणचन्द्रसूरि	१९.	कमलसागरसूरि
५.	धर्मदेवसूरि	२०.	हरिभद्रसूरि
६.	जयदेवसूरि	२१.	वागसागरसूरि
७.	पूर्णचन्द्रसूरि	२२.	केशरसागरसूरि
८.	हरिभद्रसूरि	२३.	भट्टारकगोपालजी
९.	कमलप्रभसूरि	२४.	यशकरणजी
१०.	गुणकीर्तिसूरि	२५.	लालजी
११.	दयानन्दसूरि	२६.	हुकमचन्द
१२.	भावचन्द्रसूरि	२७.	इन्द्रचन्द
१३.	कर्मसागरसूरि	२८.	फूलचन्द
१४.	ज्ञानसागरसूरि	२९.	रतनचन्द
१५.	सौभाग्यसागरसूरि	३०.	....

श्री नाहटा द्वारा प्रस्तुत उक्त नामावली में गच्छ के प्रवर्तक या आदिम आचार्य के रूप में चक्रेश्वरसूरि[७] का उल्लेख है। अभिलेखीय साक्ष्यों से भी यही संकेत मिलता है। क्योंकि कुछ प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य को चक्रेश्वरसूरि संतानीय कहा गया है। नामावली में उल्लिखित द्वितीय पट्टधर जिनदत्तसूरि, तृतीय पट्टधर देवचन्द्र और चतुर्थ पट्टधर गुणचन्द्र के बारे में किन्हीं अन्य साक्ष्यों से कोई सूचना नहीं मिलती। पंचम पट्टधर धर्मदेवसूरि से लेकर अष्टम पट्टधर हरिभद्रसूरि तक के नाम अभिलेखीय साक्ष्यों में भी मिल जाते हैं तथा नवें पट्टधर कमलप्रभसूरि का साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों साक्ष्यों में उल्लेख मिलता है। उक्त नामावली के अन्य मुनिजनों के बारे में (ज्ञानसागर को छोड़कर) किन्हीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य साक्ष्यों से कोई जानकारी नहीं मिलती। (जय) देवसूरि, पूर्णचन्द्रसूरि और हरिभद्रसूरि का नाम अभिलेखीय साक्ष्यों में भी मिलता है परन्तु उनके बीच गुरु-शिष्य सम्बन्धों का ज्ञान उक्त नामावली से ही हो पाता है। इस दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

चक्रेश्वरसूरि

|

धर्मदेवसूरि

|

(जय) देवसूरि

|

पूर्णचन्द्रसूरि

|

हरिभद्रसूरि

|

कमलप्रभसूरि [वि० सं० १५२० में सिरोही के अजितनाथ जिनालय में प्रतिमा प्रतिष्ठापक]

|

गुणकीर्तिसूरि **कालिकाचार्यकथा** की प्रशस्ति [वि० सं० १४६१-७६ में उल्लिखित]

धनकीर्तिसूरि [वि० सं० १५२० के प्रतिमालेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक कमलप्रभसूरि के साथ उल्लिखित]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिंबडी के हस्तलिखित जैन ग्रन्थ भंडार में वि० सं० १५१७ में लिखी गयी **कल्पसूत्रस्तवक**[८] और **कालिकाचार्यकथा**[९] की एक-एक प्रति उपलब्ध है जिसे ग्रन्थभण्डार की प्रकाशित सूची में मडाहडागच्छीय रामचन्द्रसूरि की कृति बतलाया गया है। चूँकि उक्त ग्रन्थभण्डार में संरक्षित हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों अभी अप्रकाशित हैं, अतः ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा, ग्रन्थ के रचनाकाल आदि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाती।

इसी गच्छ में विक्रम सम्वत् की १५वीं शताब्दी के तृतीयचरण में पद्मसागरसूरि[१०] नामक एक विद्वान् मुनि हो चुके हैं, जिनके द्वारा रचित **कयवन्नाचौपाइ, स्थूलभद्रअठावीसा** आदि कुछ कृतियाँ मिलती हैं। ये मरु-गुर्जर भाषा में रचित हैं। **कयवन्नाचौपाई** की प्रशस्ति[११] में रचनाकार ने अपने गुरु तथा रचनाकाल आदि का उल्लेख किया है -

आदि :

सरस वचन आपे सदा, सरसति कवियण माइ,
पणमणि कवइन्ना चरी, पभणिसु सुगुरु पसाइ।
मम्माडहगच्छे गुणनिलो श्रीमुनिसुन्दरसूरि,
पद्मसागरसूरि सीस तसु पभणे आणंदसूरि।

अन्त :

दान उपर कइवन्न चोपइ, संवत् परन त्रिसठे थई,
भाद्र वदि अठमी तिथि जाण, सहस किरण दिन आणंद आणि।
पद्मसागरसूरि इम भणंत, गुणे तिहिं काज सरंति,
ते सवि पामे वांछित सिद्धि, घर नीरोग घरे अविचल रिद्धि।

यद्यपि उक्त ग्रन्थकार और उनके गुरु का अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता और यह रचना भी सामान्य कोटि की है फिर भी मडाहडगच्छ से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्ध होने के कारण इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से इसे महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

विक्रम सम्वत् की सत्रहवीं शताब्दी के द्वितीय-तृतीय चरण में इस गच्छ में सारंग नामक एक विद्वान् हुए हैं। जिनके द्वारा रचित **कविविल्हणपंचाशिकाचौपाई** [रचनाकाल वि० सं० १६३९], **मुंजभोजप्रबन्ध** [रचनाकाल वि० सं० १६५१], **किसनरुक्मिणीवेलि** पर संस्कृतटीका [रचनाकाल वि० सं० १६७८] आदि कृतियाँ प्राप्त होती हैं।[१२] इनके गुरु का नाम पद्मसुन्दर और प्रगुरु का नाम ज्ञानसागर था, जो समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर पूर्वप्रदर्शित मडाहडगच्छ के मुनिजनों की नामावली में उल्लिखित १७वें पट्टधर ज्ञानसागरसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं। मडाहडगच्छ से सम्बद्ध अब तक उपलब्ध यह अन्तिम साहित्यिक साक्ष्य कहा जा सकता है।

अभिलेखीय साक्ष्यों से इस गच्छ की रत्नपुरीयशाखा और **जाखडियाशाखा** का अस्तित्व ज्ञात होत है। इनका विवरण निम्नानुसार है --

रत्नपुरीयशाखा जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है, रत्नपुर नामक स्थान से यह अस्तित्व में आयी प्रतीत होती है। इस गच्छ से सम्बद्ध १४ प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं जो वि० सं० १३५० से वि० सं० १५५७ तक के हैं। इन लेखों में धर्मघोषसूरि, सोमदेवसूरि, धनचन्द्रसूरि, धर्मचन्द्रसूरि, कमलचन्द्रसूरि आदि का उल्लेख मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है :

धर्मघोषसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि

इनके द्वारा वि० सं० १३५० में प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ की धातु की एक प्रतिमा प्राप्त हुई है . मुनि विद्याविजयजी[१३] ने इसकी वाचना की है, जो निम्नानुसार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० १३५० वर्षे माह वदि ९ सोमे.... कानेन भ्रातृरा.... निमित्तं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० महडाहडागच्छे रत्नपुरीय श्री धर्मघोषसूरिपट्टे श्रीसोमदेवसूरिभिः ।

वर्तमान में यह प्रतिमा आदिनाथ जिनालय, पूना में है।

सोमदेवसूरि के पट्टधर धनचन्द्रसूरि- इनके द्वारा प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ की धातु की एक पंचतीर्थी प्रतिमा प्राप्त हुई है। इस पर वि० सं० १४६३ का लेख उत्कीर्ण है। श्री पूरनचंद नाहर[१४] ने इसकी वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :

सं० १४६३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे प्रा०ज्ञा०व्य०हेमा० भा.० हीरादे पु० अजाकेन श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहडागच्छे श्री सोमदेवसूरिपट्टे श्रीधनचन्द्रसूरिभिः ।

धनचन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मचन्द्रसूरि- इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमायें मिलती हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है :

वि० सं० १४८०	फाल्गुन सुदि १०, बुधवार	**प्राचीनलेख- संग्रह**	लेखांक १२४
वि० सं० १४८५	वैशाख सुदि ३	**प्रतिष्ठालेख- संग्रह**, भाग १	लेखांक २५३
वि० सं० १४९३	माघ सुदि २, बुधवार	**बीकानेरजैन- लेखसंग्रह**	लेखांक ७६८
वि० सं० १५०१	ज्येष्ठ सुदि १०, रविवार	**प्रतिष्ठालेख- संग्रह**, भाग १	लेखांक ३३९
वि० सं० १५०७	फाल्गुन वदि ३, बुधवार	**बीकानेरजैन- लेखसंग्रह**	लेखांक ९२०
वि० सं० १५१०	मार्ग ? सुदि १०, रविवार	**प्राचीनलेख- संग्रह**	लेखांक २५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मचन्द्रसूरि के पट्टधर कमलचन्द्रसूरि- इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ४ प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :

वि० सं० १५३४	ज्येष्ठ सुदि १०, सोमवार	**बीकानेरजैन-लेखसंग्रह**	लेखांक १०८१
वि० सं० १५३५	आषाढ़ सुदि ५, गुरुवार	वही	लेखांक १०९१
वि० सं० १५४१	आषाढ़ सुदि ३, शनिवार	वही	लेखांक १३९०
वि० सं० १५४५	माघ सुदि ३, गुरुवार	वही	लेखांक २४१३

वि० सं० १५५७ के एक प्रतिमालेख में इस शाखा के गुणचन्द्रसूरि एवं उपाध्याय आनन्दसूरि का उल्लेख मिलता है।[१५] रत्नपुरीयशाखा का उल्लेख करनेवाला यह अन्तिम साक्ष्य है।

रत्नपुरीयशाखा के उक्त प्रतिमालेखों में प्रथम [वि० सं० १३५०] और द्वितीय [वि० सं० १४६३] लेख में सोमदेवसूरि का उल्लेख मिलता है। प्रथम लेख में वे प्रतिमाप्रतिष्ठापक हैं तथा द्वितीय लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य के गुरु। किन्तु दोनों सोमदेवसूरि के बीच प्रायः १०० सेअधिक वर्षों का अन्तराल है। अतः इस आधार पर दोनों अलग-अलग व्यक्ति सिद्ध होते हैं। यहाँ यह भी विचारणीय है कि इन सौ वर्षो में [वि० सं० १३५० से वि० सं० १४६३] इस शाखा से सम्बद्ध कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः यह सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि दोनों सोमदेव एक ही व्यक्ति हैं और लेख के वाचनाकार की मूल से वि० सं० १४५० की जगह वि० सं० १३५० लिख दिया गया। इस संभावना को स्वीकार कर लेने पर रत्नपुरीयशाखा की वि० सं० १४५० से वि० सं० १५५७ की की एक अविच्छिन्न परम्परा ज्ञात हो जाती है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?
|
धर्मघोषसूरि [वि० सं० १३(४)५०]
|
सोमदेवसूरि [वि० सं० १३(४)५०] एक प्रतिमालेख
|
धनचन्द्रसूरि [वि० सं० १४६३] एक प्रतिमालेख
|
धर्मचन्द्रसूरि [वि० सं० १४८०-१५१०] छह प्रतिमालेख
|
कमलचन्द्रसूरि [वि० सं० १५३४-१५४५] चार प्रतिमालेख

इस शाखा के प्रवर्तक कौन थे, यह शाखा कब अस्तित्व में आयी, इस बारे में प्रमाणों के अभाव में कुछ भी कह पाना कठिन है। अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर वि० सं० की १५वीं शताब्दी के मध्य से वि० सं० की १६वीं शताब्दी के मध्य तक इस शाखा का अस्तित्व सिद्ध होता है।

जाखड़ियाशाखा- मडाहडागच्छ की इस शाखा का उल्लेख करने वाले ५ प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं। इनमें कमलचन्द्रसूरि, आनन्दमेरु तथा गुणचन्द्रसूरि का नाम मिलता है। इनका विवरण इस प्रकार है :

कमलचन्द्रसूरि

वि० सं० १५३५	माघ वदि ६, मंगलवार	**अर्बुदप्राचीन-जैनलेखसंदोह**	लेखांक ६५५
वि० सं० १५४७	ज्येष्ठ सुदि २, मंगलवार	**बीकानेरजैन-लेखसंग्रह**	लेखांक १११२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५५७	वैशाख सुदि ११, गुरुवार	**प्रतिष्ठालेख-संग्रह**, भाग १	लेखांक ८९१
वि० सं० १५६०	वैशाख सुदि ३, बुधवार	**बीकानेरजैन-लेखसंग्रह**	लेखांक २७५१
वि० सं० १५७१	फाल्गुन वदि ४, गुरुवार	वही	लेखांक १६३०

वि० सं० १५७५ कें लेख[१६] में मडाहडागच्छ की शाखा के रूप में नहीं अपितु स्वतन्त्र रूप से जाखड़ियागच्छ के रूप में इसका उल्लेख मिलता है।

इस शाखा के भी प्रवर्तक कौन थे तथा यह कब और किस कारण से अस्तित्व में आयी, इस बारे में आज कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है।

सन्दर्भ सूची :

१. बृहद्गच्छीय वादिदेवसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि द्वारा रचित **उपदेशमालाप्रकरणवृत्ति** [रचनाकाल वि० सं० १२३८/ईस्वी सन् ११८२] की प्रशस्ति.

Muni Punya Vijaya - *Catalogue of Plam - Leaf Mss in the Shanti Nath Jain Bhandar, Cambay,* G.O.S. No. 149, Baroda, 1966 A.D., pp. 284-286.

तपागच्छीय मुनिसुन्दरसूरि द्वारा रचित **गुर्वावलि** [रचनाकाल वि० सं० १४६६/ईस्वी सन् १४०९]

तपागच्छीय हीरविजयसूरि के शिस्य धर्मसागर द्वारा रचित **तपागच्छपट्टावली** [रचनाकाल वि० सं० १६४८/ईस्वी सन् १५९२].

इस सम्बद्ध में विस्तार के लिये द्रष्टव्य **पं. दलसुख मालवणिया अभिनन्दनग्रन्थ** (वाराणसी १९९२) में पृष्ठ १०५-११७ पर प्रकाशित "बृहद्गच्छ का संक्षिप्त इतिहास" नामक लेख तथा इसी पुस्तक से अन्तर्गत "बृहदगच्छका संक्षिप इतिहास"

२. मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, सिंघी जैन ग्रन्थमाला,** ग्रन्थांक ५३, बम्बई १९६१ ईस्वी, पृ० ५२-५५.

३. मुनिजयन्तविजय - **अर्बुदाचलप्रदक्षिणा**, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि० सं० २००४, पृ० ६७-७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अगरचन्द नाहटा - "मडाहडागच्छ" **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष २१, अंक ३, पृ० ४७-४८.

५. R.C. Majumbdar and A.D. Pusalkar, *The Delhi Sultanate*, Bombay 1960 A.D., pp 331, 834.

६. अगरचन्द भँवरलाल नाहटा - "मड्डाहडगच्छ की परम्परा" **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष २०, अंक ५, पृ० ९५-९८.

७. चक्रेश्वरसूरि बृहद्गच्छ के प्रभावक आचार्य थे, उनके द्वारा वि० सं० ११८७ से वि० सं० १२०८ तक प्रतिष्ठापित कई जिनप्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं, ग्रन्थप्रशस्तियों में भी इनका उल्लेख प्राप्त होता है।

मोहनलालदलीचन्द देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृ० २८०.

८. मुनि चतुरविजय - संपादक - **लींबडीस्थ हस्तलिखित जैन ज्ञान भण्डार सूचीपत्रम्** आगमोदयसमिति, ग्रन्थांक ५८, बम्बई १९२८ ईस्वी, क्रमांक ५०१.

९. वही, क्रमांक ५७१.

१०. Vidhatri Vora - *Catalogue of Gujarati Manuscripts : Muniraja Sri Punyavijayaji's Collection*, L.D. Series 71, Ahmedabad 1978, pp. 563.

११. मोहनलाल दलीचन्द देसाई - **जैन गूर्जर कविओ**, भाग १, नवीन संस्करण, संपादक डॉ० जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८६ ईस्वी, पृ० २२४-२२५.

१२. वही, भाग २, पृ० १७५-१७७.

१३. **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ४९.

१४. **जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २१७८.

१५. **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११३०

१६. **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १६३०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोढगच्छ और मोढचैत्य

निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल से निष्पन्न गच्छों में मोढगच्छ भी एक है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है मोढेरक [वर्तमान मोढेरा, उत्तर गुजरात] नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति हुई। इस गच्छ का सर्वप्रथम उल्लेख धातु की दो प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में प्राप्त होता है। प्रथम लेख पार्श्वनाथ की त्रितीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री साराभाई मणिलाल नवाब ने इस लेख की वाचना दी है[१], जो कुछ सुधार के साथ इस प्रकार है :

"श्रीचन्द्रकुले माढ [मोढ] गच्छे मुक्ति सामिहय श्रावको गोछी नमामि जिनत्रय।"

द्वितीय लेख पार्श्वनाथ की अष्टतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने इसकी वाचना इस प्रकार दी है[२] :

"ॐ श्रीचन्द्रकुले मोढगच्छेनिन्नट श्रावकस्य।"

उक्त दोनों लेखों में न तो प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख है और न ही उनकी प्रतिष्ठातिथि/ मिति आदि की चर्चा है। फिर भी उक्त प्रतिमाओं के प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन और लेख की लिपि के आधार पर इन्हें विक्रम सम्वत् की ११वीं शती का माना गया है।

मोढगच्छ से सम्बद्ध तृतीय और अंतिम लेख वि० सं० १२२७ / ई० सन् ११६१ का है जो एक चतुर्विंशतिपट्ट पर उत्कीर्ण है। यह पट्ट आज मधुवन-सम्मेतशिखर स्थित जैन मंदिर में संरक्षित है। श्री पूरनचंद नाहर ने इस लेख की वाचना की है[३], जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सं० १२२७ वैशाख सुदि ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारितः ॥ श्रीमोढगच्छे बप्पभट्टिसूरिसंताने जिनभद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः ॥"

इस लेख में मोढगच्छीय बप्पभट्टिसूरि के संतानीय अर्थात् उनकी परम्परा में हुए जिनभद्राचार्य का चतुर्विंशतिपट्ट के प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है।

मोढगच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत दो उल्लेख प्राप्त होते हैं। इनमें प्रथम साक्ष्य है वि० सं० १३२५ की **कालिकाचार्यकथा** की प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति[४] - जिसमें मोढगुरु हरिप्रभसूरि का उल्लेख है। द्वितीय साक्ष्य है राजगच्छीय आचार्य प्रभाचन्द्रविरचित **प्रभावकचरित** [रचनाकाल वि० सं० १३३४ /ई० सन् १२७८] के अन्तर्गत "बप्पभट्टिसूरिचरित", जिसमें पाटला स्थित नेमिनाथजिनालय के नियामक के रूप में मोढगच्छीय सिद्धसेनसूरि का उल्लेख है।[५]

प्राध्यापक मधुसूदन ढांकी के अनुसार इस गच्छ के अनुयायी मुनिजन चैत्यवासी थे और वे जिनालयों से संलग्न उपाश्रयों में रहा करते थे। मोढेरा इनका प्रधान केन्द्र था। इसके अतिरिक्त पाटला, धंधूका, अणहिलपुरपत्तन और मांडल में भी इनके चैत्य थे।[६]

मोढेरा जैन तीर्थ के रूप में यथेष्ट प्राचीन समय से ही प्रसिद्ध रहा है। मोढब्राह्मण और मोढवणिक ज्ञाति की उत्पत्ति यहीं से हुई।[७] यशोभद्रसूरिगच्छीय सिद्धसेनसूरिविरचित **सकलतीर्थस्तोत्र** [रचनाकाल ई० सन् १०७५ प्रायः] में जैनतीर्थस्थानों की सूचि में इस स्थान का उल्लेख है।[८] प्रबन्धग्रन्थों में यहां स्थित महावीर स्वामी के जिनालय का उल्लेख प्राप्त होता है जो मोढ ज्ञाति का प्रधान चैत्य और संभवतः इस ज्ञाति से भी प्राचीन माना जाता है।[९] **प्रभावकचरित** में बप्पभट्टसूरि द्वारा यहां दर्शनार्थ आने और सिद्धसेनसूरि द्वारा यहां वन्दन करने का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लेख है।[१०] **पुरातनप्रबन्धसंग्रह** के अनुसार वलभी के नगर देवता द्वारा वलभी भंग के समय वर्धमानसूरि को निर्देश दिया गया था कि साधुओं को जहां भिक्षा में प्राप्त क्षीर रुधिर हो जाये और फिर रुधिर से पुनः क्षीर हो जाये, वहीं उन्हें ठहर जाना चाहिए। इस प्रकार वे मोढेर में ठहरे।[११]

पाटला स्थित मोढचैत्य भी मोढेरा के महावीर -जिनालय की भांति ही प्राचीन रहा है।[१२] यह जिनालय नेमिनाथ को समर्पित था। **प्रभावकचरित** के अनुसार यह चैत्य सिद्धसेनसूरि के आधिपत्य में था।[१३] अचलगच्छीय महेन्द्रसूरि द्वारा रचित **अष्टोत्तरीतीर्थमाला** [रचनाकाल - वि० सं० १२८७] के अनुसार कन्नौज के राजा आम ने इस जिनालय का निर्माण कराया था।[१४] वि० सं० १३६७/ई० सन् १३११ में शंखेश्वरपार्श्वनाथ की यात्रा को जाते हुए खरतरगच्छीय आचार्य जिनचन्द्रसूरि 'द्वितीय' यहां पधारे थे।[१५] वि० सं० १३७१/ई० सन् १३१५ में आदिनाथ जिनालय के जीर्णोद्धार से लौटते हुए समराशाह शंखेश्वर और मांडली के साथ यहां भी दर्शनार्थ आये थे।[१६] जिनप्रभसूरि ने **कल्पप्रदीप** के ८४ तीर्थस्थानों की सूची में इस तीर्थ का उल्लेख किया है और यहां नेमिनाथ जिनालय होने की बात कही है।[१७] गुजरात पर मुस्लिम आक्रमण के समय यहां स्थित जिनालय को भी क्षति उठानी पड़ी किन्तु खरतरगच्छीय अनुयायियों तथा समराशाह में यहां आने के पूर्व ही वह पुनः अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर चुका था।[१८] खरतरगच्छीय विनयप्रभसूरि [ई० सन् १३७५] और रत्नाकरगच्छीय जिनतिलकसूरि [ई० सन् १५वीं शती का अंतिम चरण] ने भी यहां स्थित नेमिनाथ जिनालय का उल्लेख किया है।[१९]

मोढज्ञाति का तीसरा चैत्य धंधूका में था जो मोढसहिका के नाम से जाना जाता था। पूर्णतल्लगच्छीय आचार्य देवचन्द्रसूरि की अपने भावी शिष्य चांगदेव [हेमचन्द्राचार्य] से यहीं भेंट हुई थी।[२०] **आख्यानक-मणिकोश** [रचनाकाल वि० सं० १२ वी शती/ई० सन् ११-१२ वी शती]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की प्रशस्ति में भी इस चैत्य का उल्लेख प्राप्त होता है।[२१] तपागच्छीय जिनहर्षगणि द्वारा रचित **वस्तुपालचरित** [रचनाकाल वि० सं० १४९७/ई० सन् १४४१] के अनुसार तेजपाल ने इस जिनालय के रंगमण्डप का जीर्णोद्धार कराया था।[२२]

प्रभावकचरित के अनुसार अणहिलपुरपत्तन में भी एक मोढचैत्य था जिसमें बप्पभट्टिसूरि द्वारा जिनप्रतिमा प्रतिष्ठापित की गयी थी।[२३]

मण्डली [वर्तमान मांडल] में भी वस्तुपाल के समय एक मोढचैत्य था। **वस्तुपालचरित** के अनुसार उसने [या उसके लघुभ्राता ने] यहां मूलनायक की प्रतिमा निर्मित करायी थी।[२४]

जैसा कि यहां पीछे कहा जा चुका है कि मोढवणिक ज्ञाति भी मोढेरा से ही अस्तित्व में आयी। वि० सं० की ११ वीं शती के प्रारम्भ से वि० सं० की १७वीं तक के कई शिलालेखों और ग्रन्थों की दाताप्रशस्तियों में इस ज्ञाति का उल्लेख है, जिससे ज्ञात होता है कि इस ज्ञाति के श्रावक श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के विभिन्न गच्छों में बंटे हुए थे। १६वीं शती में श्रीमद्वल्लभाचार्य के प्रभाव से अनेक मोढ परिवारों ने वैष्णव धर्म स्वीकार कर लिया। १७वीं शती में श्वेताम्बर आम्नाय में लोंकाशाह का उदय हुआ, इनके द्वारा उद्भूत लोकांगच्छ से निकले अमूर्तिपूजक स्थानकवासी सम्प्रदाय में भी अनेक मोढ परिवार दीक्षित हो गये। आज भी पश्चिमी भारत और मध्यभारत में हजारों मोढ परिवार विद्यमान हैं जो वैष्णव और स्थानकवासी परम्परा से सम्बद्ध हैं।[२५] मोढ ज्ञाति द्वारा अपने परम्परागत धर्म के परिवर्तन के परिणामस्वरूप न केवल मोढचैत्य और मोढगच्छ बल्कि श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय भी समाप्त हो गया।

संदर्भसूची :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. Sarabhai Manilal Navab, *The Jaina Tirthas in India and Their Architecture*, Ahmedabad 1944, p. 28.

२. Umakant P. Shah, *Akota Bronzes*, Bombay 1959, p. 60.

३. पूरनचन्द नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, कलकत्ता १९२७ ईस्वी, लेखांक १६९४.

४. C. D. Dalal, *A Descriptive Catalogue of Mss in the Jaina Bhandars at Pattan*, G. O. S. No. 73, Baroda 1937 A. D., P.201.

५. मुनि जिनविजय (संपा०), **प्रभावकचरित**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक - १३, अहमदाबाद- कलकत्ता १९४० ई०, पृ० ८०.

६. M. A. Dhaky, ``Modhera, Modha-Vamsa, Modha-Gaccha and Modha-Caityas'' *Journal of the Asiatic Society of Bombay*, Vol. 56-59 / 1981-84, New Series, Bombay 1986, pp. 153-154.

७. Ibid, 150-152.

८. दलाल, पूर्वोक्त, पृष्ठ १५६-५७.

९. ढांकी, पूर्वोक्त, पृष्ठ १५२.

१०. **प्रभावकचरित**, पृष्ठ ८०-८१.

११. मुनि जिनविजय संपा०, **पुरातनप्रबन्धसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २, कलकत्ता १९३६ ई०, पृष्ठ ८३.

१२. ढांकी, पूर्वोक्त, पृष्ठ १५२.

१३. **प्रभावकचरित**, पृष्ठ ८०.

१४. विधिपक्षगच्छस्य पंचप्रतिक्रमण सूत्राणि [वि० सं० १९८४] के अन्तर्गत प्रकाशित.

१५. मुनि जिनविजय-(संपा०) **खरतरगच्छ बृहद्गुर्वावली**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक ४२, बम्बई १९५६ ई०, पृष्ठ ६३ और ७९.

१६. मण्डलि होईउ पाडलए नमियऊ ए।

नमियऊ ए नमियऊ नेमि सु जीवतसामि ॥ १२. ५

समरारासु रचनाकार-निर्वृत्तिगच्छीय अम्बदेवसूरि, रचनाकाल वि० सं० १३७१ /ई० सन् १३१५ C.D. Dalal, *Pracina Gurjara Kavyasangraha*, Baroda 1978 A.D. pp. 27-38.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. मुनि जिनविजय-संपा०, **विविधतीर्थकल्प**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क १०, शान्तिनिकेतन १९३४ ई०, पृष्ठ ८६.

१८. ढांकी, पूर्वोक्त, पृष्ठ १५२.

१९. वही

२०. अन्यदा मोढचैत्यान्तः प्रभूणां चैत्यवन्दनम्।

"हेमचन्द्रसूरिचरितम्" **प्रभावकचरित**, पृष्ठ १८३.

.... देवचन्द्राचार्येषु धन्धुक्कके श्रीमोढवसहिकायां देवनमस्करणाय प्राप्तेषु... ।

"कुमारपालादिप्रबन्ध", **प्रबन्धचिंतामणि** (संपा०) मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १, शांतिनिकेतन १९३३ ई०, पृ० ८३.

२१. सीमन्धरजिनबिम्बं रमणीये मोढचैत्यगृहे ॥ २० ॥

मुनि पुण्यविजय (संपा०) **आख्यानकमणिकोशः**, प्राकृत ग्रन्थ परिषद, ग्रन्थांक ५, वाराणसी ११६२ ई०, प्रशस्ति, पृष्ठ ३६९-७०.

२२. श्रीमोढवसतौ रङ्गमण्डपं विशदाश्मभिः ।

तेजःपालो व्यधान्नव्यं, दिव्यपाञ्चालिकान्वितम् ॥ ३, ५२

वस्तुपालचरित, श्री शान्तिसूरि जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५, अहमदाबाद १९४१ ई०, पृष्ठ ८७.

२३. श्रीपत्तनान्तरा मोढचैत्यान्तर्म्लेच्छभङ्गतः ।

पूर्वमासीत् तमैक्षन्त तदानीं तत्र धार्मिकाः ॥ ६५९ ॥

द्वापंचाशत् प्रबन्धाञ्च कृतास्तारागणादयः ।

श्रीबप्पभट्टिना शैक्षकविसारस्वतोपमाः ॥ ६६० ॥

"बप्पभट्टिसूरिचरितम्" **प्रभावकचरित**, पृष्ठ १०७.

२४. असावादिजिनेन्द्रस्य, मण्डल्यां वसतिं व्यधात् ।

मोढार्हद्वसतौ मूलनायकं च न्यवीविशत् ॥ ८, ६४

वस्तुपालचरित, पृष्ठ १३४.

२५. यह सूचना प्रो० सागरमल जैन से प्राप्त हुई है, जिसके लिये लेखक उनका हृदय से आभारी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशोभद्रसूरिगच्छ

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कुल से समय-समय पर अस्तित्व में आये विभिन्न गच्छों में यशोभद्रसूरिगच्छ भी एक है। यशोभद्रसूरि जिनके नाम पर इस गच्छ का नामकरण हुआ, इसके आदिम आचार्य माने जा सकते हैं।

जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, यशोभद्रसूरि के पश्चात् उनकी शिष्य-सन्तति यशोभद्रसूरिगच्छ के नाम से जानी गयी होगी। इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र दो साक्ष्य मिलते हैं। उनमें से प्रथम साक्ष्य है सिद्धसेनसूरि (पूर्व नाम साधारण कवि) द्वारा वि० सं० ११२३/ ई० सन् १०६७ में रची गयी **विलासवई**[१] (**विलासवती**) नामक कृति की प्रशस्ति[२]। इसके अनुसार वाणिज्यकुल, कोटिकगण और वज्रशाखा के अन्तर्गत चन्द्रकुल प्रसिद्ध हुआ जिसमें अनेक प्रसिद्ध आचार्य और मुनिजन हुए। प्रसिद्ध जैनाचार्य बप्पभट्टिसूरि इसी गच्छ के थे। इनकी परम्परा में आगे चलकर यशोभद्रसूरि नामक आचार्य हुए। उनके नाम पर उनकी शिष्य-सन्तति यशोभद्रसूरिगच्छीय कहलायी। आगे चलकर शांतिसूरि इस गच्छ के नायक बने। मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों पर उनका बड़ा प्रभाव था। उनके पट्टधर यशोदेवसूरि हुए। इन्हीं के शिष्य सिद्धसेनसूरि अपरनाम साधारणकवि ने वि० सं० ११२३ में अपभ्रंश भाषा में **विलासवइ** नामक कृति की रचना की। इस प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि कवि ने गोपगिरि (वर्तमान ग्वालियर) के निवासी भिल्लमालकुल के साहु लक्ष्मीधर की प्रार्थना पर उक्त कृति की रचना की। प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने यद्यपि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वयं को विभिन्न स्तुतियों - स्तोत्रों का भी रचयिता बतलाया है फिर भी उनमें से मात्र एक स्तोत्र **सकलतीर्थस्तोत्र**[३] - को छोड़कर अन्य कृतियां आज नहीं मिलतीं।

इस गच्छ से सम्बद्ध द्वितीय और अंतिम साक्ष्य है वि० सं० १२१४ का एक लेख[४] जो महावीर मुछाला चैत्य में एक पवासणा पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख में इस गच्छ के प्रीतिसूरि का नाम मिलता है। इसके बारे में कोई अन्य सूचना प्राप्त नहीं होती।

उक्त साक्ष्यों से इस गच्छ के मुनिजनों का जो क्रम निश्चित होता है, वह निम्नानुसार है :

कोटिकगण, वज्रशाखा
और चन्द्रकुल
|
बप्पभट्टिसूरि
[गोपगिरि नरेश आम (नागभट्ट 'द्वितीय') के समकालीन]
|
|
|
यशोभद्रसूरि
|
शांतिसूरि
|
यशोदेवसूरि
|
साधारणकवि
अपरनाम सिद्धसेनसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[वि० सं० ११२३ /ई० स० १०६७
में **विलासवई** के रचनाकार]
|
|
|
|
|
|
|
प्रीतिसूरि
[वि० सं० १२१४ के
अभिलेख में उल्लिखित]

विलासवई की प्रशस्ति में चूंकि बप्पभट्टसूरि के पश्चात् यशोभद्रसूरि नाम आया है, अतः यह माना जा सकता है कि उनके बाद ही यशोभद्रसूरि हुए होंगे। बप्पभट्टिसूरि का काल ई० सन् की आठवीं-नवीं शताब्दी सुनिश्चित है, अतः यह कहा जा सकता है कि यशोभद्रसूरि ई० स० की नवीं-दसवीं शती के आसपास हुए होंगे।

इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की दुर्लभता को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि चन्द्रकुल से उद्भूत अन्यान्य गच्छों की तुलना में इस गच्छ का प्रभाव तथा प्रचार-प्रसार अत्यन्त सीमित रहा। सिद्धसेनसूरि के पश्चात् और प्रीतिसूरि के पूर्व (लगभग एक सौ वर्षों तक) इस गच्छ में हुए मुनिजनों के नामादि के सम्बन्ध में कोई जानकारी आज उपलब्ध नहीं है। प्रीतिसूरि का भी उल्लेख केवल एक लेख में मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ईस्वी सन् की १२वीं शताब्दी के मध्य भाग तक इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व तो रहा, परन्तु इससे जुड़े हुए श्रमणों और श्रावकों की संख्या प्रायः नगण्य ही रही होगी और उनमें भी कोई प्रभावशाली या विद्वान् मुनि नहीं हुआ जो सिद्धसेनसूरि द्वारा प्रारम्भ किये गये साहित्य सृजन के कार्य को आगे बढ़ा सके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची :

१. **विलासवईकहा** - संपा० रमणलाल म० शाह, लालभाई दलपतभाई ग्रन्थमाला, **अहमदाबाद** १९७७ ईस्वी.

२. वही, पृष्ठ १६५.

३. रमणलाल म० शाह - **सम्बोधि**, वर्ष ७, अंक १-४, पृ० ९५-१००.

४. दौलत सिंह लोढ़ा - **श्रीप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ३२४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) से समय-समय पर अनेक गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ। राजगच्छ भी उनमें से एक है। यह गच्छ ११वीं शताब्दी के प्रारम्भ के लगभग अस्तित्व में आया। इस गच्छ में प्रद्युम्नसूरि, अभयदेवसूरि, धनेश्वरसूरि, पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि, सिद्धसेनसूरि, माणिक्यचन्द्रसूरि, मानतुंगसूरि, प्रभाचन्द्रसूरि आदि प्रखर विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए।

राजगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा रचित ग्रन्थों की प्रशस्तियों एवं इस गच्छ की एकमात्र उपलब्ध पट्टावली का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें ग्रन्थ प्रशस्तियां पट्टावली से प्राचीनतर होने के कारण ज्यादा प्रामाणिक हैं।

ग्रन्थ प्रशस्तियों की भांति इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं एवं जिनालयों में उत्कीर्ण अभिलेख भी, जो कि अल्प संख्या में मिले हैं, उतने ही प्रामाणिक हैं। अध्ययन की सुविधा के लिये यहां सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

राजगच्छीय आचार्यों की प्रमुख रचनाओं की प्रशस्तियों में प्राप्त गुर्वावली का अलग-अलग विवरण इस प्रकार है :

सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति - राजगच्छीय आचार्य शीलभद्रसूरि के शिष्य धनेश्वरसूरि[१] (द्वितीय) ने वि० सं० ११७१/ई० सन् १११५ में उक्त कृति की रचना की। इसकी प्रशस्ति में अपनी गुरु-परम्परा का उन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

धनेश्वरसूरि (प्रथम)
|
अजितसिंहसूरि (प्रथम)
(**विश्रान्तविद्याधर** के रचनाकार)
|
वर्धमानसूरि
|
शीलभद्रसूरि
|
अजितसिंहसूरि (द्वितीय) — धनेश्वरसूरि (द्वितीय)
(वि० सं० ११७१ / ई० सन् १११५ में **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति** के रचनाकार)
|
पार्श्वदेवगणि

प्रवचनसारोद्धारटीका - राजगच्छ के देवप्रभसूरि के शिष्य एवं पट्टधर सिद्धसेनसूरि ने वि० सं० १२७८/ई० सन् १२२२ में **प्रवचनसारोद्धार** पर टीका की रचना की। इसकी प्रशस्ति[५] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि
|
धनेश्वरसूरि
|
अजितसिंहसूरि (प्रथम)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
वर्धमानसूरि
|
देवसूरि | चन्द्रप्रभसूरि
|
भद्रेश्वरसूरि
|
अजितसिंहसूरि (द्वितीय)
|
देवप्रभसूरि
|
सिद्धसेनसूरि
[वि० सं० १२७८ / ई० सन् १२२२ में **प्रवचनसारोद्धार** पर टीका के रचनाकार]

श्रेयांसचरित – राजगच्छीय आचार्य शीलभद्रसूरि के शिष्य सर्वदेवसूरि की परम्परा में मानतुंगसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १३३२ /ई० सन् १२७६ में संस्कृत भाषा में **श्रेयांसचरित** की रचना की। इसकी प्रशस्ति[६] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

शीलभद्रसूरि
|
सर्वदेवसूरि
|
चन्द्रप्रभसूरि
|
जिनेश्वरसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्नप्रभसूरि

|

मानतुंगसूरि [वि० सं० १३३२/ई० सन् १२७६ में **श्रेयांसचरित** के रचनाकार]

प्रभावकचरित - राजगच्छ के आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य प्रभाचन्द्रसूरि ने वि० सं० १३३४ /ई० सन् १२७८ में उक्त महत्त्वपूर्ण कृति की रचना की। इसकी प्रशस्ति[७] के अन्तर्गत उन्होंने अपने गच्छ को विस्तृत गुर्वावली दी है, जो इस प्रकार है :

प्रद्युम्नसूरि

|

अभयदेवसूरि

|

धनेश्वरसूरि

|

अजितसिंहसूरि

|

वर्धमानसूरि

|

शीलभद्रसूरि

|

श्रीचन्द्रसूरि भरतेश्वरसूरि धर्मघोषसूरि सर्वदेवसूरि

श्रीचन्द्रसूरि

|

जिनेश्वरसूरि जिनदत्तसूरि पद्मदेवसूरि पूर्णभद्रसूरि

|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्रप्रभसूरि
|
प्रभाचन्द्रसूरि
[वि० सं० १३३४ /
ई० सन् १२७८ में
प्रभावकचरित
के रचनाकार]

जैसा कि पूर्व में हम देख चुके हैं धनेश्वरसूरि (द्वितीय) ने **सूक्ष्मार्थ-विचारसारप्रकरणवृत्ति** की प्रशस्ति[८] में राजगच्छीयगुर्वावली का प्रारम्भ धनेश्वरसूरि (प्रथम) से और विजयसिंहसूरि, देवप्रभसूरि एवं सिद्धसेनसूरि द्वारा उल्लिखित ग्रन्थप्रशस्तियों में राजगच्छीयगुर्वावली अभयदेवसूरि से प्रारम्भ हुई है। इसके विपरीत माणिक्यचन्द्रसूरि और प्रभाचन्द्रसूरि ने अपने-अपने ग्रन्थप्रशस्तियों में अभयदेवसूरि के गुरु प्रद्युम्नसूरि को राजगच्छ का आदिम आचार्य बतलाया है। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि ने **सन्मतितर्क** की **तत्त्वबोधविधायिनीटीका** की प्रशस्ति में आचार्य प्रद्युम्नसूरि को अपना गुरु बतलाया है। अभयदेवसूरि के शिष्य धनेश्वरसूरि के समय से ही चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) की यह शाखा राजगच्छ के नाम से विख्यात हुई। इसी कारण उत्तरकालीन राजगच्छीय ग्रन्थकार आचार्य अभयदेवसूरि और उनके गुरु प्रद्युम्नसूरि को राजगच्छ का आदिम आचार्य मानते हैं।

उपरोक्त ग्रन्थप्रशस्तियों की गुर्वावलियों से यह भी स्पष्ट होता है कि वर्धमानसूरि के समय तक इस गच्छ में कोई शाखा भेद नहीं हुआ था, परन्तु उनके शिष्यों शीलभद्रसूरि और देवभद्रसूरि (प्रथम) से राजगच्छ की अलग-अलग शाखायें अस्तित्व में आयीं। देवप्रभसूरि की परम्परा में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्रप्रभसूरि, भद्रेश्वरसूरि, अजितसिंहसूरि (द्वितीय), देवप्रभसूरि (द्वितीय), सिद्धसेनसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, वीरदेवगणि आदि आचार्य हुए।

जहां तक शीलभद्रसूरि की शिष्य परम्परा का प्रश्न है धनेश्वरसूरि (द्वितीय) ने **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति** की प्रशस्ति में शीलभद्रसूरि को अपना गुरु तथा अजितसिंहसूरि (द्वितीय) को अपना गुरु-भ्राता और पार्श्वदेवगणि को अपना शिष्य बतलाया है । माणिक्यचन्द्रसूरि ने **पार्श्वनाथचरित** की प्रशस्ति में शीलभद्रसूरि के केवल एक शिष्य भरतेश्वरसूरि के साथ-साथ श्रीचन्द्रसूरि, धर्मघोषसूरि और सर्वदेवसूरि का शीलभद्रसूरि के शिष्य के रूप में उल्लेख किया है। मानतुंगसूरि विरचित **श्रेयांसनाथचरित** की प्रशस्ति में भी शीलभद्रसूरि के शिष्य सर्वदेवसूरि का नाम आया है। इस प्रकार हमें शीलभद्रसूरि के ६ शिष्यों का उल्लेख मिल जाता है। यहाँ एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि धनेश्वरसूरि ने अपने ग्रन्थ की प्रशस्ति में पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि को अपना शिष्य बतलाया है। श्रीचन्द्रसूरि ने भी स्वरचित ग्रन्थों में धनेश्वरसूरि का अपने गुरु के रूप में सादर उल्लेख किया है । किन्तु आबू स्थित विमलवसही के वि० सं० १२०६/ई० सन् ११५० में मंत्रीश्वर पृथ्वीपाल द्वारा कराये गये जीर्णोद्धार सम्बन्धी लेख में श्रीचन्द्रसूरि को शीलभद्रसूरि का शिष्य बतलाया गया है।[१] इस तथ्य का स्पष्टीकरण इस प्रकार है :

श्रीचन्द्रसूरि को आचार्य पद प्राप्त होने से पूर्व गणि अवस्था में पार्श्वदेव नाम था। ऐसा प्रतीत होता है कि शीलभद्रसूरि ने इन्हें गणि पद प्रदान किया होगा और बाद में धनेश्वरसूरि ने इन्हें आचार्यपद दिया, संभवतः इसी कारण इन्होंने धनेश्वरसूरि को अपना गुरु कहा है। धनेश्वरसूरि (द्वितीय) और उनके गुरुभ्राता अजितसिंहसूरि (द्वितीय) के बारे में कोई अन्य सूचना नहीं मिलती। शीलभद्रसूरि के शेष चार शिष्यों पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि, भरतेश्वरसूरि, धर्मघोषसूरि और सर्वदेवसूरि की शिष्यसन्तति आगे चली। श्रीचन्द्रसूरि की परम्परा में प्रभाचन्द्रसूरि और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरतेश्वरसूरि की परम्परा में माणिक्यचन्द्रसूरि हुए। धर्मघोषसूरि की शिष्यसंतति उनके नाम पर **धर्मघोषगच्छ** के नाम से विख्यात हुई।[१०] सर्वदेवसूरि की परम्परा में मानतुंगसूरि हुए।

अज्ञातकृतक **राजगच्छपट्टावली**[११] जो १६वीं शती में रची गयी प्रतीत होती है, में नन्नसूरि को इस गच्छ का आदिम आचार्य कहा गया है। उनके पट्ट पर **अजित-यशो-वादि** सूरि हुए, जिनके पट्ट पर सर्वदेवसूरि आसीन हुए। सर्वदेवसूरि के पट्टधर प्रद्युम्नसूरि और उनके पश्चात् अभयदेवसूरि आदि वही नाम दिये गये हैं, जो ग्रन्थप्रशस्तियों में आ चुके हैं।

राजगच्छीयपट्टावली और **ग्रन्थप्रशस्तियों** में यह अन्तर क्यों हैं! इस पट्टावली से तो यही लगता है कि धनेश्वरसूरि, विजयसिंहसूरि, देवप्रभसूरि, माणिक्यचन्द्रसूरि, सिद्धसेनसूरि, मानतुंगसूरि, प्रभाचंद्रसूरि आदि ने अपने ग्रन्थप्रशस्तियों की गुर्वावली में उक्त प्रथम तीन नामों को विस्तृत कर दिया है। अब यह प्रश्न उठता है कि वस्तुतः ये तीन नाम छोड़ दिये गये हैं या पट्टावलीकार ने इसे भ्रमवश कहीं से उठा कर जोड़ दिया है! इसके स्पष्टीकरण के लिये हमें अन्यत्र प्रयास करना होगा।

वडगच्छीय आचार्य नेमिचन्द्रसूरि विरचित **उत्तराध्ययनसूत्र** की **सुखबोधावृत्ति** [रचनाकाल वि० सं० ११४३/ई० सन् १०८७] की वि० सं० १३०७ /ई० सन् १२५१ में लिखी गयी प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति[१२] में सर्वप्रथम नन्नसूरि का नाम आता है। उनके पश्चात् अमित यश वाले वादिसूरि हुए, जिनके पट्ट पर प्रद्युम्नसूरि विराजित हुए। यहां तक **राजगच्छपट्टावली** और उक्त प्रशस्ति की गुर्वावली में साम्य है, अन्तर केवल इतना ही है कि **राजगच्छीयपट्टावली** में उल्लिखित **अजितयशोवादि** के स्थान पर **अमितयशोवादि** नाम दिया गया है।

प्रो० एम० ए० ढांकी का मत है कि **राजगच्छीयपट्टावली** में उल्लिखित अजित-यशो-वादि वस्तुतः **उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्ति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की वि० सं० १३०७/ई० सन् १२५१ में लिखी गयी प्रतिलिपि की **दाताप्रशस्ति** में उल्लिखित **अमितयशोवादि** अर्थात् अपरिमित यशवाले वादिसूरि होना चाहिए, क्यों कि प्रतिलिपिकार की भूल से 'अमित' के स्थान पर 'अजित' अर्थात् '**म**' के स्थान पर '**ज**' हो जाना कठिन नहीं हैं। संभवतः **राजगच्छपट्टावली** के रचनाकार की दृष्टि में उक्त दाताप्रशस्ति आयी होगी और उन्होंने इसमें प्रद्युम्नसूरि का नाम देखकर गच्छवैभिन्य की उपेक्षा करते हुए प्रद्युम्नसूरि के पूर्व में आचार्यों के नामों को अपने गच्छ की गुर्वावली में सम्मिलित कर लिया होगा[१३]। प्रो० ढांकी का उक्त कथन सत्य प्रतीत होता है, क्यों कि अन्य गच्छ या आम्नाय के प्रसिद्ध आचार्यों को अपने ही गच्छ या आम्नाय से सम्बद्ध करने का यह एकमात्र उदाहरण नहीं हैं। इसी प्रकार **राजगच्छपट्टावली** में धर्मघोषगच्छ के आचार्यों को भी राजगच्छीय ही बतलाया गया है। वस्तुतः राजगच्छीय धर्मघोषसूरि के मृत्योपरान्त उनकी शिष्य-सन्तति धर्मघोषगच्छीय कहलाने लगी और उसका स्वतंत्र अस्तित्व प्रमाणित है। अतः भ्रामक विवरणों से युक्त राजगच्छ की एकमात्र उपलब्ध पट्टावली की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है; राजगच्छ से सम्बद्ध कुछ अभिलेख भी प्राप्त होते है, जो वि० सं० ११२८ से वि० सं० १५१० तक के हैं, तथापि इनकी संख्या अल्प ही हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१- + (व) त + ११ (२?) ८ फाल्गुन सुदि ९ सोमे आरासणाभिधाने स्थाने तीर्थाधिपस्य वीरस्य प्रतिमा [+] + + + + राज्ये कारिता + + + + + ज रा [ज] गच्छे श्री............... [१४]

यह लेख न केवल राजगच्छ से सम्बद्ध है, बल्कि उस गच्छ के उपलब्ध लेखों में सबसे प्राचीन भी है।[१५]

२.-सं. १२०६ श्रीशीलचन्द्रसूरीणां शिष्यैः श्रीचन्द्रसूरिभिः । विमलादिसुसंघेन, युतैस्तीर्थमिदं स्तुत [तं] ॥ १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयं तीर्थसमुद्धारो-त्यदमुतोऽकारि धीमता ।

श्रीमदानन्दपुत्रेण, श्रीपृथ्वीपालमंत्रिणा ॥ २ ॥

विमलवसही - देहरी संख्या १४ पर उत्कीर्ण लेख[१६]

राजगच्छ से सम्बद्ध ४ शिलालेख वि० सं० १२१२ माघ सुदि १० बुधवार के हैं, जो विमलवसही से ही प्राप्त हुए हैं। मुनि कल्याणविजय ने इनकी वाचना इस प्रकार दी है:[१७]

संवत् १२१२ माघ सुदि १० दशम्यां बुधे महं. ललितांग महं० शीतयो: पुत्रेण ठ० पद्मसिंहेनात्मीय ज्येष्ठभ्रातृ ठ० नरवाहण श्रेयोर्थं श्रीमदजितनाथबिंबंमुर्बदे कारितं प्रतिष्ठितं श्रीशीलभद्रसूरि-शिष्यश्रीभरतेश्वराचार्यशिष्यैः श्रीवैरस्वामिसूरिभिरिति ॥

देहरी क्रमांक ४८, आबू

संवत् १२१२ माघ सुदि बुधे १० ठ० अमरसेण ठ० वैजल देव्यो: पुत्रेण महं० श्री जज्जुकेन महं० जासुकाकुक्षिससमुद्भूतस्वसुत ठ० कुमरसिंहश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबमर्बुदे कारितं ॥ प्रतिष्ठितं च श्रीशीलभद्रसूरि-शिष्य श्रीभरतेश्वराचार्यशिष्यैः श्रीवैरस्वामिसूरिभिः ॥

देहरी क्रमाकं ४९, आबू

संवत १२१२ माघ सुदि १० महं. श्री जजुक भार्यया महं० जासुकया श्रेयोऽर्थं चतुर्विंशतिपट्टकोऽर्बुदे कारितः प्रतिष्ठतश्च श्रीवैररस्वामिसूरिभिरिति ॥

देहरी क्रमांक ४९, आबू

सं० १२१२ माघ सुदि दशम्यां बुधे महामात्य श्रीमदानन्द महं० श्री सलूणयो: पुत्रेण ठ० श्री नानाकेन ठ० श्री त्रिभुवन देवीकुक्षिसमुद्भूत स्वसुतदंडश्री नागार्जुनश्रे०.. .... कारितं, प्रतिष्ठितं च श्री शीलभद्र सूरि शिष्यश्री भरतेश्वराचार्य शिष्यैः श्रीवैरस्वामिसूरिभिरिति ॥

देहरी क्रमांक ५३, आबू

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त अभिलेखों में उल्लिखित शीलभद्रसूरि, भरतेश्वरसूरि और उनके शिष्य वैरस्वामी माणिक्यचन्द्रसूरि द्वारा रचित **पार्श्वनाथचरित** (रचनाकाल वि० सं० १२७६/ई० सन् १२२०) की प्रशस्ति में उल्लिखित शीलभद्रसूरि, उनके शिष्य भरतेश्वरसूरि तथा उनके पट्टधर वैरस्वामी से निश्चय ही अभिन्न हैं।

गिरनार स्थित नेमिनाथ जिनालय के उत्तरी द्वार पर उत्कीर्ण एक खंडित अभिलेख में भी शीलभद्रसूरि के शिष्य श्रीचन्द्रसूरि का उल्लेख मिलता है। प्रो० एम० ए० ढाकी[१८] ने इस लेख को वि० सं० १२०६ या वि० सं० १२१६ का बतलाया है।

राजगच्छ से सम्बद्ध दो लेख वि० सं० की १४ वीं शती के हैं। प्रथम लेख वि० सं० १३२६ का है। बुद्धिसागरसूरि ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है।[१९]

सं० १३२६ वर्षे माघ वदि २ रवौ ठं मलहाकेन पितृयशश्रेयसे श्री आदिनाथबिंबं कारि० श्रीराजगच्छे श्रीमाणिक्यसूरि शिष्य श्रीहेमसूरिभिः

द्वितीय लेख वि० सं० १३९ (?) का है। श्री अगरचन्द नाहटा[२०] ने इस लेख की वाचना की है, जो इस प्रकार है :

संवत् १३९ () वैशाख सुदि ३ बुधे प्राग्वाटज्ञातीय महं० ससुपाल श्रेयार्थं महं० कविराजेन श्रीपार्श्व बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं राजगच्छीय श्रीमाणिक्यसूरि शिष्य श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः ॥

राजगच्छ से सम्बद्ध अगला लेख वि० सं० १४१० का है।

बुद्धिसागरसूरि[२१] ने इसकी वाचना निम्नानुसार दी है :

सं. १४१० वर्ष माघ वदि ६ बुधे .... मरसीहेन

स्वपितुः सा०........................... र्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं

प्रतिष्ठतं श्रीपद (?) मसूरिसंताने श्रीराजगच्छे श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

वि० सं० १४२० के लेख में भी राजगच्छीय हरिभद्रसूरि का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है।[२२] लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

सं० १४२० वैशाख सुदि १० शुक्रे उपकेशज्ञातीय .... पितृमातृपूर्वज .... श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीहेमसूरिसंताने श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

इस लेख में उल्लिखित हरिभद्रसूरि के गुरु हेमचन्द्रसूरि वही व्यक्ति है जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें वि० सं० १३२६ और १३९ (?) की प्राप्त हुई हैं।

माणिक्यसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि वि० सं० १३२६ और १३९ (?) (प्रतिमालेख)
|
|
|
हरिभद्रसूरि वि० सं० १४१० - १४२० (प्रतिमालेख)

राजगच्छ से सम्बद्ध एक लेख वि० सं० १४३८/ई० सन् १३७२ का भी है जो धर्मनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। बुद्धिसागरसूरि ने इस लेख का पाठ इस प्रकार दिया है।[२३]

सं० १४३८ वर्षे ज्येष्ठ व० ४ शनौ प्राग्वाट व्य० मोषट भा० सोमलदे पु० झांझणेन पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुणसागरसूरिपट्टे श्रीमलयचन्द्रसूरिणामुपदेशेन ॥

प्रतिष्ठास्थान–सुमतिनाथमुख्यबावन जिनालय, मातर

यद्यपि इस लेख में राजगच्छ का उल्लेख नहीं है किन्तु वि० सं० १४९१ /ई० सन् १४३५ के एक लेख[२४] से, जो राजगच्छ से सम्बद्ध है, यह स्पष्ट हो जाता है कि गुणसागरसूरि और उनके पट्टधर मलयचन्द्रसूरि राजगच्छ से ही सम्बद्ध थे। लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

श्रीमन्नृपविक्रमसमयातीतसंवत् १४९१ आषाढ़ादि ९२ वर्षे शाके १३५७ प्रवर्त्तमाने मार्गशीर्षशुक्लत्रयोदश्यां १३ तिथौ शनिवारे कृत्तिकायां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घड़ी ३८ अपरांतरोहिणीनक्षत्रे सिद्धियोगे रात्रिघ० १२ समये सिंहलग्ने वहमानेऽस्यां शुभग्रहावलोकितकल्याणवतीवेलायां श्रीराजगच्छे श्रीराज-प्रभुगुरुसंताने श्रीहेमप्रभसूरिसंताने श्रीहरिप्रभसूरिपट्टे श्रीभट्टारकसंताने श्रीमेरु-चन्द्रसूरिजीवितस्वामिमूर्तिः ॥ चिरं जयतु शुभं भवतु ॥ (दाहिने हाथ) श्रीमलयचंद्रसूरिमूर्तिरियं ॥ (बायें हाथ) श्रीमुनितिलकसूरिमूर्तिरियं ॥

प्राप्तिस्थान - चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात।

राजगच्छ से सम्बद्ध अगलालेख वि० सं० १५०३ का है जो पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख में प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम नहीं दिया गया है।

वि० सं० १५०४[२५] और १५०९[२६] के दो लेख भी राजगच्छ से सम्बद्ध हैं। ये लेख कुंथुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। महोपाध्याय विनयसागर जी ने इनकी वाचना इस प्रकार दी है :

सं० १५०४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ सोमे उसिवालज्ञातीय। सुराणागोत्रे। सा० लखणा भा० लखणश्री पु० सा० सकर्म्मण सा० शिवरामेन श्रीकुन्थुनाथ-चतुर्विंशतिपट्टः कारितं प्रतिष्ठितं श्रीराजगच्छे। भट्टारिक श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥ श्रीः ॥

प्रतिष्ठास्थान-पंचायती मंदिर, जयपुर

सं० १५०९ वर्षे आषाढ़ सुदि २ सोमे ओसवालज्ञातीय सुराणागोत्रे सा० लखमण भा० लखणश्री पु० सा० सकर्मण भा० सावराजेन श्रीकुन्थुनाथ-चतुर्विंशतिपट्टः कारितं प्रतिष्ठितं श्रीराजगच्छे। भट्टारक श्रीपद्मानन्दसूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रतिष्ठास्थान-पूर्वोक्त

उक्त दोनों लेखों में न केवल एक ही माह, तिथि और वार का उल्लेख है बल्कि दोनों ही कुन्थुनात की चौबीसी पर उत्कीर्ण और पंचायती मंदिर, जयपुर में रखी बतलायी गयी हैं। साथ ही इन्हें बनवाने वाले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रावक-श्राविका और प्रतिष्ठापक आचार्य भी एक ही हैं, अन्तर केवल प्रतिष्ठावर्ष का है। ऐसी परिस्थिति में यह प्रश्न उठता है कि क्या ये दोनों लेख कुन्थुनाथ की अलग-अलग दो चौबीसी पट्ट पर उत्कीर्ण हैं या एक ही चौबीसी का लेख है जिसका संग्रहकार ने भ्रमवश दो बार पाठ ले लिया और उनको दोनों वाचनाओं में किन्ही अज्ञात कारणों से प्रतिष्ठावर्ष के पाठ में भेद आ जाने से यह गड़बड़ी उत्पन्न हो गयी, यह विचारणीय है।

राजगच्छ का उल्लेख करने वाला एक लेख[२७] वि० सं० १५१० का भी है, परन्तु इसमें प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम मिट गया है। लेख का मूल पाठ इस प्रकार है :

संवत् १५१० वर्षे वैशाख वदि १३ सोमे.......श्रीसंघ श्रीमहावीरबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीराजगच्छे ..... उसूरिभिः ॥

राजगच्छ के प्रमुख आचार्यों और ग्रन्थकारों का परिचय इस प्रकार है :

प्रद्युम्नसूरि: श्वेताम्बर जैन परम्परा में प्रद्युम्नसूरि नाम के कई विद्वान् मुनि और आचार्य हो चुके हैं। विवेच्य प्रद्युम्नसूरि चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) की एक शाखा राजगच्छ के प्रथम आचार्य धनेश्वरसूरि(प्रथम) के दादागुरु थे। माणिक्यचन्द्रसूरि कृत **पार्श्वनाथचरित**,[२८] प्रभाचन्द्रसूरि कृत **प्रभावकचरित**[२९] और चन्द्रगच्छीय प्रद्युम्नसूरि कृत **समरादित्य-संक्षेप**[३०] आदि ग्रन्थों से इनके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है जिसके अनुसार इन्होंने अल्लू की राजसभा में दिगम्बरमतावलम्बियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया एवं सपादलक्ष तथा त्रिभुवनगिरि के राजाओं को जैन धर्म में दीक्षित किया। अल्लू को नागदा के गुहिलशासक भर्तृपट्ट के पुत्र अल्लट (वि० सं० १००८-२८ /ई० सन् ९५२-७२) से समीकृत किया जा सकता है।[३१] प्रद्युम्नसूरि के बारे में विशेष विवरण का अभाव है। इनके शिष्य और पट्टधर अभयदेवसूरि हुए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयदेवसूरि: आप आचार्य प्रद्यम्नसूरि के शिष्य तथा सिद्धसेनदिवाकरप्रणीत **सन्मतितर्क** के टीकाकार के रूप में विख्यात है। यह बात उक्त टीका की प्रशस्ति से ज्ञात होती है,[३२] परन्तु इस प्रशस्ति में इन्होंने अपने गच्छ, समय, शिष्यसन्तति आदि की कोई चर्चा नहीं की है। राजगच्छीय विद्वानों ने अपनी कृतियों में इन्हें 'तर्कपंचानन' जैसे विरुद् प्रदान किये हैं।[३३]

सन्मतितर्कटीका की प्रस्तावना में पं० सुखलाल जी और पं० बेचरदास जी ने इनका समय विक्रम सम्वत् की १० वीं शती का अन्तिम भाग और ११वीं शती का पूर्वभाग निश्चित किया है।[३४]

उत्तराध्ययनसूत्र पर थारापद्रगच्छीय वादिवेताल शांतिसूरि द्वारा रचित 'पाइय' टीका की प्रशस्ति में टीकाकार ने किन्ही अभयदेवसूरि का अपने प्रमाणशास्त्र के गुरु के रूप में अत्यन्त आदर के साथ उल्लेख किया है।[३५] पं० सुखलाल जी और पं० बेचरदास जी ने शांतिसूरि के गुरु के रूप में इन्हीं अभयदेवसूरि के संभावना प्रकट की है।[३६] **प्रभावकचरित** के अनुसार शांतिसूरि का स्वर्गवास वि० सं० १०९६/ई० सन् १०४० में हुआ था।[३७] शांतिसूरि ने महाकवि धनपालकृत **तिलकमञ्जरी** का संशोधन किया था और उस पर एक टिप्पणी भी लिखी थी।[३८] धनपाल परमारनरेश मुंज (ई० सन् ९७३-९९६) तथा भोज (ई० सन् १०१०-१०५५) के राजदरबार के कवि थे। इन सब तथ्यों को देखते हुए पं० महेन्द्रकुमारजी ने अभयदेवसूरि का काल वि० सं० की ११ वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक निश्चित किया है।[३९] सरसरे तौर पर उनका कार्यकाल ईस्वी ९५०-१००० के बीच रखा जा सकता है।

धनेश्वरसूरि 'प्रथम': आप अभयदेवसूरि के शिष्य और पट्टधर थे। राजगच्छ के उत्तरकालीन ग्रन्थकारों की रचनाओं की प्रशस्तियों से इनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। **प्रभावकचरित** की प्रशस्ति के अनुसार आप त्रिभुवनगिरि के राजा कर्दम थे। आप ने अभयदेवसूरि से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा ग्रहण की और धनेश्वरसूरि के नाम से विख्यात हुए। चूंकि दीक्षित होने के पूर्व ये राजा थे, अंत: इनकी शिष्य सन्तति (चन्द्रगच्छ की एक शाखा) राजगच्छ के नाम से विख्यात हुई।[४०]

राजगच्छीय सिद्धसेनसूरि ने **प्रवचनसारोद्धारटीका** (रचनाकाल वि० सं० १२७८/ई० सन् १२२२) की प्रशस्ति[४१] में इन्हें परमार नरेश मुंज (ई० सन् ९७३-९९६) द्वारा सम्मानित बतलाया है। राजगच्छ के ही माणिक्यचन्द्रसूरि ने **पार्श्वनाथचरित** (रचनाकाल वि० सं० १२७६/ई० सन् १२२०) की प्रशस्ति[४२] में अभयदेवसूरि के शिष्य के रूप में धनेश्वरसूरि का नहीं अपितु जिनेश्वरसूरि का उल्लेख करते हुए उन्हें परमार नरेश मुंज द्वारा सम्मानित बतालाया हैं। अब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि ये धनेश्वरसूरि और जिनेश्वरसूरि क्या दो भिन्न-भिन्न आचार्य हैं या एक ही आचार्य के दो नाम हैं ? अथवा **पार्श्वनाथचरित** की मूलप्रशस्ति में शायद बाद के लिपिकार की भूल से 'ध' के स्थान पर 'जि' लिख दिया गया और वह भूल अन्य प्रतियों में भी चलती रही है[४३] ! जो भी हो, इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में निश्चयपूर्वक कुछ कह पाना कठिन हैं।

अजितसिंहसूरि (प्रथम) : राजगच्छीय ग्रन्थकारों ने अपनी कृतियों की प्रशस्ति में इनका उल्लेख करते हुए इन्हें धनेश्वरसूरि (प्रथम) का शिष्य एवं पट्टधर बतलाया है। धनेश्वरसूरि (द्वितीय) एकमात्र राजगच्छीय विद्वान् हैं, जिन्होंने अपनी कृति **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति** (रचनाकाल वि० सं० ११७१/ई० सन् १११५) की प्रशस्ति[४४] में न केवल इनका उल्लेख किया है, अपितु इन्हें **विश्रान्तविद्याधर** नामक कृति की रचना का श्रेय भी दिया है। **विश्रान्तविद्याधर** आज अनुपलब्ध है। इनके पट्टधर वर्धमानसूरि हुए।

शीलभद्रसूरि : जैसा कि राजगच्छीय गुरु-परम्परा की तालिका से स्पष्ट है, इनके समय से राजगच्छ की दो अलग-अलग शाखायें अस्तित्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में आयीं। एक शाखा के प्रधान शीलभद्रसूरि हुए और दूसरी शाखा के देवप्रभसूरि (प्रथम)।

शीलभद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित न तो कोई लेख मिला है और न ही इनकी किसी कृति का कही नामोल्लेख है, फिर भी राजगच्छीय ग्रन्थकारों ने बड़े ही सम्मान के साथ इनका उल्लेख किया है। जैसा कि ग्रन्थप्रशस्तियों के आधार पर पीछे हम देख चुके हैं, इनके ६ शिष्यों का उल्लेख मिलता है। इनमें अजितसिंहसूरि (द्वितीय) को छोड़कर शेष ५ शिष्यों की परम्परा आगे चली। धनेश्वरसूरि (द्वितीय) अल्पजीवी थे, अतः इनके पट्टधर पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि हुए, जिनकी परम्परा में प्रभाचन्द्रसूरि हुए। भरतेश्वरसूरि की परम्परा में माणिक्यचन्द्रसूरि तथा सर्वदेवसूरि की परम्परा में मानतुंगसूरि हुए। धर्मघोषसूरि की शिष्यसन्तति अपने गुरु के नाम पर धर्मघोषगच्छीय कहलायी।

धनेश्वरसूरि (द्वितीय) : जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है आप शीलभद्रसूरि के शिष्य और पट्टधर थे। आप द्वारा रचित एकमात्र कृति है **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति** जो वि० सं० ११७१/ई० सन् १११५ में रची गयी है। इसके लेखन में इन्हें अपने शिष्य पार्श्वचन्द्रगणि से सहायता प्राप्त हुई थी, इस बात का इन्होंने अपनी कृति की प्रशस्ति में उल्लेख किया है।[४५]

पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरिः जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है आप शीलभद्रसूरि के दीक्षाशिष्य तथा अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता धनेश्वरसूरि (द्वितीय) के पट्टधर थे। सूरि-पद प्राप्ति से पूर्व इनका नाम पार्श्वदेवगणि था। ये अपने समय के अद्वितीय विद्वान् थे। इनके द्वारा रचित १२ रचनायें अद्यावधि उपलब्ध हैं।[४६]

१. **न्यायप्रवेशवृत्तिपंजिका** रचनाकाल वि० सं० ११६९ /ई० सन् १११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. **निशीथचूर्णिविशोद्देशकवृत्ति** रचनाकाल वि० सं० ११७४/ई० सन् १११८

३. **नन्दीवृत्तिटिप्पण** – यह **दुर्गपदव्याख्या** के नाम से भी जानी जाती है।

४. **श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति** रचनाकाल वि० सं० १२२२ /ई० सन् ११५६

५. **जीतकल्पबृहच्चूर्णिव्याख्या** रचनाकाल वि० सं० १२२७/ई० सन् ११६१

६. **निरयावलिकावृत्ति** रचनाकाल वि० सं० १२२८ /ई० सन् ११६२

७. **चैत्यवंदनसूत्रवृत्ति**

८. **प्रतिष्ठाकल्प**

९. **सर्वसिद्धान्तविषमपदपर्याय**

१०. **सुखबोधा समाचारी**

११. **उपसग्गहरस्तोत्रवृत्ति**

१२. **पद्मावत्थष्टकटीका**

इसके अतिरिक्त आपने **सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरणवृत्ति**[४७] (रचनाकाल वि० सं० ११७१ /ई० सन् १११५) के लेखन में अपने गुरु धनेश्वरसूरि को, बृहद्गच्छीय आम्रदेवसूरि को **आख्यानकमणिकोशवृत्ति**[४८] (रचनाकाल वि० सं० ११९० /ई० सन् ११३४)में तथा हर्षपुरीयगच्छ के श्रीचन्द्रसूरि को **मुनिसुव्रतचरित**[४९] (रचनाकाल वि० सं० ११९३/ई० सन् ११३७) के लेखन में सहायता की।

गिरनार स्थित नेमिनाथ जिनालय के उत्तरी द्वार पर एक तिथियुक्त किन्तु खंडित अभिलेख उत्कीर्ण है। वर्जेस[५०] ने इस लेख की वाचना की है और इसे वि० सं० १२७६ का बतलाया है। मुनि जिनविजय[५१] ने भी बर्जेस का अनुसरण किया है। ढांकी और भोजक[५२] ने इस लेख की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनर्वाचना की और इसे वि० सं० १२०६ या १२१६ का बतलाया है। उनके द्वारा यह लेख इस प्रकार पढ़ा गया है :

श्रीमत्सूरिधनेश्वरः समभवन्नी शीलभ (ट्टा?द्रा)त्मजः
शिष्यस्तत्पदपंकजे मधुकर क्रीडाकरो योऽभवत्।
शिष्यः शोभितवेत्र नेमिसदने **श्रीचन्द्रसूरि**.... त......
श्रीमद्रेवतके चकार शुभदे कार्यं प्रतिष्ठादिकम् ।। १ ।।
श्री सङ्घातमहामात्य पृष्टार्थविहितोत्तरः भे समुदभूतवशा
देवचण्डादि जनतान्वितः ।। सं. १२ (७?०) ।। ६ ।।

वि० सं० १२०६ में आबू पर मंत्रीश्वर पृथ्वीपाल द्वारा करायी गयी प्रतिष्ठा के समय भी श्रीचन्द्रसूरि वहां उपस्थित थे। यह बात विमलवसही के देहरी संख्या ३८ पर उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होती है। मुनि कल्याणविजय[५३] ने इस लेख का पाठ इस प्रकार दिया है :

सं० १२०६ श्री शीलचन्द्रसूरीणां शिष्यैः श्रीचन्द्रसूरिभिः । विमलादिसुसंघेन, युतैस्तीर्थमिदं स्तुत (तं) ।। १ ।।
अयं तीर्थसमुद्धारोत्मद्मुतोऽकारि धीमता ।
श्रीमदानन्दपुत्रेण, श्रीपृथ्वीपालमंत्रिणा ।। २ ।।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि श्रीचन्द्रसूरि ने साहित्योपासना के साथ-साथ जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा में भी समान रूप से सहयोग दिया।

देवप्रभसूरि : ये राजगच्छीय भद्रेश्वरसूरि के प्रशिष्य और अजितसिंहसूरि 'तृतीय' के शिष्य थे। जैसा कि यहां लेख के प्रारम्भ में कहा गया है इन्होंने प्राकृत भाषा में **श्रेयांसनाथचरित** की रचना की। इसकी प्रशस्ति में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का विस्तृत विवरण दिया है। यद्यपि उन्होंने इस कृति के रचनाकाल के बारे में कुछ नहीं कहा है, किन्तु इसे वि० सं० १२४२/ई० सन् ११८६ के आसपास रचा माना गाय है। इसकी प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि इन्होंने **तत्त्वबिन्दु** और **प्रमाणप्रकाश** की भी रचना की थी। ये दोनों रचनायें आज अनुपलब्ध हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धसेनसूरि : ये देवभद्रसूरि के शिष्य थे। इन्होंने वडगच्छीय नेमिचन्द्रसूरिविरचित **प्रवचनसारोद्धार** पर वृत्ति की रचना की। इसी प्रशस्ति के अन्तर्गत वृत्तिकार ने अभयदेवसूरि से लेकर अपने गुरु देवप्रभसूरि तक राजगच्छीय गुर्वावली के साथ-साथ इस वृत्ति के रचनाकाल का भी उल्लेख किया है :

करिसागरविसङ्खये श्रीविक्रमनृपतिवत्सरे चैत्रे।

पुर्ष्यार्क्कदिने शुक्लाष्टम्यां वृत्तिः समाप्ताऽसौ ॥ १८ ॥

श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई,[५४] हरिदामोदर वेलणकर[५५] आदि विद्वानों ने वृत्तिकार द्वारा दिये गये रचनाकाल **करिसागरविसङ्खये** की करि=८, सागर=४ और रवि=१२ अर्थात् १२४८ माना है। किन्तु यदि वृत्तिकार द्वारा प्रशस्तिगत दी गयी अभयदेवसूरि से सिद्धसेनसूरिपर्यन्त राजगच्छीय आचार्यपरम्परा पर दृष्टि डालें, तो उक्त मत ग्राह्य प्रतीत नहीं होता। चूंकि अभयदेवसूरि के पश्चात् और सिद्धसेनसूरि के पूर्व ८ आचार्य हो चुके हैं और अभयदेवसूरि का काल वि० सं० की ११वीं शती का पूर्वार्ध निश्चित किया जा चुका है। यदि प्रत्येक मुनि का आचार्यत्वकाल लगभग २५ वर्ष माना जाये तो अभयदेवसूरि के नवीं पीढ़ी में हुए सिद्धसेनसूरि का काल वि० सं० १२७५ के आसपास ठहरता है। साथ ही सात की संख्या के लिए साधारणतया **सागर** शब्द का ही प्रयोग होता है, अतः ऐसी स्थिति में देसाई और वेलणकर आदि विद्वानों द्वारा मान्य **प्रवचनसारोद्धारवृत्ति** की रचनातिथि वि० सं० १२४८ के स्थान पर वि० सं० १२७८/ई० सन् १२२२ मानने में कोई बाधा नहीं दिखलाई देती।

मामिक्यचन्द्रसूरि : ये राजगच्छ के प्रभावशाली और विद्वान् आचार्य थे। इन्होंने **पार्श्वनाथचरित, शांतिनाथचरित** तथा आचार्य मम्मट के **काव्यप्रकाश** पर **संकेत** नामक टीका की रचना की। **पार्श्वनाथचरित** का रचनाकाल वि० सं० १२७६/ई० सन् १२२० माना गया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है।[५६] प्रथम दो रचनायें अप्रकाशित हैं किन्तु **काव्यप्रकाश** अपनी **संकेत** नामक टीका के साथ प्रकाशित हो चुका है।[५७] महामात्य वस्तुपाल इनके समकालीन और प्रशंसक थे।

प्रभाचन्द्रसूरि : आप राजगच्छीय पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि की परम्परा में हुए चन्द्रप्रभसूरि के पट्टधर थे। आप ने वि० सं० १३३४/ई० सन् १२७८ में **प्रभावकचरित** की रचना की। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में पद्यमय ५७७४ श्लोकों में निबद्ध है। इस ग्रन्थ का संशोधन चन्द्रगच्छीय कनकप्रभसूरि के शिष्य प्रद्युम्नसूरि ने किया। इस ग्रन्थ में वज्रस्वामी से लेकर हेमचन्द्रसूरि तक के प्रभावक जैनाचार्यों का चरित्र वणित है। इनमें से वीरसूरि, शांतिसूरि, महेन्द्रसूरि, सूराचार्य, अभयदेवसूरि, वीरदेवगणि, देवसूरि और हेमचन्द्रसूरि ये आठ आचार्य सोलंकी काल में पाटण में हुए। सोलंकी राजाओं के साथ इस आचार्यों का घनिष्ट सम्बन्ध रहा। गुजरात के इतिहास में इस ग्रन्थ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सूची :

१. A. P. Shah, Ed. *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss Ac. VijayadevaSuri's and KsantiSuris Collections* Part IV (L.D. Series No. 20, Ahmedabad-1968) No. 651, Pp. 75-76.

२. **जम्बूद्वीपसमासटीका** संशोधक-पंन्यास हर्षविजयगणि के शिष्य मानविजयमुनि (श्रीसत्यविजय ग्रन्थमाला नं० २, अहमदाबाद, वि० सं० १९७९) प्रशस्ति, पृष्ठ २६-२८.

३. C.D. Dalal - *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan*, Vol I, (G.O. S. No. - LXXVI, Baroda - 1937) No. 403, Pp. 224-246.

४. Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shanti -natha Jain Bhandar, Cambay*, Part II (G. O. S. No. 149. Baroda -1966) No. 207, Pp. 343-349.

५. **प्रवचनसारोद्धार**, पूर्वभाग एवं उत्तरभाग (देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे, ग्रन्थांक ५८, ६४; ई० सन् १९२२) टीकाकार की प्रशस्ति, पृष्ट ४४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. **श्रेयांसनाथचरित** (गुजराती अनुवाद) सेठ भोगीलालभाई मगनलाल सिरिज नं० १ जैन आत्मानन्दसभा, भावनगर वि० सं० २००९, प्रशस्ति, पृष्ठ २६९.

७. **प्रभावकचरित,** संपा० मुनि जिनविजय (सिंघी जैन ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक १३, अहमदाबाद १९४० ई०) प्रशस्ति, पृष्ठ २१३-२१६.

८. द्रष्यव्य - संदर्भ संख्या १.

९. सं० १२०६ श्रीशीलचन्द्रसूरीणां, शिष्यैः श्रीचन्द्रसूरिभिः ।

विमलादिसुसंघेन, युतैस्तीर्थमिदं स्तुत (तं) ॥ १ ॥

अयं तीर्थसमुद्धारो-त्यद्मुतोऽकारि धीमता ।

श्रीमदानन्दपुत्रेण, श्रीपृथ्वीपालमंत्रिणा ॥ २ ॥

मुनि कल्याणविजय गणि-**प्रबन्धपारिजात** (श्री कल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालोर १९६६ ई०) लेखांक ३८.

१०. शिवप्रसाद 'धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास' **श्रमण,** वर्ष ४१, अंक १-३ (वाराणसी १९९० ई०) पृष्ठ ४५-१०३.

११. मुनि जिनविजय, संपा० **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, भाग १, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, बम्बई १९६१ ई०, पृष्ठ ५७-७१.

१२. मुनि जिनविजय, संपा० **जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह**, भाग १, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १८, बम्बई १९४३ ई० पृष्ट ३०-३२.

मुनि जिनविजयजी ने शांतिनाथ जैन ज्ञानभंडार, खंभात के इस ग्रन्थ के प्रतिलेखन की प्रशस्ति पीटर्सन की रिपोर्ट-भाग ३ पृष्ट ८६-८९ से संकलित की है। पीटर्सन को इस ग्रन्थ की पूर्ण प्रति प्राप्त हुई थी . परन्तु मुनि पुण्यविजयजी को इस ग्रन्थ भंडार की सूची तैयार करते समय यह ग्रन्थ अत्यन्त भग्न और त्रुटित रूप में प्राप्त हुआ था और उसी रूप में उन्होंने इसे प्रकाशित भी कराया। द्रष्टव्य

Muni Punyavijaya - *Catalogue of Plam-Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar, Cambay*, Part I, G.O.S. No. 139, Baroda 1961, Pp. 112-118.

१३. प्रो० एम० ए० ढांकी, एसोसिएट डायरेक्टर-रिसर्च, अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इन्डियन स्टडीज, वाराणसी, द्वारा व्यक्तिगत चर्चा पर आधारित.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. एम० ए० ढांकी- आरासणानी जैन प्रतिमालेखनी पुर्नवाचना, **स्वाध्याय**, जिल्द ८, क्रमांक १-२, पृष्ठ १८९-१९८.

१५. एम० ए० ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा पर आधारित.

१६. द्रष्टव्य, संदर्भ संख्या ९.

१७. मुनि कल्याणविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १३२, १३४, १३५, १४१.

१८. एम० ए० ढांकी एवं लक्ष्मण भोजक - 'उज्जयंतगिरिना पूर्वप्रकाशित अभिलेखो विषे', **पं० बेचरदास दोशी स्मृति ग्रन्थ** (वाराणसी १९८९ ई०) पृष्ठ १९३-९४, लेखांक ३.

१९. बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १४१३.

२०. अगरचन्द नाहटा, भंवरलाल नाहटा संपा० **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ३७६.

२१. बुद्धिसागर, संपा० **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २ लेखांक ५३२.

२२. वही, भाग २, लेखांक ६४१.

२३. वही, भाग २, लेखांक ५२६

२४. वही, भाग २, लेखांक ५६४.

२५. विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह** ,भाग १, लेखांक ३७९.

२६. वही, लेखांक ४४१.

२७. वही, लेखांक ४५८

२८. द्रष्टव्य, संदर्भ संख्या ४.

२९. द्रष्टव्य, संदर्भ संख्या ७.

३०. मोहनलाल दलीचंद देसाई-**जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास** द्वितीय संस्करण, संपा० आचार्य मुनिचन्द्रसूरि, सूरत २००६ ई०, पृष्ठ १३४, कंडिका २४३.

३१. G.C. Chaudhary-*Political History of Northen India From Jain Sources* (Sohan Lal Jain Dharma Pracharak Samiti, Amritsar-1963) Pp. 172-173.

३२. पं० सुखलालजी और पं० बेचरदासजी, संपा० **सन्मतिप्रकरण** (द्वितीय संस्करण, अहमदाबाद १९५२ ई०, पृष्ठ १४०-४१.

३३. तर्कग्रन्थविचारदुर्गमवनीसंचारपंचानन-

स्तत्पट्टेऽभयदेवसूरिरजनि श्वेताम्बरग्रामणीः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्वाक्यश्रुतिलालसा मधुकरी कोलाहलाशंकिनी ।

हित्वा विष्टरपंकजं श्रितवती ब्राह्मी यदीयाननम् ॥ ६ ॥

पार्श्वनाथचरित की प्रशस्ति

द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ४.

३४. पं० सुखलाल जी और पं० बेचरदास जी, पूर्वोक्त, प्रस्तावना, पृष्ठ १४४.

३५. सूरीशोऽभयदेवसूरिरवनिख्यातः प्रमाणेऽपि च ।

तस्येयं सुगुरुद्वयादधिगतस्वल्पात्मविद्यागुण-

प्रख्याताय चिरं भुवि प्रचरतु श्रीशांतिसूरेः कृतिः ॥ ७ ॥

उत्तराध्ययनसूत्र बृहद्वृत्ति (पाइयवृत्ति) की प्रशस्ति

Muni Punyavijay - Ed. *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar, Cambay* Part I, P.- 111.

३६. पं० सुखलालजी और पं० बेचरदासजी, पूर्वोक्त, प्रस्तावना, पृष्ठ १४२-४३

३७. श्रीविक्रमवत्सरतो वर्ष सहस्रे गते सषण्णवतौ (१०९६) ।

शुचिसितिनवमीकुजकृत्तिकासु शान्तिप्रभोरभूदस्तम् ॥ १३० ॥

'वादिवेतालशान्तिसूरिचरितम्' **प्रभावकचरित**, पृष्ठ १३७.

३८. अन्यदाऽवन्तिदेशीय सिद्धसारस्वतः कविः ।

ख्यातोऽभूद् धनपालाख्यः प्राचेतस इवापरः ॥ २२ ॥

स गोरसे त्र्यहातीते साधुभिर्जीवदर्शनात् ।

यैरबोध्यत तत्पूज्यश्रीमहेन्द्रगुरोर्गिरा ॥ २३ ॥

गृहीतदृढसम्यक्त्वः कथां तिलकमञ्जरीम् ।

कृत्वा व्यजिज्ञपत् पूज्यान् क एनां शोधयिष्यति ॥ २४ ॥

'वादिवेतालशान्तिसूरिचरितम्' **प्रभावकचरित** पृष्ठ १३३.

३९. पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री. संपा० **प्रमेयकमलमार्तण्ड** (निर्णयसागर प्रेस बम्बई १९४१ ई०) प्रस्तावना, पृष्ठ ४६-४७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. त्रिभुवनगिरिस्वामी श्रीमान् स कर्दमभूपति

स्तदुप समभूत् शिष्य: श्रीमद्धनेश्वरासञ्ज्ञया ।

अजनि सुगुरुस्त्पट्टेऽस्मात् प्रभृत्यवनिस्तुत: ।

तदनु विदितो विश्वे गच्छ: स 'राज' पदोत्तर: ॥ ५ ॥

प्रभावकचरित, प्रशस्ति, श्लोक ५.

४१. द्रष्टव्य संदर्भ संख्या ५.

४२. द्रष्टव्य संदर्भ संख्या ४.

४३. पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री, पूर्वोक्त, पृष्ठ ४६-४७.

४४. द्रष्टव्य संदर्भ संख्या १.

४५. वही

४६. मोहनलाल दलीचन्द्र देसाई, पूर्वोक्त, कंडिका ३३५.

४७. द्रष्टव्य-संदर्भ संख्या १.

४८. अन्यच्च नेमिचन्द्रा गुणाकरा: पार्श्वदेवनामन: ।

एते त्रयोऽपि गणयो विपश्चितो मुख्य निजशिष्या: ॥ ३० ॥

साहाय्यं कृतवन्तो मम लेखन-शोधनादिकृत्येषु ।

आधानोद्धरणे च प्रमादविकला: कलाकुशला: ॥ ३१ ॥

मुनि पुण्यविजय-संपा० **आख्यानकमणिकोश-वृत्तिसह** (प्राकृत ग्रन्थ परिषद, ग्रन्थांक ५, वाराणसी १९६२ ई०) प्रशस्ति, पृष्ठ ३६९-३७०.

४९. रूपेन्द्रकुमार पगारिया-संपा० **मुनिसुव्रतस्वामिचरित** (लालभाई दलपतभाई ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क १०६, अहमदाबाद १९८९ ई०) प्रशस्ति, पृष्ठ ३३७ - ३४१.

५०. *Report on the Antiquities of Kathiawad and Kacch* (1874-75), Archaeological Survey of Western India, Reprint, Varanasi-1971, p. 167.

५१. **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, जैन आत्मानन्दसभा, भावनगर १९२१ ई०, लेखांक ५२.

५२. ढांकी और भोजक, पूर्वोक्त,

५३. मुनि कल्याणविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३८.

५४. **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृष्ठ ४८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. H. D. Velankar - *Jinaratnakosa*, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona-1944, P. 400.

५६. भोगीलाल जयचंद सांडेसरा – **वस्तुपाल का साहित्यमंडल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन,** जैन संस्कृति संशोधन मंडल, वाराणसी १९५९ ई०, पृष्ठ ११०-११२.

५७. वेलणकर, पूर्वोक्त, पृष्ठ ९०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायडगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

गुजरात के प्राचीन और मध्ययुगीन नगरों तथा ग्रामों से अस्तित्व में आये चैत्यवासी श्वेताम्बर जैन गच्छों में थाराप्रद्र[१] और मोढगच्छ[२] के पश्चात् वायडगच्छ का नाम उल्लेखनीय है। वायड (वायट) नामक स्थान से अस्तित्व में आने के कारण इस गच्छ का उक्त नाम और उसका पर्याय वायटीय प्रसिद्ध हुआ। ब्राह्मणीय और जैन साक्ष्यों के अनुसार पूर्वकाल में वायड महास्थान[३] के रूप में विख्यात रहा।

वायडगच्छ के सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों के रूप में कुछ प्रतिमालेखों का उल्लेख किया जा सकता है जो पीतल की जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं। इनमें से प्रथम लेख भरुच से प्राप्त वि० सं० १०८६/ ई० स० १०३० की एक जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण है[४]। द्वितीय लेख साणंद से प्राप्त वि० सं० ११३१/ ई० स० १०७५ की एक जिनप्रतिमा पर खुदा हुआ है[५]। तृतीय[६] और चतुर्थ[७] लेख शत्रुञ्जय से प्राप्त वि० सं० ११२९ और वि० सं० ११३२ की जिनप्रतिमाओं से ज्ञात होते हैं। इस प्रकार उक्त साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि ईस्वी सन् की ११वीं शती में यह गच्छ सुविकसित स्थिति में विद्यमान था।

मध्ययुगीन प्रबन्धग्रन्थों में वायडगच्छ के मुनिजनों के सम्बन्ध में वर्णित प्रशंसात्मक विवरणों से प्रतीत होता है कि इस गच्छ के मुनि चैत्यवासी थे।

वायडगच्छ के प्रधानकेन्द्र वायडनगर में जीवन्तस्वामी का एक मंदिर था। **कल्पप्रदीप** (ई० सन् १३३३) में उल्लिखित चौरासी तीर्थस्थानों की सूची में इसका नाम मिलता है[८]। **पुरातनप्रबन्धसंग्रह** (ई० सन् १५वीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शती) में मंत्री उदयन के पुत्र वाग्भट्ट के संदर्भ में वायटस्थित जीवन्तस्वामी, मुनिसुव्रत और महावीर के मन्दिरों का उल्लेख मिलता है[९]। अंचलगच्छीय महेन्द्रसूरिकृत **अष्टोत्तरीतीर्थमाला** (ई० सन् १२३७) में भी इसी प्रकार का विवरण प्राप्त होता है[१०]। इससे पूर्व संगमसूरि के **चैत्यपरिपाटीस्तवन** (ई० सन् १२वीं शताब्दी) में वायड का महातीर्थ के रूप में वर्णन मिलता है[११]। साधारणांक सिद्धसेनसूरि द्वारा रचित **सकलतीर्थस्तोत्र** (प्राय: ई० सन् १०६०-७५) में भी इस स्थान का एक जैन तीर्थ के रूप में उल्लेख है[१२]।

प्रभावकचरित (वि० सं० ११३४ / ई० सन् १२७८) के अनुसार विक्रमादित्य के मंत्री लिम्बा द्वारा यहां स्थित महावीर जिनालय का जीर्णोद्धार कराया गया[१३]। वहां यह भी कहा गया कि उसने राशिल्लसूरि के शिष्य और जिनदत्तसूरि के प्रशिष्य जीवदेवसूरि को उक्त जिनालय का अधिष्ठाता नियुक्त किया। **प्रबन्धकोश** (वि० सं० १४०५ / ई० सन् १३४९) में भी यही बात कही गयी है किन्तु वहाँ मंत्री का नाम निम्बा बतलाया गया है[१४] जो अक्षरान्तर मात्र है।

प्रबन्धग्रन्थों के उक्त उल्लेखों में वर्णित कथानक में विक्रमादित्य (चन्द्रगुप्त 'द्वितीय' विक्रमादित्य - ईस्वी सन् ३७५-४१२) के काल की कल्पना की गयी है जिसको तो हम स्वीकार नहीं कर सकते फिर भी इतना संभव हो सकता है कि नवीं शताब्दी के किसी प्रतिहार नरेश के प्राकृत नामधारी मंत्री निंबा या लिंबा ने उक्त जिनालय का निर्माण कराया होगा और यही तो जीवदेवसूरि का संभवित समय भी है[१५]।

प्रभावकचरित[१६] में वायडगच्छ के प्रारम्भिक आचार्यों के सम्बन्ध में प्राप्त विवरण, जिसका एक अंश कथानक ही है, से ज्ञात होता है कि वायड नामक ग्राम में धर्मदेव नामके एक श्रेष्ठी थे। उनके बड़े पुत्र का नाम महीधर और छोटे पुत्र का नाम महीपाल था। महीधर ने श्वेताम्बर जैनाचार्य जिनदत्तसूरि के दीक्षा ग्रहण कर ली और राशिल्लसूरि के नाम से विख्यात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुए। छोटे पुत्र महीपाल ने राजगृह (संभवतः वर्तमान राजोरगढ, राजस्थान) के दिगम्बर आचार्य श्रुतकीर्ति से दीक्षा लेकर सुवर्णकीर्ति नाम प्राप्त किया। आगे चलकर सुवर्णकीर्ति ने श्वेताम्बर सम्प्रदाय में अपनी आस्था व्यस्त की और अपने संसारपक्षीय भ्राता राशिल्लसूरि के पास दीक्षित हो कर जीवदेवसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए। निम्बा द्वारा कराये गये जीर्णोद्धार से पूर्व भी उक्त जिनालय जीवदेवसूरि के अधिकार में था। **प्रभावकचरित** के इसी चरित में आगे लल्ल नामक एक ब्राह्मण धर्मानुयायी श्रेष्ठी का विवरण है जिसने यज्ञ में होनेवाली हिंसा को देखकर जैन धर्म स्वीकार किया और महावीर का एक मन्दिर बनवाया[१७]। इससे नाराज ब्राह्मणों ने वहाँ द्वेषवश रात्रि में एक मृत गाय रख दिया, किन्तु जीवदेवसूरि की चमत्कारिक शक्ति से वह गाय उठी और निकटस्थित ब्रह्मा के मन्दिर में जाकर गिर पड़ी। बाद में दोनों पक्षों में हुए समझौते की शर्तों से स्पष्ट होता है कि इस गच्छ के अनुयायी मुनिजन चैत्यवासी परम्परा से संबद्ध थे।

अमरचन्द्रसूरि कृत **पद्मानंदमहाकाव्य** (वि० सं० १२९७ के पूर्व) की प्रशस्ति[१८] में कुछ परिवर्तन के साथ उक्त कथानक प्राप्त होता है। वहां ब्रह्मा का मंदिर न कहकर ब्रह्मशाला कहा गया है[१९]। उन्होंने इस गच्छ के प्रारम्भिक आचार्यों का जो क्रम बतलाया है वह **प्रभावकचरित** में भी मिलता है। अमरचन्द्रसूरि ने इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण बात यह बतलायी है कि वायडगच्छ में पट्टधरआचार्यों को जिनदत्तसूरि, राशिल्लसूरि और जीवदेवसूरि - ये तीन नाम पुनः प्राप्त होते हैं[२०]। जब कि यह नियम अमरचन्द्रसूरि के बारे में नहीं लागू हुआ। यद्यपि उनके तीन पूर्ववर्ती आचार्यों का क्रम वैसा ही रहा जैसा कि उन्होंने बतलाया है। अमरचन्द्रसूरि के गुरु का नाम जिनदत्तसूरि था। जिनदत्तसूरि के गुरु का नाम जीवदेवसूरि और प्रगुरु का नाम राशिल्लसूरि था। जिनदत्तसूरि वि० सं० १२६५/ ई० सन् १२०९ में गच्छनायक बने[२१]। अरिसिंह द्वारा रचित **सुकृतसंकीर्तन**[२२] (वि० सं० १२८७ / ई० सन् १२३१ लगभग) के अनुसार इन्होंने ई० सन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२३० में मंत्री वस्तुपाल के संघ में शत्रुंजय और गिरनार की यात्रा की थी[२३]। **विवेकविलास** की संक्षिप्त प्रशस्ति में उन्होंने स्वयं को जीवदेवसूरि और उनके गुरु राशिल्लसूरि की परम्परा का बतलाया है[२४]।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या इस गच्छ के प्रारंभिक आचार्यों का भी नाम और पट्टक्रम ठीक उसी प्रकार का रहा जैसा कि १२वीं-१३वीं शती में हम देखते हैं। वस्तुतः यह जीवदेवसूरि 'प्रथम' की ऐतिहासिकता और उनसे सम्बन्धित विभिन्न कथानकों का विकास १३वीं शताब्दी में श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय में उस महान् आचार्य के प्रति व्यक्त श्रद्धा और सम्मान का परिणाम माना जा सकता है। १३वीं शताब्दी के पूर्व भी श्वेताम्बर ग्रन्थकारों ने इनका अत्यन्त सम्मान के साथ उल्लेख किया है। हर्षपुरीयगच्छ के लक्ष्मणगणि ने प्राकृतभाषा में रचित **सुपासनाहचरिय** (**सुपार्श्वनाथचरित**, रचनाकाल ई० स० ११३७) में अत्यन्त आदर के साथ इनके साहित्यिक क्रियाकलापों का वर्णन किया है[२५]। उपाध्याय चन्द्रप्रभ द्वारा प्रणीत **वासुपूज्यचरित** की प्रशस्ति में सस्नेह इनका उल्लेख है[२६]। परमारनरेश भोज के दरबारी कवि धनपाल ने अपनी अमर कृति **तिलकमंजरी** (प्रायः ई० सन् १०२०-२५) में जीवदेवसूरि का अन्य प्रसिद्ध कवियों के साथ सादर स्मरण किया है[२७]। इनसे भी पूर्व चन्द्रगच्छीय गोग्गटाचार्य के शिष्य समुद्रसूरि (प्रायः वि० सं० १००६/ई० सन् ९५०) ने जीवदेवसूरि द्वारा प्रणीत **जिनस्नात्रविधि** पर टिप्पण की रचना की है[२८]।

वि० सं० १२९८ में महामात्य वस्तुपाल द्वारा शत्रुंजय महातीर्थ पर उत्कीर्ण कराये गये शिलालेख में अन्य गच्छों के आचार्यों के साथ वायडगच्छीय जीवदेवसूरि का भी नाम मिलता है[२९]।

उक्त साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के आचार्यों के गुरु-परम्परा की एक तालिका निर्मित की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

?

जिनदत्तसूरि

राशिल्लसूरि

जीवदेवसूरि 'प्रथम' (**जिनस्नात्रविधि** के रचनाकार, अनुमानितकाल वि० सं० की नवीं-दसवीं शताब्दी)

जिनदत्तसूरि (षष्ठ) ई० सन् १२०९ में **विवेकविलास** और **शकुनशास्त्र**, के रचनाकार)

- अमरचन्द्रसूरि (**बालभारत, पद्मानन्दमहाकाव्य, काव्यकल्पलता, काव्यकल्पलतावृत्ति, काव्यकल्पलतापरिमल** आदि ग्रन्थों के रचनाकार)
- राशिल्लसूरि
    - जीवदेवसूरि (सप्तम) (वि० सं० १२९८ के शत्रुंजय के शिलालेख में उल्लिखित)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायडगच्छ से सम्बद्ध कुछ अन्य अभिलेखीय साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं जो विक्रम सम्वत् की चौदहवीं शती तक के हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	लेख का प्रकार	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	११३९	अनुपलब्ध	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, अजारी	**आबू**, भाग ५, लेखांक ३९८
२.	११६१	कार्तिक ..? तिथि विहीन	सप्तफणा पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२
४.	११६२	तिथि विहीन	–	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३ लेखांक २२१८
५.	१२७३	कार्तिक सुदि १ गुरुवार		जैन मंदिर, शत्रुंजय मुनि यशोवर्धन की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	M.A. Dhaky and L. Bhojaka- "Some Inscriptions on mount Shatrunjaya" *M.J. V.G.V.*, Part 1, P. 162-69. No.7

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	लेख का प्रकार	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१२९८	वैशाख वदि २ रविवार	पार्श्वनाथ की की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्णलेख	जैन देरासर, वणा, काठियावाड	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३७
७.	१२९८	-	शिलालेख	शत्रुंजय	U.P. Shah- "A forgotten Chapter in the History of Shvetambar Jaina Church" *J. O. A. S. B.* Vol. 30, Part I, 1955, A. D., Pp-100-113.
८.	१३००	वैशाख वदि ५ बुधवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	**आबू,** भाग २ लेखांक ५२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	लेख का प्रकार	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१३३५	तिथि विहीन	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७
१०.	१३३८	ज्येष्ठ वदि १	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २२३२
११.	१३४९	चैत्र वदि ६ शनिवार	अमरचन्द्रसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	टांगडियावाला जैन मंदिर, पाटण	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतिम दो प्रतिमालेखों को छोड़ कर शेष अन्य लेखों में यद्यपि इस गच्छ से सम्बद्ध कोई महत्त्वपूर्ण विवरण ज्ञात नहीं होता फिर भी वे लगभग १५० वर्षों तक इस गच्छ के स्वतंत्र अस्तित्व के प्रबल प्रमाण हैं। वि० सं० १३३८ के लेख से ज्ञात होता है कि इस गच्छ की पूर्व प्रचलित परिपाटी, जिसके अनुसार प्रतिमाप्रतिष्ठा का कार्य श्रावकों द्वारा होता था, को त्याग कर अब स्वयं मुनि या आचार्य द्वारा प्रतिपारित किया जाने लगा[३०]। वायडगच्छ का उल्लेख करने वाला अंतिम साक्ष्य इस गच्छ के प्रसिद्ध आचार्य जिनदत्तसूरि के ख्यातिनाम शिष्य प्रसिद्ध ग्रन्थकार अमरचन्द्रसूरि की पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। मुनि जिनविजयजी ने इस लेख की वाचना दी है[३१], जो निम्नानुसार है :

सं० १३४९ चैत्रवदि ६ शनौ श्री वायटीयगच्छे-श्री जिनदत्तसूरि शिष्य पंडित श्री अमरचन्द्रमूर्तिः पं० महेन्द्रशिष्यमदनचंद्रख्या (ख्येन) कारिता शिवमस्तु ॥

इस प्रकार स्पष्ट है कि विक्रम संवत् की चौदहवीं शताब्दी में इस गच्छ के अनुयायियों ने अपने पूर्वगामी आचार्य की प्रतिमा निर्मित कराकर उनके प्रति पूज्यभाव एवं सम्मान व्यक्त किया।

इस गच्छ के प्रमुख ग्रन्थकारों का विवरण इस प्रकार है :

जीवदेवसूरि 'प्रथम'

वायडगच्छ के पुरातन आचार्य जीवदेवसूरि 'परकायप्रवेशविद्या' में निपुण और अपने समय के प्रभावक जैन मुनि थे। इनके गुरु का नाम राशिल्लसूरि और प्रगुरु का नाम जिनदत्तसूरि था। जैसा कि इसी लेख के अन्तर्गत पीछे कहा जा चुका है विभिन्न जैन ग्रन्थकारों - धनपाल, लक्ष्मणगणि, उपाध्याय चन्द्रप्रभ, प्रभाचन्द्र, राजशेखर, आदि ने अपनी कृतियों में इनका सादर उल्लेख किया है। इनके द्वारा रचित केवल एक ही कृति आज मिलती है जिसका नाम है - **जिनस्नात्रविधि**[३२]। चन्द्रगच्छीय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोग्टाचार्य के शिष्य समुद्रसूरि ने वि० सं० १००६/ई० सन् ९५० में इस पर टिप्पण की रचना की[३३]। **प्रभावकचरित** और **प्रबन्धकोश** में इन्हें विक्रमादित्य का समकालीन् बतलाया गया है परन्तु वर्तमान युग के विद्वानों ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर इनका काल विक्रम संवत् की ८वीं-९वीं शताब्दी के आस-पास बतलाया है[३४], जो उचित प्रतीत होता है।

जिनदत्तसूरि :

महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल के समकालीन वायडगच्छीय आचार्य जिनदत्तसूरि द्वारा प्रणीत **विवेकविलास**[३५] एवं **शकुनशास्त्र** ये दो कृतियाँ मिलती हैं। **विवेकविलास** की प्रशस्ति में इन्होंने अपने गुरु-परम्परा के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है[३६] जिसके अनुसार वायडगच्छ में राशिल्लसूरि नामक एक प्रसिद्ध आचार्य हुए। उनके शिष्य एवं पट्टधर जीवदेवसूरि परकायप्रवेशविद्या में निपुण थे। इसी परम्परा में आगे चलकर जिनदत्तसूरि हुए जिन्होंने उक्त ग्रन्थ की रचना की।

प्राकृत भापा में रचित इस ग्रन्थ में १२ अध्याय हैं जो उल्लास कहे गये हैं। इनमें कुल १३२३ श्लोक हैं। इस कृति में मानव-जीवन के उत्कर्ष के लिये कतिपय आवश्यक सभी तथ्यों का सारगर्भित विवरण है। प्रथम पाँच उल्लासों में दिनचर्या, छठें में ऋतुचर्या, सातवें में वर्षचर्या और आठवें में जन्मचर्या अर्थात् समग्र भव के जीवनव्यवहार का संक्षिप्त विवेचन है। नवें और दसवें उल्लास में अनुक्रम से पाप और पुण्य के कारकों का विवरण है। ग्यारहवें उल्लास में आध्यात्मिक विचार और ध्यान के स्वरूप का वर्णन है। अंतिम १२वें उल्लास में मृत्यु के समय के कर्तव्य तथा परलोक के साधनों की चर्चा है[३७]। कृति के अन्य में १० श्लोकों की प्रशस्ति दी गयी है। यह कृति वि० सं० १२७७/ई० सन् १२२१ में रची गयी मानी जाती है[३८]। ब्राह्मणीय परम्परा के प्रसिद्ध ग्रन्थकार माधव[३९] (ई० स० की १४वीं शताब्दी) द्वारा प्रणीत **सर्वदर्शनसंग्रह** में भी आचार्य जिनदत्तसूरि की उक्त कृति का उल्लेख प्राप्त होता है[४०]।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

शकुनशास्त्र नौ प्रस्तावों में विभक्त पद्यात्मककृति है। इसमें संतान के जन्म,लग्न और शयन सम्बन्धी शकुन, प्रभात में उठने के समय के शकुन, दातून करने एवं स्नान करने के समय के शकुन, परदेश जाने एवं नगर में प्रवेश करने के समय के शकुन आदि अनेक शकुन और उनके शुभाशुभ फल आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है[४१]।

अमरचन्द्रसूरि :

वायडगच्छीय जिनदत्तसूरि के शिष्य और वाघेलानरेश वीसलदेव (वि० सं० १२९४-१३२८) और उनके मंत्री वस्तुपाल-तेजपाल द्वारा सम्मानित अमरचन्द्रसूरि उस युग के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से थे। जैन श्रमण की दीक्षा लेने से पूर्व ये वायटीय ब्राह्मण थे। इन्होंने स्वरचित **बालभारत, पद्मानन्दमहाकाव्य काव्यकल्पलता, स्यादिशब्दसमुच्चय** आदि में अपने सम्बन्ध में कुछ जानकारी दी है। इसके अतिरिक्त परवर्ती ग्रन्थकारों ने अपनी कृतियों यथा अरिसिंह द्वारा रचित **सुकृतसंकीर्तन**, मेरुतुंगसूरि द्वारा रचित **प्रबन्धचिन्तामणि**, राजशेखरसूरि द्वारा प्रणीत **चतुर्विंशतिप्रबन्ध**, रत्नमंदिरगणि द्वारा रचित **उपदेशतरंगिणी**, नयचन्द्रसूरि द्वारा रचित **हम्मीरमहाकाव्य** (रचनाकाल वि० सं० १४४४ के आसपास) आदि से भी इनके जीवन पर कुछ प्रकाश पडता है[४२]। वायड निवासी ब्राह्मणों के अनुरोध पर इन्होंने **महाभारत** पर पूर्वरूपेण आधारित **बालभारत** नामक कृति की रचना की। मूल **महाभारत** की भाँति यह भी १८ पर्वों में विभाजित है। ये पर्व एक या अधिक सर्गों में विभाजित हैं। इनकी कुल संख्या ४४ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में ६९५० श्लोक हैं। **बालभारत** के रचनाकाल के सम्बन्ध में रचनाकार ने कोई उल्लेख नहीं किया है। इस सम्बन्ध में **चतुर्विंशतिप्रबन्ध**[४३] से विशेष जानकारी प्राप्त होती है। उसके अनुसारी वीसलदेव के सम्पर्क में आने से पूर्व ही इन्होंने **बालभारत** की रचना की थी। चूँकि वीसलदेव का शासनकाल (वि० सं० १२९४-१३२८ / ई० सन् १२३८-१२७२) निश्चित है और और अमरचन्द्रसूरि के गुरु जिनदत्तसूरि की कृति **विवेकविलास** का रचनाकाल वि० सं० १२७७/ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन् १२२१ माना गया है[४४] अतः **बालभारत** का रचनाकाल वि० सं० १२७७ से वि० सं० १२९४ के बीच माना जा सकता है।

पद्मानन्दमहाकाव्य का प्रथम सर्ग प्रस्तावना के रूप में है। दूसरे से छठे सर्ग तक आदिनाथ के पूर्वभवों का विवरण है, सातवें में जन्म, आठवें में बाल्यकाल, यौवन, विवाह; नवें में सन्तानोत्पत्ति, दशम में राज्याभिषेक, ११वें और १२वें में कैवल्यप्राप्ति, १४वें में समवशरण-देशना आदि, सोलहवें, सत्रहवें और अठारहवें में भरत-बाहुबलि और मरीच के वृत्तान्त के साथ अन्त में ऋषभदेव एवं भरत के निर्वाण का वर्णन है और यहीं पर कथा समाप्त हो जाती है। १९वें सर्ग में कवि ने प्रशस्ति के रूप में अपनी विस्तृत गुरु-परम्परा, काव्यरचना का उद्देश्य, मंत्री पद्म की वंशावली आदि का वर्णन किया है। कवि अमरचन्द्रसूरि ने अपनी इस कृति में भी इसके रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है। चूँकि यह वीसलदेव के शासनकाल में रची गयी है और इसकी वि० सं० १२९७ में लिखी गयी एक प्रति खंभात के शांतिनाथ जैन भंडार में संरक्षित है अतः यह उक्ततिथि के पूर्व ही रचा गया होगा। इस आधार पर **पद्मानन्दमहाकाव्य** वि० सं० १२९४ से वि० सं० १२९७ के मध्य की कृति मानी जाती है[४५]।

अमरचन्द्रसूरि ने **चतुर्विंशतिजिनेन्द्रसंक्षिप्तचरितानि** नामक अपनी कृति में चौबीस तीर्थंकरों का संक्षिप्त जीवनपरिचय प्रस्तुत किया है[४६]। इसमें २४ अध्याय और १८०२ श्लोक हैं। इनके द्वारा रचित अन्य कृतियाँ भी हैं जो इस प्रकार हैं :

काव्यकल्पलता, काव्यकल्पलतावृत्ति अपरनाम **कविशिक्षा, सुकृतसंकीर्तन** के प्रत्येक सर्ग के अंतिम ४ श्लोक, **स्यादिशब्दसमुच्चय, काव्यकल्पलतापरिमल छन्दोरत्नावली, अलंकारप्रबोध; कलाकलाप, काव्यकल्पलतामंजरी** और **सूक्तावली**। इनमें से अंतिम चार ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। प्रथम पाँच प्रकाशित हो चुके हैं तथा बीच के दो ग्रन्थ **काव्यलतापरिमल** और **छन्दोरत्नावली** अभी अप्रकाशित हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भसूची :

१. थारापद्र-वर्तमान थराद, जिला बनासकांठा, उत्तर गुजरात.

२ मोढेरा-तालुका चाणस्मा, जिला मेहसाना, उत्तर गुजरात.

३. उमाशंकर जोशी-**पुराणोमां गुजरात** संशोधन ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ७; गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद ११४६ ईस्वी०, पृष्ट १६१. भोगीलाल सांडेसरा-**जैन आगम साहित्यमां गुजरात**, संशोधन ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ८, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद १९५२ ईस्वी, पृष्ठ १४९.

४. यह सूचना प्रो० एम० ए० ढांकी से प्राप्त हुई है, जिसके लिये लेखक उनका हृदय से आभारी है।

५. स्व० डा० उमाकान्त प्रेमानन्द शाह से प्राप्त सूचना पर आ**धारित**.

६. प्रो. ढांकी से प्राप्त व्यतिगत सूचना पर आधारित.

७. मधुसूदन ढांकी और लक्ष्मण भोजक "शत्रुंजयगिरिना केटलाक अप्रकट प्रतिमालेखो" **सम्बोधि**, वर्ष ७, अंक १-४, लेखांक १-२, पृष्ठ १४-१५.

८. मोढेर वायडे खेडे नानके पल्लयां मतुण्डके मुण्डस्थले श्रीमालपत्तने उपकेशपुरे कुण्डग्रामे सत्यपुरे टङ्कायां गङ्गाहृदे सरस्थाने वीतभये चम्पायां अपापायां-पुण्ड्रपर्वते नन्दिवर्धन-कोटिभूमौ वीरः।

"चतुरशीतिमहातीर्थनामसंग्रहकल्प" **विविधतीर्थकल्प**, संपा० मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १०, शांतिनिकेतन १९३४ ई०, पृष्ठ ८५-८६.

९. वायडपुरे जीवितस्वामिनं श्रीमुनिसुव्रतमपरं श्रीवीरं नन्तुं चलत। "मन्त्रिउदयनप्रबन्धः" **पुरातनप्रबन्धसंग्रह**, संपा० मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रंथांक २, कलकत्ता १९३६ ई०, पृष्ठ ३२.

१०. **अष्टोत्तरी तीर्थमाला चैत्यवन्दन** विधिपक्षगच्छस्य पंचप्रतिक्रमणसूत्राणि, वि० सं० १९८४.

११. यह सूचना प्रो० एम० ए० ढांकी से प्राप्त हुई है जिसके लिये लेखक उनका आभारी है.

१२. थाराउद्दय-वायड-जालीहर-नगर-खेड-मोढेरे।

अणहिल्लवाडनयरे व (च) ड्डावल्लीय बंभाणे ॥ २७ ॥

"सकलतीर्थस्तोत्र" *A descriptive Catalogue of Mss in the Jains Bhandars at Pattan*, G.O.S. No. LXXVi, Baroda 1937 A. D, Pp. 155-156.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. इतः श्रीविक्रमादित्यः शास्त्यवन्तीं नराधिपः ।
अनृणां पृथिवीं कुर्वन् प्रवर्तयतिवत्सरम् ॥ ७१ ॥
वायटे प्रेषितोऽमात्यो लिम्बाख्यस्तेन भूभुजा ।
जनानृण्याय जीर्णं चापश्यच्छ्रीवीरधाम तत् ॥ ७२ ॥
उद्यधारस्ववंशेन निजेन सह मन्दिरम् ।
अर्हतस्तत्र सौवर्णकुम्भदण्डध्वजालिभृत् ॥ ७३ ॥
"जीवदेवसूरिचरितम्" **प्रभावकचरित**, संपा० मुनि जिनविजय, सिंघीजैनग्रन्थमाला, ग्रंथांक १३, कलकत्ता १९४० ई०, पृष्ठ ४७-५३.

१४. स निम्बो वायटे श्रीमहावीरप्रासादमचीकरत् ।
"जीवदेवसूरि प्रबन्ध" **प्रबन्धकोश** संपा० मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ६, शांतिनिकेतन १९३५ ईस्वी सन् पृष्ठ ७-९.

१५. M.A. Dhaky-*Vayata Gaccha and Vayatiya Caityas*, Unpublished.

१६. "जीवदेवसूरिचरितम्" श्लोक १-४६.
प्रभावकचरित, पृष्ठ ४७-४८.

१७. वही, श्लोक ११८ और आगे.

१८. *Padmananda Mahakavya,* Ed. H. R. Kapadia, G.O.S. No. LVIII, Baroda 1932 A.D. Prashsti, Pp. 437-446.

१९. गौरेका पतिता कथञ्चन मृता श्रीब्रह्मशालान्तरे न म्लेच्छाः प्रविशन्ति तत्र न मृतं कर्षन्ति विप्राः पशुम् ।
धर्माधार ! कृपाधुरीण ! तरसा तस्मान्महाकश्मला-दस्मानन्यपुरप्रवेशकलयैवोत्कर्षतः कर्षः तत् ॥ १९ ॥
वही, प्रशस्ति, श्लोक १९, पृष्ठ ४४०.

२०. वही, श्लोक ३६-३८.

२१. मोहनलाल दलीचंद देसाई - **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास** बम्बई १९३२ ई०, पृष्ठ ३४१, कंडिका ४९६.

२२. संपा० मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ३२, बम्बई १९६१ ईस्वी.

२३. अथाचलन् वायटगच्छवत्सलाः, कलास्पदं श्रीजिनदत्तसूरयः ।
निराकृतश्रीषु न येषु मन्मथः, चकार केलिं जननी विरोधतः ॥
सुकृतसंकीर्तन, सर्ग ५, श्लोक ११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. आस्ति प्रीतिपदं गच्छो, जगतः सहकारवत् ॥
जनपुंस्कोकिलाकीर्णो, वायडस्थानकस्थितिः ॥ १ ॥
अर्हन्मतपुरीवप्र-स्तत्र श्रीराशिलः प्रभुः ॥
अनुल्लङ्घ्यः पेरेर्वादि-वीरैः स्थैर्यगुणैकभूः ॥ २ ॥
गुणाः श्रीजीवदेवस्य, प्रभोरद्भुतकेलयः ॥
विद्वज्जनशिरोदोलां यत्रोज्झन्ति कदाचन ॥ ३ ॥

विवेकविलास, संपा० भृगुभाई फतेहचंद कारबारी, बम्बई १९१६ ई० सन्, प्रशस्ति, श्लोक १-३.

२५. मंदारमंजरिं पिव सुरावि सवणावयं सयं णिंति ।
पागयपबंधकदूणो वाणिं **सिरिजीवदेवस्स** ॥ ११ ॥

सुपासनाहचरिअं, संपा० एवं संस्कृतभावानुवादक पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ, प्रथम भाग, जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला, ग्रंथांक ४, बनारस १९१८ ई० मंगलाचरण, पृष्ठ १.

२६. सिरिजीवदेवसूरिं वंदे जस्स प्पबंधकुसुमरसं ।
आसाईऊण सुचिरं अज्ज वि मज्जंति कविभसला ॥

वासुपूज्यचरित प्रशस्ति

C.D. Dalal and L.B. Gandhi - *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in The Jain Bhandars at Pattan*, Vol I, Pp. 140-142.

२७. **तिलकमंजरी**, संपा० पं० भवदत्तशास्त्री एवं काशीनाथ पाण्डुरंग परब, काव्यमाला-८५, मुम्बई १९०३ ई०, मंगलाचरण, पृष्ठ ३.

२८. **जिनस्नात्रविधिः पञ्चिकयासहितः** संपा० पं० लालचंद भगवानदास गांधी, बम्बई १९६५ ई० सन्.

२९. U. P. Shah - ``A Forgotten Chapter in the history of Svetambar Jaina Church" *J. O. A. S. B.* Vol. 30, Part I 1955 A. D. Pp 100-113.

३०. पूरनचन्द नाहर-संपा० **जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २२३२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. मुनि जिनविजय - संपा० **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, भावनगर १९२१ ई० सन्, लेखांक ५२३.

३२. द्रष्टव्य संदर्भ क्रमांक २५.

३३. वही

३४. प्रो० एम० ए० ढांकी से प्राप्त व्यतिगत सूचना पर आधारित.

३५. **विवेकविलास**, संशोधक एवं संपादक : भृगुभाई फतेहचंद कारबारी, प्रकाशक - मेघजी हीरजी बुकसेलर, मुम्बई १९१६ ई० सन्.

३६. द्रष्टव्य-संदर्भक्रमांक २४.

३७. मोहनलाल मेहता और हीरालाल रसिकलाल कापडिया - **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ४, पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला-१२, वाराणसी १९६८ ई०, पृष्ठ २१७.

३८. भोगीलाल सांडेसरा - **वस्तुपाल का साहित्य मंडल और संस्कृत साहित्य को उसकी देन**, पृष्ठ ८९.

३९. राजबली पाण्डेय - **हिन्दूधर्मकोश**, लखनऊ १९८८ ई०, पृष्ठ ५१३-१४.

४०. मेहता और कापडिया, पूर्वोक्त, पृष्ठ २१७.

४१. अम्बालाल प्रेमचन्द शाह - **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ५, पृष्ठ १९७.

४२. H. R. Kapadia, *Padmananda Mahakavya*, Introduction, Pp 31-33.

श्यामशंकर दीक्षित-**तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी के जैन संस्कृत महाकाव्य**, जयपुर १९६९ ईस्वी, पृष्ठ २५४-२५६.

४३. **प्रबन्धकोश**, "अमरचन्द्रकविप्रबन्ध" पृष्ठ ६१-६३.

४४. सांडेसरा, पूर्वोक्त, पृष्ठ ८९.

४५. दीक्षित, पूर्वोक्त, पृष्ट ३०३-३०४.

४६. गुलाबचंद चौधरी - **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग ६, पृष्ठ ७६-७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्याधरकुल / विद्याधरगच्छ

उत्तर भारतीय निर्ग्रन्थ संघ के अल्पचेल (बाद में श्वेताम्बर) सम्प्रदाय के अंतर्गत विद्याधरकुल (बाद में विद्याधरगच्छ) का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। अब से लगभग ५०० वर्ष पूर्व तक विद्यमान इस गच्छ की उत्पत्ति कोटिकगण की विज्जाहरी (विद्याधरी) शाखा से हुई, ऐसा **पर्यूषणाकल्प**[१] की "स्थविरावली"[२] (जिसका प्रारम्भिक भाग ई० स० १०० के बाद का माना जाता है) से ज्ञात होता है। इसके अनुसार आर्य सुहस्ति के प्रशिष्य और स्थविर सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध के शिष्य विद्याधर गोपाल से विद्याधरशाखा का उद्भव हुआ।[३] विद्याधरशाखा ही आगे की शताब्दियों में 'विद्याधरकुल' के रूप में प्रसिद्ध हुई।

विद्याधरकुल (शाखा) से संबद्ध अगला साक्ष्य ई० स० की छठी शताब्दी के मध्य का है जो गुजरात प्रान्त में आकोटा नामक स्थान से प्राप्त धातु की मितिविहीन अम्बिका की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। डा० उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने इसकी वाचना दी है,[४] जो इस प्रकार है :-

१- १. (ॐ) दे (व) धर्मोयं (वि) य

१- २. ह (२) कुले xxxह

१- ३. ज (र -? रि ?) णि (?) x

शाह जी ने उक्त प्रतिमालेख की लिपि के आधार पर ई० स० की छठी शती के अंतिम चरण का बतलाया है।

विद्याधरकुल से सम्बद्ध अगला साक्ष्य भी आकोटा से ही प्राप्त हुआ है। यह साक्ष्य ऋषभदेव की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इसकी वाचना निम्नानुसार दी गयी है[५] :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ - १. ॐ देवधर्म्मोयं

१ - २. वियहर कुलेयो

१ - ३. गुण

लिपिशास्त्र के आधार पर शाह जी ने इस प्रतिमा लेख को ई० स० ६५० का बतलाया है।[६]

आकोट से ही प्राप्त ऋषभदेव और पार्श्वनाथ की धातु-प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में भी विद्याधरकुल का उल्लेख मिलता है। डा० शाह ने इन लेखों को ई० स० ७०० का माना है।[७]

खानदेश से प्राप्त और वर्तमान में लालभाई दलपतभाई संग्रहालय, अहमदाबाद में संरक्षित भगवान् आदिनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख में विद्याधरगच्छ ऐसा अभिधान मिलता है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख की लिपि के आधार पर डा. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने ई० स० की आठवी शताब्दी का माना है।[८]

ई० स० की आठवीं शताब्दी में विद्याधर कुल में आचार्य हरिभद्रसूरि जैसे महान् आचार्य हो चुके हैं,[९] जिनके द्वारा प्रणीत छोटी-बड़ी अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियाँ आज मिलती हैं। **आवश्यकटीका** की प्रशस्ति में इन्होंने स्वयं को आचार्य जिनभट (जिनभद्र) का प्रशिष्य और जिनदत्तसूरि का शिष्य एवं याकिनी महत्तरा नामक साध्वी का धर्मपुत्र कहा है :

"समाप्ता चेयं शिष्यहिता नामावश्यकटीका। कृतिः सिताम्बराचार्यजिनभटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिलकाचार्यजिनदत्तशिष्यसा धर्मतो जाइणीमहत्तरासूनोरल्पमतेराचार्य हरिभद्रस्य।"

(आवश्यकटीका की प्रशस्ति)

हरिभद्रसूरि के उपनाम के रूप में 'भवविरह' नामक विशेषण प्रसिद्ध था। **अष्टकप्रकरण**, **धर्मबिन्दु**, **ललितविस्तरा**, **पंचवस्तुटीका**, **शास्त्रवार्तासमुच्चय**, **योगदृष्टिसमुच्चय**, **षोडशक**, **अनेकान्तजयपताका**, **योगबिन्दु**, **संसारदावानलस्तुति**, **धर्मसंग्रहणी**, **उपदेशपद**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचाशक और **सम्बोधप्रकरण** की प्रशस्तियों में उन्होंने स्वयं के लिए 'भवविरह' शब्द का प्रयोग किया है।[१०]

भद्रेश्वरसूरि द्वारा रचित **कहावली** (ई० स० की १२वीं शताब्दी) में इनके लिये 'भवविरहसूरि' शब्द का कई बार प्रयोग किया गया है। **कहावली** में इनके दो शिष्यों-जिनभद्र और वीरभद्र का नाम मिलता है[११] जबकि उत्तरकालीन विभिन्न ग्रन्थों में इनके शिष्यों के अन्य ही नाम दिये गये हैं।

निर्वाणकलिका (प्राय: ९५० ई० स०) के रचनाकार पादलिप्तसूरि (तृतीय) भी विद्याधरकुल के थे। उक्त कृति की प्रशस्ति[१२] में इन्होंने स्वयं को संगमसिंह का प्रशिष्य और मण्डनगणि का शिष्य बतलाया है :

श्रीविद्याधर वंशभूषणमणि: प्रख्यातनामा भुवि।
श्रीमन्सङ्गमसिंह इत्यधिपति: श्वेताम्बराणामभूत्॥
शिष्यस्तस्य बभूव मण्डनगणिर्योवाचनाचार्य।
इत्युच्चै: पूज्यपदं गुणैर्गुणवतामग्रेसर: प्राप्तवान्॥ १॥
क्षान्ते: क्षेत्रं गुणमणिनिधिस्तस्य पादलिप्तसूरिर्जात्:
शिष्यो निरुपमयश: पूरिताशावकाश:॥
विन्यस्तेयं निपुणमनसा तेन सिद्धान्तमन्त्रा-
ण्यालोच्यैषा विधिमविदुषां पद्धतिर्बोधिहेतो:॥ २॥

विद्याधरकुल से संबद्ध अगला साक्ष्य है वि० सं० १०६४ / ई० स० १००८ का प्रतिमालेख, जो शत्रुंजय पर स्थित पुण्डरीकस्वामी की संगमरमर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।

श्री अम्बालाल प्रेमचन्द्र शाह ने इसकी वाचना दी है,[१३] जो इस प्रकार है :-

श्रीमद्युगादिदेवस्य पुंडरीकस्य च क्रमौ।
ध्यात्वा शत्रुंजये शुद्धयन् सल्लेखाध्यानसंयमै:॥ १॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीसंगमसिद्धमुनिर्विद्याध () रकुलनभस्थलमृगांकः ।
दिवसैश्चतुर्भिरधिकं मासमुपोष्याचलितसत्व ॥ २ ॥
वर्षे सहस्त्रे षष्टयां चतुरन्वितयाधिके दिवमगच्छत् ।
() सोमदिने आग्रहायणमासे कृष्णद्वितीयायां ॥ ३ ॥
अम्मेयकः शुभं तस्य श्रेष्ठिरोधेयकात्मजः ।
पुंडरीकपदासंगि चैत्यमेतदचीकरत् ॥ ४ ॥

वि० सं० १२५४ /ई० स० ११९८ में जालिहरगच्छीय देवप्रभसूरि द्वारा रचित **पद्मप्रभचरित** की प्रशस्ति के अनुसार काशहृद और जालिहरगच्छों का उद्भव विद्याधरकुल से बतलाया गया है।[१४]

विद्याधरगच्छ से संबद्ध कुछ अन्य अभिलेखीय साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं जो वि० सं० १४०८ से लेकर वि० सं० १५३४ तक के हैं। इनका विवरण इस प्रकार है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	उदयदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२५६
२.	१४०९	वैशाख सुदि ७ गुरुवार	देवप्रभसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८१७
३.	१४११	वैशाख वदि ५ शनिवार	विजयप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, उदयपुर	पूरनचन्द नाहर, संपा० **जैनलेख-संग्रह**, भाग २, लेखांक १११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
४.	१४१३	फाल्गुन वदि ११	विनयप्रभसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, रोहीडा, सिरोही	वही, भाग २, लेखांक २०८४
५.	१४२९	माघ वदि ७ सोमवार	उदयदेवसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, नाणा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८८६, मुनि जिनविजय, संपा० **प्राचीन-जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४१०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
६.	१४४०	पौष सुदि १२ बुधवार	गुणप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २२७८
७.	१४४५	फाल्गुन वदि १२ रविवार	गुणप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८७८
८.	१४५२	वैशाख वदि १ सोमवार	उदयदेवसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख		साराभाई मणिलाल नवाब, "राजनगरना ऐतिहासिक जैन अवशेषों"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
						जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ९, अंक ८, पृष्ठ ३८२, लेखांक २१.
९.	१५११	वैशाख वदि ५ शनिवार	विजयप्रभसूरि	तीर्थंकर की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ी जी का मंदिर उदयपुर	विजयधर्मसूरि, संपा० **प्राचीन-लेखसंग्रह**, लेखांक २६९
१०.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	हेमप्रभसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १००१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
११.	१५१८	माघ वदि ७ शुक्रवार	हेमप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	स्वामी जी का मंदिर, सहादतगंज, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६२४
१२.	१५२०	पौष वदि ५ शुक्रवार	विजयप्रभसूरि के पट्टधर हेमप्रभसूरि	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३१३ एवं विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	मुनि का नाम	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१३.	१५३४	माघ सुदि ५	हेमप्रभसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, ओसिया	नाहर, पूर्वोक्त, भा-१, लेखांक ७९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त प्रतिमालेखीय साक्ष्यों के आधार पर विद्याधरगच्छ के जिन मुनिजनों के नाम प्राप्त होते हैं, वे इस प्रकार हैं :

मुनिसंगमसिद्ध (वि० सं० १०६४)

उदयदेवसूरि 'प्रथम' (वि० सं० १४०८-१४२९)

देवप्रभसूरि (वि० सं० १४०९)

विजयप्रभसूरि 'प्रथम' (वि० सं० १४११ - १४१३)

गुणप्रभसूरि (वि० सं० १४४० - १४४५)

उदयदेवसूरि 'द्वितीय' (वि० सं० १४५२)

विजयप्रभसूरि 'द्वितीय' (वि० सं० १५११)

हेमभद्रसूरि (वि० सं० १५१५ - १५३४)

विक्रम संवत् की १६वीं शताब्दी के मध्य के पश्चात् इस गच्छ से संबद्ध कोई भी साहित्यिक या अभिलेखीय साक्ष्य नहीं मिलता, अतः यह माना जा सकता है कि इस समय के पश्चात् विद्याधरगच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची :

१. **कल्पसूत्र** 'स्थविरावली', संपा० देवेन्द्रमुनि शास्त्री, श्री अमर जैन आगम शोध संस्थान, गढ़ सिवाना, बाडमेर (राजस्थान), १९६८ ई० स० पृष्ठ ३००.

२. प्रो० मधुसूदन ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर।

३. थेरेहिंतो ण विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया ॥ २१७ ॥ देवेन्द्रमुनि शास्त्री, पूर्वोक्त, पृष्ठ ३०२.

४. U. P. Shah, *Akota Bronzes*, Bombay 1959 A.D. P. 31.

५. Ibid. P. 38

६. Ibid.

७. Ibid. P. 44-45.

८. U. P. Shah, *Treasures of Jaina Bhandars*, L.D. Series No. 69, Ahmedabad 1978 A.D., 55-57.

९. मुनि जिनविजय, "**हरिभद्रसूरि का समय निर्णय**" पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४७, द्वितीय संस्करण, वाराणसी १९८८ ई० स० पृष्ठ ६.

१०. पं० सुखलाल जी संघवी, **समदर्शी आचार्य हरिभद्र**, राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ६८, जोधपुर १९६३ ई०सं० पृष्ठ १३.

११. वही, पृष्ठ १४.

१२. संशोधक - मोहनलाल भगवानदास झवेरी, मुम्बई १९२६ ई० स०.

H.D. Velankar, *Jinaratnakosha*, Poona 1944 A.D. P. 214.

१३. A. P. Shah, "Some Early Inscriptions and Images on Mount. Shatrunjaya". *Mahaveera Jain Vidyalaya Golden Jubile Volume*, Part I, Bombay 1968 A.D., English Section, P. 164, No 1.

१४. विज्जाहरसाहाए गुच्छा गुच्छ सुमणमणहरणा।

जालिहर - कासहरया मुणिमहुअरपरि (गया) दुन्नि ॥ ३४ ॥

C. D. Dalal, Ed. *Descriptive Catalogue of Manuscripts in Jain Bhadars at Pattan*, P. 212.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संडेरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

पूर्वमध्यकाल में पश्चिमी भारत में निर्ग्रन्थ श्वेताम्बर श्रमण संघ की विभिन्न गच्छों के रूप में विभाजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। कुछ गच्छों का नामकरण विभिन्न नगरों के नाम के आधार पर हुआ, जैसे कोरंट (वर्तमान कोरटा) से कोरंट गच्छ, नाणा (वर्तमान नाना) से नाणकीय गच्छ, ब्रह्माण (वर्तमान वरमाण) से ब्रह्माणगच्छ, संडेर (वर्तमान सांडेराव) से संडेरगच्छ, पल्ली (वर्तमान पाली) से पल्लीवालगच्छ, उपकेशपुर (वर्तमान ओसिया) से उपकेशगच्छ, काशह्रद (वर्तमान कायंद्रा) से काशह्रदगच्छ आदि। यहां संडेरगच्छ के सम्बन्ध में यथाज्ञात साक्ष्यों के आधार पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

संडेरगच्छ चैत्यवासी आम्नाय के अन्तर्गत था। यह गच्छ १०वीं शती के लगभग अस्तित्व में आया। ईश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। उनके शिष्य एवं पट्टधर श्री यशोभद्रसूरि गच्छ के महाप्रभावक आचार्य हुए। संडेरगच्छीय परम्परा के अनुसार यशोभद्रसूरि के पश्चात् उनके पट्टधर शालिसूरि और आगे क्रमशः सुमतिसूरि, शांतिसूरि और ईश्वरसूरि (द्वितीय) हुए। पट्टधर आचार्यों के नामों का यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहा।

संडेरगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये हमारे पास मूलकर्ता के ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराने वाले गृहस्थों की प्रशस्तियां एवं स्वगच्छीय आचार्यों के रचनाओं की प्रशस्तियां सीमित संख्या में उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त **राजगच्छीयपट्टावली** (रचनाकाल वि० सं० १६वीं शती लगभग) एवं **वीरवंशावली** (रचनाकाल वि० सं० १७वीं शती लगभग) से भी इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छ के प्रारम्भिक आचार्यों के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है। संडेरगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं। इनमें से अधिकांश प्रतिमायें लेखयुक्त हैं। पट्टावलियों की अपेक्षा ग्रन्थ एवं पुस्तक प्रशस्तियाँ और प्रतिमालेख समसामयिक होने से ज्यादा प्रामाणिक हैं। यहां इन्ही आधारों पर संडेरगच्छ के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है -

साहित्यिकसाक्ष्य-

षड्विधावश्यकविवरण की दाता प्रशस्ति[१] (लेखनकाल वि० सं० १२९५ / ई० सन् १२२९) इस ग्रन्थ की दाता प्रशस्ति में सौवर्णिक पल्लीवालज्ञातीय श्रावक तेजपाल द्वारा **षड्विधावश्यकविवरण** (आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित **योगशास्त्र** का एक अध्याय) की प्रतिलिपि संडेर-गच्छीय गणि आसचन्द्र के शिष्य पंडित गुणाकर को दान में देने का उल्लेख है। परन्तु गणि आसचन्द्र संडेरगच्छ के किस आचार्य के शिष्य थे, यह ज्ञात नहीं होता है। संडेरगच्छ का उल्लेख करने वाला यह सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्य है, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है।

त्रिष्टिशलाकापुरुषचरित्र के अन्तर्गत **महावीरचरित्र की दाता प्रशस्ति** (लेखन काल वि० सं० १३२४/ई० सन् १२६७)[२]

इस प्रशस्ति में यशोभद्रसूरि का महान् प्रभावक आचार्य के रूप में उल्लेख है। यह प्रशस्ति खंडित है; अतः इसमें यशोभद्रसूरि के बाद के आचार्य का नाम (जो शालिसूरि होना चाहिए) नहीं मिलता, फिर आगे सुमतिसूरि का नाम आता है और इन्हें **दशवैकालिकटीका** का रचयिता बताया गया है। इनके पश्चात् शान्तिसूरि और फिर ईश्वरसूरि के नाम आते हैं। प्रशस्ति में आगे दाता श्रावक परिवार की विस्तृत वंशावली दी गयी है।

इसी श्रावक परिवार के एक सदस्य द्वारा **कल्पसूत्र** एवं **कालकाचार्यकथा** की प्रतिलिपि[३] करायी गयी। यद्यपि इनकी **दाताप्रशस्ति** में रचनाकाल नहीं दिया गया है, फिर भी इस प्रशस्ति को लिखवाने वाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रावक उक्त (श्रावक) परिवार का ही एक सदस्य होने से इसका रचनाकाल वि० सं० की चौदहवीं शताब्दी का मध्य माना जा सकता है। इस प्रशस्ति में यशोभद्रसूरि के पश्चात् शालिसूरि, सुमतिसूरि, शांतिसूरि और फिर ईश्वरसूरि का नाम आता है और अन्त में उसी श्रावक परिवार की वंशावली दी गयी है। इस प्रशस्ति से यह सिद्ध हो जाता है कि संडेरगच्छ में इन्हीं चार पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति होती रही। इस तथ्य का उल्लेख करने वाला यह सर्वप्रथम साहित्यक प्रमाण है।

परिशिष्टपर्व के वि० सं० १४७९ / ई० स० १४२२ में प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति[४]-

इस प्रशस्ति के अनुसार संडेरगच्छीय आचार्य यशोभद्रसूरि के संतानीय शांतिसूरि के शिष्य मुनि विनयचन्द्र ने श्री सोमकलश के उपदेश से वि० सं० १४७९ ज्येष्ठ सुदि प्रतिपदा मंगलवार को उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि तैयार की। वि० सं० १४७९ में आचार्य शांतिसूरि संडेरगच्छ के प्रमुख थे, ऐसा इस प्रशस्ति से स्पष्ट होता है।

कल्पसूत्र के वि० सं० १५८६ में प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति[५]-

इस प्रशस्ति में संडेरगच्छीय आचार्यों की जो गुर्वावली मिलती है, वह इस प्रकार है -

यशोभद्रसूरि
|
शालिसूरि
|
सुमतिसूरि
|
शांतिसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

ईश्वरसूरि

|

शालिसूरि

|

वाचक हर्षसागर

|

मुनिगंगा (वि० सं० १५८६)

इस प्रशस्ति से स्पष्ट है कि शालिसूरि के प्रशिष्य एवं वाचक हर्षसागर के शिष्य मुनि गंगा के पठनार्थ एक श्रावक द्वारा **कल्पसूत्र** की प्रतिलिपि तैयार करायी गयी। हर्षसागर और मुनिगंगा शालिसूरि के संभवतः पट्टधर नहीं थे, अतः उनका नाम परिवर्तित नहीं हुआ। इस प्रशस्ति की गुर्वावली में भी चार नामों के पुनरावृत्ति की झलक है, परन्तु इन आचार्यों के किन्ही विशिष्ट कृत्यों यथा साहित्य रचना आदि की कोई चर्चा नहीं हैं।

भोजचरित्र के वि० सं० १६५० में प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति[६]

इस प्रशस्ति में यशोभद्रसूरि के पश्चात् शालिसूरि-सुमतिसूरि-शांतिसूरि का उल्लेख करते हुए शांतिसूरि के शिष्य नयनकुञ्जर और हंसराज द्वारा **भोजचरित्र** की प्रतिलिपि करने का उल्लेख है।

षट्पंचासिकास्तवक के वि० सं० १६५० में प्रतिलेखन की दाता प्रशस्ति[७]-

इस प्रशस्ति में आचार्यों की गुर्वावली न मिलकर उपाध्याय धर्मरत्न और उनके शिष्यों की गुर्वावली मिलती है और यही कारण है कि इसमें परम्परागत नाम नहीं मिलते हैं। **सन्देहशतक** की **वि० सं० १७५०** में तैयार की गयी **प्रतिलिप** की **दाता प्रशस्ति**[८] से भी **इसी तथ्य की पुष्टि** होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि संडेरगच्छ में गच्छनायक आचार्यों को ही परम्परागत नाम दिये जाते थे, शेष मुनिजनों के वही नाम अन्त तक बने रहते थे जो उन्हें दीक्षा के समय दिये जाते थे।

संडेरगच्छीय आचार्यों की लम्बी परम्परा में सुमतिसूरि (चतुर्थ) के शिष्य शांतिसूरि (चतुर्थ) ने वि० सं० १५५० में **सागरदत्तरास** और इनके शिष्य ईश्वरसूरि (पंचम) ने वि० सं० १५६१ में **ललितांगचरित**; वि० सं० १५६४ में **श्रीपालचौपाई** तथा इनके शिष्य धर्मसागर ने वि० सं० १५८७ में **आरामनंदनचौपाई** की रचना की। इनके समबन्ध में यथास्थान प्रकाश डाला गया है। यहाँ इन रचनाओं के सम्बन्ध में यही कहना अभीष्ट है कि इनकी प्रशस्ति में भी परम्परागत पट्टधर आचार्यों के नामोल्लेख के अतिरिक्त अन्य कोई सूचना नहीं मिलती, जिससे इस गच्छ के इतिहास पर विशेष प्रकार डाला जा सके।

संडेरगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण-

संडेरगच्छ से सम्बन्धित सबसे **प्राचीन** उपलब्ध अभिलेख वि० सं० १०३९ / ई० सन् ९८२ का है जो आज करेड़ा (प्राचीन करहेटक) स्थित पार्श्वनाथ जिनालय में प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है[१]। लेख इस प्रकार है -

(१) संवत् १०३९ (व)र्षे श्री संडेरक गच्छे श्री यशोभद्रसूरि सन्तानीय श्री श्यामा ...(?) चार्या ....

(२) ....प्र० भ० श्रीयशोभद्रसूरिः श्रीपार्श्वनाथ बिबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्व चन्द्रेण कारितं ....

संडेरगच्छ के आदिम एवं महाप्रभावक आचार्य यशोभद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित एवं अद्यावधि एकमात्र उपलब्ध प्रतिमा पर उत्कीर्ण यह लेख संडेरगच्छ का उल्लेख करने वाला प्रथम अभिलेख है। साहित्यिक साक्ष्यों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पट्टावलियों) के आधार पर यशोभद्रसूरि का समय वि० सं० ९५७/ई० सन् ९०० से वि० सं० १०३९/ई० सन् ९८२ माना जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यशोभद्रसूरि[१०] अपने जीवन के अन्तिम समय तक पूर्णरूप से धार्मिक क्रियाकलापों में संलग्न रहे।

वि० सं० १११० से वि० सं० ११७२ तक के ४ में अभिलेख, जो संडेरगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं, में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य का कोई उल्लेख नहीं मिलता, इनका विवरण इस प्रकार है–

(१) वि० सं० ११२३ सुदि ८ सोमवार[११]

परिकर पर उत्कीर्ण लेख,

इस परिकर में आज पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित है, परन्तु इस लेख में ज्ञात होता है, कि इसमें पहले महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित रही।

स्थान – जैन मन्दिर, बीजोआना

(२) वि० सं० १११० (तिथिविहीन)[१२]

पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान – चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर

(३) वि० सं० ११६३ ज्येष्ठ सुदि १०[१३]

(४) वि० सं० ११७२ (तिथिविहीन लेख)[१४]

प्रतिष्ठास्थान – जैनमन्दिर, सेवाड़ी

सांडेराव स्थित जिनालय के गूढ़ मंडप में एक आचार्य और उनके शिष्य की प्रतिमा स्थापित है। इस पर वि० सं० ११९७ का एक लेख[१५] भी उत्कीर्ण जिससे ज्ञात होता है कि यह प्रतिमा संडेरगच्छीय पं० जिनचन्द्र के गुरु देवनाग की है। देवनाग सन्डेरगच्छीय किस आचार्य के शिष्य थे ? यह ज्ञात नहीं हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि हम पहले देख चुके हैं इस गच्छ में आचार्य यशोभद्रसूरि के सन्तानीय (शिष्य) के रूप में सर्वप्रथम शालिसूरि, उनके पश्चात् सुमतिसूरि उनके बाद शांतिसूरि और शांतिसूरि के बाद ईश्वरसूरि क्रमशः पट्टधर होते हैं, ऐसी परम्परा रही है, परन्तु इन परम्परागत नामों के उल्लेख वाला सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य वि० सं० ११८१ का है,[१६] जो नाडोल के एक जैन मन्दिर में मूलनायक के परिकर के नीचे उत्कीर्ण है। इसमें यशोभद्रसूरि के संतानीय शालिभद्रसूरि (प्रथम) का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में रूप में उल्लेख है। इसके बाद वि० सं० १२१० पंचतीर्थी के[१७] लेख जो जैन मन्दिर, सम्मेदशिखर में आज प्रतिष्ठित है, प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं मिलता। वि० सं० १२१५ के एक लेख[१८] में पुनः शालिभद्रसूरि का उल्लेख आता है। अतः वि० सं० १२१० के उक्त पंचतीर्थी प्रतिमा के प्रतिष्ठापक शालिसूरि (प्रथम) ही रहे होंगे ऐसा माना जा सकता है।

वि० सं० १२१८, १२२१, १२३३ और १२३६ के लेखों में यद्यपि प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं है, तथापि उनका विवरण इस प्रकार है –

वि० सं० १२१८ श्रावण सुदि १४ रविवार[१९]

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण लेख

यह ताम्रपत्र पहले जैन मन्दिर नाडोल में था, परन्तु अब रायल एशियाटिक सोसायटी, लन्दन में संरक्षित है।

वि० सं० १२२१ माघ वदि शुक्रवार[२०]

सभा मंडप में उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान – महावीर जिनालय, सांडेराव

वि० सं० १२३३ ज्येष्ठ वदि ७ गुरुवार[२१]

भगवान् शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान – जैन मन्दिर, अजारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १२३६ ज्येष्ठ सुदि १३ शनिवार[२२]

वि० सं० १२३७, १२५१ एवं १२५२ के प्रतिमा लेखों में प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में यशोभद्रसूरि के सन्तानीय एवं शालिसूरि के पट्टधर सुमतिसूरि (प्रथम) का नाम आता है। इनका विवरण इस प्रकार है-

वि० सं० १२३७ फाल्गुन सुदि १२ मंगलवार[२३]

परिकर के नीचे का लेख

प्रतिष्ठापक आचार्य - सुमतिसूरि;

प्रतिष्ठास्थल-बड़ा जैन मन्दिर, नाडोल

वि० सं० १२५१ ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार[२४]

आदिनाथ की परिकर युक्त प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर, बोया, मारवाड़

वि० सं० १२५२ माघ वदि ५ रविवार[२५]

शान्तिनाथ और कुन्थुनाथ की प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख

वर्तमान प्रतिष्ठा स्थान - सोमचिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात

जैसलमेर ग्रन्थ भण्डार[२६] में बोधकाचार्य के शिष्य सुमतिसूरि द्वारा वि० सं० १२२० में रचित **दशवैकालिकटीका** उपलब्ध है। बोधकाचार्य और उनके शिष्य सुमतिसूरि किस गच्छ के थे, यह ज्ञात नहीं होता है।

जैसा कि पहले देख चुके हैं, सन्डेरगच्छीय शालिसूरि (प्रथम) द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर वि० सं० ११८१ से वि० सं० १२१५ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनके शिष्य सुमतिसूरि (प्रथम) द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर वि० सं० १२३६ से १२५२ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि वि० सं० १२१५ के पश्चात् ही सुमतिसूरि अपने गुरु के पट्ट पर आसीन हुए। ऐसी स्थिति में वि० सं० १२२० में **दशवैकालिकटीका** के रचनाकार सुमतिसूरि को संडेरगच्छीय सुमतिसूरि से अभिन्न मानने में कोई बाधा नहीं प्रतीत होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशोभद्रसूरि के तृतीय संतानीय एवं शान्तिसूरि (प्रथम) द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर वि० सं० १२४५ से वि.सं. १२९८ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। नाडोल के चाहमान नरेश का मन्त्री और महामात्य वस्तुपाल का अनन्य मित्र यशोवीर इन्हीं शान्तिसूरि का शिष्य था। यशोवीर ने आबू स्थित विमलवसही में जो देवकुलिकायें निर्मित करायीं, उनमें प्रतिमा प्रतिष्ठापन का कार्य शान्तिसूरि ने ही सम्पन्न किया था। इसी कालावधि वि० सं० १२४५-१२९८ के मध्य वि० सं० १२६६ एवं वि० सं० १२६९ में प्रतिष्ठापित कुछ प्रतिमायें जो संडेरगच्छ से सम्बन्धित हैं, में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं मिलता, तथापि ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि उक्त प्रतिमायें भी शान्तिसूरि ने ही प्रतिष्ठापित की होगीं। शान्तिसूरि (प्रथम) द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमालेखों का विवरण इस प्रकार है -

शांतिसूरि (प्रथम) द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमालेखों का विवरण

वि० सं० १२४५ (तिथि विहीन लेख)[२७]

मंत्री **यशोवीर** द्वारा नेमिनाथ की प्रतिमा को देवकुलिका में स्थापित करने का इस लेख में विवरण दिया गया है।

प्रतिष्ठा स्थान - देहरी संख्या ४५, विमलवसही (आबू)

वि० सं० १२६९ माघ ३ शनिवार[२८]

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर, अजारी

भगवान् चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १२७४ वैशाख सुदि ३[२९]

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर, डभोई

वि० सं० १२९१ (तिथि विहीन लेख)[३०]

मंत्री यशोवीर द्वारा पद्मप्रभ की प्रतिमा को देवकुलिका में स्थापित कराने का विवरण प्रतिष्ठा स्थान - लूणवसही-आबू (देहरी संख्या ४१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देहरी संख्या ४० पर भी वही लेख है, परन्तु इसमें सुमतिनाथ की प्रतिमा को देवकुलिका में स्थापित कराने का उल्लेख है।

वि० सं० १२९७ वैशाख सुदि ३[३१]

शान्तिसूरि के परिकर वाली प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर - अजारी

वि० सं० १२९८ तिथि विहीन लेख

मल्लिनाथ जिनालय, खंभात में मन्त्री यशोवीर के पुत्र देवधर, उसकी पत्नी देवश्री और उनके पुत्रों द्वारा नन्दीश्वरद्वीप की स्थापना का उल्लेख है। वर्तमान में यह चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय के गर्भगृह के बगल में दीवाल में स्थापित है।[३२]

दो लेख, जिनमें प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं है-

वि० सं० १२६६ कार्तिक वदि २ बुधवार[३३]

स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - वीर जिनालय, सांडेराव

वि० सं० १२६९ फाल्गुन सुदि ४ गुरुवार[३४]

स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर, सांडेराव

शान्तिसूरि (प्रथम) के पट्टधर ईश्वरसूरि (द्वितीय) हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठित वि० सं० १३०७ एवं १३१७ के दो लेख मिले हैं जो इस प्रकार है -

वि० सं० १३०७ वैशाख सुदि ५ गुरुवार[३५]

शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात

वि० सं० १३१७ ज्येष्ठ वदि ११ बुधवार[३६]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

.संभवनाथ की प्रतिमा को देवकुलिका सहित प्रतिष्ठित कराने का उल्लेख,

प्रतिष्ठा स्थान - बावनजिनालय, की देहरी, उदयपुर

संडेरगच्छीय गुर्वावली का सामान्य रूप से यही क्रम प्राप्त होता है, परन्तु शान्तिसूरि और शालिसूरि द्वारा प्रतिष्ठित कुछ जिनप्रतिमायें जो वर्तमान में स्तम्भतीर्थ स्थित मल्लिनाथ जिनालय में सुरक्षित हैं, उनपर उत्कीर्ण लेखों से विचित्र तथ्य प्राप्त होते हैं।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, शालिसूरि का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम अभिलेख वि० सं० ११८१ और अन्तिम अभिलेख वि० सं० १२१५ का है। इसके बाद सुमतिसूरि द्वारा प्रतिष्ठित वि० सं० १२३७ से वि० सं० १२५२ तक के लेख विद्यमान हैं। इसके आगे शान्तिसूरि द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं के लेख भी वि० सं० १२४५ से वि० सं० १२९८ तक के हैं। यह स्वाभाविक क्रम है, परन्तु वि० सं० १२१५ में शान्तिसूरि[३७] (प्रथम) शालिसूरि के साथ एवं वि० सं० १२५२ में शालिसूरि[३८] सुमतिसूरि (प्रथम) के साथ प्रतिष्ठाकार्य सम्पन्न करा रहे हैं, यह विचारणीय है।

ईश्वरसूरि (द्वितीय) के पट्टधर **शालिभद्रसूरि (द्वितीय)** हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ३ प्रतिमालेख आज उपलब्ध हैं। उनका विवरण इस प्रकार है -

वि० सं० १३३१ वैशाख सुदि ९ सोमवार[३९]

कपर्दियक्ष की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैनमन्दिर, बयाना

वि० सं० १३३७ चैत्र सुदि ११ शुक्रवार[४०]

शान्तिनाथ प्रतिमा का लेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिष्ठा स्थान – चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० ११४५ श्रावण वदि १३[४१]

शान्तिनाथ प्रतिमा का लेख

प्रतिष्ठा स्थान – चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात

शालिसूरि (द्वितीय) के पट्टधर सुमतिसूरि (द्वितीय) हुए इनके द्वारा प्रतिष्ठापित जो जिन (तीर्थंकर) प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं, उन पर वि० सं० १३३८ से वि० सं० १३८९ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१. वि० सं० १३३८ फाल्गुन सुदि १० गुरुवार[४२]
तीर्थङ्कर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान – जैन मन्दिर, रत्नपुर, मारवाड़

२. वि० सं० १३४२ ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार[४३]
पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान – ऋषभनाथ जिनालय, हाथीपोल, उदयपुर

३. वि० सं० १३५० ज्येष्ठ वदि ५
अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख[४४]
प्राप्ति स्थान – जैन मन्दिर, ईडर

४. वि० सं० १३५७ ज्येष्ठ वदि ५
पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख[४५]
प्राप्ति स्थान – चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

५. वि० सं० १३९१ वैशाख सुदि ९ सोमवार
पार्श्वनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख[४६]
प्राप्ति स्थान – चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

६. वि० सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७[४७]

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

प्राप्तिस्थान - श्वेताम्बर जैन मन्दिर, रामघाट, वाराणसी

७. वि० सं० १३८८ वैशाख सुदि[४८] ५

भगवान् पार्श्वनाथ की पाणाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर

८. वि० सं० १३८९ ज्येष्ठ सुदि[४९] ८

भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - पूर्वोक्त, बीकानेर

इस प्रकार स्पष्ट है कि सुमतिसूरि (द्वितीय) दीर्घजीवी एवं प्रतिभाशीली जैन आचार्य थे। संडेरगच्छ से सम्बन्धित वि० सं० १३७१[५०] एवं १३९२[५१] के प्रतिमा लेखों में प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम श्रीसूरि दिया गया है। श्रीसूरि कौन थे ? क्या ये सुमतिसूरि (द्वितीय) से भिन्न कोई अन्य आचार्य हैं या स्थानाभाव से सूत्रधार ने सुमतिसूरि न लिखकर श्रीसूरि नाम उत्कीर्ण कर दिया ? यह विचारणीय है।

सुमतिसूरि (द्वितीय) के पश्चात् उनके पट्टधर शान्तिसूरि (द्वितीय) संडेरगच्छ के नायक बने। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कोई भी प्रतिमा आज उपलब्ध नहीं है। जैसा कि हम पीछे देख चुके हैं, इनके गुरु सुमतिसूरि (द्वितीय) की अन्तिम ज्ञात तिथि वि० सं० १३८९ है, अतः ये उक्त तिथि के पश्चात् ही अपने गुरु के पट्टधर हुए होगें। इसी प्रकार इनके शिष्य ईश्वरसूरि (तृतीय) द्वारा प्रतिष्ठापित सर्वप्रथम अभिलेख वि० सं० १४४७ का है, अतः इनका गच्छ नायकत्व का काल वि० सं० १३८९ से वि० सं० १४१७ के मध्य मान सकते हैं। इनके पट्टधर ईश्वरसूरि (तृतीय) द्वारा प्रतिष्ठापित दो प्रतिमाओं का लेख आज उपलब्ध हैं, जिनका विवरण इस प्रकार-

वि० सं० १४१७ ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार[५२]

वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १४२५ माघ वदि ७ सोमवार[५३]

आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख

प्राप्ति स्थान - शांतिनाथ जिनालय, नमक मंडी, आगरा

ईश्वरसूरि (तृतीय) के पट्टधर शालिसूरि (तृतीय) हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित २ प्रतिमार्थे आज उपलब्ध हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है -

वि० सं० १४२२ माघ वदि १२ मंगलवार[५४]

वासुपूज्य पंचतीर्थी का लेख,

प्राप्ति स्थान - विमलनाथ जिनलाय, कोचरों का चौक, बीकानेर

वि० सं० १४४६ आषाढ़ वदि[५५] १

पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख

प्राप्ति स्थान - ऋषभदेव जिनालय की भाण्डारस्थ प्रतिमा, नाहटों की गवाड़, बीकानेर

शालिसूरि (तृतीय) के पट्टधर सुमतिसूरि (तृतीय) हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित वि० सं० १४४२ से वि० सं० १४६९ तक के जो प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं, उन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है-

वि० सं० १४४२ वैशाख सुदि ३ सोमवार[५६]

प्राप्ति स्थान - अनुपूर्ति लेख, आबू

वि० सं० १४४३[५७]

प्राप्ति स्थान - जैन मन्दिर, राजनगर

वि० सं० १४५९[५८]

प्राप्ति स्थान - अजितनाथ देरासर, शेख पाडो, अहमदाबाद

वि० सं० १४६१ वैशाख सुदि[५९]

शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १६४२ वैशाख सुदि ५ शुक्रवार[६०]

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १४६५ तिथिविहीन मूर्तिलेख[६१]

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १४६९ माघ सुदि ६ रविवार[६२]

वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - धर्मनाथ जिनालय, मेड़ता

सुमतिसूरि (तृतीय) के पट्टधर शांतिसूरि (तृतीय) हुए। सन्डेरगच्छ के वि० सं० १४७२ से १५१३ तक के प्रतिमा लेखों में प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में इनका उल्लेख मिलता है; जिसका विवरण इस प्रकार है-

वि० सं० १४७२ फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार[६३]

भगवान् पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - नवघरे का मंदिर, चेलपुरी, दिल्ली

वि० सं० १४७५ ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार[६४]

भगवान् शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १४७६ मार्गशीर्ष सुदि ३[६५]

शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - वही

वि० सं० १४८३ फागुण वदि ११[६६]

पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - जैन मंदिर, चैलपुरी - दिल्ली एवं वीर जिनालय, बीकानेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १४८३ फागुण वदि ११ को इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुल ४ जिन प्रतिमायें वर्तमान में उपलब्ध हुई हैं। इनमें से श्रेयांसनाथ और पद्मप्रभ की प्रतिमायें आज चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर में संरक्षित हैं।[६७]

वि० सं० १४८६ माघ सुदि ११ शनिवार[६८]

मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - सम्भवनाथ जिनालय, अजमेर

वि० सं० १४९२ माघ वदि ५ गुरुवार[६९]

वासुपूज्य प्रतिमा का लेख

प्राप्तिस्थान - चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर

वि० सं० १४९२ वैशाख सुदि ५[७०]

प्राप्तिस्थान - ग्राम का जिनालय, चाँदवाड़, नासिक

वि० सं० १४९३ वैशाख सुदि ५[७१]

शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - पार्श्वनाथ जिनालय, करेड़ा

वि० सं० १४९३ तिथि विहीन[७२]

प्राप्ति स्थान - जैन मंदिर, राणकपुर

वि० सं० १४९४ माघ सुदि ११ गुरुवार[७३]

श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान- सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर

वि० सं० १४९४ माघ सुदि ११ गुरुवार[७४]

संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - महावीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर

वि० सं० १४९९ फागुण वदि २[७५]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १५०१ माघ सुदि १० सोमवार[७६]
नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर

वि० सं० १५०१ ज्येष्ठ सुदि १०[७७]
धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - जैन मंदिर, लींच

वि० सं० १५०३ ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार[७८]
नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - आबू

वि० सं० १५०३ तिथि विहीन[७९]
प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात

वि० सं० १५०५ वैशाख सुदि ६ सोमवार[८०]
शान्तिनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर

वि० सं० १५०५ माघ सुदि १५[८१]
प्राप्ति स्थान - जैन मंदिर मालपुरा

वि० सं० १५०६ ......११ रविवार[८२]
प्राप्ति स्थान - गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, बम्बई

वि० सं० १५०६ माघ वदि ५[८३]
सुविधनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - सेठ के बाग में स्थित जिनालय, उदयपुर

वि० सं० १५०६ फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार[८४]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर
वि० सं० १५०६ फाल्गुन सुदि ९[८५]
संभवनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - भाण्डारस्थ जिन प्रतिमा, महावीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर
वि० सं० १५०६ (तिथि विहीन लेख)[८६]
प्राप्ति स्थान - गौड़ी पार्श्वनाथ देरासर, मुम्बई
वि० सं० १५०६ (तिथि विहीन लेख)[८७]
प्राप्ति स्थान - मुनिसुव्रतजिनालय, भरुच
वि० सं० १५०६, ११ रविवार[८८]
प्राप्ति स्थान - गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई
वि० सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार[८९]
शांतिनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - शीतलनाथ जिनालय, रिणी-तारानगर
वि० सं० १५०७ माघ सुदि ५[९०]
शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर
वि० सं० १५०८ वैशाख वदि ४ शनिवार[९१]
नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - वही
वि० सं० १५०८ वैशाख वदि ४ शनिवार[९२]
शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चन्द्रप्रभ जिनालय; चूड़ी वाली गली, लखनऊ
वि० सं० १५०८ वैशाख सुदि ३[९३]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुपार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चौमुख जी देरासर, अहमदाबाद
वि० सं० १५०८ (तिथि विहीन)[९४]
अजितनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - शांतिनाथ जिनालय, खंभात
वि० सं० १५०९ माघ सुदि १०[९५]
वासुपूज्य की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - भाण्डारस्थ धातु प्रतिमा, वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर
वि० सं० १५१० फागुण वदि ८[९६]
सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - शामला पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर
वि० सं० १५१० ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार[९७]
प्राप्ति स्थान - जैन मंदिर, राणकपुर
वि० सं० १५११ माघसुदि २ गुरुवार[९८]
शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर
वि० सं० १५१३ माघ वदि ९ गुरुवार[९९]
संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

जैसा कि हम पहले देख चुके हैं परिशिष्टपर्व की वि० सं० १४७९ की प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति में भी शांतिसूरि (तृतीय) का उल्लेख है।

शांतिसूरि (तृतीय) के पट्टधर ईश्वरसूरि (चतुर्थ) हुए, जिनके द्वारा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५१३ से वि० सं० १५१९ तक की प्रतिष्ठापित प्रतिमायें उपलब्ध हैं। इनका विवरण इस प्रकार है -

वि० सं० १५१३ ज्येष्ठ वदि ११[१००]

कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चन्द्रप्रभ जिनालय, रंगपुर (बंगाल)

वि० सं० १५१५ माह (माघ) वदि ९ शुक्रवार[१०१]

नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान- आदिनाथ जिनालय, दिलवाड़ा (आबू)

वि० सं० १५१७ (तिथि विहीन)[१०२]

प्राप्ति स्थान - मुनिसुव्रत जिनालय, खंभात

वि० सं० १५१९ (तिथि विहीन लेख)[१०३]

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात

ईश्वरसूरि (चतुर्थ) के पट्टधर शालिसूरि (चतुर्थ) हुए, जिनके द्वारा वि० सं० १५१९ से वि० सं० १५४५ तक प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं के लेखों का विवरण इस प्रकार है-

वि० सं० १५१९ (तिथि विहीन)[१०४]

सीमंधर स्वामी का प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - जैन मन्दिर, खारबाड़ो, खंभात

वि० सं० १५१९ ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार[१०५]

प्रतिष्ठा स्थान - जैनमन्दिर, पायधुनी, मुम्बई

वि० सं० १५१९ (तिथि विहीन)[१०६]

प्रतिष्ठा स्थान - जैनमन्दिर, गुलाबबाड़ी, मुम्बई

वि० सं० १५२० ज्येष्ठ सुदि ९ शक्रवार[१०७]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिमा स्थान - तपागच्छ उपाश्रय, दिलवाड़ा

वि० सं० १५२१ माह (माघ) सुदि ७ शुक्रवार[१०८]

धर्मनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - गौड़ी जी का मन्दिर, उदयपुर

वि० सं० १५२१ (तिथि विहीन)[१०९]

प्रतिष्ठा स्थान - दादापार्श्वनाथ जिनालय, नरसिंहजीकी पोल, बड़ोदरा

वि० सं० १५२६ ज्येष्ठ सुदि १३[११०]

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १५२८ (तिथि विहीन लेख)[१११]

प्राप्ति स्थान - भग्न जैनमंदिर (राजनगर)

वि० सं० १५३२ चैत्र सुदि ३ गुरुवार[११२]

प्राप्ति स्थान - नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली

वि० सं० १५३२ वैशाख वदि सोमवार[११३]

धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर

वि० सं० १५३५ माह (माघ) सुदि ३[११४]

सुपार्श्वनाथ प्रतिमा का लेख

प्रतिष्ठा स्थान - वही

वि० सं० १५३६ माह (माघ) सुदि ९[११५]

आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख

प्रतिष्ठा स्थान - ऋषभदेव जिनालय के अन्तर्गत पार्श्वनाथ का मन्दिर, नाहटों की गवाड़, बीकानेर

वि० सं० १५३६ मार्गशीष सुदि १० बुधवार[११६]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान – शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर

वि० सं० १५३६ ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार[११७]

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान – आदिनाथ का नवीन जिनालय, जयपुर

वि० सं० १५४५ ज्येष्ठ सुदि १२ गुरुवार[११८]

आदिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान – गौड़ीजी का मंदिर, उदयपुर

शालिसूरि (चतुर्थ) के पट्टधर सुमतिसूरि (चतुर्थ) हुए, जिनके द्वारा वि० सं० १५४५ से १५५९ तक प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमायें; इनके शिष्य एवं पट्टधर शांतिसूरि (चतुर्थ) द्वारा वि० सं० १५५२ से वि० सं० १५७२ तक की जिन प्रतिमायें और शांतिसूरि (चतुर्थ) के शिष्य ईश्वरसूरि (पंचम) द्वारा प्रतिष्ठापित वि० सं० १५६० से १५९७ तक की जिन प्रतिमायें उपलब्ध हैं, अर्थात् विक्रम सम्वत् की सोलहवीं शती के छठें दशक में सुमतिसूरि (चतुर्थ), शांतिसूरि (चतुर्थ) और ईश्वरसूरि (पंचम) ये तीनों आचार्य विद्यमान थे। इससे प्रतीत होता है कि ये तीनों आचार्य शालिसूरि (चतुर्थ) के शिष्य और परस्पर गुरुभ्राता थे। ज्येष्ठताक्रम से इनका पट्टधर नाम निर्धारित हुआ होगा ऐसा प्रतीत होता है। शालिसूरि के पश्चात् ये क्रम से गच्छनायक के पद पर प्रतिष्ठित हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थंकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण अभिलेखों का विवरण इस प्रकार है –

सुमतिसूरि (चतुर्थ) द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण–

वि० सं० १५४७ माघ सुदि १२ रविवार[११९]

वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान – शत्रुञ्जय

वि० सं० १५४९ ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार[१२०]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - पंचायती मंदिर, लश्कर-ग्वालियर

वि० सं० १५५९ वैशाख वदि १ शनिवार[१२१]

पार्श्वनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - अजितनाथ देरासर, शेख पाड़ो, अहमदाबाद

शांतिसूरि (चतुर्थ) द्वारा प्रतिष्ठापित उपलब्ध जिन-प्रतिमाओं का विवरण-

वि० सं० १५५२ (तिथि विहीन प्रतिमा लेख)[१२२]

चन्द्रप्रभ स्वामी की चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - विमलनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात

वि० सं० १५५५ ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार[१२३]

प्रतिष्ठा स्थान - नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली

वि० सं० १५६३ माह (माघ) सुदि १५ गुरुवार[१२४]

मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा का लेख

प्रतिष्ठा स्थान - सुपार्श्वनाथ जिनालय, जयपुर

वि० सं० १५७२ वैशाख सुदि पंचमी सोमवार[१२५]

शान्तिनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - आदिनाथ जिनालय, दिलवाड़ा, आबू

वि० सं० १५७२ वैशाख सुदि पंचमी सोमवार[१२६]

धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मन्दिर - नाणा

वि० सं० १५५० में रचित **सागरदत्तरास**[१२७] के रचयिता यही शान्तिसूरि (चतुर्थ) माने जा सकते हैं।

ईश्वरसूरि (पंचम) द्वारा प्रतिष्ठापित उपलब्ध प्रतिमाओं का विवरण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० १५६० ज्येष्ठ वदि ८ बुधवार[१२८]

विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - पार्श्वनाथ देरासर, नाडोल,

वि० सं० १५६७ (तिथि विहीन)[१२९]

विमलवसही की दीवाल पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५८१ पौष सुदि ५ शुक्रवार[१३०]

अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

सं० १५८१ वर्ष पौष सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गौत्र गोत्रजा वायण सा० पद्मा भा० चांगू पु० दासा भा. करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का प्र. श्री संडेर गच्छे कवि श्री ईश्वरसूरिभिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे ।

वि० सं० १५९७ वैशाख सुदि ६ शुक्रवार[१३१]

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मंदिर, नाडुलाई

ईश्वरसूरि (पंचम) ने अपने गुरु द्वारा प्रारम्भ किये गये साहित्यसर्जन की परम्परा को जीवन्त बनाये रखा। इनके द्वारा रचित **ललिताङ्गचरित्र** (रचनाकाल वि० सं० १५६१)[१३२], **श्रीपालचौपाई** (रचनाकाल वि० सं० १५६४)[१३३] एवं **सुमित्रचरित्र** (रचनाकाल वि० सं० १५८१) आदि[१३४] ३ रचनायें वर्तमान में उपलब्ध हैं। **सुमित्रचरित्र** से ज्ञात होता है कि उन्होंने **जीवविचारविवरण; षट्भाषास्तोत्र** (सटीक); **नन्दिसेणमुनिगीत; यशोभद्रसूरिप्रबन्ध; मेदपाटस्तवन** आदि की भी रचना की थी। ये रचनायें आज अनुपलब्ध हैं।[१३५]

वि० सं० १५९७ में ईश्वरसूरि (चतुर्थ) के पश्चात् वि० सं० १६५० में शान्तिसूरि के शिष्यों नयकुञ्जर और हंसराज द्वारा धर्मघोषगच्छीय राजवल्लभ पाठक द्वारा रचित **भोजचरित्र**[१३६] की प्रतिलिपि तैयार करने का उल्लेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिलता है।

वि० सं० १६८९ का एक लेख,[१३७] जो पार्श्वनाथजिनालय में स्थित पुण्डरीकस्वामी की मूर्ति पर उत्कीर्ण है, भी संडेरगच्छ से ही सम्बन्धित है। परन्तु इसमें प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम नहीं मिलता है। इसके पश्चात् वि० सं० १७२८ और वि० सं० १७३२ के प्राप्त अभिलेख भी सन्डेरगच्छ से ही सम्बन्धित हैं। इनका विवरण इस प्रकार है –

वि० सं० १७२८ वैशाख सुदि १४[१३८] देहरी का लेख, लूणवसही, आबू

वि० सं० १७२८ वैशाख सुदि ११,[१३९] देहरी का लेख, लूणवसही, आबू

वि० सं० १७२८ वैशाख सुदि १५[१४०] देहरी का लेख, लूणवसही, आबू

वि० सं० १७३२ वैशाख सुदि ७[१४१], जैनमंदिर, छाणी

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि १६वीं शताब्दी (विक्रमी) के पश्चात् ही इस गच्छ का गौरवपूर्ण इतिहास समाप्त हो गया, तथापि १७वीं – १८वीं शताब्दी तक इसका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहा और बाद में यह तपागच्छ में विलीन हो गया।[१४२]

(देखें – अगले पृष्ठ पर तालिका)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित संडेरगच्छीय आचार्यों के परम्परा की तालिका

ईश्वरसूरि (प्रथम) (संडेरगच्छ के आदिम आचार्य)
|
यशोभद्रसूरि (संडेरगच्छ के महाप्रभावक आचार्य) इन्होंने संवत १०३९/ई० सन् ९८२ में पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की जो वर्तमान में करेड़ा (प्राचीन करहेटक) में स्थित पार्श्वनाथ जिनालय में प्रतिष्ठित है।)
|
श्यामाचार्य (यशोभद्रसूरि के शिष्य)
|
शालिभद्रसूरि (प्रथम) [वि० सं० ११८१-१२१५ प्रतिमालेख]
|
सुमतिसूरि (प्रथम) [वि० सं० १२३७-१२५२ प्रतिमालेख]
|
शांतिसूरि (प्रथम) [वि० सं० १२४५-१२९८ प्रतिमालेख]
|
ईश्वरसूरि (द्वितीय) [वि० सं० १३०७-१७ प्रतिमालेख]
|
शालिसूरि (द्वितीय) [वि० सं० १३३१-४५ प्रतिमालेख] इनके उपदेश से वि० सं० १३२४ में **महावीर**
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|	**चरित्र** की प्रतिलिपि तैयार
|	की गयी।
सुमतिसूरि (द्वितीय)	[वि० सं० १३३८-८९
|	प्रतिमालेख]
शांतिसूरि ?	[इनके बारे में कोई उल्लेख
|	नहीं मिलता है]
ईश्वरसूरि (तृतीय)	[वि० सं० १४१७-१४२५
|	प्रतिमालेख]
शालिसूरि (तृतीय)	[वि० सं० १४२२-१४४६
|	प्रतिमालेख]
सुमतिसूरि (तृतीय)	[वि० सं० १४४२-१४६९
|	प्रतिमालेख]
शांतिसूरि (तृतीय)	[वि० सं० १४७२-१५०६
|	प्रतिमालेख] इनके शिष्य
|	विनयचन्द्र ने वि० सं० १४७९
|	में **परिशिष्टपर्व** की
|	प्रतिलिपि तैयार की

संदर्भ सूची :

१. C. D. Dalal, Ed. - *A Descriptive Catalogue of Manuscripts In the Jaina Bhandar's at Pattan*, Vol I., Baroda - 1937 No. 37, Pp. 32-33.

२. Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm-leaf Mss in the Shanti Natha Jain Bhandar, Cambay,* No. 189, Pp. 306-7.

३. Muni Punyavijaya, Ibid, No. 52. Pp. 79-80.

४. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts - Muni Punyavijayaji's Collection*, By A. P. Shah, Part II, No. 3790, P. 217.

५. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts : Jesalmer Collection* - Compiled By Muni Shree Punyavijayaji, No. 1398, P.297.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. श्रीसंडेकीयगच्छे श्रीयशोभद्रसूरिसंताने तत्पट्टे श्रीशालिसूरिः, तत्पट्टे श्रीसुमतिसूरिः तत्पट्टे श्रीशान्तिसूरयः । तदन्वये श्रीशान्तिसूरिविजयराज्ये वा० श्रीनइ(य) कुंजरद्वितीयशिष्यमु० हंसराजः (जेन) श्रीभोजचरित्रं सम्पूर्णं कृतम् ॥

Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts - Muni Punyavijayjis Collection - Ed. by A. P. Shah, Part - II, No. 4936, P. 313.

७. मू. अन्तः – इति षट्पञ्चाशिकाटीका समाप्ता ॥

श्रीबृहत्श्रीश्रीसंडेरगच्छे उपाध्या[य]श्रीधर्म्मरत्नशिष्यवा० श्रीसि(स)हज-सुन्दरउपाध्या[य] श्रीजि[ज]यतिलक-पं० श्रीभावसुन्दरउपाध्या[य] श्रीक्षमामूर्तिउपाध्या[य] श्रीक्षमासुन्दरविजयराज्ये ग० श्रीसंयमवल्लभ-वा० श्रीआणन्दचन्द्र-वा० श्री न्या[ज्ञा]नसागर मु० सामलमु० देषा-जीवन्त-डङ्गासमस्तसाधुयुते उपाध्या[य] श्रीक्षमासुन्दर-शिष्य चेलानेतालिखितं, सांप्रतं राणाश्रीउदयसङ्घराज्ये उटालाग्रामे लिखितम् ।

Shah, Ibid, Part III, No. 7261, P. 447.

८. Ibid, Part I, No. 3269, P. 182.

९. पूरनचन्द नाहर, – **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९४८.

१०. यशोभद्रसूरि के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण के लिए द्रष्यव्य – 'वीरवंशावली' (**विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह** – [संपा० मुनि जिनविजय] में प्रकाशित); **ऐतिहासिकराससंग्रह**, भाग २; **जैनपरम्परानोइतिहास**, भाग १, (त्रिपुटी महाराज) आदि.

११. विजयधर्मसूरि – सम्पा० – **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक १

१२. मुनि विशालविजय – सम्पा० – **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ३.

१३. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष – २, पृ० ५४३, क्रमाङ्क ४१.

१४. मुनि जिनविजय, संपा० **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २२३.

१५. मुनि विशालविजय- **सांडेराव**, पृ० १५.

१६. विजयधर्मसूरि, संग्राहक एवं सम्पादक – **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ५.

१७. पूरनचन्द नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १६८७;

१८. जे. पी. अमीन, **खंभातनुं जैन मूर्ति विधान**, पृ० ३२, लेखांक २.

१९. नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८३९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. मुनि विशालविजय- **सांडेराव**, पृ० १६.

मुनि जिनविजय - **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३४९.

२१. मुनि जयन्तविजय - **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह,** (आबू, भाग ५) लेखांक ४१.

२२. अम्बालाल पी० शाह, - **जैनतीर्थसर्वसंग्रह,** पृ० २१३.

२३. विजयधर्मसूरि - पूर्वोक्त, लेखांक २३.

२४. विजयधर्मसूरि - पूर्वोक्त, लेखांक २६.

२५. जे० पी० अमीन, - पूर्वोक्त, पृ० ३२-३३.

२६. *Catalouge of Sanskrit & Prakrit Mss: Jesalmer Collection*, P. 30-31.

नोट : पूना और खंभात के ग्रन्थ भण्डारों में भी **दशवैकालिकटीका** की प्रतियां विद्यमान हैं : **जिनरत्नकोश**, पृ० १७०.

द्रष्टव्य - *Descriptive Catalouge of the Govt. Collection of Mss.* Vol. XVIII, Jaina Literature & Philosophy, Part III, No. - 716; *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the ShantiNath Jain Bhandar, Cambay*, Part II, P-305; **जिनरत्नकोश** पृ० १७०.

२७. मुनि जिनविजय - पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१३.

मुनि कल्याणविजय - **प्रबन्धपारिजात**, पृ० ३६२, लेखांक १२१.

२८. मुनि जयन्तविजय - **आबू**, भाग २, लेखांक ४२०.

२९. बुद्धिसागर - **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५६.

३०. मुनि कल्याणविजय - पूर्वोक्त, लेखांक ४०-४१ (लूणवसही के लेख).

३१. मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग ५ लेखांक ४२३.

३२. जे. पी. अमीन, - पूर्वोक्त, पृ० १४ एवं ३३.

३३. मुनि विशालविजय, **सांडेराव**, पृ० १८-१९.

३४. वही, पृ० २१.

३५. अमीन-पूर्वोक्त, पृ० १२ और ३३.

३६. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९५१.

३७. अमीन, पूर्वोक्त, लेखांक ३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. वही, लेखांक ५.

३९. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५५४.

४०. अगरचन्द, नाहटा, **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १८८.

४१. अमीन, पूर्वोक्त, पृ० १२ एवं ३३.

४२. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७०८.

४३. वही, भाग २, लेखांक १८९२.

४४. वही, भाग १, लेखांक ५१९.

४५. बुद्धिसागरसूरि - पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४०९.

४६. अगरचन्द नाहटा, - पूर्वोक्त, लेखांक २५०.

४७. नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४१५.

४८. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३२२.

४९. वही, लेखांक ३३३.

५०. बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०९९.

५१. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३१.

५२. वही, लेखांक ४३७.

५३. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४८८.

५४. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५७४.

५५. वही, लेखांक १४७९.

५६. मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ६००.

५७. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ९, पृ० ३८२, लेखांक २०.

५८. बुद्धिसागरसूरि - पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०४१.

५९. नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२८४.

६०. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६०४.

६१. वही, लेखांक, ६२५.

६२. नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७५८.

६३. वही, भाग - १, लेखांक ६६४.

६४. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५. वही, लेखांक ६८२.

६६. नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक ४६८.

नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३६.

६७. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७२५ और ७२६.

६८. नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५४९.

६९. वही, भाग ३, लेखांक २३०८.

७०. मुनि कान्तिसागर - **जैनधातुप्रतिमालेख**, लेखांक ८१.

७१. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९३३.

७२. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष १८, पृ० ८९-९३.

७३. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११४२.

७४. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३९.

७५. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८१३.

७६. नाहटा, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११४२.

७७. विजयधर्मसूरि - **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक १८९.

७८. मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ६३५.

७९. बुद्धिसागरसूरि - **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५५०.

८०. विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २२१ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २,लेखांक १०८१.

८१. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ११, पृ० ३७५-८३.

८२. मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १०३.

८३. विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २२०.

८४. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९०७.

८५. वही, लेखांक १३१८.

८६. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ९, पृ० ५१४-६००.

८७. बुद्धिसागरसूरि- पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३५३.

८८. मुनि कान्तिसागर - पूर्वोक्त, लेखांक १०३.

८९. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४५०.

९०. वही, लेखांक ९१८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१. वही, लेखांक ९२४.

९२. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५४८.

९३. बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४३.

९४. वही, भाग २, लेखांक ७५१.

९५. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३६१.

९६. मुनि विशालविजय, सम्पा० **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक १६४.

९७. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष १८, पृ० ८९-९३.

९८. नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २१८४.

९९. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९७६.

१००. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०२५.

१०१. वही, भाग २, लेखांक १९९१.

१०२. बुद्धिसागरसूरि - पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८५०.

१०३. वही, भाग २, लेखांक ५४०.

१०४. वही, भाग २, लेखांक १०६२.

१०५. मुनि कान्तिसागर - पूर्वोक्त, लेखांक १६९.

१०६. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ५, पृ० १६०-६५.

१०७. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, क्रमाङ्क २००२.

१०८. विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ३५४.

१०९. बुद्धिसागरसूरि - पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३४.

११०. नाहटा-पूर्वोक्त, लेखांक १०४६.

१११. **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ९, पृ० ३७९, लेखांक ३३.

११२. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३८८.

११३. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०७६.

११४. वही, लेखांक १०९३.

११५. वही, लेखांक १५१६.

११६. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०९९.

११७. वही, भाग २, लेखांक १२१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११८. विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४९३.

११९. मुनि कंचनसागर - **शत्रुञ्जयगिरिराजदर्शन**, लेखांक ४४९.

१२०. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३८३.

१२१. बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०४१.

१२२. वही, भाग २, लेखांक ७९२.

१२३. मुनि जिनविजय - पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३८५.

१२४. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११९०.

१२५. वही, भाग २, लेखांक १९९२.

१२६. मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग ५, लेखांक ३५८.

१२७. मोहनलाल दलीचन्द देसाई - **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृ० ५२६ एवं **जैन गुर्जर कविओ**, भाग १, पृ० ९१.

१२८. बुद्धिसागरसूरि - पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४५३.

१२९. **आबू**, भाग २, लेखांक ५९.

१३०. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४१६.

१३१. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त भाग २, लेखांक ३३६.

१३२. **जैन गूर्जर कविओ** (मोहनलाल दलीचन्द देसाई) द्वितीय संस्करण- संपा० डा० जयन्त कोठारी, भाग १, पृ० २२०.

१३३. वही, पृष्ठ २२२.

१३४. **जैन गूर्जर कविओ** (द्वितीय संस्करण), भाग १, पृ० २१९.

१३५. वही, पृष्ठ २१९.

१३६. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts: Muni Shree Punyavijayji's Collection*; Ed. A. P. Shah, Vol II, No - 4936.

१३७. नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९६२.

१३८. मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ३०९.

१३९. वही, भाग २, लेखांक २९३.

१४०. वही, भाग २, लेखांक २९१.

१४१. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५४०.

१४२. त्रिपुटी महाराज - **जैन परम्परानो इतिहास**, भाग १, पृ० ५५८-६९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरवालगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर श्रमण सम्प्रदाय के अन्तर्गत पूर्वमध्ययुग के चैत्यवासी गच्छों में सरवालगच्छ भी एक था। चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) की एक शाखा के रूप में इस गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है। इस गच्छ के प्रवर्तक कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

सरवालगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये सीमित संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य, जो वि० सं० १११० से वि० सं० १२८३ /ई० सन् १०५४ से १२२७ तक के हैं, तथा एक ही ग्रन्थ प्रशस्ति मिलती है।

सरवालगच्छ का सर्वप्रथम उल्लेख करने वाला वि० सं० १११० / ई० सन् १०५४ का एक लेख पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। पूरनचन्द नाहर[१] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

श्री सरवालगच्छे असामूकेन कारिता ॥ संतु १११० .... ।

यह प्रतिमा आज सुमतिनाथजिनालय, अजीमगंज जिला मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में है।

यद्यपि इस लेख में इस गच्छ के किसी आचार्य या मुनि का उल्लेख प्राप्त नहीं होता, फिर भी सरवालगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य होने से महत्त्वपूर्ण है। यही बात इस गच्छ से सम्बद्ध द्वितीय लेख, जो वि० सं० ११४५/ई० सन् १०८९ का है[२], के संबंध में कही जा सकती है।

कालक्रम की दृष्टि से इस गच्छ से सम्बदन्ध तृतीय लेख वि० सं० ११४९/ई० सन् १०९३ का है, जो राधनपुर स्थित विमलनाथ जिनालय में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रखी एक धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। मुनि विशालविजय[३] के अनुसार इस लेख की वाचना इस प्रकार है :

सं० ११४९ माघ वदि ४ श्रीसरवालगच्छे वर्धमानाचार्य संताने श्रीकुपांगजनागेनात्मश्रेयोर्थं कारिता ॥

इस लेख में वर्धमानसूरि के संतानीय अर्थात् श्रावकशिष्य द्वारा प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है। सरवालगच्छ के किसी आचार्य का उल्लेख करने वाला यह सर्वप्रथम लेख है, अतः महत्त्वपूर्ण है। इस गच्छ से सम्बद्ध वि० सं० ११५९ /ई० सन् ११०३ और वि० सं० ११६४/ई० सन् ११०८ के लेख, जो राधनपुर स्थित जिनालय की धातु प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं[४], लेकिन इनमें इस गच्छ के किसी आचार्य या मुनि का उल्लेख नहीं मिलता। मुनि विशालविजय ने इन लेखों की वाचना इस प्रकार दी है :

सं० ११५९ श्रीसरवालगच्छे सूहनश्राविकया सोमति दुहितृश्रेयोर्थं कारितः ॥

सं० ११६४ फाल्गुन सु० ७ गुरौ सरवालगच्छे श्रावक मोहलाकेन कारिता ॥

इस गच्छ से सम्बद्ध वि० सं० ११७४/ई० सन् १११८ का एक लेख वढवाण स्थित बड़े जैन मंदिर में एक परिकर के नीचे उत्कीर्ण है। इस लेख का कुछ अंश घिस जाने से नष्ट हो गया है। विजयधर्मसूरि[५] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

संवत् ११७४ फाल्गुन वदि ४ श्रीसरवालसंस्थितगच्छप्रतिपालक-श्रीजिनेश्वराचार्ये श्रीवर्धमानपुरे परि० महणसुत. .... कनेन .... देवश्रेयार्थं श्रीसीतलदेवप्रतिमा कारिता ॥

इस लेख में सरवालगच्छीय जिनेश्वरसूरि के श्रावकशिष्य द्वारा शीतलनाथ की प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है।

कालक्रम की दृष्टि से इस गच्छ का उल्लेख करने वाला अगला लेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि० सं० ११८२/ई० सन् ११२६ का है, जो राधनपुर स्थित जिनालय के एक पंचतीर्थी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छ के एक श्रावक शिष्य द्वारा आत्मश्रेयार्थ उक्त प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है।[६]

सं० ११८२ श्रीसरवालगच्छे श्रीजिनेश्वराचार्यसंताने वरुणाग सुत प्ररम (परम) ब्रह्मदेवभार्यमा लाहितगतपुत्रिया सीतया च आत्मश्रेयोर्थं कारिता ।।

इस गच्छ से सम्बद्ध एक लेख वि० सं० ११९४ /ई० सन् ११३८ का है। यह लेख भी वढवाण स्थित बड़े जैन मंदिर में एक परिकर के नीचे उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छीय जिनेश्वराचार्य के एक श्रावकशिष्य देवानन्द द्वारा अपनी माता के श्रेयार्थ विमलनाथ की प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है। मुनि विजयधर्मसूरि[७] ने इस लेख की वाचना निम्न प्रकार से दी है :

सं. ११९४ माघ सुदि ६ भू (भौ) मे श्रीवर्धमानपुरे श्रीसरवालगच्छे श्रीजिनेश्वराचार्यसंताने ठ० देवानन्देन स्वमातुः सज्जणिश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ-प्रतिमा कारापिता ।।

सरवालगच्छ से सम्बद्ध एक लेख वि० सं० १२०८ / ई० सन् ११५२ का है। यह लेख भी वढवाण स्थित बड़े जैन मंदिर में एक परिकर के नीचे उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छीय जिनेश्वराचार्य के श्रावक शिष्य नेमिकुमार की भार्या लक्ष्मी द्वारा आत्मश्रेयार्थ जिनप्रतिमा बनवाने का उल्लेख है। विजयधर्मसूरि[८] के अनुसार लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

संवत १२०८ ज्येष्ठ (ष्ठ) सुदि २ बुधे श्रीसरवालगच्छे श्रीजिनेश्वराचार्य संताने वोहासुतवता नेमिकुमारेण भार्या लक्ष्मी आत्मश्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता ।।

सरवालगच्छ से सम्बद्ध वि० सं० १२०८/ ई० स० ११५२ का एक अन्य लेख भी मिला है, जो जैसलमेर स्थित चन्द्रप्रभजिनालय की एक चौबीसी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख से ज्ञात होता है कि सरवालगच्छीय जिनेश्वराचार्य के एक श्रावकशिष्य द्वारा यह प्रतिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्मश्रेयार्थ बनवायी गयी। पूरनचन्द नाहर[९] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

सं० १२०८ श्रीसरवालगच्छे श्रीजिनेश्वराचार्यैः वालचंद किसुणारीमातृ महणीश्रेयसे कारिता ॥

इस गच्छ से सम्बद्ध अगला लेख वि० सं० १२१२ /ई० सन् ११५६ का है, जो वढवाण स्थित बड़े जैन मंदिर में एक परिकर के नीचे उत्कीर्ण है।[१०] इस लेख में भी सरवालगच्छीय जिनेश्वराचार्य के एक श्रावकशिष्य द्वारा अपनी माता के श्रेयार्थ वासुपूज्य की प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है। लेख की वाचना इस प्रकार है।

सं० १२१२ माघ सुदि ११ श्रीवर्धमानपुरे श्रीसरवालगच्छे श्री जिनेश्वराचार्यसंताने आमचंडसुतेन वोसिना मातुः मोहिणिश्रेयोर्थं .... श्रीवासुपूज्य प्रतिमा कारिता ॥

सरवालगच्छ से सम्बद्ध एक प्रतिमालेख वि०सं० १२२६/ ई० सन् ११७० का भी है। यह प्रतिमा आज जैसलमेर स्थित महावीरजिनालय में है जिसे सरवालगच्छीय वर्धमानाचार्य के एक श्रावकशिष्य द्वारा आत्मकल्याणार्थ बनवाया गया। नाहर[११] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

ॐ सं० १२२६ माघ सुदि १३ गुरौ श्रीसरवालगच्छे श्रीवर्धमानाचार्य-संताने रावड पुत्र माणु तथा भार्या वालेवि (?) सहितेन सुत देदा कवडि आलणकेन आत्मश्रेयोर्थं कारिता ॥

इसके अलावा वि० सं० १२५१/ई० सन् ११९५ का भी एक लेख इस गच्छ से सम्बद्ध है। यह लेख राधनपुर स्थित जैन मंदिर में रखी धातु की एक परिकर की गादी के नीचे उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छीय वर्धमानाचार्य के एक श्रावकशिष्य द्वारा अपने कुटुंब के श्रेयार्थ शांतिनाथ की प्रतिमा बनवाने का उल्लेख है। मुनि विशालविजय[१२] ने उक्त लेख का मूलपाठ इस प्रकार दिया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. संवत् १२५१ आषाढ़ सुदि ९ रवौ श्रीसरवालगच्छे श्रीवर्धमानाचार्य संताने श्रे० पुनहइ सुत जसपाल तत्सुत श्रे० आमकुमार माणिकाभ्यां

२. पुत्र लुणिगवरदेव तथा आस्वसिरि अभयसिरिप्रभृति स्वकुटुंब-मानुषोपेताभ्यां श्रीशांतिनाथप्रतिमा कारापिता ॥

सरवालगच्छ से सम्बद्ध एक लेख वि० सं० १२५५/ई० सन् ११९९ का भी है। यह लेख एक चौबीसी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण है, जो आज चन्द्रप्रभजिनालय, जैसलमेर में है।[१३] इस लेख में सरवालगच्छीय जिनेश्वराचार्य के श्रावकशिष्य द्वारा प्रतिमा बनवाने की बात कही गयी है। लेख का पाठ इस प्रकर है।

सं० १२५५ मार्ग सुदि १५ रवौ श्रीसरवालगच्छे श्रीजिनेश्वराभय संताने व्य० साढदेव भार्या अवियदेविश्रेयोर्थं सुत वीमकेन प्रतिमा कारिता ॥

इस गच्छ का उल्लेख करने वाला एक लेख वि० सं० १२५८/ ई० सन् १२०२ का भी है, जो धातु एक पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छ के किसी आचार्य या मुनि का उल्लेख नहीं मिलता, केवल प्रतिमा बनवाने वाले श्रावक का ही नाम मिलता है। मुनि विशालविजय[१४] ने इस लेख की वाचना की है, इस प्रकार है :

सं० १२५८ माघ वदि १० श्रीसरवालगच्छे वासुअलेनजि (जन) नी माढा श्रेयार्थं प्री (प्र) तमां (मा) कारिता।

सरवालगच्छ का उल्लेख करने वाला अंतिम लेख वि० सं० १२८६ / ई० सन् १२३० का है जो पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख में सरवालगच्छीय वर्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वरसूरि द्वारा पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित करने का उल्लेख है। मुनि कान्तिसागर[१५] ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

संवत् १२८६ (वर्षे) वै० सुद ५ शुक्र श्री सरपुनवास्तवव्य:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमालज्ञातीय श्रे० लाखू सावकुमार भार्या.... दे० सयार्थं (श्रेयार्थं) संखीसर (शंखेश्वर) वर्ति श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीसरवालगच्छे श्रीवर्धमानसूरि शिष्य श्रीजिनेश्वरसूरिभिः ॥

अभिलेखीय साक्ष्यों के उक्त विवरणों से स्पष्ट है कि कई लेखों में वर्धमानाचार्य और जिनेश्वराचार्य ये दो नाम आये हैं, किन्तु वि० सं० १२८६ / ई० सन् १२३० के लेख को छोड़कर किसी अन्य लेख में इन्हें गुरु-शिष्य नहीं बतलाया गया है। इस दृष्टि से उक्त लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और यह कहा जा सकता है कि सरवालगच्छ में पट्टधर आचार्यों को यही दो नाम पुनः पुनः प्राप्त होते थे।

उक्त साक्ष्यों के आधार पर सरवालगच्छ की गुरु-परम्परा की एक तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है :

?	
|	
[?]	वि० सं० १११०/ई० सन् १०५४ प्रतिमालेख [आचार्य का नाम अनुपलब्ध]
|	
[?]	वि० सं० ११४५ / ई० सन् १०८९ प्रतिमा लेख [आचार्य का नाम अनुपलब्ध]
|	
वर्धमानाचार्य	वि० सं० ११४९/ई० सन् १०९३ में इनके श्रावकशिष्य ने जिनप्रतिमा निर्मित करायी। वि० सं० ११५९ / ई० सन् ११०३ और वि० सं० ११६४ / ई० सन् ११०८ के प्रतिमा लेखों में यद्यपि किसी आचार्य
|	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|	का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु, सम्भवतः उक्त प्रतिमाओं के निर्माता भी वर्धमानाचार्य के श्रावकशिष्य रहे होंगे।
जिनेश्वराचार्य	वि० सं० ११७४ / ई० सन् १११८ प्रतिमालेख [वि० सं० ११८२ / ई० सन् ११२६, वि० सं० ११९४ /ई० सन् वि० सं० १२०८ /ई०सन् ११५२ एवं वि० सं० १२१२/ ई० सन् ११५६ में इनके उपदेश से इनके श्रावक शिष्योंने जिनप्रतिमायें बनवायी]
वर्धमानचार्य	वि० सं० १२२६/ई० सन् ११७० एवं वि० सं० १२५१ /ई० सन् ११९५ में इनके उपदेश से इनके श्रावकशिष्यों ने जिनप्रतिमायें निर्मित करायीं
जिनेश्वराचार्य	वि० सं० १२५५/ई० सन् ११९९ में इनके श्रावक शिष्य ने इनके उपदेश से जिनप्रतिमा निर्मित करायी।
	वि० सं० १२५८ /ई० सन् १२०२ के प्रतिमालेख में यद्यपि किसी आचार्य का नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहीं है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त प्रतिमा भी इन्हीं की प्रेरणा से निर्मित करायी गयी रही होगी।
वि० सं० १२८६/ई० सन् १२३० में पार्श्वनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि सरवालगच्छ से सम्बद्ध एक ही साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध है और वह है **पिण्डनिर्युक्ति** की शिष्यहितावृत्ति की प्रशस्ति[१६]। इससे ज्ञात होता है कि सरवालगच्छीय ईश्वरगणि के शिष्य वीरगणि अपरनाम समुद्रघोषसूरि ने वि० सं० ११६०/ई० सन् ११०४ में दधिपद्र (वर्तमान दाहोद, गुजरात राज्य) में इस कृति की रचना की। इस कार्य में उन्हें अपने गुरु-भ्राताओं-महेन्द्रसूरि, पार्श्वदेवगणि और देवचन्द्रगणि से सहायता प्राप्त हुई। इसे नेमिचन्द्रसूरि और जिनदत्तसूरि ने अणहिलपुरपत्तन (वर्तमान पाटन, उत्तर गुजरात) में संशोधित किया। वृत्तिकार वीरगणि ने इस प्रशस्ति में अपनी दीक्षा के पूर्व अपने गृहस्थजीवन का उल्लेख करते हुए अपने पिता का नाम वर्धमान और माता का नाम श्रीमती बतलाया है।

?
|
|
|
|
|
सरवालगच्छीय ईश्वरगणि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महेन्द्रसूरि	पार्श्वदेवगणि	देवचन्द्रगणि	वीरगणि अपरनाम समुद्रघोषसूरि [वि० सं० ११६० / ई० सन् ११०४ में **पिण्डनिर्युक्तिवृत्ति** के रचनाकार]
	(**पिण्डनिर्युक्तिवृत्ति** के लेखन में सहायक)		

सरवालगच्छीय ईश्वरगणि के गुरु कौन थे, क्या ईश्वरगणि के शिष्यों महेन्द्रसूरि, पार्श्वदेवगणि, देवचन्द्रगणि और वीरगणि की शिष्यपरम्परायें आगे चलीं या नहीं, इस सम्बन्ध में साक्ष्यों के अभाव में उत्तर दे पाना संभव नहीं।

जैसा कि हम पहले देख चुके हैं अभिलेखीय साक्ष्यों से हमें इस गच्छ के केवल दो आचार्यों - वर्धमानाचार्य और जिनेश्वराचार्य के नाम ज्ञात होते हैं, किन्तु **पिण्डनिर्युक्तिवृत्ति** के प्रशस्तिगत सरवालगच्छीय मुनिजनों से उनका कोई भी संबंध ज्ञात नहीं होता। इससे यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि ये दोनों परम्परायें सरवालगच्छ की दो अलग-अलग शाखाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस गच्छ के प्रथम आचार्य कौन थे, ये शाखायें कब अस्तित्व में आयीं, ये सभी प्रश्न इस वक्त तो अनुत्तरित ही रह जाते हैं। वि० सं० की १३वीं शती के पश्चात् तो इस गच्छ से सम्बद्ध प्रमाणों का पूर्णतया अभाव है, अत: यह कहा जा सकता है कि १४वीं शती के प्रारंभ में ही इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और ऐसी परिस्थिति में इस गच्छ के अनुयायी मुनिजन और श्रावक किन्हीं अन्य गच्छ की सामाचारी का पालन करने लगे होंगे।

सरवाल जैनों के किसी ज्ञाति का नाम था अथवा किसी नगर या ग्राम विशेष का नाम रहा, जिसके आधार पर इस गच्छ का यह नामकरण हुआ, यह अन्वेषणीय है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ सूची :

१. पूरनचन्द नाहर - **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, (कलकत्ता, १९१८ ई०) लेखांक १.

२. मुनि विशालविजय **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह**, (यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर, ई० सन् १९६०), लेखांक ६.

३. वहीं, लेखांक ७.

४. वही, लेखांक ९,१०.

५. विजयधर्मसूरि - **प्राचीनलेखसंग्रह**, (यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर, ई० सन् १९२९), लेखांक ४.

६. मुनि विशालविजय - पूर्वोक्त, लेखांक १२.

७. विजयधर्मसूरि - पूर्वोक्त, लेखांक ७.

८. वही, लेखांक ११.

९. पूरचन्द नाहर - पूर्वोक्त, भाग ३, (कलकत्ता ई० सन् १९२९), लेखांक २२२०.

१०. विजयधर्मसूरि - पूर्वोक्त, लेखांक १५.

११. पूरनचन्द नाहर- पूर्वोक्त - भाग ३, लेखांक २४१५.

१२. मुनि विशालविजय - पूर्वोक्त, परिशिष्ट, लेखांक १.

१३. नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२२२.

१४. मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २४.

१५. मुनि कान्तिसागर - **जैनधातुप्रतिमालेख**, (जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, सुरत १९५० ई०), लेखांक १३.

१६. H.R. Kapadia - *Descriptive Catalogue of the government Collections of Manuscripts deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute*, Volume XVII Part III (B.O.R.I., Pune - 1940 A.D.) Pp 283-287.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में पूर्वमध्यकालीन सुविहितमार्गीय गच्छों में हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का विशिष्ट स्थान है। जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है यह गच्छ राजस्थान में हर्षपुर नामक स्थान से उद्भूत हुआ माना जाता है। हर्षपुर वर्तमान में हरसोर के नाम से जाना जाता है। यह नागौर जिले में पुष्कर-डेगाना मार्ग पर स्थित है। प्रस्तुत गच्छ की गुर्वावली में जयसिंहसूरि का नाम इस गच्छ के आदिम आचार्य के रूप में मिलता है। उनके शिष्य अभयसिंहसूरि का नाम इस गच्छ के आदिम आचार्य के रूप में मिलता है। उनके शिष्य अभयदेवसूरि हुए जिन्हें चौलुक्य नरेश कर्ण (वि० सं० ११२०-११५०/ईस्वी सन् १०६४-१०९४) से मलधारी विरुद् प्राप्त हुआ था। बाद में यही विरुद् इस गच्छ के एक नाम के रूप में प्रचिलत हो गया। कर्ण का उत्तराधिकारी जयसिंह सिद्धराज (वि० सं० ११५०-११९९/ईस्वी १०९४-११४३) भी इनका बड़ा सम्मान करता था। इन्हीं के उपदेश से शाकम्भरी के चाहमान नरेश पृथ्वीराज 'प्रथम' ने रणथम्भौर के जैन मन्दिर पर स्वर्णकलश चढ़ाया था। गोपगिरि (ग्वालियर) के राजा भुवनपाल (विक्रम सम्वत् की १२वीं शती का छठ्ठां दशक) और सौराष्ट्र का राजा राखेंगार पर भी इनका प्रभाव था। अभयदेवसूरि के शिष्य विभिन्न ग्रन्थों के रचनाकार प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य हेमचन्द्रसूरि हुए। अपनी कृतियों की अन्त्यप्रशस्ति में इन्होंने स्वयं को प्रश्नवाहनकुल, मध्यमिका शाखा और हर्षपुरीयगच्छ के मुनि के रूप में बतलाया है। **कल्पसूत्र** की 'स्थविरावली' में भी प्रश्नवाहकुल और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यमिका शाखा का उल्लेख प्राप्त होता है। इनके शिष्य परिवार में विजयसिंहसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, विबुधचन्द्रसूरि, लक्ष्मणगणि और आगे चल कर मुनिचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि, देवप्रभसूरि, यशोभद्रसूरि, नरचन्द्रसूरि, नरेन्द्रप्रभसूरि, पद्मप्रभसूरि, श्रीतिलकसूरि, राजशेखरसूरि, वाचनाचार्य सुधाकलश आदि कई विद्वान् आचार्य एवं मुनि हुए हैं।

इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिए साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा बड़ी संख्या में रची गयी कृतियों की प्रशस्तियों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त इस गच्छ की एक पट्टावली भी मिलती है, जो **सद्गुरुपद्धति** के नाम से जानी जाती है। इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा वि० सं० ११९० से वि० सं० १६९९ तक प्रतिष्ठापित १०० से अधिक सलेख जिन प्रतिमाएँ मिलती हैं। यहां उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

अनुयोगद्वारवृत्ति

संस्कृत भाषा में ५६०० श्लोकों में निबद्ध यह कृति मलधारी हेमचन्द्रसूरि की रचना है। इसकी प्रशस्ति[१] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

जयसिंहसूरि
|
अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि (**अनुयोगद्वारवृत्ति** के रचनाकार)

हेमचन्द्रसूरि विरचित **विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति** के अन्त में भी यही प्रशस्ति मिलती है। उनके द्वारा रचित **आवश्यकप्रदेशव्याख्यावृत्ति,**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यकटिप्पन, शतकविवरण, उपदेशमालावृत्ति आदि रचनायें मिलती हैं, जिनके बारे में आगे यथास्थान विवरण दिया गया है।

धर्मोपदेशमालावृत्ति

मलधारी हेमचन्द्रसूरि के शिष्य विजयसिंहसूरि ने वि० सं० ११९१/ ई० सन् ११३५ में उक्त कृति की रचना की। इसकी प्रशस्ति[२] में वृत्तिकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

जयसिंहसूरि
|
अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
विजयसिंहसूरि (वि० सं० ११९१ ई० /सन् ११३५ में **धर्मोपदेशमाला-वृत्ति** के रचनाकार

मुनिसुव्रतचरित

यह प्राकृतभाषा में इस तीर्थङ्कर के जीवन पर लिखी गयी एकमात्र कृति है जो मलधारी गच्छ के प्रसिद्ध आचार्य श्रीचन्द्रसूरि द्वारा वि० सं० ११९३/ई० सन् ११३७ में रची गयी है। इसकी प्रथमादर्श प्रति आचार्य के गुरुभ्राता विबुधचन्द्रसूरि द्वारा लिखी गयी। ग्रन्थ की प्रशस्ति[३] में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा के साथ अपने गुरुभ्राता के इस सहयोग का भी उल्लेख किया है :

जयसिंहसूरि
|
अभयदेवसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

हेमचन्द्रसूरि

|

श्रीचन्द्रसूरि (वि० सं० ११९३/ ई० सन् ११३५ में **धर्मोपदेशमालावृत्ति** के रचनाकार	विबुधचन्द्रसूरि (**धर्मोपदेशमालावृत्ति** की प्रथमादर्श प्रति के लेखक)

सुपासनाहचरिय -

प्राकृत भाषा में ८००० गाथाओं में निबद्ध यह कृति वि० सं० ११९९ / ई० सन् ११४३ में मलधारी लक्ष्मणगणि द्वारा रची गयी है। इसकी प्रशस्ति[४] में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा का इस प्रकार उल्लेख किया है :

जयसिंहसूरि

|

अभयदेवसूरि

|

हेमचन्द्रसूरि

|

लक्ष्मणगणि (वि० सं० ११४४/ई० सन् ११४३ में **सुपासनाहचरिय** के रचनाकार)

संग्रहणीवृत्ति -

यह मलधारी श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रसूरि की कृति है। इसकी प्रशस्ति[५] के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
देवभद्रसूरि (**संग्रहणीवृत्ति** के रचनाकार)

यह कृति वि० सं० की १३वीं शती के प्रथम अथवा द्वितीय दशक की रचना मानी जा सकती है।

पाण्डवचरितमहाकाव्य

यह लोकप्रसिद्ध पाण्डवों के जीवनचरित पर जैनपरम्परा पर आधारित ८ हजार श्लोकों की रचना है। इसके रचनाकार मलधारी देवप्रभसूरि हैं। ग्रन्थ की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार ने अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता देवानन्दसूरि के अनुरोध पर यह रचना की। इस कार्य में उन्हें अपने एक अन्य गुरुभ्राता यशोभद्रसूरि और शिष्य नरचन्द्रसूरि से भी सहायता प्राप्त हुई। प्रशस्ति[६] में उल्लिखित ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
विजयसिंहसूरि — श्रीचन्द्रसूरि
श्रीचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
देवानन्दसूरि — देवप्रभसूरि — यशोभद्रसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पाण्डवचरित-महाकाव्य की रचना के प्रेरक)   **(पाण्डवचरित-महाकाव्य** के रचनाकार)   (ग्रन्थलेखन में सहायक)

|

नरचन्द्रसूरि
(ग्रन्थलेखन में सहायक)

ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की प्रशस्ति के अन्तर्गत रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है किन्तु श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने उपलब्ध अन्य साक्ष्यों के आधार पर इसे वि० सं० १२७०/ई० सन् १२१४ के आस-पास रचित बतलाया है,[६अ] जो उचित प्रतीत होता है।

कथारत्नसागर

यह देवप्रभसूरि के शिष्य प्रसिद्ध ग्रन्थकार नरचन्द्रसूरि की रचना है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
देवानन्दसूरि   देवप्रभसूरि   यशोभद्रसूरि
|
नरचन्द्रसूरि (**कथारत्नसागर** के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसका एक नाम **कथारत्नाकर** भी मिलता है। जैनधर्म सम्बन्धी कथानक सुनने की महामात्य वस्तुपाल की उत्कण्ठा को शान्त करने के लिए नरचन्द्रसूरि ने इसकी रचना की। इस कृति की वि० सं० १३१९/ई० सन् १२५३ की लिखी गयी ताड़पत्र की एक प्रति पाटन के संघवीपाडा ग्रन्थ भण्डार में संरक्षित है।[७] नरचन्द्रसूरि महामात्य वस्तुपाल के मातृपक्ष के गुरु थे। उनके द्वारा रचित **प्राकृतदीपिकाप्रबोध, अनर्घराघवटिप्पन, ज्योतिषसार** आदि कई अन्य कृतियाँ भी मिलती हैं। वस्तुपाल के गिरनार के दो लेखों के पद्यांश भी नरचन्द्रसूरि द्वारा रचित हैं और **वस्तुपालप्रशस्ति** भी इन्हीं की कृति है।

अलंकारमहोदधि

महामात्य वस्तुपाल के अनुरोध एवं मलधारी आचार्य नरचन्द्रसूरि के आदेश से उनके शिष्य नरेन्द्रप्रभसूरि ने वि० सं० १२८० में **अलंकारमहोदधि** तथा वि० सं० १२८२/ई० सन् १२२६ में इस पर वृत्ति की रचना की। इसकी प्रशस्ति[८] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
देवानन्दसूरि — देवप्रभसूरि — यशोभद्रसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरचन्द्रसूरि
|
नरेन्द्रप्रभसूरि (वि० सं० १२८२ /ई० सन् १२२६ में **अलंकार-महोदधिवृत्ति** के रचनाकार)

न्यायकंदलीपंजिका

यह हर्षपुरीयगच्छ के प्रसिद्ध आचार्य राजशेखरसूरि द्वारा वि० सं० १३८५/ई० सन् १३२९ में रची गयी है। इसकी प्रशस्ति[१] में उन्होंने लम्बी गुरु – परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्रसूरि
|
देवप्रभसूरि
|
नरचन्द्रसूरि
|
पद्मदेवसूरि
|
श्रीतिलकसूरि
|
राजशेखरसूरि (वि० सं० १३८५ /ई० सन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३२९ में **न्यायकंदली-पंजिका** के रचनाकार)

संगीतोपनिषत्सारोद्धार[१०]

यह इस गच्छी के वाचनाचार्य सुधाकलश द्वारा वि० सं० १४०६/ई० सन् १३५० में रची गयी ६१० श्लोकों की रचना है। यह ६ अध्यायों में विभक्त है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी लम्बी गुरु-परम्परा का परिचय न देते हुए अपने पूर्वज अभयदेवसूरि तथा उनकी परम्परा में हुए श्रीतिलकसूरि एवं उनके शिष्य राजशेखरसूरि का अपने गुरु के रूप में उल्लेख किया है :

मलधारी अभयदेवसूरि
|
|
|
श्रीतिलकसूरि
|
राजशेखरसूरि
|
सुधाकलश (वि० सं० १४०६/ ई० १३५० में **संगीतोपनिषत्-सारोद्धार** के रचयिता)

उक्त साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की एक तालिका इस प्रकार निर्मित होती है (द्रष्टव्य तालिका क्रमाङ्क - १)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालिका क्रमांक -१

जयसिंहसूरि

|

अभयदेवसूरि

|

हेमचन्द्रसूरि

|

- विजयसिंहसूरि (वि० सं० ११९१/ ई० सन् ११३५ में **धर्मोपदेशमाला-वृत्ति** के रचनाकार)
- श्रीचन्द्रसूरि (वि० सं० ११९३/ ई० सन् ११३७ में **मुनिसुव्रत-स्वामिचरित** के रचनाकार)
- विबुधचन्द्रसूरि (**मुनिसुव्रत स्वामिचरित** के लेखन में सहायक)
- लक्ष्मणगणि (वि० सं० ११९९/ ई० सन् ११४३ में **सुपासनाह-चरिय** के रचनाकार)

श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य:

- मुनिचन्द्रसूरि
- देवभद्रसूरि (**संग्रहणीवृत्ति** के रचनाकार)

मुनिचन्द्रसूरि

|

- देवानन्दसूरि (**पाण्डवचरित-महाकाव्य** की रचना के प्रेरक
- यशोभद्रसूरि (**पाण्डवचरित-महाकाव्य** की रचना में सहायक
- देवप्रभसूरि (**पाण्डवचरित-महाकाव्य** के रचनाकार)

  |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|
नरचन्द्रसूरि
(**कथारत्नाकर** के रचनाकार)
|
नरेन्द्रप्रभसूरि — पद्मदेवसूरि

नरेन्द्रप्रभसूरि
(वि० सं० १२८२ /ई० सन् १२२६ में
अलंकारमहोदधि के रचनाकार

पद्मदेवसूरि
|
|
|
श्री तिलकसूरि
|
राजशेखरसूरि
(वि० सं० १३८५/ ई० सन् १३२९ में
न्यायकंदलीपंजिका के रचनाकार)
|
सुधाकलश
(वि० सं० १४०६ /ई० सन् १३५० में
संगीतोपनिषत्सारोद्धार के रचनाकार)

हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारी गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

दत्ताणी से प्राप्त और वर्तमान में धवली ग्राम स्थित जिनालय में संरक्षित एक खंडित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख में इस गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है। मुनि जयन्तविजयजी ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री हर्षपुरगच्छेश्री....................दिवा....................श्रावक
धाहिल सुत चाहिल..........कारिता सं [०] ११३९ ॥

अर्बुदाचलप्रदक्षिणा जैनलेखसंग्रह (**आबू** भाग ५), लेखांक ५६.

यदि मुनिश्री की वाचना को सही मानें तो उक्त लेख को इस गच्छ का अबतक उपलब्ध सर्वप्राचीन साक्ष्य माना जा सकता है।

इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित १०० से अधिक सलेख जिनप्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जो वि० सं० ११९० /ई० सन् ११३४ से वि० सं० १६९९ /ई० सन् १६४३ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	११९०	–		जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण खंडित लेख	–	एम०ए० ढांकीऔर लक्ष्मणभोजक **"शत्रुंजयगिरिना केटलाक अप्रकट प्रतिमालेखो"** **सम्बोधि**, वर्ष ७, अंक १-४, पृष्ठ १३-२५, लेखांक ५
२.	१३२४	आखलु (आश्विन) वदि २	पूर्णचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चीराखाना स्थित जैन मन्दिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग -२ लेखांक १८७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३.	१२५९	वैशाख सुदि ३ बुधवार	देवाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ का पंचायती मन्दिर, बड़ा बाजार, कलकत्ता	वही, भाग १, लेखांक ८९
४.	१२८८	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	नरचन्द्रसूरि	शिलालेख	वस्तुपाल द्वारा निर्मित आदिनाथ जिनालय, गिरनार	**प्राचीनजैनलेख-संग्रह**, संपा०मुनि-जिनवजय, भाग २, लेखांक ३९
५.	१२८८	फाल्गुन सुदि १०	,,	,,	,,	वही, लेखांक ४०
६.	१२८८	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	नरेन्द्रप्रभसूरि	,,	वस्तुपाल तेजपाल द्वारा निर्मित प्रासाद, गिरनार	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
७.	१२९८	फाल्गुन वदि १४ रविवार	नरचन्द्रसूरि के शिष्य माणिक्यचन्द्रसूरि	शिलालेख (वर्तमान में अनुपलब्ध)	शत्रुंजय	U.P. Shah, "A Forg-otten Chapter in the the History of Shvetambara Jaina Church", *Journal of Asiatic Society of Bombay,* Vol.30, Part 1, 1955 A.D. Pp. 100-113.
८.	१३२१	फाल्गुन सुदि १२	प्रभाणंदसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गूढ़मण्डप, लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय- **अर्बुदप्राचीनजैन-लेखसंदोह,** (**आबू**, भा. २,) लेखांक २५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
९.	१३३७	वैशाख सुदि ३ शनिवार	प्रभाणंदसूरि	महावीरस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जैसलमेर	पूरनचन्द नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २२३१
१०.	१३४४	ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रवार	रत्नदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, डीसा	वही, भाग २, लेखांक २०९९
११अ.	१३६४	पौष सुदि १२ शुक्रवार	,,	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	पुरतत्त्व संग्रहालय सिरोही	सोगनलाल पटनी, **अर्बुद परिमंडल की जैनधातु प्रतिमायें एवं मंदिरवालि**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख / स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
						लेखांक ३९, पृष्ठ ४६.
११.	१३५२	वैशाख वदि ५ सोमवार	पद्मदेवसूरि के शिष्य श्रीतिलकसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनलाय, मीयागाम	बुद्धिसागरसूरि - सम्पादक, **जैनधातु प्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २ लेखांक२७९
१२.	१३७१	माघ सुदि १४ सोमवार	श्रीतिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य-बावन जिनालय, मातर	वही, भाग - २ लेखांक ५१९
१३.	१३७५	...सुदि ९	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, खारवाडो, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक १०२८
१४.	१३७८	मिति विहीन	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	देवकुलिका विमलवसही, आबू	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग -२, लेखांक १४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१५.	१३७८	मिति विहीन	,,	महावीरस्वामी की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १४५
१६.	१३७८	मिति वीहीन	,,	–	प्रेमचन्द्रमोदी की टोंक, शत्रुञ्जय	पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६८४
१६अ.	१३६९	आषाढ वदि ५ शुक्रवार	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पुरातत्त्व संग्राहलय सिरोही	पटनी, पूर्वोक्त, लेखांक ५६, पृष्ठ ४८.
१७.	१३८०	वैशाख वदि ५ गुरुवार	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनिविशालविजय, संपा० **राधनपुर-प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ४९
१८.	१३८०	माघ	,,	चन्द्रप्रभ की	महावीर जिनालय,	अगरचन्द नाहटा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
		सुदि ६ सोमवार		प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बीकानेर	संपा० **बीकानेर-जैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२१४
१९.	१३८६	माघ वदि २	श्रीतिलकसूरि के शिष्य राजशेखरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ३१३
२०.	१३९३	पौष वदि ५	राजशेखरसूरि	,,	जैन मन्दिर, वढवाण	विजयधर्मसूरि, संपा. **प्राचीनलेख संग्रह**, लेखांक ६२
२१.	१३९३	फाल्गुन वदि ३	,,	,,	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
२२.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	उदयदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि- पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२५६
२३.	१४०९	फाल्गुन वदि २	राजशेखरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १४४२
२४.	१४१५	ज्येष्ठ वदि १३	,,	तीर्थङ्कर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ४३५
२५.	१४२७	ज्येष्ठ वदि १	मुनिशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भण्डार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ७८
२६.	१४४०	वैशाख	राजशेखरसूरि	,,	शांतिनाथ जिनालय	मुनिकान्तिसागर,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
		सुदि ३			कोट, मुम्बई	संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेख**, लेखांक ५०
२७.	१४५४	पौष सुदि १२ सोमवार	मुनिसागरसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	मुनि कान्तिसागर, संपा० **शत्रुञ्जय-वैभव**, लेखांक ४९
२८.	१४५८	वैशाख वदि २ बुधवार	मतिसागरसूरि	आदिनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बूंदी	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
२९.	१४५८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	,,	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२७८
३०.	१४७९	माघ वदि ४ शुक्रवार	विद्यासागरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	,,	वही, लेखांक १३००
३१.	१४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय डीसा	पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक २१००
३२.	१४७७	ज्येष्ठ वदि १	मुनिशेखरसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, रङ्गपुर, उत्तरी बंगाल	वही, भाग २, लेखांक ११२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३३.	१४७९	माघ सुदि ४ शनिवार	मतिसागरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	भण्डारस्थ प्रतिमा, शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा	मुनि कान्तिसागर, **जैनधातुप्रतिमा-लेख**, लेखांक १६
३३अ.	१४७४	माघ वदि ४	विद्यासागरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	–	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १३००
३४.	१४८३	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	"	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३९
३५.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	मतिसागरसूरि के पट्टधर विद्यासागरसूरि	देवकुलिका का लेख	जैन मन्दिर, थराद	दौलतसिंह लोढा, संपा० **श्रीप्रतिमा-लेखसंग्रह**, लेखांक २९२ ब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३६.	१४८४	वैशाख सुदि ३ शनिवार	विद्यासागरसूरि	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मन्दिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४८
३७.	१४८५	आषाढ़ सुदि १० रविवार	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पठानी टोला स्थित जैन मंदिर, वाराणसी	नाहर, पूर्वोक्त भाग १ लेखांक ४०६
३८.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ५	विद्यासागरसूरि	अरनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६७
३९.	१४८८	मार्गशीर्ष सुदि १२ गुरुवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७३८
४०.	१४९७	ज्येष्ठ	गुणसुन्दरसूरि	आदिनाथ की	चन्द्रप्रभ जिनालय,	नाहर, पूर्वोक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
		सुदि २		प्रतिमा का लेख	जैसलमेर	भाग ३, लेखांक २३१२
४१.	१४९८	,,	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८००
४२.	१४९८	फाल्गुन सुदि १०	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ८०६
४३.	१४९९	माघ वदि ५	विद्यासागरसूरि के पट्टधर रविवार	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख गुणसुन्दरसूरि	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक ८३
४४.	१४९९	माघ सुदि ६	गुणसुन्दरसूरि	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३३०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
४५.	१४९९	फाल्गुन वदि ४	,, शनिवार	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, का लेख	वही, भाग १, लेखांक ३३४ कोटा
४६.	१५०२	वैशाख सुदि २	गुणकीर्तिसूरि लक्ष्मीसागरसूरि सोमवार	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा	जैनमंदिर, मेड़ता सिटी का लेख	वही, भाग १, लेखांक ३५७
४७.	१५०४	फाल्गुन वदि ११	विद्यासागरसूरि के पट्टधर	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा गुणसुन्दरसूरि	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा का लेख	वही, भाग १, लेखांक ३८४ (राज०)
४८.	१५०४	फाल्गुन सुदि ११	,,	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर का लेख	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
४९.	१५०५	माघ सुदि १० रविवार	,,	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अमहदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग -१ लेखांक १३१३
५०.	१५०६	माघ सुदि ८	,,	,,	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १००९
५१.	१५०८	चैत्र सुदि ९ बुधवार	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग -२, लेखांक ९९९
५२.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	,,	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन, जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
५३.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग ५, लेखांक ८२
५४.	१५०८	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	,,	वासपूज्य की प्रतिमा का लेख	दादा पार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग -२, लेखांक १२६
५५.	१५०८	मार्गशीर्ष वदि २	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १५५
५६.	१५०९	वैशाख सुदि ११ शुक्रवार	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चालीस गांव, महाराष्ट्र	मुनि कान्तिसागर, **जैनधातुप्रतिमा-लेख**, लेखांक १२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
५७.	१५०९	माघ सुदि १०	,,	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४४६
५८.	१५०९	माघ सुदि १०	विद्यासागरसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पंचायती जैनमंदिर, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक ४४७
५९.	१५१०	पौष वदि १०	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, देलवाड़ा, मेवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११९०
६०.	१५११	आषाढ़ वदि ९ गुरुवार	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, करमदी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
६१.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारपाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग –२, लेखांक ७२०
६२.	१५१२	मार्गसिर वदि १२	,,	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वींबडोद	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८५
६३.	१५१२	फाल्गुन सुदि १२ बुधवार	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, अलवर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९९९
६४.	१५१२	फाल्गुन वदि... शनिवार	,,	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, घोघा (काठियावाड़)	वही, भाग २, लेखांक १७७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
६५.	१५१३	चैत्र सुदि ६ गुरुवार	,,	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय सवाई माधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५००
६६.	१५१३	वैशाख सुदि २	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भिनाय	वही, भाग १, लेखांक ५०४
६७.	१५१३	आश्विन २	,,	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, भाग १, लेखांक ५१६
६८.	१५१५	माघ सुदि १ शुक्रवार	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
६९.	१५१५	फाल्गुन सुदि ४ शुक्रवार	श्रीसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११५४
७०.	१५१५	,,	,,	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५४८
७१.	१५१६	वैशाख सुदि १३ रविवार	,,	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, भाग १, लेखांक ५५६
७२.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक १५९अ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
७३.	१५१७	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	विद्यासागरसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३१४
७४.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	हेमप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग -१ लेखांक १००१
७५.	१५१८	मार्गसिर वदि ५ शनिवार	गुणसुन्दरसूरि	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	लीलाधरजी का उपाश्रय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५८०
७६.	१५१८	फाल्गुन वदि १ सोमवार	"	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	नवखण्डा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
७७.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २२७ एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४७
७८.	१५२१	माघ वदि ९ सोमवार	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०३०
७९.	१५२१	माघ सुदि १३ गुरुवार	,,	अभिनन्दनस्वामी की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग -१, लेखांक १०१३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
८०.	१५२२	कार्तिक वदि ५ गुरुवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१०४
८१.	१५२२	पौष वदि १२ गुरुवार	,,	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	लोढण पार्श्वनाथ-देरासर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३९
८२.	१५२२	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	,,	चन्द्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६२३
८३.	१५२३	मार्गशीर्ष वदि २ शुक्रवार	,,	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पुंगलियों का मंदिर, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक ६३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
८३अ.	१५२५	मार्गशीर्ष २ शुक्रवार	,,	मुनिसव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वृजनगर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३०
८४.	१५२७	पौष सुदि ६ शुक्रवार	,,	सुविधिनात की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	वही, लेखांक ६९५ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२७८
८५.	१५२८	वैशाख वदि ६	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९८३
८६.	१५२८	माघ	,,	सुमतिनाथ की	जैनमंदिर, भिनाय	विनयसागर,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
		सुदि ३ गुरुवार		पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख		पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१०
८७.	१५२९	वैशाख वदि ६	,,	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३५१
८८.		तिथि विहीन	,,	–	बालावसही, शत्रुञ्जय	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक ८४
८९.		तिथि विहीन	,,	–	वही	वही, लेखांक १५९ ब
९०	१५२९	फाल्गुन सुदि ७ बुधवार	गुणनिधानसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, छाणी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग –२, लेखांक २६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
९१.	१५३२	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	पुण्यनिधानसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग -२ लेखांक १२८५ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७४८
९२.	१५३३	चैत्र सुदि ४ शुक्रवार	गुणसुन्दरसूरि के पट्टधर गुणनिधानसूरि	अभिनन्दस्वामी की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७५३
९३.	१५३३	मिति विहीन	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	वही, लेखांक ७६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
९४.	१५३४	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	,,	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०८३
९५.	१५३४	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक १०८४
९६.	१५३४	आषाढ़ सुदि ७ मंगलवार	गुणनिर्मलसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	सवाईराम बाफणा का मंदिर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३, लेखांक २५२७
९७.	१५३४	मार्गशीर्ष वदि ५ सोमवार	गुणनिधानसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, आसानियों का	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
					चौक, बीकानेर	
९८.	१५३६	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	गुणनिधानसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लिबंडीपाड़ा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २९५
९९.	१५४३	ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार	गुणनिधानसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर, राजस्थान	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८३६
१००.	१५४६	आषाढ़ वदि २ शनिवार	श्री...सूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२९४
१०१.	१५४६	आषाढ़ वदि १२ रविवार	गुणसागरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ जिनालय, सिरपुर, अकोला (महाराष्ट्र)	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
						एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६२
१०२	१५४९	वैशाख सुदि ५ रविवार	लक्ष्मीसागरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लिंबडीपाडा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग -१ लेखांक २७९
१०३.	१५४९	ज्येष्ठ सुदि १३	गुणकीर्तिसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	रामचन्द्रजी का मंदिर, पठानीटोला, वाराणसी	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ४१३
१०४.	१५५१	माघ वदि २ सोमवार		आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१०५.	१५५३	आषाढ़ सुदि २ रविवार	श्रीसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, चेलापुरी, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक ४९४
१०६.	१५५३			अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	कुन्थुनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४४१
१०७.	१५५४	पौष सुदि १२ सोमवार	मतिसागरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, बीजापुर	मुनि जयन्तविजय, **आबू**, भाग २, लेखांक ६५९
१०८.	१५५७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	गुण...सूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१०९.	१५५७	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	पुण्यवर्धनसूरि		शांतिनाथ जिनालय, लिंबडीपाड़ा, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २९१
११०.	१५५८	फाल्गुन सुदि १२ शुक्रवार	लक्ष्मीसागरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, मोतिसुखिया की धर्मशाला, पालिताना	**शत्रुञ्जयवैभव**, लेखांक २५७ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ६४८
१११.	१५६८	फाल्गुन सुदि ४ गुरुवार		मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १६०६
११२.	१५६९	मिति विहीन		पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय रङ्गपुर,	नाहर, पूर्वोक्त, भाग -२,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
					उत्तरी बंगाल	लेखांक ११३१
११३.	१५७२	वैशाख सुदि २ सोमवार		आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५०
११४.	१५७३	वैशाख सुदि ३ गुरुवार		शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, ईडर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४४२
११५.	१५८४	फाल्गुन सुदि १० गुरुवार	गुणसुन्दरसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सांथा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९७६
११६.	१६९९	मिति विहीन	महिमासागरसूरि के पट्टधर कल्याणसागरसूरि	मूलनायक आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १८९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्मदेवसूरि के शिष्य राजशेखरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ५ सलेख जिनप्रतिमायें मिलती हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १३८६ माघ वदि २	**बी० जै० ले० सं०**, लेखांक ३१३
वि० सं० १३९३ पौष वदि २	**प्रा० ले० सं०**, लेखांक ६२
वि० सं० १३९३ फाल्गुन सुदि २	**बी० जै० ले० सं०**, लेखांक ३५८
वि० सं० १४०९ फाल्गुन वदि २	वही, लेखांक १४४२
वि० सं० १४१५ ज्येष्ठ वदि १३	वही, लेखांक ४४५

मलधारिगच्छीय प्रतिमा लेखों की सूची में वि० सं० १२५९ के प्रतिमालेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक मलधारी देवानन्दसूरि का नाम आ चुका है। जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है मलधारी देवप्रभसूरि कृत **पाण्डवचरित** की प्रशस्ति[११] में भी ग्रन्थकार के ज्येष्ठ गुरुभ्राता और ग्रन्थ की रचना के प्रेरक के रूप में देवानन्दसूरि का नाम मिलता है। **पाण्डवचरित** का रचनाकाल वि० सं० १२७०/ई० सन् १२१४ माना जाता है।[१२] अतः समसामयिकता के आधार पर उक्त प्रशस्ति में उल्लिखित देवानन्दसूरि और वि० सं० १२५९ /ई० सन् १२०३ में पार्श्वनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक देवानन्दसूरि एक ही व्यक्ति माने जा सकते हैं।

महामात्य वस्तुपाल द्वारा निर्मित गिरनार स्थित आदिनाथ जिनालय के वि० सं० १२८८/ई० सन् १२३२ दो अभिलेखों के रचनाकार नरचन्द्रसूरि और यहीं स्थित इसी तिथि के एक अन्य अभिलेख के रचनाकार नरेन्द्रप्रभसूरि महामात्य वस्तुपाल के मातृपक्ष के गुरु नरचन्द्रसूरि[१३] और उनके शिष्य नरेन्द्रप्रभसूरि से अभिन्न हैं। यही बात वि० सं० १२९८/ई० सन् १२४२ के लेख में उल्लिखित माणिक्यचन्द्रसूरि के गुरु नरचन्द्रसूरि के बारे में भी कही जा सकती है।

इसी प्रकार वि० सं० १३५२/ईस्वी सन् १२९६ से वि० सं० १३८० / ईस्वी सन् १३३४ तक के प्रतिमालेखों में उल्लिखित पद्मतिलकसूरि के शिष्य श्रीतिलकसूरि एवं वि० सं० १३८६/ई० सन् १३३० से वि० सं० १४१५/

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ई० सन् १३५९ तक के प्रतिमालेखों में उल्लिखित उनके शिष्य राजशेखरसूरि समसामयिकता के आधार पर प्रतिमालेखों में प्रसिद्ध आचार्य राजशेखरसूरि और उनके गुरु श्रीतिलकसूरि से अभिन्न माने जा सकते हैं।

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर मलधारिगच्छीय मुनिजनों की गुरु परम्परा की पूर्वोक्त तालिका को जो वृद्धिगत स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है (द्रष्टव्य – तालिका क्रमांक २) :

तालिका क्रमांक – २

जयसिंहसूरि
|
अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि

विजयसिंहसूरि	श्रीचन्द्रसूरि	विबुधचन्द्रसूरि	लक्ष्मणगणि
वि० सं० ११९१/ ई० सन् ११३५ में **धर्मोपदेशमाला-वृत्ति** के रचनाकार)	वि० सं० ११९३/ ई० सन् ११३७ में **मुनिसुव्रत-स्वामिचरित** के रचनाकार)	**मुनिसुव्रत-स्वामिचरित** के लेखन में सहायक)	वि० सं० ११९९/ ई० सन् ११४३ में **सुपासनाह-चरिय** के रचनाकार)

(श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य)

मुनिचन्द्रसूरि
|
|

देवभद्रसूरि
(**संग्रहणीवृत्ति** के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवानन्दसूरि	यशोभद्रसूरि	देवप्रभसूरि
(**पाण्डवचरित- महाकाव्य** की रचना के प्रेरक वि० सं० १२५९ में पार्श्वनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक)	(**पाण्डवचरित- महाकाव्य** की रचना में सहायक	(**पाण्डवचरित- महाकाव्य** के रचनाकार)

|

नरचन्द्रसूरि
(**कथारत्नाकर** के रचनाकार)
वि० सं० १२८८ में
में महामात्य वस्तुपाल
की गिरनार प्रशस्ति
के रचयिता)

नरेन्द्रप्रभसूरि	माणिक्यचन्द्रसूरि	पद्मदेवसूरि
(वि० सं० १२८२/ ई० स० १२२६ में **अलंकार** महोदधि के रचनाकार	(वि० सं० १२९८/ ई० स० १२४२ के शत्रुञ्जय के **प्रशस्तिलेख** में उल्लिखित	| श्री तिलकसूरि रचनाकार (वि० सं० १३५२-८० **प्रतिमालेख**) |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजशेखरसूरि
(वि० सं० १३८६ –
१४१४ प्रतिमालेख,
अनेक ग्रन्थों के रचनाकार)
|
सुधाकलश
(वि० सं० १४०६ /
ई० सन् १३५० में
**संगीतोपनिषत्-
सारोद्धार** के रचयिता)

जैसा कि प्रारम्भ में कहा गया है कि इस गच्छ की **सद्गुरुपद्धति**[१४] नामक एक गुर्वावली भी मिलती है। प्राकृत भाषा में २६ गाथाओं में रची गयी यह कृति वि० सं० की १४वीं शती की रचना मानी जा सकती है। इसमें अभयदेवसूरि से लेकर पद्मदेवसूरि तक के मुनिजनों की गुरु-परम्परा इस प्रकार दी गयी है :

अभयदेवसूरि
|
हेमचन्द्रसूरि
|
विजयसिंहसूरि श्रीचन्द्रसूरि विबुधचन्द्रसूरि
|
मुनिचन्द्र सूरि हरिभद्र सूरि मानदेव सूरि सिद्ध सूरि महेन्द्र सूरि देवभद्र सूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवानन्दसूरि नेमिचन्द्रसूरि यशोभद्रसूरि देवप्रभसूरि

नरचन्द्रसूरि

माणिक्यचन्द्र नरेन्द्रप्रभ रत्नप्रभ प्रभानन्द पद्मदेव

ग्रन्थप्रशस्तियों से जहाँ श्रीचन्द्रसूरि के केवल दो शिष्यों मुनिचन्द्रसूरि और देवप्रभसूरि के बारे में ही जानकारी प्राप्त हो पाती है, वहीं इस **गुर्वावली** से ज्ञात होता है कि उनके अतिरिक्त श्रीचन्द्रसूरि के हरिभद्रसूरि, सिद्धसूरि, मानदेवसूरि आदि शिष्य भी थे। यही बात मुनिचन्द्रसूरि के शिष्य नेमिचन्द्रसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इसी प्रकार इस **गुर्वावली** में उल्लिखित नरचन्द्रसूरि के सभी शिष्यों के नाम साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात हो जाते हैं। वस्तुतः इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से यह गुर्वावली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

जैसा कि पीछे हम देख चुके है इस गच्छ से सम्बद्ध १५वीं-१६वीं शती की जिनप्रतिमाओं की संख्या पूर्व की शताब्दियों की अपेक्षा अधिक है। इन पर उत्कीर्ण लेखों से इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के नाम ज्ञात होते है, तथापि उनमें से कुछ के पूर्वापर सम्बन्ध ही निश्चित हो पाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१.	मतिसागरसूरि (वि० सं० १४५८-१४७९)	३ प्रतिमालेख
२.	मतिसागरसूरि के पट्टधर विद्यासागरसूरि (वि० सं० १४७६-१४८८)	७ प्रतिमालेख
३.	विद्यासागरसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि (वि० सं० १४९७-१५२९)	४३ प्रतिमालेख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४.	गुणसुन्दरसूरि के पट्टधर गुणनिधानसूरि (वि० सं० १५२९-१५३६)	८ प्रतिमालेख
५.	गुणनिधानसूरि के पट्टधर गुणसागरसूरि (वि० सं० १४४३-१५४६)	२ प्रतिमालेख
६.	गुणसागरसूरि के शिष्य (?) लक्ष्मीसागरसूरि (वि० सं० १५४९-१५७२)	६ प्रतिमालेख

मलधारी गुणसुन्दरसूरि के शिष्य सर्वसुन्दरसूरि ने वि० सं० १५१० / ईस्वी सन् १४५४ में **हंसराजवत्सराजचौपाई**[१५] की रचना की। यह इस गच्छ से सम्बद्ध विक्रम सम्वत् की १६वीं शती का एकमात्र साहित्यिक साक्ष्य माना जा सकता है।

जैसा कि अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत हम देख चुके हैं वि० सं० १४९७ से वि० सं० १५२९ तक के ४३ प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में गुणसुन्दरसूरि का नाम मिलता है। **हंसराजवत्सराजचौपाई** के रचनाकार सर्वसुन्दरसूरि ने भी अपने गुरु का यही नाम दिया है, अतः समसामयिकता के आधार पर दोनों साक्ष्यों में उल्लिखित गुणसुन्दरसूरि एक ही व्यक्ति माने जा सकते हैं।

वि० सं० की १५वीं शती के उत्तरार्ध और १६वीं शती तक के इस गच्छ से सम्बन्ध साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर गुरु - शिष्य परम्परा की जो तालिका निर्मित होती है, वह इस प्रकार है :

?
|
|
|
|
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मतिसागरसूरि (वि० सं० १४५८ - १४७९)
प्रतिमालेख
|
विद्यासागरसूरि (वि० सं० १४७६ - १४८८)
प्रतिमालेख
|
गुणसुन्दरसूरि (वि० सं० १४९७ - १५२९)
प्रतिमालेख
|

सर्वसुन्दरसूरि
(वि० सं० १५१० में
हंसराजवत्सराजचौपाई
अपरनाम **कथासंग्रह**
के रचनाकार)

गुणनिधानसूरि
(वि० सं० १५२९ - १५३६)
प्रतिमालेख
|
गुणसागरसूरि
(वि० सं० १५४३-१५४६)
प्रतिमालेख
|
लक्ष्मीसागरसूरि
(वि० सं० १५४९-१५७२)
प्रतिमालेख

वि० सं० की १६वीं शती के अन्तिम चरण से मलधारगच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की विरलता इस गच्छ के अनुयायियों की घटती हुई संख्या का परिचायक है। वि० सं० की १७वीं शती के इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र दो साक्ष्य मिलते हैं। इनमें प्रथम है **सिन्दूरप्रकरवृत्ति**[१६], जो हर्षपुरीयगच्छ के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणनिधानसूरि के शिष्य गुणकीर्त्तिसूरि द्वारा वि० सं० १६६७/ईस्वी सन् १६११ में रची गयी है। इसी प्रकार वि० सं० १६९९ के **प्रतिमालेख**[१७] में इस गच्छ के महिमासागरसूरि के शिष्य कल्याणराजसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख मिलता है। यह इस गच्छ का उल्लेख करनेवाला अन्तिम उपलब्ध साक्ष्य है। यद्यपि इनसे विक्रम सम्वत् की १७वीं शती के अन्त तक हर्षपुरीयगच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध होता है, तथापि वह अपने पूर्व गौरवमय स्थिति से च्युत हो चुका था और वि० सं० की १८वीं शती से इस गच्छ के अनुयायी ज्ञातियों को हम तपागच्छ से सम्बद्ध पाते हैं।[१८]

इस गच्छ के प्रमुख आचार्यों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

अभयदेवसूरि : श्वेताम्बर परम्परा में अभयदेवसूरि नामक कई आचार्य हो चुके हैं। विवेच्य अभयेदवसूरि प्रश्नवाहनकुल व माध्यमिकाशाखा से सम्बद्ध हर्षपुरीयगच्छ के आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य थे। प्रस्तुत लेख के प्रारम्भ में इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा रचित जिन ग्रन्थों की प्रशस्तियों का विवरण दिया जा चुका है, उन सभी में इनके मुनि जीवन के बारे में महत्त्वपूर्ण विवरण संकलित है।[१९] चौलुक्य नरेश कर्ण (वि० सं० ११२०-११५०)ने इनकी निस्पृहता और त्याग से प्रभावित होकर इन्हें **'मलधारी'** विरुद् प्रदान की। कर्ण का उत्तराधिकारी जयसिंह सिद्धराज (वि० सं० ११५०-११९९) भी इनका बड़ा सम्मान करता था। इनके उपदेश से उसने अपने राज्य में पर्युषण और अन्य विशेष अवसरों पर पशुबलि निषिद्ध कर दी थी। गोपगिरि के राजा भुवनपाल (वि० सं० की १२वीं शती का छठाँ दशक) और सौराष्ट्र के राजा राखेंगार पर भी इनका प्रभाव था। अपनी आयुष्य को क्षीण जानकर इन्होंने ४५ दिन तक अनशन किया और अणहिलपुरपत्तन में स्वर्गवासी हुए। इनकी शवयात्रा प्रातःकाल प्रारम्भ हुई और तीसरे प्रहर दाहस्थल तक पहुँची। जयसिंह सिद्धराज ने अपने परिजनों के साथ राजप्रासाद की छत पर से इनकी अन्तिम यात्रा का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवलोकन किया। इनके पट्टधर हेमचन्द्रसूरि हुए।

हेमचन्द्रसूरि

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है आप हर्षपुरीयगच्छालंकार अभयदेवसूरि के शिष्य और पट्टधर थे। श्रीचन्द्रसूरि विरचित **मुनिसुव्रतचरित**[२०] (रचनाकाल वि० सं० ११९३/ई० सन् ११३७) एवं राजशेखरसूरि कृत **प्राकृतद्वयाश्रयवृत्ति**[२१] की प्रशस्तियों से इनके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। **विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति** (रचनाकाल वि० सं० ११७०/ई० सन् १११४) की प्रशस्ति में इन्होंने स्वरचित ९ ग्रन्थों का उल्लेख किया है,[२२] जो इस प्रकार है :

१. आवश्यकटिप्पण, २. शतकविवरण, ३. अनुयोगद्वारवृत्ति, ४. उपदेशमालासूत्र, ५. उपदेशमालावृत्ति, ६. जीवसमासविवरण, ७. भवभावनासूत्र, ८. भवभावनाविवरण, ९. नन्दीटिप्पण।

आवश्यकटिप्पण : ४६०० श्लोकों की यह कृति आचार्य हरिभद्रसूरि विरचित **आवश्यकवृत्ति** पर लिखी गयी है। इसे **आवश्यक-वृत्तिप्रदेशव्याख्या** के नाम से भी जाना जाता है। इस पर हेमचन्द्रसूरि के ही एक शिष्य एवं पट्टधर श्रीचन्द्रसूरि ने एक और टिप्पण लिखा है जो **प्रदेशव्याख्याटिप्पण** के नाम से प्रसिद्ध है।

शतकविवरण : शिवशर्मसूरिविरचित प्राचीन पंचम कर्मग्रन्थ **शतक** पर मलधारी हेमचन्द्रसूरि ने संस्कृत भाषा में ३७४० श्लोक प्रमाण **वृत्ति** अथवा **विवरण** की रचना की। जैसलमेर के ग्रन्थभंडार में १३वीं - १४वीं शती की इसकी कई प्रतियाँ संरक्षित हैं।

अनुयोगद्वारवृत्ति : यह अनुयोगद्वारसूत्र के मूलपाठ पर ५९०० श्लोकों में रची गयी है। इसमें सूत्रों के पदों का सरल व संक्षिप्त अर्थ दिया गया है। कलकत्ता, मुम्बई, एवं पाटन से इसके चार संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।[२३]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपदेशमालासूत्र : सुभाषित और सूक्ति के रूप में रचित जैन मनीषियों की अनेक कृतियाँ मिलती हैं। यह कृति भी उसी कोटि में मानी गयी है। इसमें सदाचार और लोकव्यवहार का उपदेश देने के लिए स्वतंत्र रूप से अनेक सुभाषित पदों का निर्माण किया गया है, जिसमें जैनधर्मसम्मत आचारों और विचारों के उपदेश प्रस्तुत किये गये हैं। रचनाकार ने अपनी इस कृति पर वि० सं० ११७५/ई० सन् १११९ में वृत्ति की भी रचना की है। पाटण के जैन ग्रन्थ भण्डारों में इसकी कई प्रतियाँ संरक्षित हैं। जैन श्रेयस्कर मंडल, मेहसाणा से ई० सन् १९११ में यह प्रकाशित भी हो चुकी है।

जीवसमासविवरण : आचार्य हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित यह कृति ६६२७ श्लोकों में निबद्ध है। इसकी स्वयं ग्रन्थकार द्वारा लिखी गयी एक ताड़पत्रीय प्रति खंभात के शांतिनाथ जैन भंडार में संरक्षित है। इस प्रति से ज्ञात होता है कि यह चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज के शासनकाल में वि० सं० ११६४/ई० सन् ११०८ में पाटण में लिखी गयी।

भावभावनासूत्र : जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट होता है इसमें भवभावना अर्थात् संसारभावना का वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत ५३१ गाथायें हैं। इसमें भवभावना के साथ-साथ अन्य ११ भावनाओं का भी प्रसंगवश निरूपण किया गया है।

ग्रन्थकार ने अपनी इस कृति पर वि० सं० ११७०/ई० सन् १११४ में वृत्ति की रचना की। यह १२५० श्लोकों में निबद्ध है। इस वृत्ति के अधिकांश भाग में नेमिनाथ एवं भुवनभानु के चरित्र आते हैं। यह कृति स्वोपज्ञटीका के साथ ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बर संस्था, रतलाम द्वारा दो भागों में प्रकाशित हो चुकी है।

नंदीटिप्पण : जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है ग्रन्थकार ने **विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति** की प्रशस्ति में स्वरचित ग्रन्थों में इसका भी उल्लेख किया है। परन्तु इसकी कोई प्रति अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति : यह हेमचन्द्रसूरि की बृहत्तम कृति है। इसके अन्तर्गत २८००० श्लोक हैं। इसमें **विशेषावश्यकभाष्य** के विषयों का सरल एवं सुबोध रूप से प्रतिपादन किया गया है। इस टीका के कारण **विशेषावश्यकभाष्य** के पठनपाठन में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसके अन्त में दी गयी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह वि० सं० ११७५/ई० सन् १११९ में पूर्ण की गयी।

विजयसिंहसूरि

आप हेमचन्द्रसूरि के शिष्य थे। श्रीचन्द्रसूरि कृति **मुनिसुव्रतस्वामिचरित** (रचनाकाल वि० सं० ११९३/ई० सन् ११३७), लक्ष्मणगणि विरचित **सुपासनाहचरिय** (रचनाकाल वि० सं० ११९९/ई० सन् ११४३), नरचन्द्रसूरि द्वारा रचित **कथारत्नसागर** एवं देवप्रभसूरि कृत **पाण्डवचरितमहाकाव्य** की प्रशस्तियों में इनका सादर उल्लेख[२४] है। कृष्णर्षिगच्छीय जयसिंहसूरि विरचित **धर्मोपदेशमाला** (रचनाकाल वि० सं० ९१५/ई० सन् ८५९) पर इन्होंने वि० सं० ११९१/सन् ११३५ में १४४७१ श्लोक परिमाण संस्कृत भाषा में वृत्ति की रचना की। इसके अन्तर्गत कथाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

श्रीचन्द्रसूरि -

आप विजयसिंहसूरि के लघु गुरुभ्राता और मलधारी हेमचन्द्रसूरि के पट्टधर थे। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है इन्हों ने वि० सं० ११९३/ई० सन् ११३७ में प्राकृत भाषा में **मुनिसुव्रतस्वामिचरित** की रचना की। यह प्राकृत भाषा में उक्त तीर्थङ्कर पर लिखी गयी एकमात्र कृति है। इसकी प्रशस्ति के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा का अत्यन्त विस्तार से साथ परिचय दिया है। इनकी दूसरी महत्त्वपूर्ण कृति है **संग्रहणीरत्नसूत्र**[२५] जिस पर इनके शिष्य देवभद्रसूरि ने साढ़े तीन हजार श्लोक प्रमाण वृत्ति की रचना की। वि० सं० १२२२/ई० सन् ११६६ में इन्होंने अपने गुरु की कृति **आवश्यकप्रदेशव्याख्या** पर टिप्पण की रचना की।[२६] **लघुक्षेत्रसमास** भी इन्हीं की कृति है।[२७]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्ष्मणगणि –

आप भी मलधारी आचार्य हेमचन्द्रसूरि के शिष्य थे। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है इन्होंने वि० सं० ११९९ /ई० सन् ११४३ में प्राकृत भाषा में **सुपासनाहचरिय** की रचना की। इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने गुरु को **विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति** के लेखन में सहायता दी।[२८] यह बात उक्त ग्रन्थ की प्रशस्ति से ज्ञात होती है।

देवभद्रसूरि

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है ये श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य थे। इन्होंने अपने गुरु की कृति **संग्रहणीरत्नसूत्र** पर वृत्ति की रचना की। **न्यायावतारटिप्पनक** और **बृहत्क्षेत्रसमासटिप्पणिका** (रचनाकाल वि० सं० १२३३/ई० सन् ११७७) भी इन्हीं की कृति है।

देवप्रभसूरि

ये मलधारी श्रीचन्द्रसूरि के प्रशिष्य और मुनिचन्द्रसूरि के शिष्य थे। इनके द्वारा रचित **पाण्डवचरित** का पूर्व में उल्लेख किया गया है।[२९] इसमें १८ सर्ग हैं। इसका कथानक लोकप्रसिद्ध पाण्डवों के चरित्र पर आधारित है, जो कि जैन परम्परा के अनुसार वर्णित है। यह एक वीररस प्रधान काव्य है। **पाण्डवचरित** के कथानक का आधार **षष्ठांगोपनिषद्**[३०], **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** तथा कुछ अन्य ग्रन्थ हैं, यह बात स्वयं ग्रन्थकर्ता ने ग्रन्थ के १८वें सर्ग के २८०वें पद्य में कही है। इसके अतिरिक्त **मृगावतीचरित** अपरनाम **धर्मशास्त्रसार**, **सुदर्शनाचरित**, **काकुस्थकेलि** आदि भी इन्हीं की कृतियाँ हैं।

नरचन्द्रसूरि

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है ये मलधारी देवप्रभसूरि के शिष्य और महामात्य वस्तुपाल के मातृपक्ष के गुरु थे। ये कई बार वस्तुपाल के साथ तीर्थयात्रा पर भी गये थे। महामात्य के अनुरोध पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्होंने १५ तरंगों में **कथारत्नसागर**[३१] की रचना की। इसमें तप, दान, अहिंसा आदि सम्बन्धी कथायें दी गयी हैं। इसका एक नाम **कथारत्नाकर** भी मिलता है। वि० सं० १३१९ में लिखी गयी इस ग्रन्थ की एक प्रति पाटण के संघवीपाड़ा ग्रन्थभंडार में संरक्षित है। इसके अतिरिक्त इन्होंने **प्राकृतप्रबोधदीपिका, अनर्घराघवटिप्पण, ज्योतिषसार** अपरनाम **नारचन्द्रज्योतिष, साधारणजिनस्तव** आदि की भी रचना की और अपने गुरु देवप्रभसूरि के **पाण्डवचरित** तथा नागेन्द्रगच्छीय उदयप्रभसूरि के **धर्माभ्युदयमहाकाव्य** का संशोधन किया।[३२] महामात्य वस्तुपाल के वि० सं० १२८८ के गिरनार के दो लेखों के पद्यांश[३३] तथा २६ श्लोकों की **वस्तुपालप्रशस्ति** भी इन्होंने ही लिखी है।[३४]

नरेन्द्रप्रभसूरि

ये मलधारी नरचन्द्रसूरि के शिष्य एवं पट्टधर थे। महामात्य वस्तुपाल के अनुरोध एवं अपने गुरु के आदेश पर इन्होंने वि० सं० १२८० में **अलंकारमहोदधि** की रचना की। यह आठ तरंगों में विभक्त है। इसके अन्तर्गत कुल ३०४ पद्य हैं। यह अलंकार-विषयक ग्रन्थ है। वि० सं० १२८२ में इन्होंने अपनी उक्त कृति पर वृत्ति की रचना की जो ४५०० श्लोक परिमाण है।[३५] इसके अतिरिक्त **विवेककलिका, विवेकपादप**, वस्तुपाल की क्रमशः ३७ और १०४ श्लोकों की प्रशस्तियों[३६] तथा वस्तुपाल द्वारा निर्मित गिरनार स्थित आदिनाथ जिनालय के वि० सं० १२८८ के एक शिलालेख[३७] का पद्यांश भी इन्हीं की कृति है।

राजशेखरसूरि

राजशेखरसूरि मलधारी नरेन्द्रप्रभसूरि के पट्टधर पद्मतिलकसूरि के प्रशिष्य तथा श्रीतिलकसूरि के शिष्य थे। **न्यायकंदलीपंजिका** (वि० सं० १३८५/ई० सन् १३२९); **प्राकृतद्व्याश्रयवृत्ति** (वि० सं० १३८६/ई० सन् १३३०) तथा **प्रबन्धकोश**[३८] अपरनाम **चतुर्विंशतिप्रबन्ध** (वि० सं० १४०५/ई० सन् १३४९) इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्याद्वादकलिका, **रत्नकरावतारिकापंजिका**, **कौतुककथा** और **नेमिनाथफागु** की भी रचना की।[३९] वि० सं० १३८६ से वि० सं० १४१५ तक इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ५ उपलब्ध जिनप्रतिमाओं का पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है।

इनके शिष्य **सुधाकलश** द्वारा रचित दो कृतियाँ मिलती हैं, इनमें प्रथम हैं **संगीतोपनिषद्सारोद्धार** जो वि० सं० १४०६/ईस्वी सन् १३५० में रचा गया है। इसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थकार द्वारा वि० सं० १३८०/ई० सन् १३२४ में लिखी गयी **संगीतोपनिषद्** का संक्षिप्त रूप है। ५० गाथाओं में रचित **एकाक्षरनामाला** इनकी दूसरी उपलब्ध कृति है।

सन्दर्भ सूची :

१. Muni Punya Vijaya : *Catalogue of Palm Leaf Mss in the Shanti Natha Jaina Bhandara, Cambay*, Vol. I, G. O. S. No. 135, Baroda, 1961, A.D. Pp. 66-67.

२. P. Peterson : *Fifth Report of Operation in Search of Sanskrit Mss in the Bombay Circle*, Bombay 1896 A.D. pp. 88-89.

C.D. Dalal : *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandars at Pattan*, Vol. I. G. O. S. No. LXXVI, Baroda 1937 A. D. pp. 311-313.

३. **मुनिसुव्रतस्वामिचरित**, संपा० पं० रूपेन्द्रकुमार पगारिया, लालभाई दलपतभाई ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १०६, अहमदाबाद १९८९ ईस्वी, पृष्ठ ३३७-३४१.

४. **सुपासनाहचरिय**, संपा० पं० हरगोविन्ददास, जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला, ग्रन्थांक १२, बनारस १९१८ ई०, प्रशस्ति.

५. Muni Punya Vijaya : *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shanti Natha Jaina Bhandara, Cambay*, Vol. II, G.O.S., No. 149, Baroda 1966 A.D. Pp. 243-244.

६. Ibid, Pp. 374-376.

Muni Punya Vijaya : *New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss - Jesalmer Collection*, L.D. Series No. 36, Ahmedabad 1972 A.D. Pp. 177.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६अ. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, द्वितीय संस्करण, संपा० आचार्य विजय मुनिचंद्रसूरि, सूरत ई० सन् २००६, कंडिका ५५८, पृष्ठ २५८.

७. C. D. Dalal - *A Descriptive Catalogue of Mss. In the Jaina Bhandars at Pattan*, P. 14.

८. **अलंकारमहोदधि**, संपा० पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, गायकवाड प्राच्य ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक XLV, बडोदरा १९४२ ईस्वी, प्रशस्ति, पृष्ठ ३३९-३४०.

९. पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी : **ऐतिहासिकलेखसंग्रह**, सयाजीराव साहित्यमाला, पुष्प ३३५, बडोदरा १९६२ ईस्वी, पृष्ठ ७६-७७.

१०. A. P. Shah : *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss. Muni Shree Punya Vijayaji's Collection*, Vol. II, L.D. Series No. 6, Ahmedabad 1965 A.D. Pp 217-218.

Sangitopanisat-Saroddhara, Ed. U.P. Shah, G.O.S. No. 133, Baroda 1961 A.D.

११. द्रष्टव्य : संदर्भ क्रमांक ६ ।

१२. मोहनलाल दलीचंद देसाई : **जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृष्ठ ३८९ ।

१३. भोगीलाल सांडेसरा : **महामात्य वस्तुपाल का साहित्यमंडल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन**, सन्मति प्रकाशन नं० १५, वाराणसी १९५९ ईस्वी, पृष्ठ १०१-१०४.

१४. P. Peterson : *Search of Sanskrit Mss.*, Vol. V., Pp. 95-97.

१५. देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ ५१४.

१६. H.D. Vilankar : *Jinaratnakosha*, Bhandarkar Oriental Research Institute, Government Oriental Series, Class C, No. 4, Poona 1944 A.D., Pp. 442.

१७. पूरनचन्द नाहर, संपा० **जैनलेखसंग्रह**, भाग - २ कलकत्ता १९२७ ईस्वी० लेखांक १८९९.

१८. त्रिपुटी महाराज : **जैन परम्परानो इतिहास**, भाग - २, चारित्र स्मारक, ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ५४, अहमदाबाद १९६० ईस्वी, पृष्ठ ३३८.

१९. पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी : **ऐतिहासिकलेखसंग्रह**, पृष्ठ १७-४९ तथा श्रीचन्द्रसूरि विरचित **मुनिसुव्रतस्वामिचरित** की प्रशस्ति.

२०. द्रष्टव्य : संदर्भ, क्रमांक ३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, पूर्वोक्त, पृष्ठ ७६.

२२. मोहनलाल मेहता : **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग -३, पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ११, वारामसी १९६७ ईस्वी., पृष्ठ २४२.

२३. वही, पृष्ठ २४३.

२४. पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, पूर्वोक्त, पृष्ठ ८०-८१.

२५. **जिनरत्नकोश**, पृष्ठ ४१०.

२६. वही, पृष्ठ ३८.

२७. द्रष्टव्य : संदर्भ क्रमांक ४.

२८. गांधी, पूर्वोक्त, पृष्ठ १२३.

२९. द्रष्टव्य : संदर्भ क्रमांक ६.

३०. **ज्ञातधर्मकथा** का एक नाम.

३१. द्रष्टव्य : संदर्भ क्रमांक ७.

३२. सांडेसरा, पूर्वोक्त, पृष्ठ १०२-१०४.

३३. मुनि जिनविजय : **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग-२, भावनगर १९२१ ईस्वी, लेखांक ३९-२; ४२-५छ.

३४. **अलंकारमहोदधि**, संपा० पं० लालचंद भगवानदास गांधी, परिशिष्ट क्रमांक ४, पृष्ठ ४०१-४०३.

३५. सांडेसरा, पूर्वोक्त, पृष्ठ १०४-१०६.

३६. **अलंकारमहोदधि**, परिशिष्ट, क्रमांक ५-६, पृष्ठ ४०४-४१६.

३७. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ४१-४.

३८. **प्रबन्धकोश**, संपा० मुनिजिनविजय, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ६,शांति निकेतन १९३५ ई०.

३९. मोहनलाल दलीचंद देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ ४३७.

संकेत सूची :

जै०ले०सं० - **जैनलेखसंग्रह**, संपा० पूरनचन्द नाहर

प्रा० जै० ले० सं० - **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, संपा० मुनि जिनविजय

अ० प्रा० जै० ले० सं० - **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, संपा० मुनि जयन्तविजय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जै० धा० प्र० ले० सं० - **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, संपा० बुद्धिसागरसूरि, भाग १, २

प्रा० ले० सं० - **प्राचीनलेखसंग्रह**, संपा० विजयधर्मसूरि

बी० जै० ले० सं० - **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, संपा० अगरचन्द नाहटा

जे० ए० एस० ओ० बी० - **जर्नल ऑव एशियाटिक सोसाइटी ऑव बाम्बे**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारीजगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

प्राक्मध्यकाल और मध्यकाल में निर्ग्रन्थ परम्परा के अल्पचेल (श्वेताम्बर) आमान्य के अन्तर्गत विभिन्न नगरों या ग्रामों से उद्भूत अल्पजीवी गच्छों में हारीजगच्छ भी एक है। पाटण और शंखेश्वर के मध्य महेसाणा जिले में जिला मुख्यालय से ६७ किलोमीटर दूर पश्चिम में हारीज नामक एक स्थान है।[१] यह गच्छ सम्भवतः वहीं से अस्तित्व में आया प्रतीत होता है। इस गच्छ से सम्बद्ध केवल एक साहित्यिक साक्ष्य आज मिलता है वह है **कातंत्रव्याकरण** पर दुर्गसिंह द्वारा प्रणीत **वृत्ति** पर वि० सं० १५५६/ईस्वी सन् १५०० में रची गयी अवचूर्णि; जो आज श्री विजयसूरीश्वर ज्ञानमन्दिर, राधनपुर में संरक्षित है।[२] श्री अमृतलाल मगनलाल शाह ने उक्त कृति की प्रशस्ति का पाठ दिया है[३], जो कुछ सुधारों के साथ निम्नानुसार है :

सं० १५ आषाढ़ादि ५६ वर्षे। शाके १४२१ प्रवर्तमाने फाल्गुनमासे शुक्ल पक्षे। तृतीयातिथौ। रविदिने। मीनराशिस्थितचन्द्रे॥ तद्दिने॥ श्रीभानुराज्ञि राज्यं कुर्वाणे अद्येह। श्री इलदुर्गे॥ श्री श्री॥ हारीजगच्छे। पूज्ये श्री सिंघ(ह)दत्तसूरि तच्छिष्येण उदयसागरेण अवचूर्णिः कृता। जयकलशेन सूत्रमलिखितम्॥ सूत्रद्वयस्वादि। अवचूर्णि जयकुशलेनेव कृता। शुभमस्तु। लेखक पाठकयोः।

उक्त प्रशस्ति से स्पष्ट है कि इसमें हारीजगच्छ के सिंहदत्तसूरि के शिष्य उदयसागर का अवचूर्णि के रचनाकार के रूप में नाम मिलता है। लिपिकार के रूप में इस प्रशस्ति में उल्लिखित जयकलश एवं जयकुशल भी इसी गच्छ से सम्बद्ध प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त उक्त प्रशस्ति से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसी कोई बात ज्ञात नहीं होती जिससे इस गच्छ के इतिहास पर कुछ विशेष प्रकाश पड़ सके। फिर भी हारीजगच्छ से सम्बद्ध एकमात्र साहित्यिक साक्ष्य होने से इस प्रशस्ति का विशिष्ट महत्त्व है।

इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं जो वि० सं० १३३० से लेकर वि० सं० १५७७ तक के हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१३३०		शीलभद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नया जैन मंदिर, सलषणपुर	मुनिजिनविजय संपा० **प्राचीनजैन, लेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४९१
२.	१३३०		गुणभद्रसूरिशिष्य	महावीर की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४७४
३.	१३३३		शीलभद्रसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४८५
४.	१३४३		शीलभद्रसूरि	जिनप्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
५.	१३५५		श्रीसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४७७
६.	१३८३	माघ सुदि ९ रविवार	महेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, संपा० **जैनधातु-प्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३८
७.	१३९०		सिंहदत्तसूरि			मुनि कंचनसागर, संपा० **शत्रुंजय गिरिराजदर्शन**, लेखांक २६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
८.	१३१४	वैशाख वदि ५	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा० **अर्बुद-प्राचीनजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५६३
९.	१४४५	फाल्गुन वदि १० रविवार	शीलभद्रसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, हरसूली	विनयसागर, संपा० **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १७०
१०.	१४६६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	शीलभद्रसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, रीज रोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
११.	१४९४	वैशाख सुदि शुक्रवार	महेश्वरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मंदिर, लिंबडी	मुनि विद्याविजय, संपा० **प्राचीन-लेखसंग्रह**, प्रथम भाग, लेखांक १६४
१२.	१५०१	चैत्र वदि ७		वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	वही, लेखांक १८४
१३.	१५०३					मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २७७
१४.	१५११	माघ वदि ३ बुधवार		शीतलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	बडा जैन मंदिर, शिहोर	मुनि विद्याविजय, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१५.	१५१७	मार्गशिर वदि ६ गुरुवार	महेश्वरसूरि	श्रेयांसनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५१४
१६.	१५२३	पौष वदि ८ गुरुवार		कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कांतिसागर, संपा० **शंत्रुजय-वैभव,** लेखांक १७३
१७.	१५२३	वैशाख वदि १ सोमवार		नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, भंवरलाल नाहटा, संपा० **बीकानेर जैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१८.	१५२३	वैशाख वदि १		मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख सोमवार		साराभाई मणिलाल नवाब, 'राजनगरना जिनमंदिरोमां सचवायेलां ऐतिहासिक अवशेषो', **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ९, अंक ८, पृष्ट ३७८-३८३, लेखांक ३२
१९.	१५२८	माघ वदि ५ गुरुवार		शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विद्याविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ४१८ एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि / मिति	प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
						मुनि विशालविजय, संपा० **राधनपुर-प्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक २५६
२०.	१५७७	मिति विहीन	शीलभद्रसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा को लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७३४
२१.	१५७७	मिति विहीन		सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ७३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त प्रतिमालेखीय साक्ष्यों में से केवल द्वितीय लेख में (वि० सं० १३३०) प्रतिमाप्रतिष्ठापक मुनि ने अपने गुरु का नाम गुणभद्रसूरि बतलाया है, किन्तु अपना नाम नहीं बतलाया है। इसके विपरीत अन्य सभी लेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक मुनिजनों का नाम मिलता है किन्तु उनके गुरु का नामोल्लेख नहीं है, अत: ऐसी स्थिति में इन मुनिजनों के परस्पर सम्बन्धों के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं हो पाती है। जैसा कि इस निबन्ध के प्रारम्भ में हम देख चुके हैं **कातंत्रव्याकरण** पर दुर्गसिंह द्वारा रची गयी **वृत्ति** पर रची गयी अवचूर्णि की प्रशस्ति में रचनाकार उदयसागरसूरि ने अपने गुरु सिंहदत्तसूरि का नाम दिया है।

उपरोक्त साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों शीलभद्रसूरि 'प्रथम', महेन्द्रसूरि, सिंहदत्तसूरि 'प्रथम', शीलभद्रसूरि 'द्वितीय', महेश्वरसूरि, सिंहदत्तसूरि 'द्वितीय', शीलभद्रसूरि 'तृतीय' आदि के नाम तो ज्ञात हो जाते हैं, परन्तु वहाँ इनके गुरु का नाम न होने से इनके परस्पर सम्बन्धों के बारे में हमें कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती, फिर भी इन्हें कालक्रमानुसार निम्नलिखित क्रम में रखा जा सकता है :

?	?	
|	|	
गुणभद्रसूरि	शीलभद्रसूरि 'प्रथम'	(वि० सं० १३३०-४३) प्रतिमालेख
|	|	
गुणभद्रसूरिशिष्य (वि० सं० १३३०) प्रतिमालेख	|	
	श्रीसूरि	(वि० सं० १३५५) प्रतिमालेख
	|	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

|

महेन्द्रसूरि (वि० सं० १३८३) प्रतिमालेख

|

|

|

सिंहदत्तसूरि 'प्रथम' (वि० सं० १३९४) प्रतिमालेख

|

|

|

|

शीलभद्रसूरि 'द्वितीय' (वि० सं० १४४५-६६) प्रतिमालेख

|

|

|

महेश्वरसूरि (वि० सं० १४९४-१५२८) प्रतिमालेख

|

|

|

? सिंहदत्तसूरि 'द्वितीय' **(दुर्गासिंहवृत्तिअवचूर्णि** की प्रशस्ति में ग्रंथकार के गुरु के रूप में उल्लिखित)

| |

| |

| |

|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयकलश एवं जयकुशल (**कातंत्रव्याकरण-दुर्गसिंहवृत्ति अवचूर्णि** की प्रशस्ति में लिपिकार के रूप में उल्लिखित)	उदयसागरसूरि	(वि० सं० १५५६- ई० स० १५०० में **कातंत्रव्याकरण-दुर्गसिंहवृत्तिअवचूर्णि** के रचनाकार)
	|	
	शीलभद्रसूरि 'तृतीय'	(वि० सं० १५७७) प्रतिमालेख

इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर विक्रम संवत् की चौदहवी शताब्दी के प्रथम चरण से लेकर वि० संवत् की सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण (लगभग २५० वर्षों तक) हारीजगच्छ की विद्यमानता सिद्ध होती है। शीलभद्रसूरि 'प्रथम' और शीलभद्रसूरि 'द्वितीय' तथा महेश्वरसूरि इस गच्छ के अन्य मुनिजनों की अपेक्षा विशेष प्रभावशाली प्रतीत होते हैं क्योंकि उनके द्वारा प्रतिष्ठापित कई जिनप्रतिमायें मिली हैं। विक्रम संवत् की १६वीं शती के पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की दुर्लभता को देखते हुए यह माना जा सकता है कि इसके पश्चात् इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा। यह गच्छ कब, किस कारण एवं किस गच्छ या कुल से अस्तित्व में आया, इसके आदिम आचार्य कौन थे ? साक्ष्यों के अभाव में ये सभी प्रश्न अभी अनुत्तरित ही रह जाते हैं।

संदर्भ सूची :

१. रसिकलाल छोटालाल परीख एवं हरिप्रसाद गंगाशंकर शास्त्री, **गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास**, भाग १, अहमदाबाद १९७२ ई० स०, पृष्ठ ३७३.

२. श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा० **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, श्री जैन साहित्य प्रदर्शन, श्री देशविरति धर्माराजक समाज, अहमदाबाद वि० सं० १९९३, भाग २, पृष्ठ ५७; प्रशस्ति क्रमांक २२६.

३. वही, पृष्ठ ५७, प्रशस्ति क्रमांक २२६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक ग्रन्थ सूची

प्राचीन जैन साहित्य

(आगमिक, अंगबाह्य और अन्य जैन साहित्य)

अष्टोत्तरी तीर्थमाला चैत्यवंदन विधिपक्षगच्छ पंचप्रतिक्रमण सूत्राणि, वि०सं०१८९४

अलंकार महोदधि, संपा० पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, बड़ोदरा १९४२ ई०

अख्यानकमणिकोश, संपा० मुनि पुण्यविजयजी, वाराणसी १९६२ ई०

उत्पादादिसिद्धद्वात्रिंशिकाविवरण, रतलाम वि० सं० १९९३

उपमितिभवप्रपंचकथासारोद्धार, संपा० संशोधक, पंन्यास मानविजय, कांतिविजय, पाटण वि०सं० २००६

उपमितिभवप्रपंचकथासारोद्धार, हिन्दी अनु० –महो० विनयसागर, जयपुर १९८५ ई०

कथाकोशप्रकरण, संपा० मुनि जिनविजय, मुम्बई १९४९ ई०

कल्पसूत्र, संपा० देवेन्द्रमुनि शास्त्री, बाड़मेर १९६८ ई०

कर्पूरप्रकर, अहमदाबाद १९२६ ई०

कुवलयमालाकहा, भाग १, संपा० ए० एन० उपाध्ये, मुम्बई १९५९ ई०

चउपन्नमहापुरुषचरियं, संपा० अमृतलाल मोहनलाल भोजक, वाराणसी १९६१ ई०

चन्द्रप्रभचरित, संपा० संशोधक-विजयजिनेन्द्रसूरि, सौराष्ट्र वि०सं० २०४२.

जम्बूचरियं, संपा० मुनि जिनविजय, मुम्बई १९५९ ई०

जम्बूद्वीपसमासटीका, संशोधक-पंन्यास हर्षविजयगणि के शिष्य मानविजय मुनि, अहमदाबाद वि०सं० १९७९

तत्त्वार्थसूत्र, विवेचनाकार सुखलालजी संघवी, तृतीय संस्करण, वाराणसी १९८५ ई०

दशवैकालिकसूत्र निर्युक्ति एवं चूर्णिसहित, संपा० मुनि पुण्यविजय, अहमदाबाद १९७३ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दानादिप्रकरण, संपा० अमृतलाल भोजक एवं नगीन जे० शाह, अहमदाबाद १९८३ ई०

धर्माभ्युदयमहाकाव्य, संपा० मुनि पुण्यविजय, मुम्बई वि०सं० २००५

धर्मोपदेशमालाविवरण, संपा० मुनि पुण्यविजय, मुम्बई, वि०सं० १९४९ ई०

नन्दीसूत्र, संपा० आचार्य आत्मारामजी, लुधियाना १९६६ ई०

नलविलास, संपा० जी०के० श्रीगोण्डेकर एवं लालचन्द भगवानदास गांधी, बडोदरा १९२६ ई०

नन्दीचूर्णी, संपा० मुनि पुण्यविजय, अहमदाबाद १९६६ ई०

नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति, देवचन्दलालभाई जैन पुस्तकोद्धारे, १९२७ ई०

न्यायावतारवार्तिकवृत्ति, संपा० दलसुख मालवणिया, मुम्बई वि०सं० २००५.

न्यायतात्पर्यदीपिका, संपा० महामहोपाध्याय सतीशचंद्र विद्याभूषण, कलकत्ता १९१० ई०

पुरातनप्रबन्धसंग्रह, संपा० मुनि जिनविजय, शांतिनिकेतन १९३६ ई०

पुहवीचंदचरिय, संपा० मुनि रमणीकविजय, वाराणसी १९७२ ई०

प्रबन्धकोश, संपा० मुनि जिनविजय, शांतिनिकेतन १९३५ ई०

प्रबन्धचिन्तामणि, संपा० मुनि जिनविजय, शांतीनिकेतन १९३३ ई०

प्रबन्धचिन्तामणि, अंग्रेजी अनुवादक सी० एच० टॉनी, कलकत्ता १८९९ ई०

प्रबन्धचिन्तामणि, हिन्दी अनुवादक, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शांतिनिकेतन, १९४० ई०

प्रभावकचरित, संपा० मुनि जिनविजय, अहमदाबाद १९४० ई०

प्रभावकचरित, गुजराती अनुवाद, आचार्य मुनिचन्द्रसूरि, सुरत २००० ई०

प्रवचनसारोद्धार, संपा० मुनिचन्द्रविजयजी, सुरत १९८८ ई०

प्रमेयकमलमार्तण्ड, संपा० पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री, मुम्बई १९४१ ई०

बृहत्कथाकोश, संपा० ए० एन० उपाध्ये, मुम्बई १९४३ ई०

भुवनदीपक, प्रकाशक गंगाविष्णुदास श्रीकृष्णदास, लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई वि०सं० १९९६

मुनिसुव्रतस्वामिचरित, संपा० पं० रूपेन्द्रकुमार पगारिया, अहमदाबाद १८८९ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्तुपालचरित, श्रीशांतिसूरि ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५, अहमदाबाद १९४१ ई०

वासुपूज्यचरित, प्रका० जैन धर्मप्रचारक सभा, भावनगर वि०सं० १९८२

विलासवईकहा, संपा० रमणलाल म० शाह, अहमदाबाद १९७७ ई०

विविधतीर्थकल्प, संपा० मुनि जिनविजय, शांतिनिकेतन १९३४ ई०

विवेकविलास, संपा० भृगुभाई फतेहचंद कारबारी, मुम्बई १९१६ ई०

श्रेयांसनाथचरित, गुजराती अनुवाद, भावनगर वि०सं० २००९

शीलोपदेशमाला, गुजराती अनुवादक, हरिशंकर कालिदास शास्त्री, अहमदाबाद १९०० ई०

सन्मतिप्रकरण, संपा० पं० सुखलालजी एवं पं० बेचरदासजी, द्वितीय संस्करण, अहमदाबाद, १९५२ ई०

सुकृतकीर्तिकल्लोलिन्यादि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह, संपा० मुनि पुण्यविजय, मुम्बई १९६१ ई०

स्याद्वादमंजरी, सपा० आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, मुम्बई १९३२ ई०

सुपासनाहचरियं, संपा० एवं संस्कृत भाषानुवादक पं० हरगोविन्द त्रिकमचंद शेठ. बनारस १९१८ ई०

त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित, भाग १-६, अंग्रेजी अनुवादक हेलेन एच० जोंनसन, बडोदरा १९३९-६२ ई०

हम्मीरमहाकाव्य, संपा० मुनि जिनविजय, जोधपुर १९६८ ई०

• • •

ग्रंथभंडार-सूचीपत्र

(1) *Operation in search of sanskrit Mss in Bombay Circle*, Vol. I-VI, Ed. P. Peterson, Bombay 1884-1899 A.D.

(2) *A Descriptive Catalogue of Manuscripts at Jain Bhandars at Pattan*, Ed. C.D. Dalal, Baroda 1937 A.D.

(3) *Descriptive Catalogue of Government Collection of Manuscripts diposited at Bhandarkar Oriental Research Institute*, Poona, Vol. XVII-XIX Ed. H.R. Kapadia, Poona 1935-77 A.D.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(4) *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinatha Jain Bhandar Cambay,* Vol. I-II, Ed. Muni Shree Panya Vijaya, Baroda 1962-66 A.D.

(5) *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss : Muni Shree Panya Vijayajis Collection,* Vol. I-III, Ed. A. P. Shah, Ahmedabad-1963

(6) *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss Aearya Khantisuris Collection,* Vol. IV, Ed. A. P. Shah, Ahmedabad-1968 A.D.

(7) *New Catalouge of Sanskrit & Prakrit Collection, Jesalmer Collection,* Ed. Muni Panya Vijayaji, Ahmedabad-1972 A.D.

(8) *Catalouge of Gujarati Mss : Muni Shree Panya Vijayajis Collection* Ed. Vidhatri Vora, Ahmedabad-1978 A.D.

(९) **जैन ग्रन्थावली**, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स, मुम्बई १९०२ ई०

(१०) **लिंबडीस्थ हस्तलिखित जैन ज्ञान भंडार सूची पत्रम्**, संपा० मुनि चतुरविजय आगमोदय समिति, ग्रन्थांक ५८, मुम्बई १९२८ ई०

(११) **जिनदत्तसूरी ज्ञानभंडार जैसलमेर के हस्तलिखित ग्रंथों का सूचीपत्र**, संपा० जौहरीमल पारेख, जोधपुर १९८८ ई०

• • •

प्रशस्तिसंग्रह

(१) **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, संपा०अमृतलाल मगनलाल शाह, अहमदाबाद वि०सं० १९९३.

(२) **जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह**, संपा० मुनि जिनविजय, मुम्बई १९४४ ई०

(३) **प्रशस्तिसंग्रह**, संपा० कस्तूरचंद कासलीवाल, जयपुर १९५० ई०

(४) **जैनग्रन्थप्रशस्तिसंग्रह**, संपा० जुगलकिशोर मुख्तार, दिल्ली १९५४ ई०

• • •

पट्टावलियां

(१) **पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, संपा०मुनि दर्शनविजयजी, वीरमगाम १९३३ ई०

(२) **पट्टावलीसमुच्चय**, द्वितीय भाग, संपा० त्रिपुटीमहाराज, अहमदाबाद १९५० ई०

(३) **पट्टावलीपरागसंग्रह**, संपा० मुनि कल्याणविजयजी, जालोर १९६६ ई०

(४) **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, संपा० मुनि जिनविजय, मुम्बई १९६१ ई०

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन अभिलेख साहित्य

(१) **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह** (आबू, भाग-२), संपा० मुनि जयन्तविजय, उज्जैन वि०सं० १९९४

(२) **अर्बुदपरिमंडल की जैन धातु प्रतिमायें एवं मंदिरावलि,** संग्रा० -संपा० सोहनलाल पटनी, सिरोही २००२ ई०

(३) **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसन्दोह** (आबू, भाग-५) संपा० मुनि जयन्त विजय, भावनगर वि०सं० २००५

(४) **आरासणा अने कुंभारियाजी तीर्थ,** संपा० मुनि विशालविजय, भावनगर १९६१ ई०

(५) **जैनधातुप्रतिमालेख,** संपा० मुनि कान्तिसागर, सुरत १९५० ई०

(६) **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १-२, संपा० आचार्य बुद्धिसागरसूरि १९१७-२४ ई०

(७) **जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** संपा० दौलतसिंह लोढा, धामणिया (मेवाड़) १९५१ ई०

(८) **जैनलेखसंग्रह,** भाग १-३, संपा० पूरनचन्द नाहर, कलकत्ता १९१८-२८ ई०

(९) **जैन शिलालेख संग्रह,** भाग २-४, संपा० विजयमूर्ति शास्त्री, मुबई १९५२-६४ ई०

(१०) **पाटणजैनधातु प्रतिमालेखसंग्रह,** संपा० लक्ष्मणभोजक, दिल्ली २००२ ई०

(११) **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** भाग १-२, संपा० विनयसागर, कोटा- जयपुर १९५३-२००३ ई०

(१२) **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग-२, संपा० मुनि जिनविजय, भावनगर १९२१ ई०

(१३) **प्राचीनलेखसंग्रह,** संपा० विद्याविजयजी, भावनगर १९२९ ई०

(१४) **बाड़मेर के जैन शिलालेख,** संपा० चंपालाल सालेचा, मेवानगर-बाड़मेर १९८७ ई०

(१५) **बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** संपा० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, कलकत्ता १९५६ ई०

(१६) **मालवांचल के जैनलेख,** संपा० नन्दलाल लोढा, उज्जैन १९९५ ई०

(१७) **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह,** संपा० मुनि विशालविजय, भावनगर १९६० ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१८) **शत्रुंजयगिरिराजदर्शन,** संपा० मुनि कंचनसागर, कपडवज १९८३ ई०

(१९) **शत्रुंजयवैभव,** संपा० मुनि कांतिसागर, जयपुर १९९० ई०

(२०) *Jain Image Inscriptions of Ahmedabad,* Ed. P. C. Parikha & Bharti Shelat, Ahmedabad-1997 A.D.

●●●

आधुनिक ग्रंथ

(१) अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, **जैनतीर्थ सर्वसंग्रह,** भाग-१ (खंड १-२) भाग-२, अहमदाबाद १९५३ ई०

(२) अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, **कालकाचार्यकथासंग्रह,** अहमदाबाद १९४९ ई०

(३) उमाशंकर जोशी, **पुराणों मां गुजरात,** अहमदाबाद १९४६ ई०

(४) कल्याणविजयमुनि, **प्रबन्ध पारिजात,** जालोर १९६६ ई०

(५) केशवराम काशीराम शास्त्री, **गुजरातना सारस्वतो,** अहमदाबाद १९७७ ई०

(६) गिरजाशंकर वल्लभजी शास्त्री, संपा० **गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,** भाग १-३, मुम्बई १९३३-४२ ई०

(७) गुलाबचन्द चौधरी, **जैनसाहित्य का बृहद इतिहास,** भाग-६, वाराणसी १९७३ ई०

(८) गोपीनाथ शर्मा, **राजस्थान के इतिहास के स्रोत,** जयपुर १९७३ ई०

(९) चतुरविजयजी, संपा० **जैनस्तोत्रसंदोह** भाग १-२, अहमदाबाद १९३२-३६ ई०

(१०) चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, संपा० **प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रह,** बडोदरा-१९२० ई०

(११) जगदीशचन्द्र जैन, **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज,** वाराणसी १९६५ ई०

(१२) जगदीशचन्द्र जैन, **प्राकृत साहित्य का इतिहास,** वाराणसी १९६१ ई०

(१३) जयकुमार जैन, **पार्श्वनाथचरित का समीक्षात्मक अध्ययन,** मुजफ्फरपुर १९८६ ई०

(१४) जयन्तविजयजी, **आबू,** भाग-१, भावनगर वि०सं० १९८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१५) जयन्तविजयजी, **अर्बुदाचल प्रदक्षिणा,** (आबू, भाग-३) भावनगर वि०सं० २००५

(१६) जयन्तविजयजी, **शंखेश्वर महातीर्थ,** भावनगर वि.सं. २००३

(१७) जिनविजयमुनि, **गुजरात का जैनधर्म,** वाराणसन १९४८ ई०

(१८) जिनविजयमुनि, **हरिभद्रसूरि का समयनिर्णय,** द्वितीय संस्करण वाराणसी १९८८ ई०

(१९) जिनविजयमुनि, **राजर्षि कुमारपाल,** वाराणसी १९४८ ई०

(२०) जे०पी०अमीन, **खंभातनुं जैन मूर्ति विधान,** खंभात १९७९ ई०

(२१) दलसुख मालवणिया, **गणधरवाद,** अहमदाबाद, १९५२ ई०

(२२) दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री, **गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास,** भाग १-२, अहमदाबाद १९४० ई०

(२३) नीना जैन, **मुगल सम्राटों की धार्मिक नीति पर जैन संतों का प्रभाव,** शिवपुरी १९९१ ई०

(२४) भोगीलाल सांडेसरा, **जैन आगमसाहित्यमां गुजरात,** अहमदाबाद १९५२ ई०

(२५) भोगीलाल सांडेसरा, **महामात्य वस्तुपाल का साहित्य मंडल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन,** वाराणसी १९५८ ई०

(२६) भोगीलाल सांडेसरा, **हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमंडल,** वाराणसी १९५१ ई०

(२७) मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगुर्जर कविओ,** नवीन संस्करण, भाग १-१०, संपा० डॉ० जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८६-९७ ई०

(२८) मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,** प्रथम संस्करण, मुम्बई १९३२ ई०, द्वितीय संशोधित संस्करण, संपा० मुनिचन्द्रसूरि, सुरत २००६ ई०

(२९) मोहनलाल मेहता और हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास,** भाग-४, वाराणसी १९६८ ई०

(३०) यतीन्द्रसूरि, **यतीन्द्रविहार दिग्दर्शन,** भाग १-४, १९२८-३७ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३१) रसिकलाल छोटालाल परीख और हरिप्रसाद शास्त्री, संपा० **गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास,** भाग १-६, अहमदाबाद १९७२-७८ई०

(३२) लालचंद भगवानदास गांधी, **ऐतिहासिक लेख संग्रह,** बडोदरा १९६३ ई०

(३३) वि० भा० मुसलगांवकर, **आचार्य हेमचन्द्र,** भोपाल १९७१ ई०

(३४) विजयेन्द्रकुमार माथुर, **ऐतिहासिक स्थानावली,** दिल्ली १९६८ ई०

(३५) मुनि विशालविजय, **सांडेराव भावनगर,** १९६३ ई०

(३६) विशुद्धान्द पाठक, **उत्तर भारत का राजनैतिक इतिहास,** लखनऊ १९७२ ई०

(३७) शितिकंठ मिश्र, **हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास,** (मरु-गुर्जर) भाग १-४, वाराणसी-१९९०-९४ ई०

(३८) श्यामशंकर दीक्षित, **तेरहवीं -चौदहवीं शताब्दी के जैन संस्कृत महाकाव्य,** जयपुर १९६९ ई०

(३९) सुखलाल संघवी, **समदर्शी आचार्य हरिभद्र,** जोधपुर १९६३ ई०

(४०) हरिप्रसाद शास्त्री, **मैत्रक कालीन गुजरात,** भाग १-२, अहमदाबाद १९५५ ई०

(४१) हस्तिमलजी महाराज, **जैन धर्म का मौलिक इतिहास,** भाग-२, जयपुर १९६७ ई०

(४२) हीरालाल जैन, **भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान,** भोपाल १९६२ ई०

(४३) हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **पाइय भाषा अने साहित्य,** द्वितीय संस्करण, संपा० आचार्य मुनिचन्द्रसूरि, सुरत २००६ ई०

(४४) हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैन संस्कृत साहित्यनो इतिहास,** द्वितीय संस्करण, संपा० आचार्य मुनिचन्द्रसूरि, सुरत-२००४ ई०

(४५) त्रिपुटी महाराज, **जैनपरम्परानो इतिहास,** द्वितीय संस्करण, भाग १-३, संपा० आचार्य विजयभद्रसेनसूरि, सुरत २००१-२००३ ई०

(४६) त्रिपुटी महाराज, **जैन तीर्थोनो इतिहास,** अहमदाबाद-१९४९ ई०

(47) A. K. Chatarjee, *A Comprehensive History of Jainism,* Vol.I, Calcutta 1984 A.D.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(48) A. K. Majmudar, *Chulakyas of Gujarat,* Bombay 1956 A.D.

(49) C. B. Shetha, *Jainism in Gujarat,* Bombay 1956 A.D.

(50) Dasharatha Sharma, *Early Chauhan Dynesties,* New Delhi 1959 A.D.

(51) Dasharatha Sharma, *Rajasthan Through the Ages,* Bekaner 1966 A.D.

(52) G. Bahlar, *Life of Hemachandra,* Shanti Niketan 1936 A.D.

(53) G. C. Chauradhary, *Political History of Northern India from Jain sources,* Amritsar 1963 A.D.

(54) J. P. Singh, *Aspects of Early Jainism,* Varanasi 1972 A.D.

(55) K. C. Jain, *Ancient Cities and Towns of Rajasthan,* Delhi 1972 A.D.

(56) MohanLal BhagawanDas Jhavery, *Comprative and Critical Study of Mantrashastra,* Ahmedabad 1944 A.D.

(57) M. R. Majamudar, *Cultural History of Gujarat,* Bombya, 1965 A.D.

(58) P. K. Gode, *Studies, in Indian Literary History,* Vol.-I, Bombay, 1953 A.D.

(59) R. V. Somani, *Jain Inscriptions of Rajasthan,* Jaipur 1982 A.D.

(60) R. C. Majmudar and A. D. Pusalkar, Ed. *The Struggle for Empire,* III Edition, Bombay 1979 A.D.

(61) Sarabhai Manilal Navab, *The Jain Tirthas in India and their Architecture*, Ahmedabad 1944 A.D.

(62) U. P. Shah, *Treasures of Jaina Bhandars, Ahmedabad* 1970 A.D.

(63) U. P. Shah, *Akota Bronges*, Bombay 1956 A.D.

● ● ●

स्मारक ग्रंथ - अभिनन्द ग्रंथ - स्मृति ग्रंथ

(१) **श्री आत्मानंद शताब्दी ग्रंथ,** संपा० मोहनलाल दलीचंद देसाई, मुम्बई १९३६ ई०

(२) **ज्ञानाञ्जलि (मुनि पुण्यविजय अभिनन्दन ग्रंथ),** संपा० मुनि रमणीक विजय, भोगीलाल सांडेसरा आदि, बडोदरा १९६९ ई०

(३) **दलसुखभाई मालवणिया अभिनन्दन ग्रंथ,** संपा० प्रो० सागरमल जैन, वाराणसी १९९२ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) **प्रेमी अभिनन्दन ग्रंथ,** टीकमगढ १९४६ ई०

(५) **पं० बेचरदासदोसी स्मृति ग्रंथ,** संपा० प्रो० एम० ए० ढांकी तथा प्रो० सागरमल जैन, वाराणसी १९८७ ई०

(६) **यतीन्द्रसूरि अभिनन्दन ग्रंथ,** संपा० मुनि विद्याविजयजी आदि, आहोर १९५८ ई०

(७) **विक्रमस्मृतिग्रंथ,** संपा० हरिहर निवास त्रिवेदी तथा अन्य, उज्जैन वि०सं० २००२.

(८) **विजयवल्लभसूरि स्मारक ग्रंथ,** संपा० भोगीलाल सांडेसरा, डॉ० मोतीचन्द आदि मुम्बई १९५६ ई०

(९) **श्री महावीर जैन विद्यालय रौप्य जयन्ती स्मारक ग्रंथ,** संपा० मोतीचंद गिरधरलाल कापडिया, मुम्बई १९४० ई०

(१०) **श्री महावीर जैन विद्यालय, सुवर्ण महोत्सव ग्रंथ, भाग १-२,** संपा० कांतिलाल डी० कोरा तथा अन्य, मुम्बई १९६५ ई०

(११) H. G. Shastri Felicitation Volume, Ed. P.C. Parikha & Bharti Shelat. Ahmedabad 1994 A.D.

• • •

कोश ग्रन्थ

(१) **गुजराती साहित्य कोश,** भाग १-२, संपा० जयन्त कोठारी, अहमदाबाद-१९८८-८९ ई०

(२) **हिन्दूधर्मकोश,** संपा० राजबली पाण्डेय, लखनऊ १९७८ ई०

(३) *Jinaratnakosha*, Ed. H. D. Valankar, Poona 1944 A.D.

(४) *New Catalogus, Catalogorum*, Vol. I-XIII, Ed. V. Raghavan, Madras 1968-84 A.D.

(५) *Geographical Dictionary of Ancient & Mediaeval India*, By N. L. Day, Reprint, Delhi 1994 A.D.

(६) PraRrit Proper Names, Vol. I, II, Ahmedabad 1970-72 A.D.

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्र-पत्रिकायें/Journals

अनेकान्त, दिल्ली

कलासरोवर, वाराणसी

जैनसत्यप्रकाश, अहमदाबाद

जैन साहित्य संशोधक, पूना

फार्बस गुजराती सभा पत्रिका,

शोधादर्श, लखनऊ

श्रमण, वाराणसी

सम्बोधि, अहमदाबाद

सामीप्य, अहमदाबाद

संस्कृति संधान, वाराणसी

स्वाध्याय, बडोदरा

Buletin of the Baroda Museum and Pictures Gallary

Epiraphiya Indica

Indian Antiquary

Journal of the Rayal Asiatic Society of Bombay

Jain Journlal

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

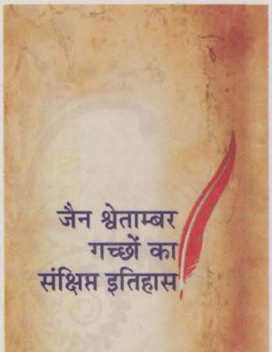

KIRIT GRAPHICS
09898490091

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org